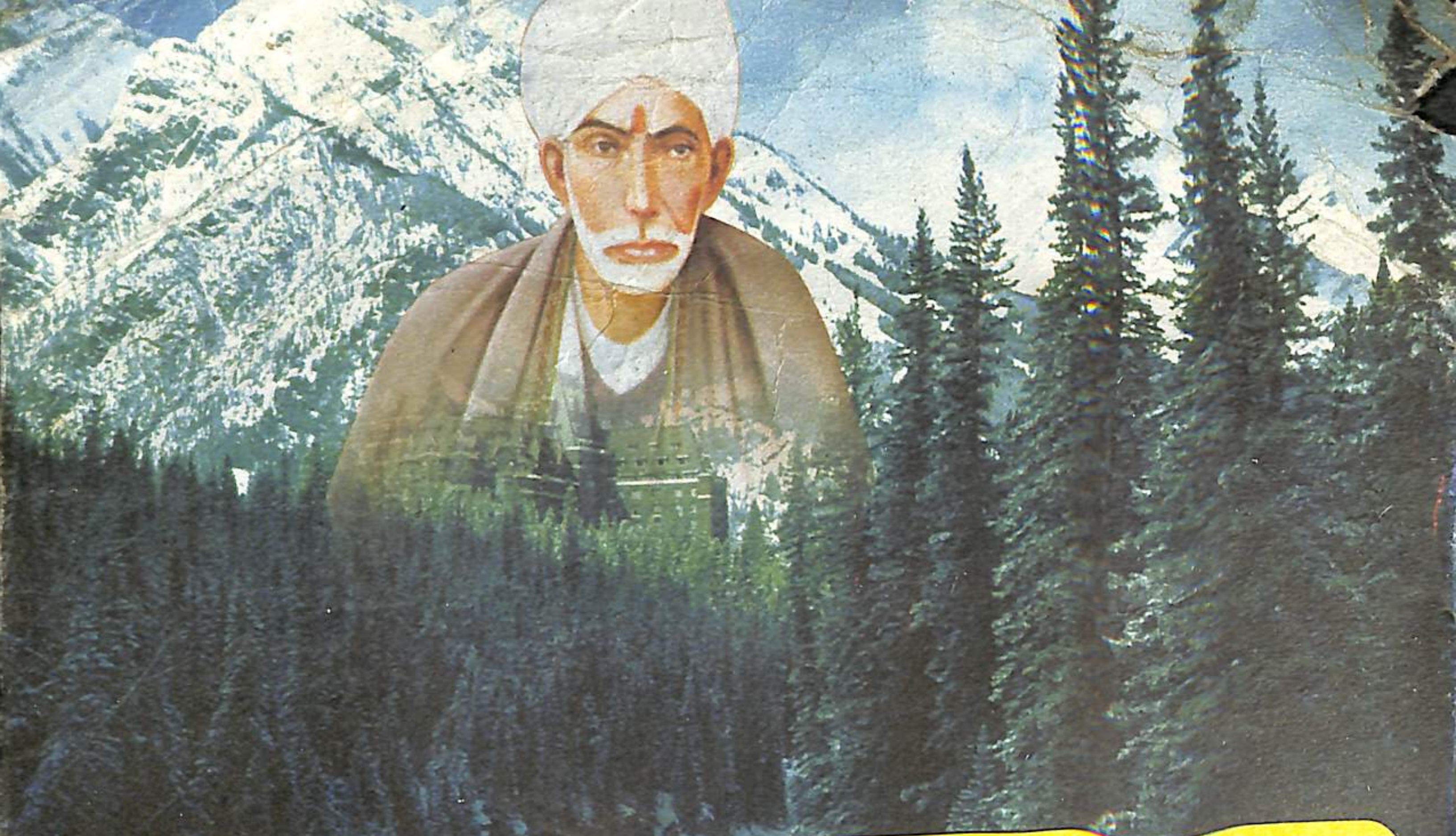
विजयेश्वर पञ्चाङ्ग





विजयेश्वर पंचांग के प्रवर्तक ज्यो. आफताब शर्मा (अगस्त 1887-अक्तूबर 1966)

शारदा

गुरुमुखी

कन्नड़

उड़िया

सिन्धी

ॐ

प्रणवे च दृढ़ा मतिः

स वै "हिन्दू"

उर्दू

اوم

गुजराती-मराठी

असमिया-बंगला

तमिल

मलयालम्

तेलुगु



माता राज्ञा भवानी अस्थापन राज्ञस्थान (रायथन)
बडगामा-कशमीर

प्रवर्तक
ज्यो॰ आफताब शर्मा



संस्थापक
पं॰ प्रेमनाथ शास्त्री

विजयेश्वर पञ्चाङ्ग

सप्तर्षि
5091

ईस्वी 2015-16

विक्रमी
2072

विजयेश्वर सं॰ 331

निर्वासन सं॰ 26

सम्पादक
भूषण लाल ज्योतिषी
एम. ए. साहित्याचार्य
अवतार कृष्ण ज्योतिषी

संशोधक
ओंकार नाथ शास्त्री
...chang.vijayshwar@yahoo.com

Price : Rs. 100.00

हिज्री सन 1436-37

विषय सूची

शाका सं॰ 1937

नमस्कार

1. **यदि आप को विजयेश्वर पंचांग के विषय में कोई सुझाव अथवा किसी प्रकार की शिकायत हो।**
2. **यदि आप को धर्म शास्त्र के विषय में कोई समस्या हो।**
3. **यदि आप पंचांग के सम्पादक ओंकारनाथ शस्त्री से मिलना चाहते है तो सम्पर्क करें।**

94191-332

2555

हिज्री सन 1436-37

विषय सूची

शाका सं॰ 1937

नमस्कार

1. यदि आप को विजयेश्वर पंचांग के विषय में कोई सुझाव अथवा किसी प्रकार की शिकायत हो।

2. यदि आप को धर्म शास्त्र के विषय में कोई समस्या हो।

3. यदि आप पंचांग के सम्पादक ओंकारनाथ शस्त्री से मिलना चाहते है तो सम्पर्क करें।

94191-33233

2555607

इनको भूलिये मत

हमारी सभ्यता तथा संस्कृति के मूल स्त्रोत

- सन्धया चोंग
- सन्यवारी
- ब्रान्द फश
- हून्य म्यट
- तरंग गण्डुन
- देव गौण
- द्वार पूजा
- पोश पूजा
- फिर थुर
- आलथ
- व्यूग
- क्रूल खारुन
- लाय बोय
- दयबत
- मास अबीद
- वारिदान
- दिवत गूल्य
- दिवच तबचि
- बूठ मुचरिथ कमरस मंज अचुन

- मनन माल
- रत्न चाँगिजि
- क्रूल पछ
- गौर त्रय
- अनथ
- थाल भरुण
- थालस बुथवुछुन
- तहर बनावन्य
- वरी बनावन्य
- बिहिथ ख्योंन
- न्यश पत्रि बुथ बुछुन
- न्यशत्र थालस प्यठ थावन्य
- शंख वायुन
- मेखला संस्कार
- मॉलिस माजि हुँज सेवा
- गुल्य गंडिथ नमस्कार करुन
- जिठ्यन आदर करुन
- गुरुस आदर करुन

यज्ञोपवीत का संस्कार घर पर करें

घर पर काश्मीरी भाषा में बात करें

बच्चे को 12 वर्ष की आयु तक यज्ञोपवीत धारण करायें

जन्म दिन तिथि के अनुसार मनायें

वेदवाणी

ऋग्वेद

सं गच्छध्वं सं वदध्वम्।

अर्थ : मिल कर चलो और मिल कर बोलो।

न स सखा यो न ददाति सख्ये।

अर्थ : वह मित्र ही क्या, जो अपने मित्र को सहायता नही देता।

सत्यस्य नाव: सुकृतमपीपरन्।

अर्थ: धर्मात्मा को सत्य की नाव पार लगाती है।

देवानां सख्यमुप सेदिमा वयम्।

अर्थ : हम देवताओं की मैत्री प्राप्त करें।

माध्वीर्न: सन्त्वोषधी:

अर्थ: हमारे लिये ओषधियां मधुरता से परिपूर्ण हो।

स्वस्ति पन्थामनु चरेम।

अर्थ : हे प्रभो ! हम कल्याण मार्ग के पथिक बने।

यजुर्वेद

भद्रं कर्णेभि: श्रृणुयाम।

अर्थ : हम कानों से सदा मंगलकारी वचन ही सुनें।

मा गृध: कस्य स्विद्धनम्।

अर्थ : किसी के धन पर न ललचाओ।

मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे।

अर्थ : हम सब परस्पर मित्र की दृष्टि से देखें।

ऋतस्य चक्षुषा समीक्षामहे।

अर्थ : हम सब सत्य के मार्ग पर चलें।

तन्मे मन: शिव सङ्कल्पमस्तु।

अर्थ : मेरा मन उत्तम संकल्पों वाला हो।

अथर्ववेद:

सं श्रुतेन गमेमहि।

अर्थ : हम वेदादि शास्त्रों से सदा सम्पन्न रहें।

परैतु मृत्युरमृतं न ऐतु।

अर्थ : हम से मृत्यु दूर रहे और हमें अमृत पद प्राप्त हो।

सर्वा आशा मम मित्रं भवन्तु।

अर्थ : हमारे लिये सभी दिशायें कल्याणकारिणी हो।

सत्यं वद = सत्य बोलो

धर्मं चर = धर्म का आचरण करो।

स्वाध्यायान्मा प्रमद = स्वाध्याय (अध्ययन) से कभी न चूको।

सत्यान्न प्रमदितव्यम् = सत्य से कभी नहीं डिगना चाहिये।

धर्मान्न प्रमदितव्यम् = धर्म से नही डिगना चाहिये।

कुशलान्न प्रमदितव्यम् = शुभ कर्मों से कभी नही चूकना चाहिये।

भूत्यै न प्रमदितव्यम् = उन्नति के साधनों से कभी नहीं चूकना चाहिये।

देव पितृकार्याभ्यां न प्रमदितव्यम् = देव कार्यों से और पितृ कार्यों से कभी नही चूकना चाहिये।

(तैतिरीय0 उप0)

त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव् बन्धनात् मृत्योर्मुक्षीय
माऽमृतात्।।

पदार्थ : हम लोग जो (सुगन्धिं) शुद्ध गन्धयुक्त (पुष्टिवर्धनम्) शरीर, आत्मा और समाज के बल को बढाने वाला (त्र्यम्बकम्) रुद्ररूप जगदीश्वर है उस की (यजामहे) निरन्तर स्तुति करें। इन की कृपा से (उर्वारुकमिव्) जैसे खर्बूजा फल पक कर (बन्धनात्) लता के सम्बन्ध से छूट कर अमृत के तुल्य होता है वैसे हम लोग भी (मृत्योः) प्राण वान शरीर के वियोग से (मुक्षीय) छूट जावें (अमृतात्) और मोक्ष रूप सुख से (मा) श्रद्धारहित कभी न होवें।

(युजर्वेद - अध्याय तृतीय से उद्धृत)

भावार्थ : हे परमात्मा! आप हमारे शरीर, आत्मा और समाज की कीर्ति सदृश सुगंध को बढाने वाले तथा हमें सब प्रकार की पुष्टी एवं सामर्थ्य प्रदान करने वाले हैं। आप ऐसी कृपा करें कि जिस प्रकार पका हुआ खरबूजा अपनी लता से पृथक् हो जाता है उसी प्रकार हम जीव भी आप की उपासना के द्वारा मृत्यु रूपी लता से तो पृथक् हो जावें किन्तु मोक्ष रूपी अमृतत्व से हम कभी पृथक न हों।

पत्नी दक्षिण (दायें) भाग में कब और वाम (बायें) भाग में कब बैठे?

शास्त्रों में लिखा हैं:

कन्यादाने विवाहे च प्रतिष्ठा यज्ञ कर्मणि।
सर्वेषु धर्म कार्येषु पत्नी दक्षिणतः स्मृतः।।

अर्थ : कन्यादान, विवाह, प्रतिष्ठा, यज्ञकर्म इत्यादि धार्मिक कार्यों में पत्नी दक्षिण (दायें) में रहे।

वामे सिन्दूर दाने च वामे चैव द्विरागमने
वामे शयनैक श्यायां भवेत् जाया प्रियार्थिनी।
आर्शीवादे अभिषेके च पाद प्रक्षालने तथा
शयने भोजने चैव पत्नी तूत्तरतो भवेत्।।

अर्थ : सिन्दूर दान्, द्विरागमन के समय, भोजन, शयन व सेवा के समय, आर्शीवाद ग्रहण करते समय, अभिषेक के समय, ब्रह्मणों के पांव धोते समय, पत्नी वाम भाग (बायें) में रहे।

धर्म शास्त्र :

विवाह होने के पश्चात् लडकी अपने माता पिता का दाह संस्कार, दसवां, ग्यारहवां, बारंहवां तथा श्राद्ध भी कर सकती है परन्तु इस बात का ध्यान रखे कि क्रिया करते समय माता, पिता का गोत्र ही प्रयोग में लाना है।

नित्य नियम विधि

प्रातः काल ब्राह्मी मुहूर्त में नीन्द से उठते ही, दोनों हाथों की हथेलियों को देखते हुये पढ़ें:-

कराग्रे वसते लक्ष्मीः कर मध्ये सरस्वती । करमूले स्थितो ब्रह्मा प्रभाते कर दर्शनम्।।

अर्थः- हाथ के अग्रभाग में लक्ष्मी, हाथ के मध्य भाग में सरस्वती और हाथ के मूलभाग में ब्रह्माजी निवास करते हैं।

बिस्तरे से उठने पर यह श्लोक पढ़ें:-

समुद्र वसने देवि पर्वतस्तनं मण्डिते । विष्णु पत्नि नमस्तुभ्यं पादस्पर्शं क्षमस्व मे।।

अर्थः- समुद्ररूपी वस्त्रों को धरण करने वाली, पर्वत रूपस्तनों से शोभायमान भगवान् विष्णु की पत्नी पृथ्वी देवी! आप मेरे पाद-स्पर्श को क्षमा करें।

शौच आदि से निवृत होकर बायां पैर धोते हुए पढ़ें:- **नमोस्त्वनन्ताय सहस्रमूर्तये सहस्रपादाक्षि-शिरोरु बाहवे। सहस्र-नाम्ने पुरुषाय शाश्वते, सहस्रकोटी-युगधारिणे नमः।**

दायां पैर धोते हुए पढें:- **ॐ नमः कमलनाभाय-नमस्ते जल शायिने। नमस्ते केशवानन्त-वासुदेव नमोस्तुते।**

मुंह धोते हुए पढें:- **गंगा, प्रयाग, गयनै मिष पुष्करादि-तीर्थानि, यानि भुवि सन्ति-हरिप्रसादात् आयान्तु तानि करपद्मपुटे मदीये प्रक्षालयन्तु वदनस्य निशाकलंकम्। तीर्थे स्नेयं तीर्थमेव समानानां भवति मा नः शंस्यो अरुरुषो धूर्ति प्राणङ् मर्त्यस्य रक्षाणो ब्रह्मणस्पते।**

मुंह धोकर यज्ञोपवीत धोते हुए तीन बार पढ़ें:- ॐ गायत्र्यै नमः। ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्-वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।।

यज्ञोपवीत गले में फिर से धरण करते हुए पढ़ें:- यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत् सहजं पुरस्तात्-आयुष्यम्-अग्र्यं प्रतिमुंच शुभ्रं, यज्ञोपवीतं बलम्-अस्तु तेजः। यज्ञोपवीतम्-असि यज्ञस्यत्वा-उपवीतेन- उपनह्यामि।।

स्नान इत्यादि करके पूर्व दिशा की ओर मुंह करके धूप, दीप जला कर शुद्ध आसन पर बैठ कर आदि देव-भगवान् गणेश का ध्यान करते हुए पढ़ें:-

प्रातः-स्मरामि-गणनाथम्-अनाथ बन्धुं, सिन्दूर-पूरपरि-शोभित-गण्ड-युग्मम्।
उद्दण्ड-विघ्न-परि-खण्डन-चण्ड-दण्डम्, आखण्ड-लादि-सुरनायक-वृन्द-वन्द्यम्।।

अर्थः- अनाथों के बन्धु, सिन्दूर से शोभायमान दोनों गण्ड-मुकट वाले, प्रबल विघ्न का नाश करने में समर्थ एवं इन्द्रादि देवों से नमस्कार किये हुये श्री गणेश का मैं प्रातः काल स्मरण करता हूँ।

प्रातः-स्मरामि-भवभीति-महार्ति-नाशं, नारायणं-गरुड-वाहनम्-अब्जनाभम्।
ग्राहाभिभूत-वर-वारण-मुक्ति-हेतुं, चक्रायुधं-तरुण-वारिज-पत्र-नेत्रम्।।

अर्थः- संसार के भयरूपी महान् दुःख को नष्ट करने वाले, मगरमच्छ से गजराज को मुक्त करने वाले, चक्रधारी एवं कमलदल के समान नेत्र वाले, पद्मनाभ गरुडवाहन् भगवान् श्री विष्णु का मैं प्रातः काल स्मरण करता हूँ।

प्रातः स्मरामि भव-भीतिहरं-सुरेशं, गङ्गाधारं वृषभ-वाहनम्-अम्बिकेशम्।
खट्वाङ्ग-शूल-वरदा-भय-हस्तम्-ईशं, संसार-रोगहरम्-औषधम्-अद्वितीयम्।।

अर्थः- संसार के भय को नष्ट करने वाले, सुरेश गङ्गाधर, वृषभवाहन, पार्वतीपति हाथ में खट्वाङ्ग एवं त्रिशूल लिये हुये और संसार के रोगों का नाश करने के लिये अद्वितीय औषध-स्वरूप अभय एवं वरद मुद्रा युक्त हस्त वाले भगवान् शिव का मैं प्रातः काल स्मरण करता हूँ।

ब्रह्मा-मुरारिः-त्रिपुरान्तकारी, भानुः-शशी-भूमिसुतो-बुधश्च।
गुरुश्च-शुक्रः-शनि-राहु-केतवः, कुर्वन्तु-सर्वे-मम-सु प्रभातम्।।

अर्थः- ब्रह्मा, विष्णु, शिव, सूर्य, चन्द्रमा, मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनि, राहु और केतु ये सभी मेरे प्रातः काल को मंगलमय करे।

भृगुः वसिष्ठः क्रतुः, अङ्गिगराश्च, मनुः पुलस्त्यः पुलहश्च गौतमः।
रैभ्यो मरीचिः-च्यवनश्च दक्षः, कुर्वन्तु सर्वे मम सुप्रभातम्।।

अर्थः-भृगु, वसिष्ठ, क्रतु, अगिरा, मनु, पुलस्त्य, पुलह, गौतम, रैभ्य, मरीचि, च्यवन और दक्ष-ये सभी मुनिगण मेरे प्रातः काल को मंगलमय करें।

शुक्लाम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतु-र्भुजम्, प्रसन्न वदनं ध्याये, सर्वविघ्नोप-शान्तये।
अभिप्रीतार्थ-सिद्ध्यर्थं पूजितो यः सुरैर्-अपि, सर्वविघ्नच्छिदे तस्मै, गणा-धिपतये नमः।

बिभ्रत्-दक्षिण-हस्तपद्म-युगले, दन्ताक्षसूत्रे शुभे,
वामे मोदक-पूर्णपात्र, परशु नागो-पवीति त्रिदृक्।
श्रीमान्-सिंहयुगासनः श्रुतियुगे, शंखौ वहन् मौलिमान्,
दिश्यात्-ईश्वरपुत्र-ईश भगवान् लम्बोदरः-शर्म-नः॥

सिन्दूर-कुंकुम-हुताशन-विद्रुमार्क, रक्ताब्ज-दाडिम-निभाय-चतु-र्भुजाय।
हेरम्ब-भैरव गणेश्वर-नायकाय, सर्वार्थसिद्धि-फलदाय गणेश्वराय।।

मुख्यं द्वादश-नामानि गणेशस्य महात्मनः। यः पठेत्-तु शिवोक्तानि स लभेत्-सिद्धिम्-उत्तमाम्। प्रथमं वक्रतुण्डं तु, चैकदन्तं द्वितीयकम्, तृतीयं कृष्णपिंगं तु, चतुर्थं च कपर्दिनम्, लम्बोदरं पंचमं तु, षष्ठं विकटम्-एव च, सप्तमं विघ्नराजेन्द्रं, धूम्रवर्णं तथाष्टमं। नवमं भालचन्द्रं तु, दशमं तु विनायकम्, एकादशं गणपतिं, द्वादशं मन्त्र-नायकम्। पठते शृणुते यस्तु, गणेश-स्तवम्-उत्तमं, भार्यार्थी लभते भार्या, धनार्थी विपुलं धनम्। पुत्रार्थी लभते पुत्रम्, मोक्षार्थी परमं पदम्, इच्छाकामं तु कामार्थी, धर्मार्थी धर्मम्-अक्षयम्।। सुमुखैश्चैक-दन्तश्च, कपिलो गजकर्णकः, लम्बोदरश्च विकटो, विघ्नराजो गणाधिपः। धूम्र-केतु-गणाध्यक्षो, भालचन्द्रो गजाननः, द्वादशै-स्तानि-नामानि, गणेशस्य महात्मनः, य पठेत्-शृणुयात्-वापि स लभेत् सिद्धिम्-उत्तमाम्। विद्यारम्भे, विवाहे च, प्रवेशे निर्गमे तथा संग्रामे संकटे चैव, विघ्नस्तस्य न जायते।।

गणपति स्तोत्रम्

जेतुं यस्त्रिपुरं हरेण हरिणा व्याजाद्बलिं बध्नता
स्त्रष्टुं वारिभवोद्भवेन भुवनं शेषेण धर्तुं धराम्।
पार्वत्या महिषासुर प्रमथने सिद्धाधिपैः सिद्धये।
ध्यातः पंचशरेण विश्वजितये पायात्स नागाननः।।

अर्थः त्रिपुरासुर को जीतने के लिये शिव ने, बलि को छल से बाँधते समय विष्णु ने, जगत् को रचने के लिये ब्रह्मा ने, पृथ्वी धारण करने के लिए शेषनाग ने, महिषासुर को मारने के समय पार्वती ने, सिद्धि पाने के लिए सिद्धों के अधिपतियों (सपकादि ऋषियों) ने और सब संसार को जीतने के लिये कामदेव ने जिन गणेश जी का ध्यान किया है, वे हम लोगों को पालन करें।

विघ्न ध्वान्त निवारर्णै कतरणिर्विघ्नाट वीह व्यवाड्
विघ्न व्यालकुलाभिमान गरुडो विघ्नेभ पंचाननः।
विघ्नोतुङ्ग गिरि प्रभेदनम विर्विघ्नाम्बु धेर्वाडवो
विघ्नाघोघ घनप्रचण्ड, पवनो विघ्नेश्वरः पातु नः।।

अर्थः विघ्नरूप अन्धकार का नाश करने वाले एकमात्र सूर्य, विघ्नरूप वन के जलाने वाले अग्नि, विघ्नरूप सर्पकुल का दर्प नष्ट करने के लिये गरुड, निघ्नरूप हाथी को मारने वाले सिंह, विघ्नरूप ऊँचे पहाड़ के तोड़ने वाले वज्र, विघ्नरूप महासागर के वडवानल, विघ्नरूपी मेघ-समूह को उड़ा देने वाले प्रचण्ड वायुसदृश गणेश जी हम लोगों को

पालन करें।

खर्वं स्थूलतनुं गजेन्द्रवदनं लम्बोदरं सुन्दरं, प्रस्यन्दन-मदगन्धलुब्ध-मधुप-व्यालोल-गण्डस्थलम्।
दन्ताघात विदारितारि रुधिरैः सिन्दूर शोभाकरं, वन्दे शैलसुतासुतं गणपतिं सिद्धिप्रदं कामदम्।।

अर्थः जो नाटे और मोटे शरीर वाले हैं, जिनका गजराज के सम्मान मुँह और लंबा उदर है, जो सुन्दर हैं तथा बहते हुए मद की सुगंन्ध के लोभी भौंरों के चाटने से जिनका गण्डस्थल चपल हो रहा है, दाँतों की चोट से विदीर्ण हुए शत्रुओं के खून से जो सिन्दूर की सी शोभा धारण करते हैं, कामनाओं के दाता और सिद्धि देने वाले उन पार्वती के पुत्र, गणेश जी की मैं वन्दना करता हूँ।

श्वेताङ्ग श्वेतवस्त्रं सितकुसुमगणैः पूजितं श्वेतगन्धैः, क्षीराब्धौ रत्नदीपैः सुरनरतिलकं रत्नसिंहासनस्थम्।
दोर्भिः पाशाङ्कुशब्जा भयवरमनसं चन्द्रमौलिं त्रिनेत्रं, ध्ययायत्-शान्त्यर्थमीशं गणपतिम्-अमलं श्रीसमेतं प्रसन्नम्।।

अर्थः जिनका शरीर श्वेत है, कपड़े श्वेत हैं, श्वेत फूल, चन्दन और रत्नदीपों से क्षीर समुद्र के तट पर जिनकी पूजा हुई हैं, देवता और मनुष्य जिनको अपना प्रधान पूज्य समझते हैं, जो रत्न के सिंहासन पर बैठे हैं, जिनके हाथों में पाश (एक प्रकार की डोरी), अंकुश और कमल के फूल हैं, जो अभयदान और वरदान देने वाले हैं, जिनके सिर में चन्द्रमा रहते हैं और जिनके तीन नेत्र हैं, निर्मल लक्ष्मी के साथ रहने वाले उन प्रसन्न प्रभु गणेश जी का, अपनी शान्ति के लिये ध्यान करें।

आवाहये तं गणराजदेवं रक्तोत्पलाभासम् अशेषवन्द्यम्।,
विघ्नान्तकं विघ्नहरं गणेशं भजामि रौद्रं सहितं च सिद्ध्या।।

अर्थः जो देवताओं के गण के राजा हैं, लाल कमल के समान जिनके देह की शोभा है, जो सबके वन्दनीय हैं, विघ्न के काल हैं, विघ्न के हरने वाले हैं, शिवजी के पुत्र हैं, उन गणेश जी का मैं सिद्धि के साथ आवाहन और भजन करता हूँ।

यं ब्रह्म वेदान्तविदो वदन्ति परं प्रधानं पुरुषं तथान्ये।
विश्वोद्गतेः कारणमीश्वरं वा तस्मै नमो विघ्नविनाशनाय।।

अर्थः जिनको वेदान्ती लोग ब्रह्म कहते हैं और दूसरे लोग परम प्रधान पुरुष अथवा संसार की सृष्टि के कारण या ईश्वर कहते हैं, उन विघ्नविनाशक गणेश जी को नमस्कार है।

विघ्नेश वीर्याणि विचित्रकाणि वन्दीजनैमार्गधकैः स्मृतानि।
श्रुत्वा समुत्तिष्ठ गजानन त्वं ब्राह्मे जगन्मङ्गलकं कुरुष्व।।

अर्थः हे विन्घेश! हे गजानन ! मागध और वन्दीजनों के मुख से गाये जाते हुए अपने विचित्र पराक्रमों को सुनकर, ब्राह्ममुहूर्त में उठो और जगत् का कल्याण करो।

गणेश हेरम्ब गजाननेति महोदर स्वानुभवप्रकाशिन्।
वरिष्ठ सिद्धिप्रिय बुद्धिनाथ वदन्त एवं त्यजत प्रभीतीः।।

अर्थः हे गणेश! हे हेरम्ब ! हे गजानन ! हे लम्बोदर! हे अपने अनुभव से प्रकाशित होने वाले। हे श्रेष्ठ ! हे सिद्धि के प्रियतम ! हे बुद्धिनाथ! ऐसा कहते हुए, हे मनुष्यो ! अपना भय छोड़ दो।

अनेकविघ्नान्तक वक्रतुण्ड स्वसंज्ञवासिंश्च चतुर्भुजेति।
कवीश देवान्तक नाशकारिन् वदन्त एवं त्यजत प्रभीतीः।।

अर्थः 'हे अनेक विघ्नों का नाश करने वाले! हे वक्रतुण्ड ! हे गणेश आदि अपने नाम वालों में भी निवास करने वाले! हे चतुर्भुज! हे कवियों के नाथ! हे दैत्यों का नाश करने वाले!' ऐसा कहते हुए, हे मनुष्यों! अपने भय को भगा दो।

अनन्तचित्-रूपमयं गणेशं ह्यभेदभेदादि विहीनम्-आद्यम्।
हृदि प्रकाशस्य धरं स्वधीस्थं तमेकदन्तं शरणं व्रजामः।।

अर्थः जो गणेश अनन्त हैं, चेतनरूप हैं, अभेद और भेद आदि से रहित और सृष्टि के आदि कारण हैं, अपने हृदय में जो सदा प्रकाश धरण करते हैं तथा अपनी ही बुद्धि में स्थित रहते हैं, उन एकदन्त गणेश जी की शरण में हम जाते हैं।

विश्वादिभूतं हृदि योगिनां वै प्रत्यक्षरूपेण विभान्तमेकम्।
सदा निरालम्ब समाधिगम्य तमेकदन्तं शरणं व्रजामः।।

अर्थः जो संसार के आदि कारण हैं, योगियों के हृदय में अद्वितीय रूप से साक्षात् प्रकाशित होते हैं और निरालम्ब समाधि के द्वारा ही जानने योग्य हैं, उन एकदन्त गणेश की शरण में हम जाते हैं।

यदीयवीर्येण समर्थभूता माया तया संरचितं च विश्वम्।
नागात्मकं ह्यात्मतया प्रतीतं तमेकदन्तं शरणं व्रजामः।।

अर्थः जिनके बल से माया समर्थ हुई है और उसके द्वारा यह संसार रचा गया है, उन नागस्वरूप तथा आत्मरूप से प्रतीत होने वाल एकदन्त गणेश जी की शरण में हम जाते हैं।

सर्वान्तरे संस्थितम्-एक मूढं यदाज्ञया सर्वमिदं विभाति।
अनन्तरूपं हृदि बोधकं वै तमेकदन्तं शरणं व्रजामः।।

अर्थः जो सब लोगों के अन्तःकरण में अकेले गूढ़भाव से स्थित रहते हैं, जिनकी आज्ञा से यह जगत् विराजमान है, जो अनन्तरूप हैं और हृदय में ज्ञान देने वाले हैं, उन एकदन्त गणेश की शरण में हम जाते हैं।

यं योगिनो योगबलेन साध्यं कुर्वन्ति तं कः स्तवनेन नौति।
अतः प्रणामेन सुसिद्धिदोऽस्तु तमेकदन्तं शरणं व्रजामः।।

अर्थः जिनको योगीजन योगबल से साध्य करते (जान पाते) हैं, स्तुति से उनका वर्णन कौन कर सकता है? इसलिये हम उनको केवल प्रणाम करते हैं कि हमें सिद्धि दें, उन प्रसिद्ध एकदन्त की शरण में हम जाते हैं।

देवेन्द्र मौलिमन्दार मकरन्द कणारुणाः, विघ्नान् हरन्तु हेरम्ब चरणाम्बु जरेणवः।।

अर्थः जो इन्द्र के मुकुट में गुँथे हुए मन्दार कुसुमों के मकरन्द कणों से लाल हो रही है, वह गणेश जी के चरण-कमलों की रज विघ्नों का हरण करे।

एकदन्तं महाकायं लम्बोदर गजाननम्।, विघ्ननाशकरं देवं हेरम्बं प्रणमाम्यहम्।।

अर्थः एक दाँत वाले, बड़े शरीर स्थूल उदर वाले, हाथी के समान मुख वाले और विघ्नों का नाश करने वाले गणेश देव को मैं प्रणाम करता हूँ।

यदक्षरं पदं भ्रष्टं मात्राहीनं च यद्भवेत्।, तत्सर्वं क्षम्यतां देव प्रसीद परमेश्वर।।

अर्थः हे देव! जो अक्षर, पद अथवा मात्रा छूट गयी हो, उसके लिये क्षमा करो और हे परमेश्वर! प्रसन्न होओ।

गणेश स्तुतिः

आयसय शरण करतम क्षमा, ओं श्री गणेशाये नमः।
गणपत गणेश्वर हे प्रभो, कलिराज़ राज़न हुन्द विभो।।

पज़ि लोलु पादन तल नमः, ओं श्री गणेशाये नमः।
गुडनी च्यय छुय आधिकार, कलिकालकुय चुय ताजदार।

पजि़ लोल पादन तल प्यमा, ओं श्री गणेशाये नमः।
मूषक च़्य वाहन शूभवुन, त्रन लूकनय मंज फेरवुन,
सहायक म्य रोज़तम हर दमः, ओं श्री गणेशाये नमः।
यज्ञस ज़पस व्यवहारसय, गुड्ड छिय सुरान प्रथकारसय,
कारस अनान छुख चय जमः, ओं श्री गणेशाये नमः।
सुन्दर लम्बोदर एक दन्त, स्मरन चाञ वंतिन म्ये अन्द।
रति वेल, सुन्दर छुम समः, ओं श्री गणेशाये नमः।
स्मरन यि चोनी यिम करान, भवुसागरस अपोर तरान,
रट्‌अ सानि नावे चुय नमा, ओं श्री गणेशाये नमः।
स्मरन यि चानी भक्ति जन, पूरण गछान तम्यसुन्द छु प्रन,
चरणोदकुक अमृत चमा, ओं श्री गणेशाये नमः।

ज़गतुक महेश्वर च्य पिता, सति रूप सीति धर्मुच सत्ता,
माता च़्य गौरी श्री वुमा, ओं श्री गणेशाये नमः।
बाह नाव सुन्दर शूभुवुञ, स्वर्गस गछान तिम बोलुवुञ,
पूरण करुम पूरण तमा, ओं श्री गणेशाये नमः।
आमुत भक्त च़्येय छुय शरण, प्योमुत खोरन तल छुय परण,
वर दिय कास्तम चुय गमा, ओं श्री गणेशाये नमः।
सुबह प्यठ भखत, छिय लारान, प्रेम पोश ह्यय छिय प्रारान,
छुयख च्यानि पूजि लागनुक तमा, ओं श्री गणेशाये नमः।
गणिशबल प्यठ आख चलिथय, अंग अंग स्यंदरा मलिथय,
गोअड़ बोअज म्यन प्रार्थना, ओं श्री गणेशाये नमः।

आरती गणेश जी

जय गणेश, जय गणेश, जय गणेश देवा। माता जाकी पार्वती, पिता महादेवा।।
एक दंत दयावंत, चार भुजा धारी। मस्तक पर सन्दूर सोहे, मूसे की सवारी।।
जय गणेश, जय गणेश, जय गणेश देवा। माता जाकी पार्वती, पिता महादेवा।।

अंधन को आंख देत, कोढ़िन को काया। बांझन को पुत्र देत निर्धन को माया।
जय गणेश, जय गणेश, जय गणेश देवा। माता जाकी पार्वती, पिता महादेवा॥
हार चढ़े, फूल चढ़े और चढ़े मेवा। लड्डुअन का भोग लगे, संत करे सेवा॥
जय गणेश, जय गणेश, जय गणेश देवा। माता जाकी पार्वती, पिता महादेवा॥

गणेश स्तुति

हेमजा सुतं भजे गणेशं ईश नन्दनम्। एकदन्त वक्र तुण्ड नाग यज्ञ सूत्रकम्।।
रक्त गात्र धूम्र नेत्र शुक्ल वस्त्र मण्डितम्। कल्पवृक्ष भक्त रक्ष नमोस्तुते गजाननम्।।
पाशपाणि चक्रपाणि मूषकाधि रोहिणम्। अग्निकोटि सूर्य ज्योति वज्रकोटि पर्वतम्।।
चित्रमाल भक्तिज़ाल भालचन्द्र शोभितम्। कल्पवृक्ष भक्तरक्ष नमोस्तुतेगजाननम्।।
विश्ववीर्य विश्वसूर्य विश्वकर्म निर्मलम्। विश्वहर्ता विश्वकर्ता यत्र तत्र पूजितम्।।
चतुर्मुखं चतुर्भुजं सेवितं चतुर्युगम्। कल्पवृक्ष भक्तरक्ष नमोस्तुतेगजाननम्।।
भूत भव्य हव्य कव्य भर्गो भार्गव वन्दितम्। देव वह्नि काल जाल लोकपाल वन्दितम्।।
पूर्ण ब्रह्म सूर्यवर्ण पुरुषं पुरान्तकम्। कल्पवृक्ष भक्तरक्ष नमोस्तुतेगजाननम्।।

ऋद्धि बुद्धि अष्टसिद्धि नव निधान दायकम्। यज्ञकर्म सर्वधर्म सर्व वर्ण अर्चितम्।।
भूतधूत दुष्ट मुष्ट दान्वै सर्दार्चितम्। कल्पवृक्ष भक्तरक्ष नमोस्तुतेगजाननम्।।
हर्ष रूप वर्ष रूप पुरुष रूप वन्दितम्। शोर्प कर्ण रक्त वर्ण रक्त चन्दन लेपितम्।।
योग इष्ट योग सृष्ट योग दृष्टि दायकम्। कल्पवृक्ष भक्तरक्ष नमोस्तुतेगजाननम्।।

शंकर पूजन

भगवान् शंकर पर जल चढ़ाते हुए पढ़ें:- असंख्याताः सहस्राणि ये रुद्रा अधि-भूम्याम्। तेषां सहस्त्रयोजनेव धन्वानि तन्मसि ।1। यो रुद्रो अग्नौ य अप्सु य औषधीषु यो वनस्पतिषु। यो रुद्रो विश्वा भुवना विवेश तस्मै रुद्राय नमो अस्तु देवाः ।2। भवायदेवाय शर्वायदेवाय रुद्रायदेवाय पशुपतयेदेवाय उग्रायदेवाय महादेवाय भीमायदेवाय ईशानायदेवाय पार्वती-सहिताय परमेश्वराय जलं समर्पयामि नमः।

नेत्र स्पर्श करते हुए पढें:- तेजोरूप ! महेशान ! सोमसूर्याग्निलोचन प्रकाशय परंतेजो नेत्रस्पर्शेन शंकर ! भवायदेवाय उमा-सहिताय शिवाय पार्वती-सहिताय परमेश्वराय नेत्रस्पर्श परिगृहणामि नमः।

तिलक लगाते हुये पढ़ें:- **सर्वेश्वर जगद्वन्द्य** दिव्यासनसुसंस्थित। गन्धं गृहाण देवेश दिव्यगन्धोपशोभितम्।
भवाय देवाय उमा-सहिताय शिवाय पार्वती-सहिताय परमेश्वराय समालभनं गन्धो नमः।

फूल चढ़ाते हुए पढ़ें:- सदाशिव शिवानन्द प्रधान करणेश्वर। पुष्पाणि बिल्वपत्राणि विचित्राणि गृहाण मे।
भवाय देवाय उमा सहिताय शिवाय पार्वती सहिताय परमेश्वराय पुष्पं समर्पयामि नमः।

रत्नदीप कपूर चढ़ाते हुए पढ़ें:- हिरण्यबाहो सेनानीः औषधीनां पते शिव। दीपं गृहाण कर्पूर कपिलाज्य त्रिवर्तिकम्। भवाय देवाय उमा-सहिताय शिवाय पार्वती-सहिताय परमेश्वराय रत्नदीपं कर्पूरं परिकल्पयामि नमः।

दोनों हाथों में पुष्पांजलि पकड़ते हुए निम्नलिखित तीन श्लोक पढ़कर फूल चढ़ावें-

आत्मा त्वं गिरिजामतिः सहचराः प्राणः शरीरं गृहं,
पूजा ते विषयोपभोगरचना निद्रा समाधि स्थितिः।
संचारः पदयोः प्रदक्षिणविधि स्तोत्राणि सर्वा गिरो,
यत् यत् कर्म करोमि तत्तदखिलं शम्भो तवाराधनम् ।।1।।

अर्थः *हे शम्भो ! मेरी आत्मा तुम ही हो, मेरी बुद्धि तुम्हारी शक्तिरूपिणी पार्वती है, मेरे प्राण (अपान समान आदि) तुम्हारे साथी है, मेरा शरीर तुम्हारा घर या मन्दिर है, विषय भोग के लिये जो मेरे व्यापार होते हैं वही तुम्हारी पूजा है, मेरी जो निद्रा है वही तुम्हारी समाधि की स्थिति है, मेरे पाँवों का चलना तुम्हारी प्रदक्षिणा है, मैं जो कुछ बोलता हूँ सब तुम्हारा स्तोत्र है, सारांश यह है कि मैं कोई कर्म करता हूँ सभी तुम्हारी आराधना है।*

पुष्पाणि सन्तु तव देव ममेन्द्रियाणि, धूपो गुरु र्वपुरिदं हृदयं प्रदीपः।
प्राणान् हविषि करणानि नवाक्षतानि, पूजाफलं व्रजतु साम्प्रतमेष जीवः ।।2।।

अर्थः- हे शम्भो ! मेरे सभी ज्ञानेन्द्रिय आपके पूजा के फूल बनें, यह मेरा शरीर धूप का काम दे, मेरा हृदय तुम्हारी पूजा में दीप का स्थान ले, मेरे प्राण तुम्हारे पूजा रूपी यज्ञ में आहुति का काम दें, मेरे कर्मन्द्रिय अक्षत (पूजा के लिये बिना किसी जखम के चावल) का काम दें, हे भगवन् ! मेरा यह जीवात्मा अभी उत्तम पूजा के फल को प्राप्त हो।

जन्मानि सन्तु मम देव शताधिकानि, माया च मे विशतु चित्तमऽबोध हेतु।
किन्तु क्षणार्धमपि त्वच्चरणारबिन्दात्, मा पैतु मे हृदयमीश नमो नमस्ते ।।3।।

अर्थः इस स्तुति में भक्त भगवान् शंकर से पूजा का फल यह नहीं माँगता है कि मेरा आवामगन छूट जाये, अपितु बार-बार जन्म लेने की मुझे परवाह नहीं, मेरे सैकड़ों जन्म होने दीजिये, मैं यह नहीं माँगता हूँ तेरे चित्त से अज्ञान के कारण बना हुआ माया का पर्दा छिन्न-भिन्न हो जाये, बल्कि वह माया बिना किसी रोक-टोक के मेरे चित्त में प्रवेश करे, केवल आपसे प्रार्थना है आपके चरण कमल आधे क्षण के लिये भी मेरे चित्त से न निकले, हे भगवान् शंकर ! आपको बार-बार नमस्कार हो।

अभिनवगुप्त कृत शिवस्तुतिः

ॐ व्याप्त-चराचर-भाव-विंशेषं, चिन्मयम्-एकम्-अनन्तम्-अनादिम्।
भैर-व-नाथम्-अनाथ-शरण्यम्- तन्मय-चित्ततया-हृदि वन्दे ।।1।।

अर्थः- मैं अभिनवगुप्त मन की एकाग्रता से उस शंकर की हृदय में वन्दना करता हूँ जो शंकर अखिल चराचर सृष्टि से ओत प्रोत है। जो ज्ञान रूप है, अनन्त है भैरवों का स्वामी है और अनाथों को शरण देने वाला है।

त्वन्मयम्-एतत्-अशेषम्-इदानीं, भाति मम त्वत्-अनुग्रह शक्त्या,

त्वं च महेश सदैव ममात्मा, स्वात्ममयं मम तेन समस्तम् ।।2।।

अर्थः- *यह चराचर सृष्टि आप का ही रूप है, ऐसा मुझे आप की अनुग्रहशक्ति से प्रतीत होता है, परन्तु हे शंकर मेरी आत्मा ही आप हैं, अतः यह सारा जगत् मेरा ही रूप है, ऐसा भी मैं अनुभव करता हूँ।*

स्वात्मनि-विश्वगते त्वयि नाथे, तेन न संसृति-भीतेः कथास्ति।

सत्-स्वपि दुर्धर-दुःख विमोह, त्रास-विधायिषु कर्म-गणेषु ।।3।।

अर्थः- *हे नाथ! भयंकर दुःख मोह उत्पन्न करने वाले कर्मों के जाल में फंसे हुये, आप के भक्त इस भावना से कि विश्व आप का ही रूप है अतः वे संसार के क्षणिक दुःखों से डरते नहीं हैं, क्योंकि डर अथवा भय तब होता है ज़ब दूसरा हो, जब आप के बिना कोई दूसरा है ही नहीं तो डर कहाँ "भयं द्वितीयात्"।*

अन्तक मां प्रति मा दृशम्-एनां, क्रोध-कराल-तमां विदधीहि।

शंकर-सेवन-चिन्तन-धीरो, भीषण-भैरव-शक्ति-मयोस्मि।।4।।

अर्थः- हे यमराज! क्रोध से कराल भयंकर दृष्टि से मेरी ओर न देख, जबकि मैं हर समय शंकर सेवन के चिन्तन में लगा रहता हूँ जिस सेवा चिन्तन से मैं भैरवशक्ति का पुंज बना हूँ अतः आप की यह कराल क्रोधभरी दृष्टि मेरा कुछ बिगाड़ नहीं सकती है।

इत्थम्-उपोढ-भवन्मय-संवित्, दीधिति-दारित-भूरि-तमिस्रः।

मृत्यु-यमान्तक कर्म-पिशाचैः, नाथ ! नमोस्तु न जातु बिभेमि ।।5।।

अर्थः- हे शंकर सब कुछ आप का ही रूप है ऐसी संवित् के जागृत होने से मेरा अज्ञानरूपी अन्धकार नष्ट हो चुका है, अतः मैं यमराज के परिवार भूत पिशाच आदि से डरता नहीं हूँ, हे नाथ मेरा आप को बार-बार नमस्कार हो।

प्रोदित-सत्य-विबोध-मरीचि, प्रोक्षित-विश्व-पदार्थ-सतत्वः।
भाव-परामृत-निर्भरपूर्णे, त्वय्यहम्-आत्मनि निर्वृतिम्-एमि ।।6।।

अर्थः- हे शंकर! आप के सत्यज्ञानरूप किरणों से विश्व के पदार्थ तथा सभी तत्व सिंचित अथवा हरकत में है। ऐसे ही इस ज्ञान के प्रकट होने पर मैं श्रद्धा के अमृत से परिपूर्ण आप के ही स्वरूप भूत अपने ही आत्मा में परमानन्द का अनुभव करने लगता हूँ।

मानस-गोचरम्-एति-यदैव, क्लेश-तनु-ताप-विधात्री।
नाथ ! तदैव मम-त्वत्-अभेद, स्तोत्र-परामृत-वृष्टिर्-उदेति ।।7।।

अर्थः- शरीर के ताप को उत्पन्न करने वाली कष्ट की दशा को जब मैं मन से महसूस करने लगता हूँ, उसी समय मेरे अन्दर आप के अनुग्रह से प्राप्त अभेद वृष्टि का उदय होता है, जिस के प्रभाव से मैं किसी प्रकार का कष्ट अनुभव नहीं करता हूँ।

शंकर ! सत्यम्-इदं व्रत-दान, स्नान-तपो-भव-ताप-विनाशि।
तावक-शास्त्र-परामृत-चिन्ता, सिध्यति चेतसि-निर्वृति-धारा।।8।।

अर्थः- हे शंकर ! यद्यपि व्रत-दान-तप से संसार के दुःखों का नाश होता है, शैवशास्त्र के चिन्तनमात्र से ही मन में अमृत की धारायें प्रवाहित होने लगती हैं।

नृत्यति गायति हृष्यति गाढं, संवित्-इयं मम भैरवनाथ।
त्वां प्रियं आप्य सुदर्शनम्-एकं, दुर्लभम्-अन्यजनैः समयज्ञम्।।9।।

अर्थः- हे मेरे भैरवनाथ ! मेरी दृढ़ संवित् यज्ञादिकों से अप्राप्य आप के अलौकिक दर्शन प्राप्त करके कभी नाचती है, कभी गायन करती है, कभी हर्ष का अभिनय करती है।

वसु-रस-पौषे कृष्ण-दशम्यां, अभिनव-गुप्तः स्तवम्-इमम्-अकरोत्।
येन विभु-भव-मरु-सन्तापं, शमयति झटिति जनस्य दयालुः ।।10।।

अर्थः- भक्तों पर दयालु आध्यात्मिक बलवाले अभिनवगुप्त ने सम्वत् 68 पौष कृष्ण दशमी को यह शंकर स्तुति की है जिस के उच्चारण, श्रवण, मनन से क्षणमात्र में दयालु शंकर संसार रूपी मरुस्थल के दुःखों का नाश करता है।

शिव संकल्प (यजुर्वेद से)

यत्-जाग्रतो-दूरम्-उदेति दैवं, तदु सुप्तस्य तथैव्-ऐति।
दूरं-गमं ज्योतिषां ज्योतिर्-एकं, तन्मे मनः शिव-संकल्पम्-अस्तु ।।1।।

अर्थः- जो मन जागते हुये मनुष्य का दूर चला जाता है, और सोते हुये का निकट आ जाता है, जो परमात्मा के साक्षात्कार का एकमात्र साधन है, जो ज्ञानेन्द्रियों का प्रकाशक और प्रवर्तक है, मेरा वह मन शिव, (कल्याणकारी) संकल्प वाला हो।

येन कर्मा-ण्यपसो मनीषिणो, यज्ञे कृण्वन्ति विदथेषु धीराः।
यत्-अपूर्वं यक्षम्-अन्तः प्रजानां, तन्मे मनः शिव संकल्पम्-अस्तु ।।2।।

अर्थः- कर्मयोगी विद्वान् जिस मन के द्वारा हर कर्म को यज्ञ के ढाँचे में डालते हैं, जो इन्द्रियों का अध्यक्ष है, जो समस्त प्रजा के हृदय में निवास करता है, वह मेरा मन शिव संकल्प वाला हो।

यत्-प्रज्ञानम्-उत चेतो धृतिश्च, यत्-ज्योतिर्-अन्तर्-अमृतं प्रजासु।
यस्मात्-न ऋते किंचन कर्म क्रियते, तन्मे मनः शिवसंकल्पम्-अस्तु ।।3।।

अर्थः- जो मन ज्ञान का कारण है जो धैर्यरूप है, जो समस्त प्रजा के हृदय में रह कर उन की इन्द्रियों को प्रकाशित करता है, जो मृत्यु होने पर भी अमर रहता है, जिस के बिना कोई भी कर्म किया नहीं जाता है वह मेरा मन शिवसंकल्प वाला हो।

येनेदं भूतं भुवनं भविष्यत्, परिगृहीतम्-अमृतेन सर्वम्।
येन यज्ञस्तायते सप्तहोता, तन्मे मनः शिव-संकल्पम्-अस्तु ॥4॥

अर्थः- जिस अमृतरूप मन के द्वारा भूत-भविष्य वर्तमान की सभी वस्तुयें जानी जाती हैं जिस के द्वारा सात होता वाला शरीर रूपी यज्ञ सम्पन्न होता है मेरा वह मन शिवसंकल्प वाला हो (सात होताः- पांच ज्ञानेन्द्रिय मन और बुद्धि)।

यस्मिन्-ऋचः साम यजूँषि यस्मिन्, प्रतिष्ठिता-रथनाभौ-इवाराः।
यस्मिन्-चितं सर्वम्-ओतं प्रजानां, तन्मे मनः शिव-संकल्पम्-अस्तु ॥5॥

अर्थः- जिस मन में रथचक्र की नाभि में अरियों के समान वेद प्रतिष्ठित है, जिस में सब पदार्थों से सम्बन्ध रखने वाला सम्पूर्ण ज्ञान ओत प्रोत है, मेरा वह मन शिवसंकल्प वाला हो।

सुषा-रथिर्-अश्वान्-इव, यन्मनुष्यान्, नेनीयते-अभीशुभिर्-वाजिनः इव।
हृत्प्रतिष्ठं यत्-अजिरं जविष्ठं, तन्मे मनः शिव-संकल्पम्-अस्तु ॥6॥

अर्थः- योग्य सारथि जैसे घोड़ों का संचालन करता है और लगाम के द्वारा घोड़ों का नियन्त्रण करता है, वैसे ही प्राणियों का संचालन तथा नियन्त्रण करने वाला हृदय में रहने वाला कभी बूढा-न होने वाला, अधिक तेज भागने वाला मेरा मन शिव संकल्प वाला हो।



शीतांशु-शुभ्र कलया कलितो-त्तमाङ्गं, ध्यान स्थितं धरणिभृत्-तनयार्चितं तम्।
काला-नलोप-महला हल-कृष्ण कण्ठं, श्री शंकरं कलिमलापहरं नमामि॥

अर्थः- सुन्दर चन्द्रमा की शुभ्रकला से आप का शिरो भाग शोभित है, पर्वतराज हिमालय की कन्या पार्वती जी स्वयं ही आप की पूजा अर्चा करती है, संसार को जलन से बचाने के लिये कालानल के समान महा भीषण हलाल पी जाने से आप का कण्ठ काला हो गया है, इस कलिकाल का मल दूर करने में आप अपना सानी नहीं रखते, ऐसे ध्यान में मग्न आप शंकर को मेरा प्रणाम्।

गायन्ति यस्य चरितानि महात्-भुतानि, पद्मोद्-भवोद्-भवमुखाः सततं मुनीन्द्राः।
ध्यायन्ति यं यमिनम्-इन्दु-कलावतं सं, सन्तः समाधि-निरतास्तम् अहं नमामि।।

अर्थः- आप के अत्यन्त अद्भुत चरितों का गान ऐसे-वैसे नहीं, नारदादि बड़े-बड़े महामुनि तक किया करते हैं, साधु शिरोमणि योगीश्वर भी समाधि लगा कर आप ही का ध्यान करते रहते हैं ऐसे आप शंकर को पुनरपि मेरा प्रणाम्।

त्रैलोक्यम्-एतत्-अखिलं ससुरासुरंच, भस्मीभवेत्-यदि न यो दययार्द्र देहः।
पीत्वाऽहरद्गरलम्-आशु भयं तदुत्थं, विश्वा-वनैक-निरताय-नमोस्तु-तस्मै।।

अर्थः- हे शंकर! आप बड़े ही दयालु हैं, आप की दया सीमा रहित है, जब समुद्र मन्थन से हलाहल निकलने पर उस की आग असह्य हो गई, तब उस कालकूट का पान स्वयं करके तीनों लोकों को जल जाने से बचा लिया, संसार की रक्षा का इतना ख्याल रखने वाले आप के चरणों में मैं अपना सिर रखता हूँ।

नो शक्यम्-उग्र तपसापि युगान्तरेण, प्राप्तुं यद्-अन्य सुर पुङ्गवतस्तदेव।
भक्त्या सकृत्प्रणम्-अनेन-सदा-ददाति, यो नौमि नम्रशिरसा च तमाशुतोषम्।।

अर्थः- युग-युगान्त-पर्यन्त तपस्या करने पर भी जो फल प्राप्ति भक्तों को अन्य सुर पुङ्गवों से भी नहीं हो सकती, वही आप को भक्ति भावपर्वूक प्रणाम मात्र करने से आप के सच्चे भक्तों को सुलभ हो जाती है, क्योंकि आप आशुतोष हैं (अर्थात् थोड़ी सेवा से प्रसन्न होने वाले) मैं आप के सामने अपना सिर झुकाता हूँ।

भूति प्रियोऽपि वितरत्यनिशं विभूतिं, भक्ताय यः फणिगणानपि धारयन् सन्।
हन्ति प्रचण्ड भव भीम भुजङ्ग भीतिं, तस्मै नमोस्तु सततं मम शंकराय।।

अर्थः- *आप स्वयं ही विभूति-प्रिय हैं, वह प्यारी वस्तु विभूति अपने भक्तों को रोज ही लुटाया करते है, स्वयं आप महा भंयकर नागों के कण्ठे और मालायें आदि धारण करते है उधर आप ही जन्म-मरण रूपी भीम भुजङ्ग के भय से अपने सेवकों की रक्षा करते हैं हे मेरे शंकर ! आप को मेरा नमस्कार।*

येषां भयेन विबुधा रजनी चराणां, नो तत्यजुर्हिम-महीध्र-गुहा गृहाणि।
हत्वा ददौ गिरिश तानपि शैव धाम, त्वत्तः परोऽस्ति परमेश्वर को दयालुः।।

अर्थः- *हे शंकर! जरा उन राक्षसों का स्मरण कर जो इतने पराक्रमी हो गये थे कि वह देवों का तरह-तरह से उत्पीड़न करने लगे थे यहां तक कि देवता उन के भय से हिमालय की गुफाओं में छिपे रहते थे। ऐसे अत्याचारी और पापी राक्षसों को भी मार कर आप ने पुण्य लोक भेज दिया, क्या आप से कोई अधिक दयालु देवता कहीं है? आप यथार्थ में परमेश्वर हैं।*

पाप प्रसाधनरता दितिजा अपीन्द्रं, सद्यो विजित्य सुरधाम-धराधिपत्यम्।
यस्य प्रसादलवलेश-वशादवाप्ताः, तस्मै ममास्तु विनतिः परमेश्वराय।।

अर्थः- *लंकेश्वरादि राक्षस पुण्यात्मा नहीं थे वे महा उत्पातकारी और पापिष्ठ थे परन्तु आप का सच्चा सेवक होने के कारण महेन्द्र को जीतकर देव लोक के अधीश्वर बन बैठे, आप से बढकर मुझे कोई परम ऐश्वर्यशाली और कोई देवता दिख नहीं पड़ता, मेरी विनती स्वीकार कर।*

अर्चा कृता न तव नाम हर स्मृतन्न, नो भक्तवत्सल कृतं तव किंचिदन्यत्।
वीक्ष्य स्वपादकमलोपनतं तथापि, माम् पाहि कारुणिक-मौलिमणे महेश।।

अथः- मैं पापी आप से किस मुंह से कुछ याचना करूं, मैंने कभी भूल कर भी आप की अर्चना नहीं की है, कभी भूल से भी आप का नाम नहीं लिया है, कभी भूल कर भी आप की कोई सेवा नहीं की है, फिर भी यह देख कर कि मैं आप के चरणों पर पड़ा हूँ और नाक रगड़ रहा हूँ आशा है आप मुझ पर भी कृपा करेंगे, क्योंकि आप आशुतोष होकर परम भक्त वत्सल भी हैं।

शंकर प्रार्थना

प्रणतोस्मि महादेव, प्रपन्नोस्मि सदाशिव, निवारय महामृत्युं, मृत्युंजय नमोस्तुते।
मृत्युंजय महादेव, पाहि मां शरणागतम्, जन्ममृत्यु-जरारोगैः, पीडितं भवबन्धनात्।।
कर्पूर-गौरं करुणावतारं, संसार-सारं भुजगेन्द्र-हारम्।
सदा रमन्तं हृदयारबिन्दं, भवं भवानी सहितं नमामि।।
हर शम्भो महादेव, विश्वेशामरवल्लभ। शिव शंकर सर्वात्मन्, नीलकण्ठ नमोस्तुते।
तव तत्त्वं न जानामि, कीदृशोसि महेश्वर, यादृशोसि महादेव, तादृशाय नमो नमः।।
आधीनाम्-अगदं दिव्यं, व्याधीनां मूलकृन्तनम्, उपद्रवाणां दलनं, महादेवम्-उपास्महे।
आत्मा त्वं गिरजा मतिः, परिजनाः प्राणाः शरीरं गृहं ।
पूजा ते विषयो-पभोगरचना निद्रा समाधि स्थितिः।

लिंगाष्टकम्

ब्रह्मा मुरारिः सुरार्चित लिंगं, निर्मल-भासित-शोभित-लिंगम्।
जन्मज-दुःख-विनाशक-लिंगं, तत्प्रणमामि सदा शिव-लिंगम् ।।1।।

अर्थ : जो लिंग स्वरूप ब्रह्मा, विष्णु एवं समस्त देव गणों द्वारा पूजित तथा निर्मल कान्ति से सुशोभित है और जो लिङ्ग जन्मजन्य दुःख का विनाशक है उस सदाशिव-लिङ्ग को मैं प्रणाम करता हूँ।

देव-मुनि-प्रवरा-र्चितलिंगं, कामदहं करुणाकर-लिंगम्।
रावण-दर्प-विनाशित-लिंगं, तत्प्रणमामि सदाशिवलिंगम् ।।2।।

अर्थ : जो शिव लिङ्ग श्रेष्ठ देवगण एवं ऋषियों द्वारा पूजित, कामदेव को नष्ट करने वाला करुणा की खानि, रावण के घमण्ड को नष्ट करने वाला है उस सदाशिव-लिङ्ग को मैं प्रणाम करता हूँ।

सर्व-सुगन्धि सुलोपित-लिंगं, बुद्धिविवर्धन-कारण-लिंगम्।
सिद्ध-सुरासुर-वंदित-लिंगं, तत्प्रणमामि सदाशिव-लिंगम् ।।3।।

अर्थ : जो शिव-लिङ्ग सभी दिव्य सुगन्धि से सुलेपित, बुद्धि भृद्धिकारक समस्त सिद्ध देवता एवं असुरगणों से वन्दित है उस सदाशिव-लिङ्ग को मैं प्रणाम करता हूँ।

कनक-महामणि-भूषित-लिंगं, फणिपति-वेष्टित-शोभित-लिंगम्।
दक्ष-सुयज्ञ-विनाशक लिंगं, तत्प्रणमामि सदाशिव-लिंगम् ॥4॥

अर्थ : माणिक्यादि महामणियों से सुशोभित तथा नागराज द्वारा लिपटे होने से अत्यन्त सुशोभित है और (अपने श्वसुर) दक्ष यज्ञ का विनाशक है उस सदाशिव-लिङ्ग को मैं प्रणाम करता हूँ।

कुंकम-चंदन-लेपितलिंगं, पंकज-हार-सुशोभित-लिंगम्।
संचित-पाप-विनाशन-लिंगं, तत्प्रणमामि सदाशिव-लिंगम् ॥5॥

अर्थ : सदाशिव का लिङ्ग रूप कुंकुम, चन्दन आदि से पुता हुआ है, दिव्य कमल की माला से सुशोभित और अनेक जन्म-जन्मान्तर के संचित पापों को नष्ट करने वाला है उस सदाशिव-लिङ्ग को मैं प्रणाम करता हूँ।

देव-गणार्चित सेवित लिंगम्, भावेर्भक्तिभिरेव च लिंगम्।
दिन-कर-कोटि-प्रभा-कर लिंगम्, तत्प्रणमामि सदाशिव-लिंगम् ॥6॥

अर्थ : भाव भक्ति द्वारा समस्त देव गणों से पूजित एवं सेवित करोडों सूर्यों की तेज़ कान्ति से युक्त उस भगवान् सदाशिव-लिङ्ग को मैं प्रणाम करता हूँ।

अष्ट-दलोपरि वेष्टित-लिंगं, सर्व-समुद्-भव-कारण-लिंगम्।
अष्ट-दरिद्र-विनाशित-लिंगम्, तत्प्रणमामि सदाशिव-लिंगम् ।।7।।

अर्थ : अष्ट दल कमल से लिपटा हुआ सदाशिव का लिंग रूप सभी चराचर की उत्पति का कारण एवं अष्ट दरिद्रों का विनाशक है। उस सदाशिव-लिङ्ग को मैं प्रणाम करता हूँ।

सुरगुरु-सुरवर-पूजित-लिंगम्, सुरवन-पुष्प-सदा-र्चित-लिंगम्।
परात्परं-परमात्मक-लिंगम्, तत्प्रणमामि सदाशिव-लिंगम् ।।8।।

अर्थ : जो शिव रूप लिङ्ग देव गुरु बृहस्पति एवं देव श्रेष्ठ इन्द्रादि के द्वारा पूजित, निरन्तर नन्दन वन के दिव्य पुष्पों द्वारा अर्चित परात्पर एवं परमात्मा स्वरूप है उस सदाशिव-लिङ्ग को मैं प्रणाम करता हूँ।

घर में सुख शांति के लिए इस मन्त्र का उच्चारण हर समय करते रहें।

ॐ नमः शम्भवाय च, मयोभवाय च, नमः शंकराय च,
मयस्कारय च नमः शिवाय च, शिवतराय च।।

शिव मानस पूजा

रत्नैः कल्पितमासनं हिम जलैः
स्नानं च दिव्याम्बरं
नाना रत्न विभूषितं मृगमदा
मोदाङ्कितं चन्दनम्।
जाती चम्पक बिल्व पत्र रचितं
पुष्पं च धूपं तथा
दीपं देव दयानिधे पशुपते
हृत्कल्पितं गृह्यताम्।।

अर्थ : हे दयानिधे ! हे पशुपते ! हे देव ! यह रत्ननिर्मित सिंहासन, शीतल जल से स्नान, नाना रत्नावलिविभूषित दिव्य वस्त्र, कस्तूरिका गन्ध समन्वित चन्दन, जुही, चम्पा और बिल्वपत्र से रचित पुष्पांजलि तथा धूप और दीप यह सब मानसिक पूजोपहार ग्रहण कीजिये।

सौवर्णे नव रत्न खण्ड रचिते
पात्रे घृतं पायसं
भक्ष्यं पञ्चविधं पयोदधियुतं
रम्भाफलं पानकम्।
शाकानामयुतं जलं रुचिकरं
कर्पूर खण्डोज्ज्वलं
ताम्बूलं मनसा मया विरचितं
भक्त्या प्रभो स्वीकुरु।।

अर्थ : मैं ने नवीन रत्न खण्डों से रचित सुर्वणपात्र में घृतयुक्त खीर, दूध और दधि सहित पांच प्रकार का व्यञ्जन, कदलीफल, शर्बत, अनेकों शाक, कपूर से सुवासित और स्वच्छ किया हुआ मीठा जल और ताम्बूल - ये सब मन के द्वारा ही बनाकर प्रस्तुत किये हैं प्रभो ! कृपया इन्हें स्वीकार कीजिये।

छत्रं चामरयोः युगं व्यजनकं
चादर्शकं निर्मलं
वीणा भेरि-मृदङ्गका-हलकला
गीतं च नृत्यं तथा।

साष्टाङ्गं प्रणतिः स्तुति र्बहुविधा
ह्येतत्समस्तं मया
सङ्कल्पेन समर्पितं तव विभो
पूजां गृहाण प्रभो।।

अर्थ : छत्र, दो चंवर, पंखा, निर्मल दर्पण, वीणा, भेरी, मृदंग, दुन्दुभी के वाद्य, गान और नृत्य, साष्टाङ्ग प्रणाम, नानाविधि स्तुति, ये सब मैं संकल्प से ही आप को समर्पण करता हूँ, प्रभो! मेरी यह पूजा ग्रहण कीजिये।

आत्मा त्वं गिरिजा मति सहचराः
प्राणाः शरीरं गृहं

पूजा ते विषयोपभोग रचना
निद्रा समाधिस्थितिः।
सञ्चारः पदयोः प्रदक्षिणविधिः
स्तोत्राणि सर्वा गिरो
यत् यत् कर्म करोमि तत् तत् अखिलं
शम्भो तवाराधनम्।।

अर्थ : हे शम्भो! मेरी आत्मा तुम हो, बुद्धि पार्वती जी है, प्राण आप के गण हैं, शरीर आप का मन्दिर है, सम्पूर्ण विषय भोग की रचना आप की पूजा है, निद्रा समाधि है मेरा चलना फिरना आप की परिक्रमा है तथा सम्पूर्ण शब्द आप के स्तोत्र हैं, इस प्रकार मैं जो जो भी कर्म करता हूँ वह सब आप की आराधना ही है।

कर चरण कृतं वाक् कायजं कर्मज वा
श्रवण नयनजं वा मानसं वापराधम्।
विहितम् अविहितं वा सर्वमेतत्क्षमस्व
जय जय करुणाब्धो श्री महादेव शम्भो।।

अर्थ : हे शंकर! मैं ने हाथ, पैर, वाणी, शरीर, कर्म, कर्ण, नेत्र अथवा मन से जो भी अपराध किये हों, वे विहित हो या अविहित, उन सब को आप क्षमा कीजिये। हे करुणासागर श्री महादेव शंकर! आप की जय हो।

नमो नमः कारण कारणाय मृत्युंजयायात्म भव स्वरूपिणे।
श्री त्र्यम्बकायासितकण्ठ शर्व! गौरीपते सकलमंगल हेतवे नमः।।

अर्थ : जो कारणों के भी कारण, मृत्युंज तथा स्वम्भूरूप हैं, उन्हें नमस्कार है। हे त्र्यम्बक! हे असितकण्ठ ! हे शर्व! हे गौरीपते! आप सम्पूर्ण मंगलों के हेतु हैं आपको नमस्कार है।

श्री मृत्युञ्जयस्तोत्रम्

रत्नसानु-शरासनं रजताद्रि-शृङ्गनिकेतनं
सिञ्जिनीकृत-पन्नगेश्वरम्-अच्युतानल-सायकम्।
क्षिप्र-दग्धा-पुरत्रयं त्रिदशालयैर-भिवन्दितं
चन्द्रशेखरमाश्रये मम किं करिष्यति वै यमः।।1।।

अर्थ : कैलास शिखर पर जिस का निवास गृह है, जिन्हों ने मेरु गिरि का धनुष, नाग राज वासुकि की प्रत्यञ्चा (धनुष की डोरी) और भगवान् विष्णु को अग्निमय बाण बना कर तत्काल ही दैत्यों के तीनां पुरों को दग्ध कर डाला था, सम्पूर्ण देवता जिन के चरणों की वन्दना करते हैं उन भगवान् चन्द्रशेखर की मैं शरण लेता हूँ यमराज मेरा क्या करेगा?

पञ्चपादप-पुष्पगन्धि-पदाम्बुजद्वय-शोभितं

भाललोचन-जातपावक-दग्धमन्मथ-विग्रहम्।

भस्मदिग्ध-कलेवरं भव-नाशिनं भवम्-अव्ययं

चन्द्रशेखरं आश्रये मम किं करिष्यति वै यमः।।2।।

अर्थ : मन्दार, पारिजात, संतान, कल्पवृक्ष और हरिचन्दन इन पांच दिव्य वृक्षों के पुष्पों से सुगन्धित युगल चरण कमल जिन की शोभा बढाते हैं, जिन्हों ने अपने ललाटवर्ती नेत्र से प्रकट हुई आग की ज्वाला में कामदेव के शरीर को भस्म कर डाला था, जिन का शरीर सदा भस्म से विभूषित रहता है जो सब की उत्पति के कारण होते हुये भी संसार के नाशक हैं तथा जिन का कभी विनाश नही होता, उन भगवान् चन्द्रशेखर की मैं शरण लेता हूँ यमराज मेरा क्या करेगा ?

मत्तवारण-मुख्यचर्म-कृतोत्तरीय-मनोहरं

पङ्कजासन-पद्मलोचन-पूजिताङ्घ्रि-सरोरुहम्।

देवसिद्ध-तरङ्गिणीकर-सिक्त-शीतजटाधरं

चन्द्रशेखरमाश्रये मम किं करिष्यति वै यमः।।3।।

अर्थ : जो मतवाले गजराज के मुख्य चर्म की चादर ओढ़े परम मनोहर जान पडते हैं, ब्रह्मा और विष्णु भी जिन के चरण कमलों की पूजा करते हैं तथा जो देवताओं और सिद्धों की नदी गंगा की तरङ्गों से भीगी हुई शीतल जटा धारण करते हैं उन भगवान् चन्द्रशेखर की मैं शरण लेता हूँ यमराज मेरा क्या करेगा?

कुण्डलीकृत-कुण्डलीश्वर-कुण्डलं वृषवाहनं

नारदादि-मुनीश्वर-स्तुत-वैभवं-भुवनेश्वरम्।

अन्धकान्तक-माश्रिता-ऽमरपादपं-शमनान्तकं

चन्द्रशेखरमाश्रये मम किं करिष्यति वै यमः।।4।।

अर्थ : गोलाकार बनाये हुये सर्पराज जिन के कानों में कुण्डल का काम देते हैं, जो वृषभ पर सवारी करते हैं, नारद आदि मुनीश्वर जिन के वैभव की स्तुति करते हैं, जो समस्त भुवनों के स्वामी, अन्धकासुर का नाश करने वाले, आश्रित जनों के लिये कल्पवृक्ष के समान और यमराज को भी शान्त करने वाले हैं उन भगवान् चन्द्रशेखर की मैं शरण लेता हूँ यमराज मेरा क्या करेगा?

यक्ष-राजसखं भगाक्षि-हरं भुजङ्ग-विभूषणं

शैल-राजसुता-परिष्कृत-चारुवाम-कलेवरम्।

क्ष्वेडनीलगलं परश्वध-धारिणं मृगधारिणं

चन्द्रशेखरमाश्रये मम किं करिष्यति वै यमः।।5।।

अर्थ : जो यक्षराज कुबेर के सखा हैं, जो भग देवता की आंख फोडने वाले और सर्पों के आभूषण धारण करने वाले हैं जिन के शरीर के सुन्दर वाम भाग को गिरिराज किशोरी उमा ने सुशोभित कर रखा है, कालकूट विष पीने के कारण जिन का कण्ठभाग नीले रंग का दिखाई देता है जो एक साथ में फरसा (तेज़ और चौडी धार की कुलाहाडी) और दूसरें में मृग लिये रहते हैं, उन भगवान् चन्द्रशेखर की मैं शरण लेता हूँ यमराज मेरा क्या करेगा?

भेषजं भवरोगिणाम-खिलापदाम-पहारिणं

दक्षयज्ञ-विनाशिनं त्रिगुणात्मकं-त्रि-विलोचनम्।

भुक्ति-मुक्ति-फलप्रदं निखिलाघ-संघनिबर्हणं

चन्द्रशेखरमाश्रये मम किं करिष्यति वै यमः।।6।।

अर्थ : जो जन्म-मरण के रोग से ग्रस्त पुरुषों के लिये औषध रूप हैं समस्त आपत्तियों का निवारण और दक्ष यज्ञ का विनाश करने वाले हैं सत्व आदि तीनों गुण जिन के स्वरूप हैं जो तीन नेत्र धारण करते, भोग और मोक्षरूपी फल देते तथा सम्पूर्ण पापराशि का संहार करते हैं उन भगवान् चन्द्रशेखर की मैं शरण लेता हूँ यमराज मेरा क्या करेगा?

भक्त-वत्सलम-र्चतां निधिम-क्षयं-हरिदम्बरं

सर्वभूत-पतिं-परात्परम-प्रमेयम-नूपमम्।

भूमिवारिन-भोहुताशन-सोमपा-लितस्वाकृतिं

चन्द्रशेखरमाश्रये मम किं करिष्यति वै यमः।।7।।

अर्थ : जो भक्तों पर दया करने वाले हैं अपनी पूजा करने वाले मनुष्यों के लिये अक्षय निधि होते हुये भी जो स्वयं दिगम्बर रहते हैं जो सब भूतों के स्वामी, परात्पर अप्रेमय और उपमा रहित हैं पृथ्वी जल, आकाश, अग्नि और चन्द्रमा के द्वारा जिन का शरीर सुरक्षित है उन भगवान् चन्द्रशेखर की मैं शरण लेता हूँ यमराज मेरा क्या करेगा?

विश्वसृष्टि-विधायिनं पुनरेव पालन-तत्परं
संहरन्तमथ प्रपञ्चम-शेषलोक-निवासिनम्।
क्रीडयन्तम-हर्निशं गणनाथयूथ-समावृतम्
चन्द्रशेखरमाश्रये मम किं करिष्यति वै यमः।।8।।

अर्थ : जो ब्रह्मा रूप से सम्पूर्ण विश्व की सृष्टि करते फिर विष्णु रूप से सब के पालन में संलग्न रहते और अन्त में सारे प्रपञ्च का संहार करते हैं सम्पूर्ण लोक में जिन का निवास है तथा जो गणेश जी के पार्षदों से घिर कर दिन रात भांति भांति के खेल किया करते हैं उन भगवान् चन्द्रशेखर की मैं शरण लेता हूँ यमराज मेरा क्या करेगा?

रुद्रं पशुपतिं स्थाणुं नीलकण्ठम् उमापतिम्।
नमामि शिरसा देवं किं नो मृत्युः करिष्यति।।9।।

अर्थ : 'रु' अर्थात् दु:ख को दूर करने के कारण जिन्हें रुद्र कहते हैं जो जीव रूप पशुओं का पालन करने से पशुपति, स्थिर होने से स्थाणु, गले में नीला चिह्न धारण करने से नीलकण्ठ और भगवती उमा के स्वामी होने से उमापति नाम धारण करते हैं उन भगवान् शिव को मैं मस्तक झुकाकर प्रणाम करता हूँ यमराज मेरा क्या करेगा?

कालकण्ठं कलामूर्तिं कालाग्निं काल नाशनम्।
नमामि शिरसा देवं किं नो मृत्युः करिष्यति।।10।।

अर्थ : जिन के गले कें काला दाग है, जो कलामूर्ति, कालाग्नि स्वरूप और काल के नाशक हैं उन भगवान् शिव को मैं मस्तक झुकाकर प्रणाम करता हूँ मृत्यु मेरा क्या कर लेगी ?

नीलकण्ठं विरूपाक्षं निर्मलं निरुपद्रवम्।
नमामि शिरसा देवं किं नो मृत्युः करिष्यति।।11।।

अर्थ : जिन का कण्ठ नील और नेत्र विकराल होते हुये भी जो अत्यन्त निर्मल और उपद्रव रहित है, उन भगवान् शिव को मैं मस्तक झुकाकर प्रणाम करता हूँ मृत्यु मेरा क्या कर लेगी ?

वामदेवं महादेवं लोकनाथं जगद् गुरुम्।

नमामि शिरसा देवं किं नो मृत्युः करिष्यति।।12।।

अर्थ : जो वामदेव, महादेव, विश्वनाथ और जगद्गुरु नाम धारण करते हैं उन भगवान् शिव को मैं मस्तक झुकाकर प्रणाम करता हूँ मृत्यु मेरा क्या कर लेगी ?

देवदेवं जगन्नाथं देवेशमृषभध्वजम्।

नमामि शिरसा देवं किं नो मृत्युः करिष्यति।।13।।

अर्थ : जो देवताओं के भी आराध्यदेव, जगत् के स्वामी और देवताओं पर भी शासन करने वाले हैं जिन की ध्वजा पर वृषभ का चिह्न बना है उन भगवान् शिव को मैं मस्तक झुकाकर प्रणाम करता हूँ मृत्यु मेरा क्या कर लेगी ?

अनन्तमव्ययं शान्तमक्षमालाधरं हरम्।

नमामि शिरसा देवं किं नो मृत्युः करिष्यति।।14।।

अर्थ : जो अनन्त, अविकारी, शान्त, रुद्राक्षमालाधारी और सब के दु:खों का हरण करने वाले हैं उन भगवान् शिव को मैं मस्तक झुकाकर प्रणाम करता हूँ मृत्यु मेरा क्या कर लेगी ?

आनन्दं परमं नित्यं कैवल्यपदकारणम्।
नमामि शिरसा देवं किं नो मृत्यु: करिष्यति।।15।।

अर्थ : जो परमानन्द स्वरूप नित्य एवं मोख की प्राप्ति के कारण हैं, उन भगवान् शिव को मैं मस्तक झुकाकर प्रणाम करता हूँ मृत्यु मेरा क्या कर लेगी ?

स्वर्गापवर्गदातारं सृष्टिस्थित्यन्त कारिणम्।
नमामि शिरसा देवं किं नो मृत्यु: करिष्यति।।15।।

अर्थ : जो स्वर्ग और मोक्ष के दाता तथा सृष्टि पालन और संहार के कर्ता हैं उन भगवान् शिव को मैं मस्तक झुकाकर प्रणाम करता हूँ मृत्यु मेरा क्या कर लेगी ?

सरस्वती वंदना

श्वेत-पद्मासना देवी श्वेत-पुष्पोप-शोभिता। श्वेताम्बर-धरा नित्या श्वेत-गन्धानु लेपना।।
श्वेताक्षी शुक्ल वस्त्रा च श्वेत-चन्दन-चर्चिता। वरदा सिन्धु-गन्धर्वैः ऋषिभिः स्तूयते सदा।।
स्तोत्रेणाऽनेन तां देवीं जगद्धात्रीं सरस्वतीम्। ये स्तुवन्ति त्रिकालेषु सर्वविद्या लभन्ति ते।।
या देवी स्तूयते नित्यं ब्रह्मेन्द्र-सुर-किन्नरैः। सा ममैवाऽस्तु जिह्वाग्रे पद्महस्ता सरस्वती।।

शिवपञ्चाक्षरस्तोत्रम्

नागेन्द्र हाराय त्रिलोचनाय, भस्माङ्गरागाय महेश्वराय।
नित्याय शुद्धाय दिगम्बराय, तस्मै 'न'काराय नमः शिवाय।1।

अर्थः जिस के गले में सांपों का हार है, जिस के तीन नेत्र है, भस्म ही जिस का अनुलेपन है, दिशायें जिस के वस्त्र हैं (अर्थात् जो नग्न है) उस शुद्ध 'न' कार स्वरूप शिव को नमस्कार हो।

मन्दाकिनी-सलिल-चन्दन-चर्चिताय, नन्दीश्वर-प्रमथनाथ-महेश्वराय।
मन्दारपुष्प-बहुपुष्प-सुपूजिताय, तस्मै 'म'काराय नमः शिवाय।2।

अर्थः गंगा जल और चन्दन से जिस की पूजा हुई है, मन्दार पुष्प तथा नाना प्रकार के फूलों से जिस की पूजा हुई है उन नन्दी के अधिपति, शिव के गणों के स्वामी 'मकर' स्वरूप शिव को नमस्कार हो।

शिवाय-गौरी-वन्दनाब्ज-वृन्द, सूर्याय-दक्षाऽध्वर-नाशकाय।

श्रीनीकलण्ठाय वृषध्वजाय, तस्मै 'शि'काराय नमः शिवाय।3।

अर्थः पार्वती जी के मुख कमल को प्रसन्न करने के लिये जो सूर्य स्वरूप है जो दक्ष के यज्ञ का नाश करने वाले हैं जिन की ध्वजा में बैल का चिन्ह है उस 'शि'कार स्वरूप शिव को नमस्कार हो।

वसिष्ठ-कुम्भोद्भव-गौतमार्य, मुनीन्द्र-देवाऽर्चित-शेखराय।

चन्द्रार्क-वैश्वानर-लोचनाय, तस्मै 'व'काराय नमः शिवाय।4।

अर्थः वसिष्ठ, अगस्त्य और गौतम आदि श्रेष्ठ मुनियों तथा इन्द्रादि देवताओं ने जिन की मस्तक की पूजा की है चन्द्रमा, सूर्य और अग्नि जिन के नेत्र हैं उन 'व' कार स्वरूप शिव को नमस्कार है।

यक्षस्वरूपाय जटाधराय, पिनाकहस्ताय सनातनाय।

दिव्याय देवाय दिगम्बराय, तस्मै 'य'काराय नमः शिवाय।5।

अर्थः जिन्होंने यक्षरूप धारण किया है, जो जटाधारी हैं जिन के हाथ में पिनाक हैं जो दिव्य सनातन पुरुष हैं उस 'य' कार स्वरूप शिव को नमस्कार है।

पंचाक्षरम्-इदिं पुण्यं यः पठेत्-शिव-सन्निधौ।

शिवलोकम्-अवाप्नोति-शिवेन-सह-मोदते।।

शिव षडक्षरस्तोत्राम

ॐकारं बिन्दुसंयुक्तं नित्यं ध्यायन्ति योगिनः।
कामदं मोक्षदं चैव ॐकाराय नमो नमः।1।

अर्थ : जो अर्घ चन्द्र बिन्दु से संयुक्त 'ॐकार' स्वरूप है योगी जन जिन का निरन्तर ध्यान करते हैं एवं जो समस्त मनोरथों को प्रदान करने वाले और मोक्षदाता हैं ऐसे 'ॐकार' स्वरूप शिव को बारम्बार नमस्कार है।

नमन्ति ऋषयो देवा, नमन्ति-अप्सरसां गणाः।
नरा नमन्ति देवेश 'न'काराय नमो नमः।2।

अर्थ : जिस देवेश की ऋषि गण तथा देवतागण एवं सभी अप्सरा गण और मनुष्य स्तुति करते हैं ऐसे 'न' काररूप शिव को मेरा बारम्बार नमस्कार है।

महादेवं महात्मानं महाध्यानं परायणम्
महापापहरं देवं 'म' काराय नमो नमः।3।

अर्थ : जो उदार स्वभाव वाले महान् आत्मा तथा जो बडे से बडे पाप को नष्ट करने वाले महान् ध्यानपरायण, अखण्ड समाधि में स्थित रहने वाले महादेव शिव हैं ऐसे 'म' कार स्वरूप शिव को मेरा नमस्कार है।

शिवं-शान्तं-जगन्नाथं, लोका-नुग्रह-कारकम्।
शिवमेकपदं नित्यं 'शि' काराय नमो नमः।4।

अर्थ : जो समस्त लोक पर अनुग्रह करने वाले एकमात्र शिव स्वरूप कल्याणकारी, शान्तस्वरूप, जगत के स्वामी हैं ऐसे एक पदी 'शि' काररूप भगवान् शिव को नित्य नमस्कार है।

वाहनं वृषभो यस्य वासुकिः कण्ठभूषणम्।
वामे शक्तिधरं देवं 'व' काराय नमो नमः।5।

अर्थ: जिन का वाहन वृषभ है और नागराज वासुकि जिन के कण्ठ का आभूषण है तथा जिन के वाम-भाग में शक्ति स्वरूपा उमा स्थित है ऐसे 'व' काररूप शिव को नमस्कार है।

यत्र यत्र स्थितो देवः सर्वव्यापी महेश्वरः।
यो गुरुः सर्वदेवानां 'य' काराय नमो नमः।6।

अर्थ : जो देव मेहश्वर सभी देवताओं के गुरु हैं तथा सर्व व्यापी है ऐसा कोई स्थान नहीं जहां वे स्थित न हों ऐसे 'य' कार स्वरूप शिव को नमस्कार है।

षड्-अक्षरं-इदं-स्तोत्रं-यः-पठेत्-शिव-सन्निधौ
शिव-लोकं-अवाप्नोति,शिवेन-सह-मोदते ।7।

अर्थ : जो भक्त शिव के समीप छः अक्षर वाले स्तोत्र का श्रद्धा पूर्वक पाठ करता है वह शिवलोक को प्राप्त होता है और शिव के साथ परम आनन्द का उपभोग करता है।

प्रातः स्मरामि भवभीतिहरं सुरेशं
गंगाधरं वृषभवाहनं अम्बिकेशम्।।
खट्वांग शूल वरदा भय हस्तमी शं
संसार रोग हरम् औषधमद्वितीयम्।।

अर्थ : जो सांसारिक भय को हरने वाले और देवताओं के स्वामी हैं, जो गंगा जी को धारण करतें हैं, जिन का वृषभ वाहन है जो अम्बिका के ईश हैं तथा जिन के हाथ में खट्वांग, त्रिशूल और वरद तथा अभयमुद्रा है उन संसार रोग को हरने के निमित्त अद्वितीय औषध रूप 'ईश' शंकर को मैं प्रातः स्मरण करता हूँ।

श्री रुद्राष्टकम्

नमामि-ईशं-ईशान-निर्वाण-रूपं,
विभुं-व्यापकं-ब्रह्म-वेद-स्वरूपम्।
अजं-र्निगुणं-निर्विकल्पं-निरीहं,
चिदा-कारम्-आकाशवासं-भजेऽहम्।।

अर्थ : हे शंकर ! मैं मुक्ति स्वरूप, समर्थ, सर्वव्यापक, ब्रह्म, वेद स्वरूप निज स्वरूप में स्थित, र्निगुण, निर्विकल्प, निरीह, अनन्त ज्ञानमय और आकाश के समान सर्वत्र व्याप्त प्रभु को प्रणाम करता हूँ।

निराकांर-ओंकार-मूलं-तुरीयं,
गिरा-ज्ञान-गोतीतं-ईशं-गिरीशम्।
करालं-महाकाल-कालं-कृपालं,
गुणा-गार-संसार-पारं-नतोऽहम।।

अर्थ : जो निराकार है, ओंकार रूप आदि कारण है तुरीय (ज्ञान की अवस्था) है वाणी, बुद्धि और इन्द्रियों के पथ से परे हैं, कैलास नाथ हैं, विकराल और महाकाल के भी काल, कृपाल (कृपालु) गुणों के आगार और संसार से तारने वाले हैं उन भगवान् को मैं नमस्कार करता हूँ।

तुषाराद्रि-सङ्काश-गौरं-गभीरं,
मनो भूत-कोटि-प्रभाश्री-शरीरम्।
स्फुरन-मौलि-कल्लोलिनी-चारु-गङ्गा,
लसत्-भाल-बालेन्दु-कण्ठे-भुजङ्गा।।

अर्थ : जो हिमालय के समान श्वेतवर्ण, गम्भीर और करोडों कामदेवों के समान कान्तिमान शरीर वाले हैं जिन के मस्तक पर मनोहर गंगा जी लहरा रही है ललाट पर छोटा चन्द्रमा सुशोभित होता है और गले में सर्पो की माला शोभा देती है।

चलत्-कुण्डलं-भुसुनेत्रं-विशालं-
प्रसन्नाननं-नीलकण्ठं-दयालम्।।
मृगाधीश-चर्माम्बर-मुण्डमालं,
प्रियं-शङ्करं-सर्वनाथं-भजामि।।

अर्थ : जिन के कानों में कुण्डल हिल रहे हैं जिन के नेत्र एवं भृकुटि सुन्दर और विशाल है, जिन का मुख प्रसन्न और कण्ठ नील है जो बडे ही दयालु हैं जो बाघ के चर्म का वस्त्र और मुण्डों की माला पहनते हैं उन सर्वाधीश्वर प्रियतम शिव का मैं भजन करता हूँ।

प्रचण्डं-प्रकृष्टं-प्रगल्भं-परेशं,
अखण्डं-अजं-भानु-कोटि-प्रकाशम्।
त्रयः-शूल-निर्मूलनं-शूल-पाणिं,
भजेऽहं-भवानीपतिं-भाव-गम्यम्।।

अर्थ : जो प्रचण्ड, सर्वश्रेष्ठ, प्रतिभाशाली, परमेश्वर, पूर्ण, अजन्मा, कोटि सूर्य के समान प्रकाशमान, त्रिभुवन के शूलनाशक और हाथ में त्रिशूल धारण करने वाले हैं उन भावगम्य भवानीपति का मैं भजन करता हूँ।

कलातीत-कल्याण-कल्पान्त-कारी,
सदा-सज्जना-नन्ददाता-पुरारिः।
चिदानन्द-सन्दोह-मोहाप-हारी,
प्रसीद-प्रसीद-प्रभो-मन्मधारिः।।

अर्थ : हे प्रभो ! आप कला रहित, कल्याणकारी और

दु:खों का अन्त करने वाले हैं। आप सर्वदा सत्पुरूषों को आनन्द देते हैं आप ने त्रिपुरासुर का नाश किया था, आप मोहनाशक और ज्ञानानन्दघन परमेश्वर हैं कामदेव के शत्रु हैं आप मुझपर प्रसन्न हो प्रसन्न हो।

न-यावत्-उमानाथ-पादार-विन्दं,
भजन्तीह-लोके-परे-वा-नराणाम्
न-तावत्-सुखं-शान्ति-सन्ताप-नाशं,
प्रसीद-प्रभो-सर्व-भूताधिवासं।।

अर्थ : मनुष्य जब तक उमाकान्त महादेव जी के चरण कमलों का भजन नही करते हैं उन्हें इसलोक या परलोक में कभी सुख तथा शान्ति की प्राप्ति नही होती है और न उन का सन्ताप ही दूर होता है समस्त भूतों के निवासस्थान भगवान् शिव! आप मुझ पर प्रसन्न हों।

न जानामि योगं जपं नैव पूजां,
नतोऽहं सदा सर्वदा शंभु तुभ्यं।
जरा जन्म दु:खौघ तातप्यमानं,
प्रभो पाहि आपन्नमाम् ईश शंभो।।

अर्थ : हे प्रभो! हे शम्भो ! हे ईश ! मैं योग, जप और पूजा कुछ भी नहीं जानता। मैं सदा सर्वदा आप को नमस्कार करता हूँ। जरा, जन्म और दु:ख समूह से सन्तप्त होते हुये मुझ दु:खी की दु:ख से आप रक्षा कीजिये।

रुद्राष्टकं-इदं-प्रोक्तं, विप्रेण हर तुष्टये।
ये पठन्ति नरा-भक्त्या, तेषां शम्भु: प्रसीदति।।

अर्थ : जो मनुष्य भगवान् शंकर की तुष्टि के लिये ब्राह्मण द्वारा किये हुये इस 'रुद्राष्टक' का भक्तिपूर्वक पाठ करते हैं उन पर शंकरजी प्रसन्न होते हैं।

घर में सुख शांति के लिए इस मन्त्र का उच्चारण हर समय करते रहें।

ॐ नमः शम्भवाय च, मयोभवाय च, नमः शंकराय च,
मयस्कारय च नमः शिवाय च शिवतराय च।।

शिव स्तुतिः

असित गिरि सम स्यात् कज्जलं सिन्धुपात्रे,
सुरतरुवर-शाखा-लेखिनी-पत्रम्-उर्वी।
लिखति यदि गृहीत्वा शारदा सर्व कालं,
तदपि तव गुणानाम् ईश पारं न याति।। ।।1।।
वन्दे देवम् उमापतिं सुरगुरुं, वन्दे जगत् कारणम्,
वन्दे पन्नगभूषणं मृगधरं, वन्दे पशूनाम् पतिम्।
वन्दे सूर्य्यशशांक-वह्नि नयनम्-वन्दे मुकुन्द-प्रियम्।
वन्दे भक्तजनाश्रयं च वरदं वन्दे शिवं शंकरम्।।2।।

शान्तं पद्मासनस्थं शशधर-मुकुटं, च वक्त्रं त्रिनेत्रं,
शूलं वज्रं च खड्गपरशुमभयदं, दक्षिणाङ्गे वहन्तम्।
नागं पाश च घण्टां डमरुक सहितं, सां कुशं वामभागे,
नानालंकार युक्तं स्फटिक-मणिनिभं, पार्वतीशं नमामि। ।।3।।
श्मशानेष्वा क्रीडा स्मरहर पिशाचाः सहचराः,
चिताभस्मालेपः स्रगपि नृकरोटी परिकरः।
अमङ्गल्यं शीलं तव भवतु नामैवम् अखिलम्,
तथापि स्मर्तृणां वरद परमं मङ्गलमसि। ।।4।।
पापोऽहं पाप कर्माहं पापात्मा पाप सम्भवः,
त्राहि मां पार्वती नाथ सर्व पाप हरो भव। ।।5।।

शिव-चामर-स्तुतिः

ॐ अतिभीषण कटुभाषण यमकिङ्कर पटली, कृत-ताडन-परिपीडन-मरणागम-समये।
उमया सह मम चेतसि यमशासन निवसन्, शिवशङ्कर शिवशङ्कर हर से हर दुरितम्।।1।।

अतिदुर्नय चटुलेन्द्रिय रिपु-सञ्चय दलिते, पविकर्कश कटुजल्पित खलगर्हण-चलिते।
शिवया सह ममचेतसि शशिशेखर निवसन्, शिवशङ्कर शिवशङ्कर हर में हर दुरितम्।।2।।
भव भञ्जन सुर-रञ्जन खलवञ्चन पुरहन्, दनुजान्तक मदनान्तक रतिजान्तक भगवन्।
गिरिजावर करुणाकर परमेश्वर भयहन्, शिवशङ्कर शिव शङ्कर हर में हर दुरितम्।।3।।
शक्रशासन कृतशासन चतुराश्रम विषये, कलिविग्रह भवदुर्ग्रह रिपुदुर्बल समये।
द्विज-क्षत्रिय-वनिता शिशुदर कम्पित हृदये, शिवशङ्कर शिवशङ्कर हर में हर दुरितम्।।4।।
भवसम्भव विविधामय परिपी-डितवपुषं, दयितात्मज ममताभर-कलुषी-कृत-हृदयम्।
करु मां निजचरणार्चन निरतं भव सततं, शिवशङ्कर शिवशङ्कर हर में हर दुरितम्।।5।।

आरती शंकर जी

जय शिव ओंकारा, भज जय शिव ओंकारा।
ब्रह्मा विष्णु सदाशिव, अर्द्धंगी धारा, ओ३म् हर हर महादेव।।
एकानन चतुरानन पंचानन राजे, स्वामी पंचानन राजे।
हंसानन गरुड़ासन वृषवाहन साजे, ओ३म् हर हर महादेव।।

दो भुज चारु चतुर्भुज दश भुज अति सोहे, स्वामी दस भुज अति सोहे।
तीनों रूप निखरत, त्रिभुवन-जन मोहे, ओ३म् हर हर महादेव।।
अक्षमाला वनमाला मुण्डमाला धारी, स्वामी मुण्डमाला धारी।
त्रिपुरारी कंसारी करमाला धारी, ओ३म् हर हर महादेव।।
श्वेताम्बर पीताम्बर बाघाम्बर अंगे, स्वामी बाघाम्बर अंगे।
सनकादिक गरुड़ादिक भूतादिक संगे, ओ३म् हर हर महादेव।।
कर मध्ये सुकमण्डलु चक्र त्रिशूल धारी, स्वामी चक्र त्रिशूल धारी।
सुखकारी दुखहारी जग-पालन कारी, ओ3म् हर हर महादेव।।
ब्रह्मा विष्णु सदाशिव जानत अविवेका, स्वामी जानत अविवेका।
प्रणवाक्षर में शोभित ये तीनों एका, ओ३म् हर हर महादेव।।
त्रिगुण स्वामी की आरती जो कोई नर गावे, स्वामी जो कोई नर गावे।
कहत शिवानन्द स्वामी मनवांछित फल पावे, ओ३म् हर हर महादेव।।

शिवाय नमः ओं नमः शिवाय

आधार जगतुक कुनुय छु मन्त्र, शिवाय नमः ओं नमः शिवाये।।
त्रिपंच नयनो ही आदि दीवो, जटा मुकट छुय गंडिथ च्य दीवो।
चन्द्र-अर्द्ध शेखर, त्रिलोचनाय, शिवाय नमः ओं, नमः शिवाय।।
च्य नील कंठो जटन छय-गंगा, च मोक्षदायक गुसोञ्य नंगा।
अलक्ष अगोचर छ्यपन गुफाये, शिवाय नमः ओं नमः शिवाये।।
बिहिथ छय गौरी च्य सूत्य नालय, वलिथ छुय सर्पन हुंदुय दुशालै।
सहस्त्र सूर्यि तीज च्य मंज जटाये, शिवाय नमः ओं नमः शिवाये।।
अथस च्य डाबर चू बीन वायान, कपाल-माल त्रिशूल धारान।
भक्तयन अभय छुख दिवान यछाये, शिवाय नमः ओं नमः शिवाये।।
रटिथ चू अंकुश खडगधारिथ, धनुर धनन मंज पिनाक चारिथ।
वुदनि बू डंड्वथ करय हा माये, शिवाय नमः ओं नमः शिवाये।।

भवाय दीवो शर्वाय दीवो, भस्माय दीवो सुरान च्य जीवो।
च्य जीव पूजान छिय भावनाये, शिवाय नमः ओं नमः शिवाये।।
संसार सुदरस, म्य तार तारुम, अमर बनावुम शिव मार्ग हावुम।
वोलुस कुकर्मव कुवासनाये, शिवाय नमः ओं नमः शिवाये।।
अनाथ बन्धो दयायि सागर, संसार की दुःख म्य यिम छि, तिम चॅठ।
ज़गतस दया कर च ह्यथ ओमाये, शिवाय नमः ओं नमः शिवाये।।

भवसर कुस तरि

आदि प्रभातन युस दय नाव स्वरि, सुय हा यमि भवसर तरि लो लो।।
भावनाइ सान सुस तस पूजा करि, सुयहा यमि भवसर तरि लो लो।।
सुलि प्रभातन श्रान ध्यान करि, गरि गरि हर हर परि लो लो।।
द्रुख त संकट तस पान भगवान् हरि, सुयहा यमि भवसर तरि लो लो।।
गृहस्थ आश्रम कुय युस व्रत दरि, लूक सीवाई प्यठ मरि लो लो।।

निष्काम कर्मन लोला युस बरि, सुयहा यमि भवसर तरि लो लो।।
सन्तोष व्रच प्यठ मन युस थ्यर करि, हर सात सुय व्रत दरि लो लो।
सुख त शान्ती हुंद युस हलमा बरि, सुयहा यमि भवसर तरि लो लो।
श्वास उश्वासस दय नाव युस स्वरि, दय सुन्द ध्याना दरि लो लो।
लय रोजि तथ मंज कारुबारा करि, सुयहा यमि भवसर तरि लो लो।।
पऽछय सीवाय प्यठ पान अर्पण करि, बेलूस बऽग रावि घरि लो लो।
ड्यक मुचरिथ युस दान धर्मा करि, सुयहा यमि भवसर तरि लो लो।।
हु त ब्ह मशरावि सारिनीय लोल भरि, लोलुक सोदा करि लो लो।
जीव जाचन सूत लो लुच माय बरि, सुयहा यमि भवसर तरि लो लो।।
काम क्रूध लूभ मोह अहंकार यस खरि, सत-असत वार सर करि लो लो।
अपजिस दुय करि पजरस लोल बरि, सुयहा यमि भवसर तरि लो लो।।
तरवुन करनोव आलव दिवान तरि, कंसि मा छु तरुन घर लो लो।
आलुस त्राविथ उद्यूग युस करि, सुयहा यमि भवसर तरि लो लो।।
प्रथ शायि मंज़ जानुन कुस वास करि, सोरुय कस मंज! स्वरि लो लो।
बेबस जानिथ देह अद त्याग करि, सुयहा यमि भवसर तरि लो लो।।

बिल्वाष्टकम्

त्रिदलं त्रिगुणाकारं त्रिनेत्रं च त्रयायुधम्।
त्रिजन्मपाप-संहारमेकबिल्वं शिवार्पणम्।। 1 ।।

त्रिशाखैबिल्वपत्रैश्च ह्यच्छिद्रः कोमलैः शुभैः।
शिवपूजां करिष्यामि ह्येकबिल्वं शिवार्पणम्।। 2 ।।

अखण्डबिल्वपत्रेण पूजिते नन्दिकेश्वरे।
शुद्ध्यन्ति सर्वपापेभ्यो ह्येकबिल्वं शिवार्पणम्।। 3 ।।

शालिग्रामशिलामेकां विप्राणां जातु अर्पयेत्।
सोमयज्ञ-महापुण्यमेकबिल्वं शिवार्पणम्।। 4 ।।

दन्तिकोटिसहस्राणि वाजपेयशतानि च।

कोटिकन्या-महादानमेकबिल्वं शिवार्पणम्।। 5 ।।

लक्ष्म्याः स्तनत उत्पन्नं महादेवस्य च प्रियम्।
बिल्ववृक्षं प्रयच्छामि ह्येकबिल्वं शिवार्पणम्।। 6 ।।

दर्शनं बिल्ववृक्षस्य स्पर्शनं पापनाशनम्।
अघोरपापसंहारमेकबिल्वं शिवार्पणम्।। 7 ।।

मूलतो ब्रह्मरूपाय मध्यतो विष्णुरूपिणे।
अग्रतः शिवरूपाय ह्येकबिल्वं शिवार्पणम्।। 8 ।।

बिल्वाष्टकमिदं पुण्यं यः पठेच्छिवसन्निधौ।
सर्वपापविनिर्मुक्तः शिवलोकमवाप्नुयात्।। 9 ।।

इति बिल्वाष्टकं सम्पूर्णम्।।

दया करो हे दयालु भगवन्

शरण में आये हैं हम तुम्हारे
दया करो हे दयालु भगवन्।
सुधारो बिगडी दशा हमारी
दया करो हे दयालु भगवन्।
न हम में बल है न हम में भक्ति,
न हम में साधन, न हम में शक्ति।
तुम्हारे हो कर हैं हम दुःखारी
दया करो हे दयालु भगवन्।
जो तुम हो स्वामी तो हम है सेवक,
तुम जोपिता हो तो हम है बालक।
जो तुम हो ठाकुर तो हम पुजारी
दया करो हे दयालु भगवन्।
भले जो हम हैं तो हैं तुम्हारे
बुरे जो हम हैं तो हैं तुम्हारे।
तुम्हारे दर के हैं हम भिखारी
दया करो हे दयालु भगवन्।

न होगी जब तक दया की दृष्टि
न होगी तब तक कृपा का वृष्टि।
न होगी तुम बिन यह न्याय कारी
दया करो हे दयालु भगवन्।
प्रधान् कर दो महान् शक्ति
भरो हमारे में ज्ञान भक्ति।
तभी कहावें गे न्याय कारी
दया करो हे दयालु भगवन्।
बस एक यही इक नाम की है,
पुकार राधे श्याम की है।
तुम्हारी तुम जानो निर्विकारी
दया करो हे दयालु भगवन्।
सुधारो बिगड़ी दशा हमारी
दया करो हे दयालु भगवन्।
शरण में आये हैं हम तुम्हारे
दया करो हे दयालु भगवन्।

ॐ शिव हर शङ्कर गौरी शम्
वन्दे गंगा धरणी शम्
शिव रुद्रं पशुपति विश्वनाथं
कल हर काशी पुर नाथं
बज पाल लोचन परमानन्दा
नील कण्ठा तव शरणम्
शिव असुर निकन्दन
भव दुःख भज्जन, सेवक ते प्रतिपाला
ॐ आवागमन मिटाओ शङ्कर
भज शिव भारं भारः
ॐ शिव हर शम्भो सदा शिव शम्
हर हर सदा सदा शिव शम्

गुरु स्तुतिः

ॐ ब्रह्मानन्दं परम सुखदं केवलं ज्ञान मूर्तिं, द्वन्द्वातीतं गगन सदृशं तत्त्वमस्यादि लक्ष्यम्।
एकं नित्यं विमलं अचलं सर्वधी साक्षिभूतं, भवातीतं त्रिगुणरहितं सद्गुरुं तं नमामि।।
स्मारं स्मारं जनिमृतिभयं जातनिर्वेद वृत्तिः, ध्यायं ध्यायं पशुपतिं उमाकान्तं अन्तर्निषण्णम्।
पायं पायं सपदि परमानन्द पीयूषधारा, भूयो भूयो निजगुरुपदां भोजं युग्मं नमामि।।
यस्य देवे पराभक्तिः यथा देवे तथा गुरौ, तस्यैते कथिता ह्यर्थाः प्रकाशन्ते महात्मनः।।
श्री गुरुं परमानन्दं वन्दाम्यानन्द विग्रहम्, यस्य सान्निध्यमात्रेण चिदानन्दायते परम्।।
ध्यान मूलं गुर्रोमूर्तिः पूजामूलं गुरोः पदम्, ज्ञान मूलं गुर्रोवाक्यं मोक्षमूलं गुरोः कृपा।।
गुरु ब्रह्मः गुरु विष्णो गुरु साक्षात् महेश्वरः, गुरु एव जगत् सर्वं तस्मै श्री गुरवे-नमः।
वन्देहं सच्चिदानन्दं भेदातीतं जगद् गुरुम्, नित्यं पूर्णं निराकारं निर्गुणं सर्व-संस्थितम्।
परात्परतरं ध्येयं नित्यम्-आनन्दकारणम्, हृदयाकाश-मध्यस्थं शुद्धस्फटिक-सन्निभम्।
नमामि सद् गुरुं शान्तं प्रत्यक्षं शिवरूपिणम्, शिरसा योगपीठस्थं धर्मकामार्थ-सिद्धये।
अखण्ड-मण्डलाकारं व्याप्तंयेन चराचरम्, तत्पदं दर्शितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः।
अज्ञानतिमरान्धस्य ज्ञानञ्जन-शलाकया, चक्षुर्-उन्मीलितं येन तस्मै श्री-गुरवे नमः।

हरौ रुष्टे गुरु-स्त्राता गुरौ रुष्ठे न कश्चन, सर्वदेव-स्वरूपाय तस्मै श्री-गुरवे नमः।
चैतन्यं शाश्वतं शान्तं व्योमातीतं निरञ्जनम्, बिन्दु-नादकलातीतं तस्मै श्री-गुरवे नमः।
शिष्यानां मोक्षदानाय लीलया-देहधारिणे, सदेहेपि विदेहाय तस्मै श्री-गुरवे नमः
नमस्ते नाथ, भगवन् शिवाय गुरु रूपिणे, विद्यावतार संसिद्धयै स्वीकृतान एक विग्रहः।।
नवाय नवरूपाय परमार्थैकरूपिणे, सर्वज्ञान तमो भेद भानवे चिद्धनाय ते।।
स्वतन्त्राय दयाक्लृप्त विग्रहाय मरात्मने, परतन्त्राय भक्तानां भव्यानां भव्यहेतवे।।
ज्ञानिनां ज्ञानरूपाय प्रकाशाय प्रकाशिनाम्, विवेकिनां विवेकाय विमर्शाय विमर्शिनाम्
पुरस्तात्-पार्श्वयोः पृष्ठे नमस्कुर्याम्-उपर्यधः, सदामत्-चित्तरूपेण विधेहि भवदासनम्।
गुरु ब्रह्मः गुरु विष्णो गुरु साक्षात् महेश्वरः, गुरुएव जगत् सर्व तस्मै श्री गुरवे नमः

घर में सुख शांति के लिए इस मन्त्र का उच्चारण हर समय करते रहें।

ॐ नमः शम्भवाय च, मयोभवाय च, नमः शंकराय च,
मयस्कारय च नमः शिवाय च, शिवतराय च।।

बच्चों में बाल काटने की आदत न डालें।
यह हमारी संस्कृति का अपमान है।

मस छुय वस

ब्राह्मी-विद्या

ॐ ॐ ॐ त्रिगुणपुरुष क्षेत्रचर, मोहं भिन्धि, रजस्तमसी भिन्धि, प्राकृत-पाशजालं-सावरणं परिहर, सत्वं ग्रहाण-पुरुषोत्तमोसि, सोम-सूर्यानल, प्रवर, परमधामन् ब्रह्म विष्णुमहेश्वरस्वरूप,, सृष्टिस्थिति-संहारकारक, भ्रू-मध्य-निलय, तेजोसि-धामासि-अमृतात्मन् ॐ तत्सत् हँसः, शुचिषत्, वसुरन्त रिक्षसत्-होता अतिथि-दुरोणसत्, नृषत्-वरसत्-ऋतसत्-व्योमसत्, अब्जा गोजा ऋतजा अद्रिजा ऋतं, परंब्रह्म-स्वरूप, सर्वगत सर्वशक्ते, सर्वेश्वर, सर्वेन्द्रिय-ग्रन्थि भेदं कुरु, कुरु परमं-पदं परामर्शय परमार्ग ब्रह्म-द्वारं सर, कुमार्ग-जहि-षट्-कोशिकं शरीरं-त्यज, शुद्धोसि बुद्धोसि विमलोसि क्षमस्व स्वपदम्-आस्वादय स्वाहा।

ब्राह्मी विद्या

ॐ ॐ ॐ = तीन प्रकार के दुःखों का निवारण करने के लिए मंगलरूप में तीन बार आरम्भ में 'ॐ' का उच्चारण किया गया है, **त्रिगुण पुरुष** = *तुम त्रिगुण पुरुष हो अर्थात् तीन गुणों में तेरा ही निवास है,* **क्षेत्र चर** = शरीर रूपी क्षेत्र में फिरने से तुम ही क्षेत्रचर हो, **मोहं** = मोह रूपी ग्रन्थि को, **भिन्धि**= काटो, **रजस्तमसी** = रजो गुण, तमो गुण रूपी ग्रथियों को काटो, **प्राकृत**= बनावटी, **पाशजालं** = बन्धनों का जाल, **सावरणं** = आवरण सहित, **परिहर** = फैंक दो, **सत्वं ग्रहाण** = तत्व को जान, **पुरुषोत्तमोसि** = तुम स्वयं ही पुरुषोत्तम हो, **सोम** = चन्द्रमा, **सूर्य** = सूरज, **अनल** = अग्नि, **प्रवर** = तेजोमय

रूप, **परमधामन्** = उत्तम स्थान वाले, ब्रह्म, विष्णु, महेश्वर, **स्वरूप** = तुम ही ब्रह्मा, विष्णु, महेश रूप हो, **सृष्टि स्थिति** = तुम ही सृष्टि को बनाने वाले हो, **संहार कारक** = नाश करने वाले हो, **भ्रू-मध्य-निलय** = भ्रुवों के मध्य में ध्यान टिकाने से तुम जाने जाते हो, **तेजोसि** = तुम तेज रूप हो, **धामासि** = तुम उत्तम धाम वाले हो, **अमृतात्मन्** = तुम अमृत रूप हो, **ॐ तत्सत्** = तुम सत् रूप हो, **हंस** = तुम स्वयं प्रकाश हो, **शुचिषत्** = तुम निर्मल स्थान पर रहने वाले हो, **वसुरन्त-रिक्षसत्** = तुम आकाश में रहने वाले वस नाम के देवता हो, **होता** = तुम ही अग्नि में आहुति डालने वाले हो, **वेदिषत्** = तुम ही यज्ञ की वेदी पर ठहरे हुये अग्नि हो, **अतिथिर्दराणसत्** = तुम ही गृहस्थों में अतिथि रूप देवता हो, **नृषत्** = तुम मनुषयों में रहने वाले हो, **वरसत** = तुम देवताओं में रहने वाले हो, **ऋत ऋत्** = तुम सत्य में रहने वाले हो, **व्योम सत्** = तुम आकाश में ओत प्रोत हो, **अब्जः** = तुम जल में उत्पन्न होने वाले रत्न शंक आदि हो, **गोजा** = तुम पर्वतों तथा पृथ्वी से प्रकट होने वाले अन्न औषधि रूप हो, **अद्रिजा** = तुम पर्वतों से प्रकट होने वाले नदी-नाले रूप हो, **ऋतुजा** = तुम सब से महान् और परम सत्य हो, **परम-ब्रह्म-स्वरूप** = तुम परम ब्रह्म स्वरूप हो, **सर्वगत** = तुम सब मे गए हो, **सर्व शक्ते** = तुम सर्व शक्तिमान् हो, **सर्वेश्वर** = तुम सर्वो के स्वामी हो, **सर्वन्द्रिय** = सब इन्द्रियों से, **ग्रन्थि भेदं कुरु** = आसक्ति छोड़ो, **परमं-पदं** = उस परमपद का, **पर-मार्ग** = उस उत्तम मार्ग का, **परामर्शय** = विचार कर, **ब्रह्म-द्वारं सर** = ब्रह्मद्वार की ओर चल अर्थात् अपने स्वरूप को जान, **कुमार्ग जहि** = अज्ञान के मार्ग को छोड़, **षट-कौशिकं शरीरं** = इस षट् कोशिक शरीर अर्थात् रोम, रक्त, मांस, मज्जा, हड्डियों और वीर्य से बने हुये शरीर को, **त्यज** = छोड़ो, **शुद्धोसि** = तुम शुद्ध रूप हो, **बुद्धोसि** = तुम बुद्धि रूप हो, **विमलोसि** = तुम निर्मल हो, **स्वपदम्-आस्वादय स्वाहा** = अपने स्वरूप का अनुभव कर इस ज्ञान को तू अच्छी प्रकार स्वीकार कर।

हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे। हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे।

विष्णु प्रार्थना

शान्ताकारं भुजगशयनं पद्मनाभं सुरेशं। विश्वाधारं गगनसद्रश्यं मेघवर्णं शुभाङ्गम्।
लक्ष्मी कान्तं कमलनयनं योगिभिर्ध्यान गम्यं। वन्दे विष्णुं भवभयहरं सर्वलोकैकनाथम् ।1।
यस्य हस्ते गदा चक्रं गुरुडो यस्य वाहनं। शंखः करतले यस्य स मे विष्णुः प्रसीदतु ।2।
यद्बल्ये यश्च कौमारे यत् यौवने कृतं मया, वयः परिणतौ यश्च यक्ष्च जन्मात्तरेषुच।
कर्मणा मनसा वाचा यापापं समुवर्जितं तन्नारायण गोविन्द क्षमस्व गुरुडध्वज।3।
त्वमेव माता च पिता त्वमेव, त्वमेव बन्धुश्च सखस्त्वमेव
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव, त्वमेव सर्वं मम देव देव ।4।
तत्रैव गंगा यमुना चवेणी, गोदावरी सिंधु सरस्वती च,
सर्वाणि तीर्थानि वसन्ति तत्र, यत्रेच्युतोदार कथा प्रसंगा।5।
नमामि नारायण पादपंकजं करोमि नारायण पूजनं सदा।
वदामि नारायण नाम निर्मलं, स्मरामि नारायण तत्वम् अव्ययम।6।
गो कोटिदानं ग्रहणेषु, काशी, प्रयागं गंगाऽयुतकल्पवासः।
यज्ञायतं मेरु सुवर्णदानं, गोविंदनाम्ना न कदापि तुल्यम्।।

ध्येयः सदा सवितृमण्डल मध्यवर्ती नारायणः सरसिजासन-सन्निविष्ठः।
केयूरवान-कनक-कुण्डलवान्-किरीटी हारी हिरण्य-वपुर्धृत शङ्खचक्रः।8।
करार बिन्देन पदारबिन्दं मुखारबिन्दं विनिवेश्ययन्तं।
अश्वत्थपत्रस्य पुटेशन, बालं मुकन्दं मनसा स्मारामि।9।
गोविन्द गोविन्द हरे मुरारे, गोविन्द गोविन्द रथांगपाणे।
गोविन्द गोविन्द मुकुंद कृष्ण, गोविन्द गोविन्द नमो नमस्ते।10।

विष्णु स्तुतिः

जय नारायण, जय पुरुषोत्तम, जय वामन कंसारे।
उद्धर मामसुरेशविनाशिन् पतितोहं संसारे।।
घोरं हर मम नरक रिपो, केशव कल्मषभारं।
माम्-अनुकम्पय दीनम्-अनाथं, कुरु भव-सागरपारम्।। घोरं हर मम०।।1।।
जय जय देव जया-सुरसूदन, जय केशव जय विष्णो।
जय लक्ष्मीमुख-कमल-मधुव्रत, जय दशकन्धर जिष्णो। घोरं हर मम० ।।2।।
यद्यपि सकलम्-अहं कलयामि हरे, नहि किम्-अपि स सत्वम्।तत्-अपि न मुञ्चति

मामू-इदम्-अच्युत, पुत्रकलत्र-ममत्वं। घोरं हर मम० ।।3।।
पुनर्-अपि जननं पुनर्-अपि मरणं, पुनर्-अपि गर्भ-निवासम्।
सोदुम्-अलं-पुनर्-अस्मिन्-माधव, माम्-उद्धर निजदासम्। घोरं हर मम० ।।4।।
त्वं जननी जनकः प्रभुर्-अच्युत, त्वं सुहृत्-कुलमित्रम्।
त्वं शरणं शरणा-गतवत्सल, त्वं भव-जलधि-वहित्रं घोरं हर मम० ।।5।।
जनक-सुता-पति-चरण-परायण, शंकर-मुनिवर-गीतं।
धारय मनसि कृष्ण-पुरुषोतम, वारय संसृति-भीतिम्।। घोरं हर मम० ।।6।।

कृष्णं वन्देजगत्-गुरुम्

भगवत् गीता के आरम्भ में भगवान् कृष्ण ने यद्यपि कोई मंगल श्लोक कहा नहीं है परन्तु निम्नलिखित 9 श्लोक किसी कृष्ण भक्त ने बनाए हैं। किसी-किसी भगवद्गीता में यह 9 श्लोक छपे हुए मिलते हैं परन्तु कश्मीरी पण्डित परम्परा से प्रायः यह श्लोक गीता के आरम्भ में पढ़ते हैं इसी कारण हमने यह श्लोक अर्थ सहित इस पाठ प्रकरण में जोड़े हैं।

ॐ पार्थाय प्रतिबोधितां भगवता नारायणेन स्वयं,
व्यासेन ग्रथितां पुराण-मुनिना मध्ये महाभारतम्।

अद्वैतामृत-वर्षिणीं भगवतीम्-अष्टादशा-ध्यायिनीम्,
अम्बत्वाम्-अनुसन्दधामि भगवत्-गीते भव-द्वेषिणीम्।।1।।

अर्थः *भगवान् कृष्ण से अर्जुन को समझाई गई, वेदव्यास से महाभारत में ग्रथित की गई, अद्वैत-अमृत की वर्षा करने वाली, अठारह अध्याय वाली, ऐसी ही माता भगवद्गीते, तुम्हारा मैं मन से ध्यान करता हूँ।*

नमोस्तु ते व्यास विशालबुद्धे फुल्लारविंदा-यतपत्र-नेत्र।
येन त्वया भारत-तैल-पूर्णः प्रज्वालितो ज्ञानमयः प्रदीपः।।2।।

अर्थः *हे विशाल बुद्धि वाले, हे प्रफुल्लित कमल नेत्र वाले वेदव्यास जी! आप ने महाभारत रूप तैल से पूर्ण ज्ञानमय दीपक जलाया, ऐसे आपको नमस्कार हो।*

प्रपन्न-पारिजाताय तोत्र-वेत्रैक-पाणये।
ज्ञानमुद्राय कृष्णाय गीतामृत-दुहे नमः।।3।।

अर्थः *शरणागत के कल्पवृक्ष, हाथ में चाबुक लिए हुए, ज्ञान मुद्रा युक्त (ज्ञानरूप) गीता अमृत के दुहने वाले भगवान् कृष्णं को नमस्कार हो।*

सर्वोपनिषदो गावो दोग्धा गोपालनन्दनः।
पार्थो वत्सः सुधीर्भोक्ता दुग्धं गीतामृतं महत्।।4।।

अर्थः सभी उपनिषद् मानिए गौ हैं, इस उपनिषद रूपी गौवों को दुहने वाला गोपाल नन्दन भगवान् कृष्ण हैं, अर्जुन बछड़ा है, जो स्वयं दूध गाय के स्तनों से पीकर अपना पेट भरता है और दूसरों के लिए भी निकलवाता है। जिन गौओं से दूध निकलवाता है वही गीता अमृत है, जिस अमृत को पीने वाले बुद्धिमान पुरुष हैं।

वसुदेव सुतं देवं कंसचाणूर-मर्दनम्।
देवकी परमानन्दं कृष्णं वन्दे जगत्-गुरुम्।।5।।

अर्थः *वसुदेव के पुत्र, कंस और चाणूर को मारने वाले, देवकी को परमानन्द देने वाले जगत् गुरु भगवान् कृष्ण को मैं प्रणाम करता हूँ।*

भीष्मद्रोणतटा जयत्रथ-जला गान्धर-नीलोत्पला,
शल्य-ग्राहवती कृपेण वहनी कर्णेन वेलाकुला।
अश्वत्थाम-विकर्ण-घोर-मकरा दुर्योधना-वर्तिनी,
सोत्तीर्णा खलुपाण्डवैः रणनदी कैवर्तके केशवः।।6।।

अर्थः *जिस युद्धरूपी नदी के भीष्म और द्रोण दोनों तट हैं, जिसमें जयत् रथ जल हैं, गान्धार नील कमल हैं, शल्य ग्रह (ग्रसने वाला) जलचर है, कृप प्रवाह है, कर्ण लहरे हैं, अश्वत्थामा और विकर्ण घोरमकर हैं, दुर्योधन भंवर है, ऐसी युद्धरूपी नदी निश्चय करके पाण्डवों से मल्लाह भगवान् कृष्ण द्वारा उत्तीर्ण की गई है।*

पाराशर्यवचः सरोजं-अमलं, गीतार्थ-गन्धोत्कटं
नानाख्यानक-केशरं-हरिकथा, सम्बोधना बोधितम्।
लोके सज्जन-षट्पदैर्-अहर्-अहः पेपीयमानं मुदा,
भूयात्-भारत-पंकजं, कलिमल-प्रध्वंसिनः श्रेयसे।।7।।

अर्थः पाराशर्य (वेदव्यास) के वचनरूपी सर में उत्पन्न हुए निर्मल गीता-अर्थ रूप उत्कट गन्धवाला, नाना प्रकार के प्रसंगरूप सुगन्धित फूलवाला, हरिकथा (ज्ञान् की कथाओं) से जो प्रफुल्लित है, संसार में सत्यपुरुष भ्रमरों से आनन्दपूर्वक प्रतिदिन पिया जाने वाला, कलियुग के पापों का नाश करने वाला ऐसा यह महाभारत रूप कमल हमारा कल्याण करे।

मूकं करोति वाचालं पंङ्गुं लङ्घयते गिरिं।
यत्कृपा तमहं वन्दे परमानन्द-माधवम्।।8।।

अर्थः में उस परमानन्द लक्ष्मीपति को नमस्कार करता हूँ, जिनकी कृपा गूंगे को वाचाल और लंगडे को पर्वत उलंघन करने वाला बना देता है।

यं ब्रह्मा वरुणेन्द्र रुद्रमरुतः स्तुन्वन्ति दिव्यैः स्तवै-
र्वेदैः साँगपद-क्रमोप-निषदै-र्गायन्ति यं सामगाः।
ध्यानावस्थित-तद्गतेन मनसा पश्यन्ति यं योगिनो,
यस्यान्तं न विदुः सुरा-सुर-गणा देवाय तस्मै नमः।।

अर्थः जिनका ब्रह्मा, वरुण, इन्द्र और मरुद्गण दिव्य स्तोत्रों द्वारा स्तुति करते हैं, सामवेद के गाने वाले अंग, पद, क्रम और उपनिषदों के सहित वेदों द्वारा जिनका गान करते हैं, योगीजन ध्यान में स्थित तद्गत हुए मनसे जिनका दर्शन करते हैं, देवता और असुरगण (कोई भी) जिनके अन्त को नहीं जानते, उन (परमपुरुष नारायण) देव के लिए मेरा नमस्कार हो।

अष्टादश श्लोकी गीता

निमित्तानि च पश्यामि-विपरीतानि केशव,
न च श्रेयो-नुपश्यामि हत्वा स्वजनम्-आहवे।।1।।

अर्थः अर्जुन भगवान् से कहता है, कि अब मुझे सब लक्षण उल्टे दिखाई देते हैं, ऐसे मुझे प्रतीत नहीं होता है कि अपने

सम्बन्धियों को युद्ध में मारकर कुछ कल्याण हो सकेगा।

योगस्थः कुरु कर्माणि संगं त्यक्त्वा धनंजय।

सिद्ध्य-सिद्ध्-योः समो भूत्वा समत्वं योग उच्यते।।2।।

अर्थः फल की आशा छोड़ कर सिद्धि हो या न हो फिर भी अपने मन की वृत्ति समान रखनी चाहिये, इस प्रकार की चित्त की समवृत्ति को योग कहते हैं, इस योग से युक्त होकर मनुष्य अपने सब कर्म करे।

कर्मेन्द्रियाणि संयम्य य आस्ते मनसा स्मरन्,

इद्रियार्थान्-विमूढात्मा मिथ्याचारः स उच्यते।।3।।

अर्थः जो हठ से कर्मेन्द्रियों को रोकता है परन्तु अन्दर ही अन्दर मन से विषयों का चिन्तन करता है उस मूर्ख को मिथ्याचारी कहते हैं।

श्रद्धावान्-लभते ज्ञानं तत्-परः संयतेन्द्रियः,

ज्ञानं लब्ध्वा परां शान्तिम्-अचिरेणाधिगच्छति।।4।।

अर्थः ईश्वर गुरु और धर्म शास्त्रों में श्रद्धा रखने वाला मनुष्य ज्ञान को प्राप्त करता है और ज्ञान होने पर उसको शान्ति प्राप्त होती है।

यतेन्द्रिय मनो बुद्धि-मुनि-मोक्ष-परायणः,

विगतेच्छा-भय क्रोधो-यः सदा मुक्त एव सः।।5।।

अर्थः जो मनुष्य इन्द्रियो, मन और बुद्धि को वश में रखता है और केवल ब्रह्मशन्ति प्राप्त करने में लगा रहता है वह सदा मुक्त है।

युक्ताहार-विहारस्य युक्त-चेष्टस्य कुर्मसु,

युक्त-स्वप्ना-व बोधस्य योगो भवति दुःखहा।।6।।

अर्थः यथायोग्य आहार विहार करने वाला कर्मों को यथा योग्य ढंग से करने वाला यथायोग्य निंद्रा करने और योग्य समय पर उठने वाले साधक का योग दुःख को दूर करने वाला होता है।

दैवी ह्येषा गुणमयी मम माया दुरत्यया,

मामेव ये प्रपद्यन्ते मायाम्-एतां-तरन्ति-ते।।7।।

अर्थः परमात्मा की सत्वरज तमोगुणमयी माया को पार करना कठिन है जो मुझ ईश्वर को प्राप्त करते हैं वह इस माया से पार हो जाते हैं।

अग्निर्-ज्योतिर्-अहः शुक्लः षण्मासा उत्तरायणम्,

तत्रो प्रयाता गच्छन्ति ब्रह्म ब्रह्मविदो जनाः।।8।।

अर्थः उत्तरायण काल के छः मास के शुक्ल पक्ष में दिन के प्रकाश में प्रदीप्त अग्नि के समय जो ब्रह्मज्ञानी इस शरीर को छोड़कर चले जाते हैं वे ब्रह्म को प्राप्त होते हैं।

अपि चेत्-सुदुराचारो भजते माम्-अनन्यभाक्,

साधुर्-एव स मन्तव्यः सम्यक्-व्यव-सितोहि-सः।

अर्थः बड़े से बड़ा दुराचारी यदि अनन्यभाव से मेरा भजन करेगा तो यह समझ लेना चाहिये कि वह साधु हो जायेगा।

यो माम्-अजम्-अनादिम्-च वेत्ति-लोक महेश्वरम्,

असंमूढः स मर्त्येषु सर्वपापैः प्रमुच्यते।।

अर्थः जो मुझे जन्म रहित, आदि रहित सब लोकों का स्वामी समझता है वह संसार में अज्ञान से छूटकर ज्ञानी बनकर सब पापों से मुक्त होता है।

मत्कर्म कृत्-मत्परमो मत्-भक्तः संघ-वर्जितः,

निर्वैरः, सर्व-भूतेषु यः स मामेति पाण्डव।।

अर्थः *हे अर्जुन! जो मेरे लिये कर्म करता है, जो मुझे परमश्रेष्ठ मानता है जो भोगों का संग छोड़ता है और सब प्राणियों के विषय में वैर रहित होता है मेरा वही भक्त मुझे प्राप्त करता है।*

श्रेयो हि ज्ञानम्-अभ्यासात्, ज्ञानात्-ध्यानं विशिष्यते,

ध्यानात्-कर्म-पलत्याग, स्त्यागात्-शान्तिर्-अनन्तरम्।।

अर्थः *अभ्यास योग से ज्ञान श्रेष्ठ है, ज्ञान योग से ध्यान योग की विशेषता अधिक है, ध्यान योग से कर्मफल का त्याग उत्तम है, कर्मफल का त्याग करने से शीघ्र ही शान्ति मिलती है।*

क्षेत्रज्ञं चापि मां विद्धि सर्व-क्षेत्रेषु भारत,

क्षेत्र-क्षेत्र ज्ञयोर्ज्ञानं-तत्-यत्-ज्ञानं मतं मम।।

अर्थः *हे भारत! सब क्षेत्र में रहने वाले मुझे तू क्षेत्रज्ञ समझ जो क्षेत्र और क्षेत्रज्ञ का ज्ञान है वही मेरा ज्ञान है।*

मां च यो-व्यभिचारेण भक्तियोगेन सेवते,

स गुणान्-सम्-अतीत्य-तान्-ब्रह्म्-भूयाय कल्पते।।

अर्थः *जो एक निष्ठ भक्ति भाव से मेरी सेवा करता है वह इन गुणों को लांघ कर ब्रह्म के महत्त्व को प्राप्त करने योग्य बन जाता है।*

निर्मान-मोहा जितसंग-दोषा अध्यात्म-नित्या विनि-वृत्तकामाः,

द्वन्द्वै-र्विमुक्ता सुख दुःख संज्ञैर्गच्छन्त्य मूढाः पदम्-अव्ययं तत्।।

अर्थः जो अभिमान रहित, मोह रहित, अनासक्त आत्मनिष्ठ भोगवासना रहित, द्वन्द्वभाव से दूर और ज्ञानी है, वह उस अविनाशी परम पद को प्राप्त होते हैं।

यः शास्त्र-विधिम्-उत्सृज्य वर्तते काम-कारतः।

न स सिद्धिम्-अवाप्नोति न सुखं न परां गतिम्।।

अर्थः जो शास्त्र विधि को त्याग कर मनमाना आचरण करता है उसे न सिद्धि मिलती है न सुख मिलता है और न श्रेष्ठ गति ही प्राप्त होती है।

मनः प्रसादः सौम्यत्वं मौनम्-आत्म-विनिग्रहः,

भाव-संशुद्धिर्-इत्येतत्-तपो मानसम् उच्यते।।

अर्थः मन को प्रसन्न रखना, शान्ति का अवलम्बन करना, मौन धारण करना, संयम करना और आत्मशुद्धि करना मानसिक तप है।

सर्व-धर्मान् परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज,

अहं त्वा सर्व-पापेभ्यो मोक्ष-यिष्यामि मा-शुचः।।

अर्थः सब धर्मों को छोड़कर मुझ अकेले (ईश्वर) की शरण आये मैं तुम्हें सब पापों से मुक्त करूँगा, तू शोक मत कर।

सप्तश्लोकी गीता

ॐ इत्येकाक्षरं ब्रह्म, व्याहरन्-माम्-अनुस्मरन्,
यः प्रयाति त्यजन् देहं, स याति परमां गतिम्।

अर्थः योग धारण में स्थित ओंकार रूपी एकाक्षर ब्रह्म का उच्चारण करता हुआ और मेरा (परमेश्वर) का चिन्तन करता हुआ जो साधक देह त्यागता है वह निःसन्देह श्रेष्ठगति को प्राप्त होता है।

स्थाने हृषीकेश तव प्रकीर्त्या। जगत्-प्रहृष्य-त्यनुरज्यते च।।
रक्षांसि भीतानि दिशो द्रवन्ति। सर्वे नमस्यन्ति च सिद्धसंघाः।।1-2।।

अर्थः हे हृषीकेश यह ठीक है आपका कीर्तन करने से जगत् प्रसन्न होता है और उसमें उसकी प्रीति होती है, राक्षस तुम से डर कर दिशाओं में भाग जाते हैं और सभी पुरुषों के समुदाय आपको प्रणाम करते हैं।

सर्वतः पाणिपादं तत्-सर्वतोक्षि-शिरोमुखम्,
सर्वतः श्रुतिमत्-लोके सर्वम्-आवृत्य-तिष्ठाति।।3।।

अर्थः इस लोक में उसके सर्वत्र हाथ, पांव सब ओर आँख, सिर, मुख और सब ओर कान हैं वह सर्वत्र व्यापत कर रह रहा है।

कविं पुराणम्-अनुशासितारम्। अणोरणीयांसम्-अनु-स्मरेत्-यः।।
सर्वस्य धातारम्-अचिन्त्यरूपम्। आदित्यवर्णं तमसः परस्तात्।।4।।

अर्थः जो अन्तकाल में सर्वज्ञ पुरातन नियन्ता अणु से भी सूक्ष्म, सब के धारण कर्ता अचिन्त्य स्वरूप अन्धकार से परे रहने वाले सूर्य के समान तेजस्वी ईश्वर का स्मरण करता है- वह उसी दिव्य परमात्मा को प्राप्त होता है।

उर्ध्वमूलम्-अधः-शाखम्-अश्व-त्थं प्राहुर्-अव्ययम्।
छन्दांसि-यस्य पर्णानि यस्तं वेद स वेदवित्।।5।।

अर्थः संसार का वृक्ष अनादि चारों और फैला है, इसके ज्ञान रूपी पत्ते सबको शीतल छाया देने वाले हैं, शाखायें ऊपर नीचे फैली है, इनमें तत्व-रज तुम गुणों का रस भरपूर भरा है, शब्द स्पर्श रूप रस गंध विषयों के सुखदायी कोमल अंकुर लगे हैं और इनकी कर्मों से सम्बन्ध जोड़ने वाली जड़े चारों और फैली हुई है।

सर्वस्य चाहं हृदि संनिविष्टो मत्तः स्मृतिर्-ज्ञानम्-अपोहनं च।
वेदैश्च सर्वैर्-अहमेव वेद्यो वेदान्त-कृत्-वेद विदेव-चाहम्।।6।।

अर्थः मैं ईश्वर सबके हृदयों में रहता हूँ, मुझसे ही सब को स्मरण, ज्ञान विस्मरण और अज्ञान होता है मैं ही सब वेदों के द्वारा जानने योग्य हूँ और मैं ही वेदान्त शास्त्र का निर्माण करने वाला और वेद का ज्ञाता हूँ।

मन्मना-भव-मत्-भक्तो मत्-याजी मां नमस्कुरु।
मामे-वैष्यसि युक्त्वैवम्-आत्मानं मत्-परायणः।। 7।।

अर्थः मुझ में मन लगा, मेरा भक्त बन, मेरे निमित्त भजन कर, मुझे नमस्कार कर, इस तरह मुझमें परायण होकर मेरे साथ आत्मा का योग करने से तू मुझे प्राप्त कर लेगा।

वन्दे महापुरुष ते चरणारबिन्दम्

ध्येयं सदा परिभवघ्नं-अभीष्टदोहं, तीर्थास्पदं शिव-विरिञ्चि-नुतं शरण्यम्।
भृत्यार्तिहं प्रणतपाल ! भवाब्धिपोतं, वन्दे-महापुरुष ! ते चरणारबिन्दम्।।1।।

अर्थः हे महापुरुष- हे प्रणतपाल भगवान् कृष्ण ! मैं आपके उस चरण कमल को प्रणाम करता हूँ, जो चरण कमल ध्यान करने योग्य है, जो दुःखों का नाश करने वाला है, जो इच्छित पदार्थों का देने वाला है, जिस में सभी तीर्थ टिके हुये हैं, शंकर और ब्रह्मा जिस को झुकते है, जो रक्षा करने वाला है, जो भक्तों के दुःख का नाश करने वाला है, जो भवसागर से पार करने के लिए जहाज् हैं।

त्यक्त्वा सुदुस्त्यज-सुरेप्सित-राज्यलक्ष्मीं, धर्मिष्ठ-आर्य-वचसा यत्-अगात्-अरण्यम्।
मायामृगं दयित-येप्सितं-अनुधावत्, वन्दे महापुरुष ! ते चरणारबिन्दम्।।2।।

अर्थः धर्मात्मा राजा दशरथ के कहने से (ऐसी राज्य लक्ष्मी) ऐसा राजपाठ जिस का त्याग करना बहुत ही कठिन है, जिस को देवता चाहते हैं-ऐसे राज्य पाठ को छोड़कर (ठुकराकर) जो चरणार-बिन्द जंगल में गया, सीता से चाहे हुये, माया शरीरधारी मृग के पीछे जो चरण कमल दौड़ पड़ा, ऐसे ही प्रशंसनीय कार्य रामावतार में जिस चरण कमल ने किया था उसको मैं नमस्कार करता हूँ।

श्रीमत्-सरोरुह-यवाँकुश-चक्रचाप, मत्स्या-ङ्कितं नव-विल्लोहित-पल्लवाभम्।।
लक्ष्म्यालयं परममंगलं-आत्मरूपं, वन्दे महापुरुष ! ते चरणारबिन्दम्।।3।।

अर्थः मैं आप के उस चरण कमल को प्रणाम करता हूँ, जो शोभायुक्त है, जो चरणारबिन्द कमल, जव, अंकुश, चक्र, धनु, मछली

इन सामुद्रिक राज योग वाले चिन्हों से युक्त हैं जो लाल बालपत्र की जैसा शोभावाला है जो लक्ष्मी का घर है, जो परमात्मा का ही प्रत्यक्षरूप हैं।

वृन्दावनान्तरं-अगात्-अनुगोकुलानां, संचार्य सर्वपशुभिः स्वविवृद्ध-कामी।
संचिन्तयत्-अगगुरो-मृगपक्षिणां यत्, वन्दे महापुरुष ! ते चरणार बिन्दम्।।4।।

अर्थः जो भगवान् कृष्ण अपने कुल की वृद्धि का इच्छुक था, गोकुल के सभी पशुओं के साथ दौड़-धूप करके जो चरण कमल वृन्दावन में गया, जिस चरणारबिन्द ने सभी मृगपक्षी गोओं को गोवर्धन पर्वत के नीचे एकत्रित किया था, हे महापुरुष भगवान् आप के उसी चरणारबिन्द को मैं प्रणाम करता हूँ।

यत्-गोपिका-विरह-जाग्नि परीतदेहाः, तप्तस्तनेषु विजहुः परिरभ्य तापम्।
रासे तदीय कुच-कुँकम-पङ्कलिप्तं, वन्दे महापुरुष ! ते चरणारबिन्दम्।।5।।

अर्थः रामलीला में गोपिकाओं के स्तनों के केसरलेप से लिप्त जिस चरणारबिन्द को (आलिंगन) स्पर्श करके, विरह की अग्नि से घेरे हुये गोपिकाओं के जलन से पीड़ित स्तनों का ताप दूर हुआ था हे महापुरुष कृष्ण! मैं उस चरणारबिन्द को प्रणाम करता हूँ।

कालीय-मस्तक-विघटन-दक्षम्-अस्य, मोक्षेप्सुभि-र्विरहदीन-मुखाभिर्-आरात्।
तत्-पत्निभिः स्तुतम्-शेष-निकामरूपं, वन्दे महापुरुष ! ते चरणारबिन्दम्।।6।।

अर्थः पति के विरह से दुःखित, पति के मुक्ति की इच्छावाली, कालीनाग की स्त्रियों ने, कालीनाग के समीप बैठकर जिस चरणारबिन्द की अनन्य भक्ति से स्तुति की थी, जो चरणारबिन्द कालीनाग के मस्तक फोड़ने में (नष्ट करने में) निपुण था, हे महापुरुष, मैं आप के उस चरणारबिन्द को नमस्कार करता हूँ।

ज्ञानालयं श्रुतिविमृग्यं-अनादिम्-अर्च्यम्, ब्रह्मादिभि र्हृदि-विचन्त्यं-अगाध-बोधैः।
संसार-कूप-पतितो-त्तरणाव-लम्बम्, वन्दे महापुरुष ! ते चरणारबिन्दम्।।7।।

अर्थः *जो ज्ञान का घर है, वेद जिस को ढूँढते हैं, जो आद्यन्त रहित है, जो पूजा के योग्य है, जो ज्ञान का भण्डार हैं। ब्रह्मादि देवता हृदय में जिस का चिन्तन करते हैं, संसाररूपी कुएँ में गिरे हुओं को पार करने में जो सहारा बना है- हे महापुरुष कृष्ण मैं आपके उस चरणारबिन्द को नमस्कार करता हूँ।*

येनाङ्क-बालवपुषः स्तनपान-बुद्धेः, त्वत्-अँघ्रिणा-हृतमऽनो विपरीत चक्रम्।
विध्वस्त-भाण्डम्-अपतत् भुवि गोपमूर्ते, वन्दे महापुरुष ! ते चरणारबिन्दम्।।7।।

अर्थः *गोद में उठाने योग्य छोटे शरीर वाले, दूध पीने के इच्छुक श्री कृष्ण के पाँवों से लात मारा हुआ, तोड़े हुये दूध के बर्तनों से भरा हुआ उल्टा दिया हुआ छकडा नन्दगोप के आँगन में जिस चरणारबिन्द ने गिराया उस आपके चरण कमल को हे महापुरुष मैं नमस्कार करता हूँ।*

इत्यष्टकं पठति यः परमस्य पुंसो, नारायणस्य निरयार्णव-तारणस्य।
सर्वाप्तिमाशु-हृदये कुरुते मनुष्यः, संप्राप्य-देहविलयं लभते च मोक्षम्।।8।।

अर्थः *सृष्टि के बनाने तथा लय करने वाले, कष्टों से भरे सागर से पार करने वाले, भगवान् कृष्ण के यह आठ श्लोक जो मनुष्य हृदय में धारण करता है, भक्ति से पढ़ता है, वह मनुष्य सभी ऐश्वर्य प्राप्त करके, आवागमन के चक्र से मुक्त हो जाता है।*

प्रातः स्मरण मंगलस्तोत्रम्

उत्तिष्ठो-त्तिष्ठ गोविन्द, उत्तिष्ठ गरुड़-ध्वज, उत्तिष्ठ-कमलाकान्त, त्रैलोक्ये मंगलं कुरु ।।1।।
मंगलं भगवान् विष्णुः, मंगलं गरुड-ध्वजः, मंगलं पुण्डरीकाक्षः मंगलायतनं हरिः ।।2।।

मूकं करोति वाचालं पंगुं लंघयते गिरिम्, यत् कृपा तम्-अहं वन्दे, परमानन्द-माधवम् ।।3।।
नमो ब्रह्मण्य-देवाय, ग्रोब्रह्मण-हिताय च, जगत्-हिताय कृष्णाय, गोविन्दाय नमोनमः ।।4।।
कृष्णाय वासुदेवाय, देवकी-नन्दनाय च, नन्द गोपकुमाराय, गोविन्दाय नमो नमः ।।5।।
त्वमेव माता च पिता त्वमेव, त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वम्-एव,
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव, त्वमेव सर्वं मम देव देव ।।6।।

अच्युताष्टकम्

अच्युतं केशवं रामनारायणं, कृष्णदामोदरं वासुदेवं हरिम्।
श्रीधरं माधवं गोपिका वल्लभं, जानकी नायकं रामचन्द्रं भजे।।
अच्युतं केशवं सत्य-भा-माधवं, माधवं, श्रीधरं राधिकाऽराधितम्।
इन्दिरा मन्दिरं चेतसा सुन्दरं, देवकी नन्दनं नन्दनं सन्दधे।।
विष्णवे जिष्णवे शंखिने चक्रिणे, रुक्मिणी रागिणे जानकी जानये।
वल्लवी-वल्लभा-याऽर्चिता-यात्मने, कंस-विध्वंसिने-वंशिने-ते-नमः।।

कृष्ण गोविन्द हे राम नारायण, श्रीपते वासुदेवाजित श्रीनिधे।

अच्युतानन्त हे माध्वाधोक्षज, द्वारका नायक द्रौपदी रक्षक।।

राक्षस-क्षोभितः-सीतया-शोभितो, दण्डकारण्य-भू-पुण्यता-कारणः।

लक्ष्मणेनाऽन्वितो-वानरैः-सेवितो-गस्त्य-सम्पूजितो-राघवः-पातु-माम्।।

धेनुकारिष्टको-ऽनिष्टकृत्-द्वेषिणां, केशिहा-कंसहृत्-वंशिका-वादिकः।

पूतना कोपकः सूरजा खेलनो, बाल गोपालकः पातु मां सर्वदा।।

विद्युत-द्योतवान्-प्रस्फुरत्-वाससं, प्रावृडम्-भोदवत्-प्रोल्लसत्-विग्रहम्।

वन्यया मालया शोभितोरः स्थल, लोहितांघ्रिद्वयं वारिजाक्षं भजे।।

कुञ्चितैः-कुन्तलैः-भाजमा-नानं, रत्न-मौलिं-लसत्-कुण्डले-गण्डयोः।

हारकेयूरकं-कंकण-प्रोज्जवलं, किंकिणीं-अंजुलं-श्यामलं-तं-भजे।।

अच्युतस्याष्टकं-यः-पठेत्-इष्टदं, प्रेमतः-प्रत्यहं-पूरुषः-सस्पृहम्।

वृत्ततः सुन्दरं कर्तृ विश्वम्भरं तस्य वश्यो हरिर्जायते सत्त्वरम्।।

भज गोविन्दं भज गोविन्दं

दिनमपि रजनी सायं प्रातः शिशिरवसन्तौ पुनर् आयातः।
कालः क्रीडति गच्छति-आयु-तदपि न मुञ्चति-आशावायुः।।
भज गोविन्दं, भज गोविन्दं, भज गोविन्दं मूढमते।

प्राप्ते सन्निहिते मरणे नहि नहि रक्षति डुकृञ-करणे।
अग्रे वह्निः पृष्ठे भानू रात्रौ चिबुक-समर्पित जानुः
करतल भिक्षा तरु तल वासः, तदपि न मुञ्चति-आशा-पाशः।।
भज गोविन्दं, भज गोविन्दं, भज गोविन्दं मूढमते।

यावत्-वित्तोपार्जन-सक्तः तावत् निज-परिवारो रक्तः।
पश्चात्-धावति-जर्जर-देहे वार्ता पृच्छति कोऽपि न गेहे।
भज गोविन्दं, भज गोविन्दं, भज गोविन्दं, मूढमते।

जटिलो मुण्डी लुञ्चित-केशः, काषायाम्बर-बहु कृत वेषः।
पश्यन्नपि च न पश्यति मूढ, उदर-निमितं-बहु कृत वेषः।

भज गोविन्दं, भज गोविन्दं, भज गोविन्दं, मूढमते।

भगवत्-गीता-किञ्चित्-अधीता, गङ्गा-जल-लव-कणिका पीता।
सकृदपि यस्य मुरारि-समर्चा, तस्य यमः किं कुरुते चर्चा।
भज गोविन्दं, भज गोविन्दं, भज गोविन्दं, मूढमते।

अङ्गं गलितं पलितं मुण्डं, दशनविहिनं-जातं-तुण्डम्।
वृद्धो याति गृहीत्वा दण्डं, तदपि न मुञ्चति-आशा-पिण्डम्।
भज गोविन्दं, भज गोविन्दं, भज गोविन्दं, मूढमते।

बालः-तावत्-क्रीडा-सक्तः, तरुणःतावत्-तरुणी-रक्तः।
वृद्धः-तावत्-चिन्ता-मग्नः, परमे-ब्रह्मणि-कोऽपि-न-लग्नः।
भज गोविन्दं, भज गोविन्दं, भज गोविन्दं, मूढमते।

पुनरपि-जननं-पुनरपि-मरणं, पुनरपि-जननी-जठरे-शयनम्।
इह संसारे-खलु-दुस्तारे, कृपयाऽ पारे-पाहि-मुरारे।
भज गोविन्दं, भज गोविन्दं, भज गोविन्दं मूढमते।

पुनरपि-रजनी-पुनरपि-दिवसः, पुनरपि-पक्षः-पुनरपि-मासः।

पुनरपि-अयनं-पुनरपि-वर्षं, तदपि-न-मुञ्चति-आशा-मर्षम्।

भज गोविन्दं, भज गोविन्दं, भज गोविन्दं मूढमते।

वयसि-गते-कः-कामविकारः, शुष्के-नीरे-कः-कासारः।

नष्टे-द्रव्ये-कः-परिवारो, ज्ञाते-तत्वे-कः-संसारः।

भज गोविन्दं, भज गोविन्दं, भज गोविन्दं मूढमते।

नारीस्तन भर-नाभि निवेशं, मिथ्या-माया-मोहा-वेशम्।

एतत्-मांस-वसादि-विकारं, मनसि-विचारय-बारम्-बारम्।

भज गोविन्दं, भज गोविन्दं, भज गोविन्दं मूढमते।

कः-त्वं-कोऽहं-कुत-आयातः, का-मे-जननी-को-मे-तातः।

इति-परि-भावय-सर्वम्-असारं, विश्वं-त्यक्त्वा-स्वप्न-विचारम्।

भज गोविन्दं, भज गोविन्दं, भज गोविन्दं मूढमते।

गेयं-गीता-नाम-सहस्रं, ध्येयं-श्री-पति-रूपं-अजस्रम्।

नेयं-सज्जन-सङ्गे-चितं, देयं-दीन-जनाय-च-वित्तम्।

भज गोविन्दं, भज गोविन्दं, भज गोविन्दं मूढमते।
यावत्-जीवो-निवसति-देहे, कुशलं-तावत्-पृच्छति-गेहे।
गत-वति-वायौ-देहापाये, भार्या-बिभ्यति-तस्मिन्-काये।
भज गोविन्दं, भज गोविन्दं, भज गोविन्दं मूढमते।
सुखतः-क्रियते-रामा-भोगः, पश्चात्-हन्त-शरीरे-रोगः।
यद्यपि-लोके-मरणं-शरणं, तदपि-न-मुञ्चति-पापा-चरणम्
भज गोविन्दं, भज गोविन्दं, भज गोविन्दं मूढमते।
कुरुते-गङ्गा-सागर- गमनं, व्रत-परि-पालनम्-अथवा-दानम्।
ज्ञान-विहीनः-सर्व मतेन, मुक्तिः-न-भवति-जन्मशतेन
भज गोविन्दं भज गोविन्दं, भज गोविन्दं मूढमते।

श्रीराम स्तुतिः

श्रीरामचन्द्रं सततं नमामि, सुग्रीवमित्रं परमं पवित्रं, सीताकलत्रं नवमेघ-गात्रम्।
कारुण्य-पात्रं शतपत्र-नेत्रं, श्रीराम-चन्द्रं सततं नमामि।।1।।

अर्थः- सुग्रीव के मित्र, परमपावन, सीता के पति नवीन मेघ के समान शरीर वाले, करुणा के सिन्धु, कमल के समान नेत्रवाले श्रीरामचन्द्र की मैं निरन्तर वन्दना करता हूँ।

संसार-सारं निगम-प्रचारं-धर्मावतारं हृतभूमि-भारम्।
सदाविकारं सुखसिन्धु-सारं-श्रीराम-चन्द्रं सततंनमामि।।2।।

अर्थः- असार संसार का सारवस्तु, वेदों का प्रचार करने वाले, धर्म के अवतार, भू-भार हरण करने वाले, सदा विकार रहित, आनन्द सिन्धु के सारभूत, श्रीरामचन्द्र की मैं निरन्तर वन्दना करता हूँ।

लक्ष्मो-विलासं जगतां निवासं-लंकाविनाशं भुवन-प्रकाशम्।
भू-देव-वासं शरत्-इन्दुहासं-श्रीरामचन्द्रं सततं नमामि।।3।।

अर्थः- लक्ष्मी से विलास करने वाला, जगत् का निवास, लांकनाश करने वाला, भुवनों को प्रकाशित करने वाला, ब्राह्मणों को शरण देने वाला, शरत् चन्द्र हास्यवाला, श्रीरामचन्द्र का मैं निरन्तर नमन करता हूँ।

मन्दार-मालं-वचने रसालं-गुणैर्विशालं हत-सप्त-तालम्
क्रव्याद-कालं सुर-लोकपालं-श्रीरामचन्द्रं सततं नमामि।।4।।

अर्थः- मन्दारपुष्प माला वाले, रसीले वचन बोलने वाले, गुणों में महान, साततताल वृक्ष भेदने वाले, राक्षसों के काल, देवलोक पालक, श्रीरामचन्द्र की मैं निरन्तर वन्दना करता हूँ।

वेदान्त-गानं सकलैः समानं - हतारि-मानं-त्रिदश-प्रधानम्।
गजेन्द्र-यानं विगतावसानं-श्रीरामचन्द्रं सततं नमामि।।5।।

अर्थः- वेदान्त द्वारा गेय, सबके साथ एक जैसा, शत्रुओं का नाम मर्दन करने वाला, देवताओं में गजेन्द्र सवारी करने वाले, अन्त-रहित-श्रीरामचन्द्र की मैं निरन्तर वन्दना करता हूँ।

श्यामाभि-रामं नयना-भिरामं, गुणाभिरामं, वचनाभिरामम्।
विश्व-प्रणामं कृतभक्तकामं, श्रीरामचन्द्रं सततं नमामि।।6।।

अर्थः- श्याम सुन्दर, नेत्रों को आनन्द देने वाला, गुणों से मनोहर, मधुर वचन बोलने वाले विश्व वन्दनीय, भक्तजनों की कामनायें पूर्ण करने वाले, श्रीरामचन्द्र की मैं निरन्तर वन्दरना करता हूँ।

लीलाशरीरं रणरंगधीरं, विश्वैकसारं रघुवंश-हारम्।
गम्भीरनादं जितसर्व-वादं, श्रीरामचन्द्र सततं नमामि।।7।।

अर्थः- लीला के लिये शरीर धारण करने वाले रणस्थली में धीर, रघुवंश में श्रेष्ठ, गम्भीरवाणी बोलने वाले, समस्तवादों को जीतने वाले, श्रीरामचन्द्र को मैं प्रतिक्षण प्रणाम करता हूँ।

खले कृतान्तं स्वजने विनीतं-सामोपगीतं मनसाऽप्रीततम्।
रोगणगीतं वचनात्-अतीतं-श्रीरामचन्द्रं सततं नमामि।।8।।

अर्थः- दुष्टों के लिये मृत्युरूप, अपने भक्तों के लिये नम्रभाव वाले, सामवेद के द्वारा स्तुत, मन के अगोचर प्रेम से गान करने वाले योग्य, वचनों से अग्राहय, श्रीरामचन्द्र को मैं सर्वदा नमस्कार करता हूँ।

हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे। हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे।

बच्चियों में बाल काटने की आदत न डाले। यह हमारी संस्कृति का अपमान है।

मस छुय वस

श्री हनूमते नमः

श्री हनुमान चालीसा

दोहा

श्री गुरु चरन सरोज रज, निज मन मुकुरू सुधारि।
बरनऊँ रघुबर बिमल जसु, जो दायकु फल चारि।।
बुद्धिहीन तनु जानिके, सुमिरौं पवन-कुमार।
बल बुद्धि बिद्या देहु मोहिं, हरहु कलेस बिकार।।

चौपाई

जय हनुमान ज्ञान गुन सागर।
जय कपीस तिहुँ लोक उजागर।।
राम दूत अतुलित बल धामा।
अंजनि - पुत्र पवन सुत नामा।।
महाबीर बिक्रम बजरंगी ।
कुमति निवार सुमति के संगी ।।
कंचन बरन बिराज सुबेसा ।
कानन कुण्डल कुंचित केसा ।।
हाथ बज्र और ध्वजा बिराजै ।
काँधे मूँज जनेऊ साजै ।।
संकर सुवन केसरी नन्दन ।
तेज प्रताप महा जग बन्दन ।।
बिद्यावान गुनी अति चातुर ।
राज काज करिबे को आतुर ।।
प्रभु चरित्र सुनिबे को रसिया ।
राम लखन सीता मन बसिया ।।
सूक्ष्म रूप धरि सियहिं दिखावा ।
बिकट रूप धरि लंक जरावा ।।

भीम रूप धरि असुर सँहारे ।
रामचन्द्र के काज सँवारे ।।
लाय सजीवन लखन जियाये ।
श्री रघुबीर हरषि उर लाये ।।
रघुपति कीन्ही बहुत बड़ाई ।
तुम मम प्रिय भरतहि सम भाई ।।
सहस बदन तुम्हरो जस गावैं ।
अस कहि श्रीपति कंठ लगावैं ।।
सनकादिक ब्रह्मादि मुनीसा ।
नारद सारद सहित अहीसा ।।
जम कुबेर दिगपाल जहाँ ते ।
कबि कोबिद कहि सके कहाँ ते ।।
तुम उपकार सुग्रीवहिं कीन्हा ।
राम मिलाय राज पद दीन्हा ।।

तुम्हरो मंत्र बिभीषन माना ।
लंकेस्वर भए सब जग जाना ।।
जुग सहस्र जोजन पर भानू ।
लील्यो ताहि मधुर फल जानू ।।
प्रभु मुद्रिका मेलि मुख माहीं ।
जलधि लाँघि गये अचरज नाहीं ।।
दुर्गम काज जगत के जेते ।
सुगम अनुग्रह तुम्हरे तेते ।।
राम दुआरे तुम रखवारे ।
होत न आज्ञा बिनु पैसारे ।।
सब सुख लहै तुम्हारी सरना ।
तुम रच्छक काहू को डर ना ।।
आपन तेज सम्हारो आपै ।
तीनों लोक हाँक तें काँपै ।।

भूत पिसाच निकट नहिं आवै ।
महाबीर जब नाम सुनावै ॥
नासै रोग हरै सब पीरा ।
जपत निरंतर हनुमत बीरा ॥
संकट तें हनुमान छुड़ावै ।
मन क्रम बचन ध्यान जो लावै ॥
सब पर राम तपस्वी राजा ।
तिन के काज सकल तुम साजा ॥
और मनोरथ जो कोइ लावै ।
सोइ अमित जीवन फल पावै ॥
चारों जुग परताप तुम्हारा ।
है परसिद्ध जगत उजियारा ॥
साधु संत के तुम रखवारे ।
असुर निकंदन राम दुलारे ॥

अष्ट सिद्धि नौ निधि के दाता ।
अस बर दीन जानकी माता ॥
राम रसायन तुम्हरे पासा ।
सदा रहो रघुपति के दासा ॥
तुम्हरे भजन राम को पावै ।
जनम जनम के दुख बिसरावै ॥
अंत काल रघुबर पुर जाई ।
जहाँ जन्म हरि-भक्त कहाई ॥
और देवता चित्त न धरई ।
हनुमत सेइ सर्ब सुख करई ॥
संकट कटै मिटै सब पीरा ।
जो सुमिरै हनुमत बलबीरा ॥
जै जै जै हनुमान गोसाईं ।
कृपा करहु गुरु देव की नाईं ॥

जो सत बार पाठ कर कोई ।
छूटहि बंदि महा सुख होई ।।
जो यह पढ़ै हनुमान चलीसा ।
होय सिद्धि साखी गौरीसा ।।
तुलसीदास सदा हरि चेरा ।
कीजै नाथ हृदय महँ डेरा ।।

दोहा

पवनतनय संकट हरन, मंगल मूरति रूप ।
राम लखन सीता सहित, हृदय बसहु सुर भूप।।

संकटमोचन हनुमानाष्टक

बाल समय रबि भक्षि लियो तब तीनहुँ लोक भयो अँधियारो ।
ताहि सों त्रास भयो जग को यह संकट काहु सों जात न टारो।
देवन आनि करी बिनती तब छाँड़ि दियो रबि कष्ट निवारो।
को नहिं जानत है जगमें कपि संकटमोचन नाम तिहारो।

बालि की त्रास कपीस बसै गिरि जात महाप्रभु पंथ निहारो ।
चौंकि महा मुनि साप दियो तब चाहिय कौन बिचार बिचारो।
कै द्विज रूप लिवाय महाप्रभु सो तुम दास के सोक निवारो।
अंगद के सँग लेन गये सिय खोज कपीस यह बैन उचारो ।
जीवत ना बचिहौ हम सो जु बिना सुधि लाए इहाँ पगु धारो।
हेरि थके तट सिंधु सबै तब लाय सिया-सुधि प्रान उबारो।
रावण त्रास दई सिय को सब राक्षसि सों कहि सोक निवारो।
ताहि समय हनुमान महाप्रभु जाय महा रजनीचर मारो।
चाहत सीय असोक सों आगि सु दै प्रभु मुद्रिका सोक निवारो।
बान लग्यो उर लछिमन के तब प्रान तजे सुत रावन मारो ।
लै गृह बैद्य सुषेन समेत तबै गिरि द्रोन सु बीर उपारो ।।
आनि सजीवन हाथ दई तब लछिमन के तुम प्रान उबारो।
रावन जुद्ध अजान कियो तब नाग कि फाँस सबै सिर डारो ।
श्रीरघुनाथ समेत सबै दल मोह भयो यह संकट भारो ।

आनि खगेस तबै हनुमान जु बंधन काटि सुत्रास निवारो।
बंधु समेत जबै अहिरावन लै रघुनाथ पताल सिधारो ।
देबिहिं पूजि भली बिधि सों बलि देउ सबै मिलि मंत्र बिचारो ।
जाय सहाय भयो तब ही अहिरावन सैन्य समेत सँहारो।
काज किये बड़ देवन के तुम बीर महाप्रभु देखि बिचारो ।
कौन सो संकट मोर गरीब को जो तुमसों नहिं जात है टारो ।
बेगि हरो हनुमान महाप्रभु जो कछु संकट होय हमारो ।।

दोहा

लाल देह लाली लसे, अरु धरि लाल लँगूर।
बज्र देह दानव दलन, जय जय जय कपि सूर।।

श्री हनुमान जी की आरती

आरती कीजै हनुमान लला की,
दुष्टदलन रघुनाथ कला की।
जाके बल से गिरिवर काँपै,
रोग-दोष जाके निकट न झाँकै।
अंजनि पुत्र महा बलदाई,
संतन के प्रभु सदा सहाई।
दे बीरा रघुनाथ पठाये,
लंका जारि सिया सुधि लाये।
लंका सो कोट समुद्र सी खाई,
जात पवनसुत बार न लाई।
लंका जारि असुर संहारे,
सीयारामजी के काज सँवारे।
लक्ष्मण मूर्छित पड़े सकारे,
आनि सजीवन प्रान उबारे।
पैठि पताल तोरि जमकारे,
अहिरावन की भुजा उखारे।

बायें भुजा असुर दल मारे,
दहिने भुजा संतजन तारे।
सुर नर मुनि आरती उतारें,
जै जै जै हनुमान उचारें।
कंचन थार कपूर लौ छाई,
आरती करत अंजना माई।
जो हनुमान जी की आरति गावै।
बसि बैकुंठ परमपद पावै।
लंक विध्वंस कीन्ह रघुराई,
तुलसीदास प्रभु कीरति गाई।

श्री राम वन्दना

आपदामपहर्तारं दातारं सर्वसम्पदाम्।
लोकाभिरामं श्री रामं भूयो भूयो नमाम्यहम्।।
रामाय रामभद्राय रामचन्द्राय मानसे।
रघुनाथाय नाथाय सीतायाः पतये नमः।।
नीलाम्बुजश्यामलकोमलाङ्गं।
सीतासमारोपितवामभागम्।।
पाणौ महासायकचारुचापं।
नमामि रामं रघुवंशनाथम्।।

श्री राम स्तुति

श्रीरामचन्द्र कृपालु भजु मन हरण भवभय दारु णं।
नवकंज-लोचन, कंज-मुख, कर-कंज पद कंजारुणं।।
कंदर्प अगणित अमित छबि, नवनील-नीरद सुंदरं।
पट पीत मानहु तड़ित रुचि शुचि नौमि जनक सुताबरं।।
भजु दीनबंधु दिनेश दानव-दैत्यवंश-निकंदनं।
रघुनंद आनँदकंद कौशलचंद दशरथ-नंदनं।।
सिर मुकुट कंडल तिलक चारु उदारु अंग विभूषणं।

आजानुभुज शर-चाप-धर, संग्राम-जिल-खरदूषणं।।
इति वदति तुलसीदास शंकर-शेष-मुनि-मन-रंजनं।
मम हृदय-कंज निवास कुरु, कामादि खलदल-गंजनं।
मनु जाहिं राचेउ मिलिहि सो बरु सहज सुंदर साँवरो।
करुना निधान सुजान सीलु सनेहु जानत रावरो।।
एति भाँति गौरि असीम सुनि सिय सहित हियँ हरषीं अली।
तुलसी भवानिहि पूजि पुनि पुनि मुदित मन मंदिर चली।।

श्री रामावतार

भए प्रगट कृपाला दीनदयाला कौसल्या हितकारी।
हरिषत महतारी मुनि मन हारी अद्भुत रूप बिचारी।।
लोचन अभिरामा तनु घनस्यामा निज आयुध भुज चारी।
भूषन बनमाला नयन बिसाला सोभासिंधु खरारी।।
कह दुइ कर जोरी अस्तुति तोरी केहि बिधि करौं अनंता।
माया गुन ग्यानातीत अमाना बेद पुरान भनंता।।
करुना सुखसागर सब गुन आगर जेहि गावहिं श्रुति संता।
सो मम हिम लागी जन अनुरागी भयउ प्रगट श्रीकंता।।
ब्रह्मांड निकाया निर्मित माया रोम रोम प्रति बेद कहै।
मम उर सो बासी यह उपहासी सुनत धीर मति थिर न रहै।
उपजा जब ग्याना प्रभु मुसुकाना चरित बहुत बिधि कीन्ह चहै।
कहि कथा सुहाई मातु बुझाई जेहि प्रकार सुत प्रेम लहै।।
माता पुनि बोली सो मति डोली तजहु तात यह रूपा।
कीजै सिसुलाला अति प्रियसीला यह सुख परम अनूपा।।
सुनि बचन सुजाना रोदन ठाना होइ बालक सुरभूपा।
यह चरित जे गावहिं हरिपद पावहिं ते न परहिं भवकूपा।।
हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे
हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे

गौरी स्तुतिः

ॐ लीलारब्ध-स्थापित-लुप्ताखिल-लोकां,
लोकातीतै-र्योगिभिर्-अन्तर्-हृदि-मृग्याम्।
बालादित्य-श्रेणि-समान-द्युति-पुंजां,
गौरीम्-अम्बामृ-अम्बु-रुहा-क्षीम्-अहम्-ईडे।।

अर्थ: जो जगदम्बा बिना किसी परिश्रम के सृष्टि को बनाती है पालन करती है और नाश करती है, योग के अन्तिम अवस्था पर पहुंचे हुये योगी जिस शक्ति रूपी मां को हृदय से ढूंढते है, उदित होते हुये असंख्य सूर्यों जैसी प्रकाश वाली, कमल जैसे नेत्रों वाली माता गौरी (योगाग्नि से जलाये हुये शरीर के कारण गौर वर्ण वाली) की मैं स्तुति करता हूँ।

आशा-पाश-क्लेश-विनाशं विदधानां,
पादाम्भोज-ध्यान-पराणां पुरुषाणाम्।
ईशीम्-ईशाङ् गार्ध हरां तां तनुमध्यां,
गौरीम्-अम्बाम्-अम्बु-रुहा-क्षीम्-अहम्-ईडे।।

अर्थ: जो भक्त जन उस शक्ति रूपी माता के चरण कमलों के ध्यान में लगे हुए हैं, उन के आशा के बन्धनों से पैदा हुए कष्टों को नाश करने वाली, शक्तिशाली, शंकर के आधे शरीर पर अधिकार वाली, सूक्ष्म कमर वाली, कमल जैसे नेत्रों वाली, माता गौरी की मैं स्तुति करता हूँ।

प्रत्याहार-ध्यान-समाधि-स्थितिभाजां,
नित्यं चित्ते निर्वृत्तिकाष्ठां कलयन्तीम्।
सत्य-ज्ञाना-नन्दमयीं तां तडित्-आभां,
गौरीम्-अम्बाम्-अम्बु-रुहा-क्षीम्-अहम्-ईडे।।

अर्थ: प्रत्याहार, ध्यान तथा समाधि के साधना में लगे हुये भक्तों के चित्त में आनन्द उत्पन्न करने वाली, सत्य ज्ञान तथा आनन्द स्वरूप वाली, बिजली की जैसी प्रकाशवाली, कमल जैसे नेत्रों वाली गौरी माता की मैं स्तुति करता हूँ।

चन्द्रापीडा-नन्दितमन्द-स्मितवक्त्रां,
चन्द्रापीडा-लंकृत-लोला-लकभाराम्।
इन्द्रोपेन्द्रा-द्यर्चित-पादाम्बुजयुग्मां,
गौरीम्-अम्बाम्-अम्बु-रुहा-क्षीम्-अहम्-ईडे।।

अर्थ : भगवान् शंकर को आनन्दित करने वाले मुस्कराहट से युक्त मुख वाली, भगवान् शंकर के निमित सजाये हुये घूंघट वाले बालों की भार वाली, इन्द्र तथा नारायण जिसके चरणों की पूजा करते हैं उस कमल जैसे नेत्रों वाली गौरी माता की मैं स्तुति करता हूँ।

नाना कारैः शक्ति-कदम्बै-र्भुवनानि,
व्याप्त स्वैरं क्रीडति यासौ स्वयमेका।
कल्याणीं तां कल्पलताम् आनतिभाजां,
गौरीम्-अम्बाम्-अम्बु-रुहा-क्षीम्-अहम्-ईडे।।

अर्थ : भिन्न भिन्न शक्तियों से भूः भुवः स्वः लोकों में व्याप्त होकर जो मां अकेली स्वतंत्र रूप से खेलती रहती है, जो कल्याण रूप से शरण में आये हुए के लिए कल्पलता है अर्थात् हर कामना को पूर्ण करने वाली है ऐसी ही कमल जैसी नेत्रों वाली मां की मैं स्तुति करता हूँ।

मूलाधारात्-उत्थित-वन्तीं विधिरन्ध्रं,
सौरं-चान्द्रं धाम विहाय ज्वलिताङ्गीम्।
स्थूलां सूक्ष्मां सूक्ष्मतरां ताम्-अभिवन्द्यां,
गौरीम्-अम्बाम्-अम्बु-रुहा-क्षीम्-अहम्-ईडे।।

अर्थ : सूर्य लोक और चन्द्रमा लोक से गुजर कर मूलाधर से उठी हुई ब्रह्म रन्ध्र तक पहुंची हुई प्रकाश रूप, स्थूल तथा कारण शरीर में व्याप्त, प्रणाम के योग्य, कमलों जैसी नेत्रों वाली माता गौरी की मैं स्तुति करता हूँ।

आदि-क्षान्ताम्-अक्षर-मूर्त्या, विलसन्तीं,
भूते भूते भूत कदम्बं प्रसवित्रीम्।
शब्द ब्रह्मा-नन्द मयीं ताम्-अभिरामां,
गौरीम्-अम्बाम्-अम्बु-रुहा-क्षीम्-अहम्-ईडे।।

अर्थ : 'अ' से लेकर 'क्ष' तक अक्षर रूप में विलास करने वाली, युग युग में प्राणियों को उत्पन्न करने वाली, शब्द ब्रह्म स्वरूप आनन्दमई उस सुन्दर मां का, जिस के नेत्र कमल के समान हैं मैं स्तुति करता हूँ।

यस्याः कुक्षौ लीनम् अखण्डं, जगत्-अण्डं,
भूयो भूयः प्रादुर्-अभूत्-अक्षतमेव।
भर्त्रा सार्धं तां स्फटिकाद्रौ, विहरन्तीम्,
गौरीम्-अम्बाम्-अम्बु-रुहा-क्षीम्-अहम्-ईडे।।

अर्थ : जिस जगदम्बा की गोद में यह सब सृष्टि लय हो जाती है फिर बार

बार किसी खण्डन के बिना फिर से उत्पन्न होती है प्रकाश के केन्द्र ब्रह्मरन्ध्र में सदाशिव के साथ विहार करती हुई अथवा बर्फ से ढक्के हुए सफेद हिमलाय पर्वत पर विहार करने वाली कमल जैसे नेत्रों वाली गौरी माता की मैं स्तुति करता हूँ।

यस्याम्-एतत्प्रोतम्-अशेषं मणिमाला,
सूत्रे यत्-वत् क्वापि चरं चाप्यचरं च।
ताम्-अध्यात्म-ज्ञानपदव्या-गमनीयां,
गौरीम्-अम्बाम्-अम्बु-रुहा-क्षीम्-अहम्-ईडे।।

अर्थ: जिस शक्ति में यह सारी चराचर सृष्टि ऐसे पिरोई हुई है जैसे सूत्र में रत्न गुधे हुये होते हैं उसी शक्ति रूपी मां को जो आध्यात्मज्ञान से जानी जाती है। जिस के नेत्र कमलों के समान हैं उसी मां की मैं स्तुति करता हूँ।

नित्यः सत्यो निष्कल एको जगदीशः
साक्षी यस्याः सर्गविधौ सहंरणे च।
विश्वत्राण-क्रीडन शीलां शिवपत्नीं,
गौरीम्-अम्बाम्-अम्बु-रुहा-क्षीम्-अहम्-ईडे।।

अर्थ : जिस महामाया के सृष्टि बनाते समय अथवा संहार करते समय सदा शिव जो नित्य, सत्य, सजातीय इत्यादि तीन भेदों से रहित है जो आप के बनाने के काम में केवल साक्षी रूप में रहते हैं, जगत की रक्षा करना जिन का एक खेल है उसी कमल जैसी नेत्रों वाली गौरी माता की मैं स्तुति करता हूँ।

प्रातः काले भावविशुद्धिं विदधानो,
भक्त्या नित्यं जल्पति गौरीदशकं यः।
वाचां सिद्धिं सम्पतिम्-उच्चैः शिवभक्तिं,
तस्या-वश्यं पर्वत-पुत्री विदधाति।।

अर्थः जो प्रातः काल शुद्ध ह्रदय से युक्त और संकल्प विकल्प रहित होकर भक्ति से नित्य इन दस गौरी माता के श्लोकों का उच्चारण करता है उस भक्त को सिद्धि, ऐश्वर्य, भगवान् शंकर की भक्ति पार्वती माता अवश्य देती है।

ॐ नमः शम्भवाय च, मयोभवाय च, नमः शंकराय च, मयस्कारय च, नमः शिवाय च शिवतराय च॥

देवीसूक्तम्

नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः। नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्म ताम्।
रौद्रायै नमो नित्यायै गौर्यै धात्र्यै नमो नमः। ज्योत्स्नायै चेन्दुरूपिण्यै सुखायै सततं नमः।
कल्याण्यै प्रणतां वृद्ध्यै सिद्ध्यै कुर्मो नमो नमः। नैर्ऋत्यै भूभृतां लक्ष्म्यै शर्वाण्यै ते नमो नमः।
दुर्गायै दुर्गपारायै सारायै सर्वकारिण्यै। ख्यात्यै तथैव कृष्णायै धूम्रायै सततं नमः।
अतिसौम्यातिरौद्रायै नतास्तस्यै नमो नमः। नमो जगत्प्रतिष्ठायै देव्यै कृत्यै नमो नमः।
या देवी सर्वभूतेषु विष्णुमायेति शब्दिता, नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः।।
या देवी सर्वभूतेषु चेतनेत्य-भिधीयते, नमस्तस्यै, नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः।
या देवी सर्वभूतेषु बुद्धिरूपेण संस्थिता, नमस्तस्यै, नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः।।
या देवी सर्वभूतेषु निद्रारूपेण संस्थिता, नमस्तस्यै, नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः।
या देवी सर्वभूतेषु क्षुधारूपेण संस्थिता, नमस्तस्यै, नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः।।
या देवी सर्वभूतेषु तृष्णारूपेण संस्थिता, नमस्तस्यै, नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः।

या देवी सर्वभूतेषु क्षान्तिरूपेण संस्थिता, नमस्तस्यै, नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः।।
या देवी सर्वभूतेषु जातिरूपेण संस्थिता, नमस्तस्यै, नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः।
या देवी सर्वभूतेषु लज्जारूपेण संस्थिता, नमस्तस्यै, नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः।।
या देवी सर्वभूतेषु शान्तिरूपेण संस्थिता, नमस्तस्यै, नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः।।
या देवी सर्वभूतेषु श्रद्धारूपेण संस्थिता, नमस्तस्यै, नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः।।
या देवी सर्वभूतेषु कान्तिरूपेण संस्थिता, नमस्तस्यै, नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः।।
या देवी सर्वभूतेषु लक्ष्मीरूपेण संस्थिता, नमस्तस्यै, नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः।।
या देवी सर्वभूतेषु स्मृतिरूपेण संस्थिता, नमस्तस्यै, नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः।।
या देवी सर्वभूतेषु दयारूपेण संस्थिता, नमस्तस्यै, नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः।।
या देवी सर्वभूतेषु तुष्टिरूपेण संस्थिता, नमस्तस्यै, नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः।।
या देवी सर्वभूतेषु मातृरूपेण संस्थिता, नमस्तस्यै, नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः।।
या देवी सर्वभूतेषु भ्रांतिरूपेण संस्थिता, नमस्तस्यै, नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः।।
इन्द्रियाणामधिष्ठात्री भूतानां चाखिलेषु या। भूतेषु सततं तस्यै व्याप्तिदेव्यै नमो नमः।।
चितिरूपेण या कृत्स्नमेतद्व्याप्य स्थिता जगत्। नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः।

स्तुता सुरैः पूर्वमभीष्टसंश्रया- त्तथा सुरेन्द्रेण दिनेषु सेविता।
करोतु सा नः शुभहेतुरीश्वरी, शुभानि भद्राण्यभिहन्तु चापदः।।
या साम्प्रतं चोद्धतदैत्यतापितै, रस्माभिरीशा च सुरैर्नमस्यते।
या च स्मृता तत्क्षणमेव हन्ति नः, सर्वापदो भक्तिविनम्रमूर्तिभिः।।

दुर्गा सिद्ध मन्त्र स्तोत्र

देवि प्रपन्नार्तिहरे प्रसीद, प्रसीद मातर् जगतोऽखिलस्य।
प्रसीद विश्वेश्वरि पाहि विश्वं, त्वमीश्वरी देवि चराचरस्य।।

अर्थः- शरणागत की पीड़ा को दूर करने वाली देवी! हम पर प्रसन्न होओ। पूरे विश्व की जननी! प्रसन्न होवो। हे विश्वेश्वरि! विश्व की रक्षा करो। हे देवी! तुम चराचर जगत् की अधीश्वरी (स्वामी) हो।

त्वं वैष्णवी शक्तिरनन्तवीर्या, विश्वस्य बीजं परमासि माया।
सम्मोहितं देवि समस्तमेतत, त्वं वै प्रसन्ना भुवि मुक्ति हेतुः।।

अर्थः- हे देवी! तुम अनन्त बलयुक्त वैष्णवी शक्ति हो, इस विश्व की बीजरूपा परा माया हो, आप ने इस पूरे विश्व को मोहित कर रखा है, आप ही प्रसन्न होने पर इस पृथ्वी पर मोक्ष की प्राप्ति कराती हो।

विद्याः समस्तास्तव देवि भेदाः, स्त्रियः समस्ताः सकला जगत्सु।

त्वयैकया पूरितम् अम्बयैतत्, का ते स्तुतिः स्तव्यपरा परोक्तिः।।

अर्थः- हे देवी! समस्त विद्यायें आप के ही अलग-अलग रूप हैं संसार में जितनी भी स्त्रियां हैं सब आप की ही मूर्तियां है, हे जगत् अम्बा! एक मात्र आपने इस पूरे विश्व को व्याप्त कर रखा है आप की स्तुति क्या हो सकती है आप स्तवन करने योग्य पदार्थो से परे हो।

विश्वेश्वरि त्वं परिपासि विश्वं, विश्वात्मिका धारयसीति विश्वम्।
विश्वेशवन्ध्या भवती भवन्ति, विश्वाश्रया ये त्वयि भक्ति नम्राः।।

अर्थः- हे विश्वेश्वरि! आप विश्व का पालन करती हो, आप विश्व रूपा हो, इस कारण आप समस्त विश्व को धारण करती हो आप भगवान् विश्वनाथ की भी वन्दनीया हो, जो लोग भक्तिपूर्वक आप के सामने सिर झुकाते हैं वे सम्पूर्ण विश्व को आश्रय देने वाले होते हैं।

दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेष जन्तोः, स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव शुभां ददासि।
द्रारिद्र्-दुःख भय-हारिणि का त्वदन्या, सर्वोपकार करणाय सदार्द्रचित्ता।।

अर्थः- मां दुर्गे! आप स्मरण करने पर सब प्राणियों का भय दूर करती है और स्वस्थ पुरुषों द्वारा चिन्तन करने पर उन्हें कल्याणमयी बुद्धि प्रदान करती है। दुःख दरिद्रता और भय हरने वाली देवी! आप के सिवा दूसरी कौन है जिस का चित सबका उपकार करने के लिये हमेशा दयार्द्र रहता है।

सर्वमङ्गल-मङ्गल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके। शरण्ये त्रम्बके गौरि नारायणि नमोऽस्तु ते।।

अर्थः- सभी शुभकामनाओं को सिद्ध करने से सुन्दर अथवा कल्याणकारी धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष को देने वाली दुःखों से रक्षा करने वाली, अग्नि, चन्द्रमा, सूर्य रूपी तीन नेत्रों वाली, दक्ष प्रजापत के यज्ञ में योग अग्नि में भस्म बनी हुई अतः गौर वर्ण वाली, विष्णु की लक्ष्मी रूपा शक्ति वाली माता तुम्हें नमस्कार हो।

शरणागत दीनार्त परित्राण परायणे। सर्वस्यार्तिहरे देवि नारायणि नमोस्तु ते।।

अर्थः- शरण में आये हुये दीनों एवं पीडितों की रक्षा में संलग्न रहने वाली तथा सब की पीडा दूर करने वाली नारायणी देवी! आप को नमस्कार है।

सप्तश्लोकी दुर्गा

ज्ञानि-नाम्-अपि चेतांसि देवी भगवती हि सा। बलात्-आकृष्य मोहाय महामाया प्रयच्छति।।1।।

अर्थः- भगवती माहमाया देवी ज्ञानियों के भी चित को बलपूर्वक खींच कर मोह में डाल देती है।।1।।

दुर्गे स्मृता हरसि भीतिम्-अशेष-जन्तोः स्वस्थैः स्मृता मतिम्-अतीव शुभां ददासि।
दारि-द्र्य-दुःख-भय-हारिणि का त्वत्-अन्या सर्वोप-कार-करणाय दयार्द्र-चिता।।2।।

अर्थः माँ दुर्गे ! आप स्मरण करने पर सब प्राणियों का भय हर लेती है, और स्वस्थ पुरुषों द्वारा चिन्तन करने पर उन्हें परम कल्याण रूपी बुद्धि देती है, दुःख दरिद्रता हरने वाली देवी आप के बिना कौन है जिस का चित्त सब का उपकार करने के लिये सदा ही दयार्द्र रहता है।।2।।

सर्व-मंगल-मंगल्ये शिवे सर्वार्थ-साधिके, शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोस्तुते।।3।।

अर्थः- हे माँ ! तुम सब प्रकार का मंगल करने वाली मंगलमयी हो, कल्याण करने वाली शिवा हो, सब पुरुषार्थों को सिद्ध करने वाली, शरणागत-वत्सला, तीन नेत्रों वाली तथा सब की पीड़ा, दूर करने वाली, नारायणी देवी, तुम्हें नमस्कार है।

शरणागत-दीनार्त-परित्राण-परायणे सर्वस्यार्ति-हरे देवि नारायणि नमोस्तु ते ।।4।।

अर्थः- शरण में आये हुये, दीनों एवं पीड़ितों की रक्षा में लगी रहने वाली, तथा सब की पीड़ा दूर करने वाली, नारायणी देवी तुम्हें नमस्कार है।

सर्व-स्वरूपे सर्वेशे सर्व-शक्ति-समन्विते, भयेभ्यस्त्राहि-नो देवि दुर्गे देवि नमोस्तुते।।5।।

अर्थः- सर्वरूपा, सर्वेश्वरी तथा सब प्रकार की शक्तियों से सम्पन्न, दिव्यरूपा दुर्गे सब भयों से हमारी रक्षा करो, तुम्हें नमस्कार है।

रोगान्-अशेषान्-अपहंसि तुष्टा रुष्टा-तु कामान् सकलान्-अभीष्टान्

त्वाम्-आश्रितानां न विपत्-नराणां त्वाम्-आश्रिता ह्या श्रयतां प्रयान्ति।।6।।

अर्थः- हे देवी! तुम प्रसन्न होने पर सब रोगों को नष्ट करने वाली, और कुपित होने पर मनोवांछित सभी कामनाओं का नाश कर देती हो। जो लोग तुम्हारी शरण में जा चुके हैं, उन पर विपत्ति आती ही नहीं है, तुम्हारी शरण में गये हुये मनुष्य दूसरों को शरण देने वाले हो जाते है।।6।।

सर्वा-बाधा-प्रशमनं त्रैलोक्य-स्याखिलेश्वरि एवम्-एव त्वया कार्यम्-अस्मत्-वैरि-विनाशनम्।।7।।

अर्थः- हे सर्वेश्वरि ! जिस प्रकार तुम ने मधुकैटभ का नाश किया तुम उसी प्रकार तीनों लोकों की सभी बाधाओं को शान्त करो और

गायत्री चालीसा

ॐ भूभवः स्वः ॐ युतजननी, गायत्री नितकलिमल दहनी।

अक्षर चौबीस परम पुनिता, इनमें बसे शास्त्र श्रुति गीता।

शाश्वत सतोगुणी सत् रूपा, सत्य सनातन सुधा अनूपा।

हंसारूढ सितम्बर धारी, स्वर्णकान्ति, शुचि गगन बिहारी।

पुस्तक पुष्प कमण्डलु माला, शुभ्र वर्ण तनु नयन विशाला।
ध्यान धरत पुलकित हियहोई, सुख उपजल दुख दुरमति खोई।
कामधेनु तुम सुर तरु छाया, निराकर ही अद्‌भुत माया।
तुम्हरी शरण गहै जो कोई, तरै सकल संकट सो सोई।
सरस्वती लक्ष्मी तुम काली, दिपै तुम्हारी ज्योति निराली।
तुम्हरी महिमा पार न पावै, जो शारद शत मुख गुन गावै।
चार वेद की मातु पुनीता, तुम ब्रह्माणी गौरी सीता।
महा मन्त्र जितने जग माहीं, कोऊ गायत्री सम नाहीं।
सुमरत हिय में ज्ञान प्रकासै, आलस्य पाप अविद्या नासै।
सृष्टि बीज जग जननि भवानी, कालरात्रि वरदा कल्याणी।
ब्रह्मा विष्णु रुद्र सुर जेते, तुमसों पावें सुरता तेते।
तुम भक्तन की भक्त तुम्हारे, जननि हिं पुत्र प्राण ते प्यारे।
महिमा अपरम्पार तुम्हारी, जै जै जै त्रिपदा भय हारी।
पूरित सकल ज्ञान-विज्ञाना, तुम सम अधिक न जग में आना।
तुमहि जानि कछू रहे न शेषा, तुमहिं पाय कछू रहै न कलेषा।

जानत तुमहिं तुमहिं है जाई, पारस परसि कुधातु सुहाई

तुम्हरी शक्ति दिपै सब ठाईं, माता तुम सब ठौर समाई।

ग्रह नक्षत्र ब्रह्माण्ड घनेरे, सब गतिवान् तुम्हारे प्रेरे।

सकल सृष्टि की प्राण विधाता, पालक पोषक नाशक त्राता।

मातेश्वरी दया व्रतधारी, तुम सम तेर पालकी भारी।

जा कर कृपा तुम्हारी होई, ता पर कृपा करे सब कोई।

मन्द बुद्धि ते बुद्धि बल पावें, रोगी रोग रहित है जावें।

दारिद्र मिटै कटै सब पीरा, नासै दुख्र हर भव भीरा।

गृह क्लेश चित चिन्ता भारी, नासै गायत्री भय हारी।

सन्तति हीन सुसन्तति पावें, सुख सम्पत्ति युत मोद मनावें।

भूत पिशाच सबै भय खावें, यम के दूत निकट नहीं आवें।

जो सधवा सुमिरैं चितलाई, अछत सुहाग सदा सुखदाई।

घर बर सुख प्रबल हैं कुमारी, विधवा रहें सत्य व्रत धारी।

जयति जयति जगदम्ब भवानी, तुम सम और दयालु न दानी।

जो सद्गुरु से दीक्षा पावैं, सो साधन को सफल बनावैं।
सुमिरन करै सुरुचि बडभागी, लहैं मनोरथ गृही विरागी।
अष्ट सिधि नव निधि की दाता, सब समर्थ गायत्री माता।
ऋषि मुनि तपस्वी योगी, आरत अर्थी चिन्तित भोगी।
जो जो शरण तुम्हारी आवैं, सो सो निज वांछित फल पावैं।
बल विद्या शील सुभाऊ, धन वैभव यश तेज उछाहू।
सकल बढ़ें सुख नाना, जो यह पाठ करै धर ध्याना।
यह चालीसा भक्तियुत, पाठ करै जो कोय,
तापर कृपा प्रसन्नता, गायत्री की होय।हमारे शत्रुओं का नाश करती रहो।



नमस्ते शरण्ये शिवे सानुकम्पे, नमस्ते जगद्व्यापिके विश्वरूपे।
नमस्ते जगद्वन्द्य-पादारविन्दे, नमस्ते जगत्तारिणि त्राहि दुर्गे।।

नमस्ते जगच्चिन्त्यमानस्वरूपे, नमस्ते महायोगिनि ज्ञानरूपे।
नमस्ते नमस्ते सदानन्दरूपे, नमस्ते जगत्तारिणि त्राहि दुर्गे।।
अनाथस्य दीनस्य तृष्णातुरस्य, भयार्तस्य भीतस्य बद्धस्य जन्तोः।
त्वमेका गतिर्देवि निस्तारकत्री, नमस्ते जगत्तारिणि त्राहि दुर्गे।।
अरण्ये रणे दारुणे शत्रुमध्ये, ऽनले सागरे प्रान्तरे राजगेहे।
त्वमेका गतिर्देवि निस्तारनौका, नमस्ते जगत्तारिणि त्राहि दुर्गे।।
अपारे महादुस्तरेऽत्यन्तघोरे, विपत्सागरे मज्जतां देहभाजाम्।
त्वमेका गतिर्देवि निस्तारहेतुः, नमस्ते जगत्तारिणि त्राहि दुर्गे।।
नमश्चण्डिके चण्डदुर्दण्डलीला, समुत्खण्डिताखण्डिताशेषशत्रो।
त्वमेका गतिर्दव निस्तारबीजं, नमस्ते जगत्तारिणि त्राहि दुर्गे।।
त्वमेवाघभावाधृतासत्यवादीर्न, जाताजितक्रोधनात् क्रोधनिष्ठा।
इडा पिङ्गला त्वं सुषुम्णा च नाडी, नमस्ते जगत्तारिणि त्राहि दुर्गे।।
नमो देवि दुर्गे शिवे भीमनादे, सरस्वत्यरुन्धत्यमोघस्वरूपे।
विभूतिः शची कालरात्रिः सतिः त्वं, नमस्ते जगत्तारिणि त्राहि दुर्गे।।

क्षमा प्रार्थना

प्रत्येक अनुष्ठान, यज्ञ तथा साधना के अंत में इस क्षमा प्रार्थना स्तोत्र का पाठ करना चाहिए। इससे जाने या अनजाने में हुई भूलों का दुष्परिणाम शान्त हो जाता है।

न मन्त्रं नो यन्त्रं तदपि च न जाने स्तुतिमहो,
न चाव्हानं ध्यानं तदपि च न जाने स्तुति कथा:
न जाने मुद्रास्ते तदपि च न जाने विलपनम्।
परं जाने मातस्त्वदनुशरणं क्लेश हरणम्।

अर्थ : न तो मैं मंत्र जानता हूँ, न यंत्र जानता हूँ और न स्तुति ही जानता हूँ। आवाहन ध्यान और स्तुति कथा भी नहीं जानता हूँ पूजा और मुद्रा भी नही जानता लेकिन हे माता इतना जानता हूँ कि तुम्हारी शरण क्लेश हरने वाली है।

विधेर ज्ञानेन द्रविण विरहेणा लसतया
विधेया शक्यत्वात्तव चरणयो र्याच्युतिरभूत्
तदेतत्क्षन्तव्यं जननि सकलो द्धारिणि शिवे,
कुपुत्रो जायेत क्वचिदपि कुमाता न भवति।

अर्थ : हे शिवे, सकल उद्धारिणी जननि विधि के अज्ञान से, पैसा की कमी से, आलस्य से, सामर्थ्य हीनता के कारण आपकी चरण सेवा करने में जो भूल रह गई हो तो उस सब को क्षमा करना क्यों कि पुत्र कुपुत्र हो सकता है लेकिन माता कुमाता नही होती।

पृथिव्यां पुत्रास्ते जननि वहव: सन्ति सरला:
परं तेषां मध्ये विरल तरलोऽहं तव सुत:।
मदीयोऽयं त्याग: समुचितमिदं नो तव शिवे,
कुपुत्रो जायेत क्वचिदपि कुमाता न भवति।

अर्थ : हे मां, पृथ्वी पर तेरे बहुत से पुत्र हैं जो सरल हैं पर उनके बीच में तेरा पुत्र अकेला मैं ही टेढ़ा हो गया हूँ, फिर भी हे मां ! तेरे लिये त्याग उचित नहीं है। क्योंकि पुत्र कुपुत्र हो सकते हैं, पर माता कुमाता नहीं होती।

जगन्माता र्मातस्तव चरण सेवा न रचिता,
न वा दत्तं देवि द्रविणमपि भूयस्तव मया।
तथापि त्वं स्नेहं मयिं निरुपमं यत्प्रकुरुषे,
कुपुत्रो जायेत क्वचिदपि कुमाता न भवति।

अर्थ : हे, जगत की माता मैंने तेरी चरण सेवा नहीं की, हे देवि तूने मुझे पर्याप्त द्रव्य भी नहीं दिया जिससे दान ही करता, परन्तु तू मेरे ऊपर खूब स्नेह करती है। पुत्र कुपुत्र हो सकते हैं, पर माता कुमाता नहीं होती।

परित्यक्ता देवा विविध विधसेवा कुलतया,
मया पञ्चाशीतेरधिकमपनीते तु वयसि।
इदानीं चेन्मातस्तव यदि कृपा नापि भविता
निरालम्बो लम्बोदरजननि कं यामि शरणम्।

अर्थ : गणेशजी को जन्म देनेवाली माता पार्वती ! (अन्य देवताओं की आराधना करते समय) मुझे नाना प्रकार की सेवाओं में व्यग्र रहना पड़ता था, इसलिये पचासी वर्ष से अधिक अवस्था बीत जाने पर मैंने देवताओं को छोड़ दिया है, अब उनकी सेवा-पूजा मुझ से नहीं हो पाती; अत एव

उनसे कुछ भी सहायता मिलने की आशा नहीं है। इस समय यदि तुम्हारी कृपा नही होगी तो मैं अवलम्बरहित होकर किस की शरण में जाऊँगा।

श्वपाको जल्पाको भवति मधुपाकोपमगिरा।
निरातंको रंको विहरति चिरं कोटि कनकैः।
तवापर्णे कर्णे विशति मनुवर्णे फलमिदम्।
जनः को जानीते जननि जपनीयं जप विधौ।

अर्थ : हे मां, तुम्हारी स्तुति करने से नीच और चाण्डाल भी मीठी मधुर वाणी बोलने वाले महा कवि हो जाते हैं और रंक (दरिद्र, कंगाल) भी दुख की अग्नि से बच कर करोडों स्वर्ण मुहरों से शब्द पड़ते ही हो जाता है। हे माता ! तुम्हारी स्तुति करने के ढंग को कौन जानता है ?

चिताभस्मालेपो गरलमशनं दिक्पटधरो
जटाधारी कण्ठे भुजगपतिहारी पशुपतिः।
कपाली भूतेशो भजति जगदीशैकपदवीं
भवानि त्वत्पाणिग्रहणपरिपाटीफलमिदम्।

अर्थ : भवानी ! जो अपने अङ्गों में चिता की राख भभूत लपेटे रहते हैं, जिनका विष ही भोजन है, जो दिगम्बरधारी (नग्न रहने वाले) हैं, मस्तकपर जटा और कण्ठमें नागराज वासुकि को हार के रूप में धारण करते हैं तथा जिनके हाथ में कपाल (भिक्षापात्र) शोभा पाता है, ऐसे भूतनाथ पशुपति भी जो एकमात्रा 'जगदीश' की पदवी धारण करते हैं, इसका क्या कारण है ? यह महत्त्व उन्हें कैसे मिला; यह केवल तुम्हारे पाणिग्रहण की परिपाटीका फल है; तुम्हारे साथ विवाह होने से ही उनका महत्त्व बढ़ गया।

न मोक्षस्याकाङ्क्षा भवविभववाञ्छापि च न मे
न विज्ञानापेक्षा शशिमुखि सुखेच्छापि न पुनः
अतस्त्वां संयाचे जननि जननं यातु मम वै
मृडानी रुद्राणी शिव शिव भवानीति जपतः

अर्थ : मुख में चन्द्रमा की शोभा धारण करने वाली माँ! मुझे मोक्ष की इच्छा नहीं है, संसार के वैभव की भी अभिलाषा नहीं है; न विज्ञानकी अपेक्षा है, न सुखकी आकाङ्क्षा; अतः तुमसे मेरी यही याचना है कि मेरा जन्म 'मृडानी, रुद्राणी, शिव, शिव, भवानी' - इन नामों का जप करते हुए बीते।

नाराधितासि विधिना विविधोपचारैः
किं रुक्षचिन्तनपरैर्न कृतं वचोभिः।
श्यामे त्वमेव यदि किञ्चन मय्यनाथे
धत्से कृपामुचितमम्ब परं तवैव।

अर्थ : माँ श्यामा! नाना प्रकार की पूजन-सामग्रियों से कभी विधिपूर्वक तुम्हारी आराधना मुझ से न हो सकी। सदा कठोर भाव का चिन्तन करने वाली मेरी वाणी ने कौन-सा अपराध नहीं किया है। फिर भी तुम स्वयं ही प्रयत्न करके मुझ अनाथ पर जो किञ्चित् कृपा दृष्टि रखती हो, माँ! यह तुम्हारे ही योग्य है। तुम्हारी-जैसी दयामयी माता ही मेरे जैसे कुपुत्र को भी आश्रय दे सकती है।

आपत्सु मग्नः स्मरणं त्वदीयं,

करोमि दुर्गे करुणार्णवेशि।

नैतच्छठत्वं मम भावयेथाः

क्षुधातृषार्ता जननीं स्मरन्ति।

अर्थ : माता दुर्गे! करुणासिन्धु महेश्वरी! मैं विपत्तियों में फँसकर आज जो तुम्हारा स्मरण करता हूँ। (पहले कभी नही करता रहा) इसे मेरी शठता न मान लेना; क्योंकि भूख-प्यास से पीड़ित बालक माता का ही स्मरण करते है।

जगदम्ब! विचित्रमत्र किं,

परिपूर्णा करुणास्ति चेन्मयि।

अपराध परंपरापरं,

न हि माता समुपेक्षते सुतम्।।

अर्थ : हे जगदम्बे ! यदि तुम्हारी मेरे ऊपर कृपा हो तो इसमें क्या विचित्रता है ? अपराधों की चाहे कितनी ही परम्परा क्यों न हो, लेकिन माँ अपने पुत्र की उपेक्षा नही करती है।

मत्समः पतकीनास्ति पापघ्नी त्वत्समा न हि

एवं ज्ञात्वा महादेवि यथा योग्यं तथा कुरु।।

अर्थ : हे महादेविः मेरे समान तो कोई पातकी नहीं है तथा तेरे समान पाप नाश करने वाली कोई नहीं है, ऐसा जानकर हे महादेवि! जैसा तुम्हे उचित लगे, वैसा करो।

जगदम्ब विचित्रमत्र किं, परिपूर्णा करुणास्ति चेन्मयि। अपराध परं परा व्रतं न हि माता समुपेक्षते सुतम्।।11।।
मत्समः पातकी नास्ति पापघ्नी त्वत्समा न हि। एवं ज्ञात्वा महादेवि यथायोग्यं तथा कुरु।।12।।

आरती लक्ष्मी जी

ओ3म् जय लक्ष्मी माता, मैया जय लक्ष्मी माता।
तुमको निशदिन सेवत, हर विष्णु दाता, ओ3म् जय लक्ष्मी माता।।
उमा, रमा, ब्रह्माणी, तु ही जग माता, मैया तु ही जग माता।
सूर्य-चन्द्रमा ध्यावत, नारद ऋषि गाता, ओ3म् जय लक्ष्मी माता।।
दुर्गा रूप निरंजनि, सुख-सम्पति दाता। मैया तु ही सुख-सम्पति दाता।
जो कोई तुमको ध्यावत, ऋद्धि-सिद्धि धन पाता, ओ3म् जय लक्ष्मी माता।।
तुम पाताल-निवासिनि, तुम ही शुभदाता, मैया तु ही शुभदाता।
कर्म-प्रभाव-प्रकाशिनि, भवनिधि की त्राता, ओ3म् जय लक्ष्मी माता।।
जिस घर में तुम रहती, सब सद्गुण आता, मैया सब सद्गुण आता।
सब सम्भव हो जाता, मन नहीं घबराता, ओ3म् जय लक्ष्मी माता।।

तुम बिन यज्ञ न होते, वस्त्र न हो पाता, मैया वस्त्र न हो पाता।
खान-पान का वैभव, सब तुमसे आता, ओ3म् जय लक्ष्मी माता।।
शुभ-गुण मंदिर सुन्दर, क्षीरोदधि-जाता, मैया क्षीरोदधि-जाता।
रत्न चतुर्दश तुम बिन, कोई नहीं पाता, ओ3म् जय लक्ष्मी माता।।
महालक्ष्मी जी की आरती, जो कोई जन गाता, मैया जो कोई जन गाता।
उर आनन्द समाता, पाप उतर जाता, ओ3म् जय लक्ष्मी माता।।

गंगा माँ

ओ3म् जय गंगे माता, मैया जय गंगे माता।
जो नर तुमको ध्याता, मनवांछित फल पाता, ओ3म् जय गंगे माता।
चन्द्र सी ज्योति तुम्हारी, जल निर्मल आता, मैया जल निर्मल आता।
शरण पड़े जो तेरी, सो नर तर जाता, ओ3म् जय गंगे माता।
पुत्र सागर के तारे, सब जग को ज्ञाता, मैया सब जग को ज्ञाता।
कृपा दृष्टि हो तुम्हारी, त्रिभुवन सुख दाता, ओ3म् जय गंगे माता।

एक बार जो प्राणी, शरण तेरी आता, मैया शरण जो तेरी आता।
यम की त्रास मिटाकर, परमगति पाता, ओ3म् जय गंगे माता।
आरती मातु तुम्हारी, जो नर नित गाता, मैया जो नर नित गाता।
सेवक वही सहज में, मुक्ति को पाता, ओ3म् जय गंगे माता।

आरती

दुर्गति-नाशिनि दुर्गा जय-जय, काल-विनाशिनि काली जय-जय।
उमा-रमा-ब्रह्माणी जय-जय, राधा-सीता-रुक्मिणि जय-जय।।
साम्ब सदाशिव, साम्ब सदाशिव, साम्ब सदाशिव जय शंकर।
हर-हर शंकर दुःखहर सुख कर, अघ-तम-हर हर हर शंकर।।
हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे, हरे कृष्ण, हरे कृष्ण, कृष्ण-कृष्ण हरे हरे।।
जय-जय दुर्गा, जय मा तारा, जय गणेश जय शुभ-आगारा।
जयति शिवाशिव जानकि राम, गौरी शंकर सीताराम।।
जय रघुनन्दन जय सियाराम, व्रज-गोपी-प्रिय राधे श्याम।
रघुपति राघव राजा राम, पतितपावन सीताराम।।

आरती

ओम् जय जयेष्ठा माता, जय जय ज्येष्ठा माता।
तू ही कष्ट निवारे, हे माँ सुख दाता।। ओम् जय ज्येष्ठा
श्रद्धा भक्ति बढ़ाकर, तुम दारिद्र हरो।
सकल काम प्रदायिनी, दुःख माँ दूर करो।। ओम् जय ज्येष्ठा
महा दैत्य संहारी, तू माँ दुर्गति हारी।
महामोह हटा दो, ज्येष्ठेश्वर प्यारी।। ओम् जय ज्येष्ठा
माता खप्पर धारी, मेरी विपदा सारी।
दूर करो हे माता, प्रिय भक्तन प्यारी।। ओम् जय ज्येष्ठा
अमृत कुंड विराजे, कमल हाथ में साजे।
करे हित सभी का, निर्धन या राजे।। ओम् जय ज्येष्ठा
झूठी माया सारी, हम को लगती प्यारी।
अविद्या दूर करो, हे पीताम्बर धारी।। ओम् जय ज्येष्ठा
भक्ति बढ़ाने वाली, कोई युक्ति करो।
भयहारिणी माता तुम, भव भय सदा हरो।। ओम् जय ज्येष्ठा
हम अति दीन दुःखी माँ, तेरी आस खड़े।
जाने न विद्या कोई, तेरी शरण पड़े।। ओम् जय ज्येष्ठा
ओम् जय ज्येष्ठा माता, जय जय ज्येष्ठा माता।
तू ही कष्ट निवारे, हे माँ सुख दाता।। ओम् जय ज्येष्ठा

नवग्रहपीडाहर स्तोत्रम्

सूर्य	ग्रहाणाम्-आदिर्-आदित्यो-लोकरक्षण-कारकः, विषमस्थान-सम्भूतां-पीडा-हरतु-मे रविः।
चन्द्र	रोहिणीशः सुधामूर्तिः सुधागात्रः सुधाशनः, विषम-स्थान सम्भूतां पीडां हरतु मे विधुः।
भौम	भूमिपुत्रो महातेजो जगतां भयकृत सदा, वृष्टिकृद्-वृष्टि-हर्ता च पीडां हरतु मे कुजः।
बुधा	उत्पातरूपो जगतां चन्द्र पुत्रो महाद्युतिः, सूर्यप्रिय करो विद्वान, पीडां हरतु मे बुधः।
बृहस्पति	देवमन्त्री विशालाक्षः सदा लोकहिते रतः, अनेक शिष्यसम्पूर्णः पीडां हरतु मे गुरुः।
शुक्र	दैत्यमन्त्री गुरुस्तेषां प्राणदश्च महामतिः, प्रभुस्तारा ग्रहाणां च पीडां हरतु मे भृगुः।
शनि	सूर्यपुत्रो दीर्घदेहो विशालाक्षः शिवप्रियः, मन्दाचारः प्रसन्नात्मा पीडां हरतु मे शनिः।
राहु	महाशिरो महावक्त्रो दीर्घदंष्ट्रो महाबलः, अतनुश्चोर्ध्वकेशश्च पीडां हरतु मे शिखी।
केतु	अनेक-रूप-वर्णश्च शतशोथ सहस्रशः, उत्पादरूपो जगतां पीडां हरतु मे तमः।

नोटः- आप नवग्रहों का पुष्पार्चन या नवग्रह पूजा करना चाहते हैं तो 'विजश्येवर पंचांग कार्यालय' से नवग्रह पूजा पुस्तक तथा कैस्ट आपको मिल सकता हैं।

इन्द्राक्षी

अस्य श्री इंद्राक्षी स्तोत्रमन्त्रस्य, पुरंदर-ऋषिः, अनुष्टप्-छन्दः, इन्द्राक्षी देवता, ह्रीं बीजम्, श्रीं शक्तिः, क्लीं कीलकम्। सकलकामना-सिद्धयर्थे पाठे विनियोगः।

अथ-ध्यानम्

इन्द्राक्षीं द्विभुजां देवीं पीत-वस्त्राधरां शुभाम् वामे हस्ते वज्रधरां दक्षिणे चाभय-प्रदाम्।
सहस्र नेत्रां सूर्याभां नानालंकार-भूषिताम्, प्रसन्न वदनां नित्यम्-अप्सरो-गणसेविताम्।
श्री-दुर्गां सौम्य-वदनां पाशांकुशधरां परां, त्रौलोक्य-मोहिनीं देवीं भवानीं प्रणमाम्यहम।
ॐ ह्रीं श्रीं इन्द्राक्षीं श्रीं प्रीं स्वाहा।

इन्द्र-उवाच

इन्द्राक्षी नाम सा देवी देवतैः समुदाहृता, गौरी शाकंभरी देवी दुर्गा-नाम्नीति-विश्रुता।
कात्यायनी महादेवी चन्द्र-घण्टा-महातपः, गायत्री सा च सावित्री ब्रह्माणी ब्रह्मवादिनी।
नारायणी भद्रकाली रुद्राणी कृष्णपिंगला, अग्निज्वाला रौद्रमुखी कालरात्री-स्तपस्विनी।

मेघ-श्यामा सहस्राक्षी, विष्णुमाया जलोदरी, महोदरी मुक्त-केशी घोररूपा महाबला।
आनन्दा-भद्रजा नंदा रोगहंत्री शिवप्रिया, शिवदूती कराली च प्रत्यक्षा परमेश्वरी।
इन्द्राणी चन्द्ररूपा च इन्द्र-शक्ति-परायणा, महिषा-सुर-संहर्त्री चामुण्डा गर्भदवेता।
वाराही नारसिंही च भीमा भैरव नादिनी, श्रुतिः स्मृति-धृति-मेधा विद्या लक्ष्मीः सरस्वती।
आनंदा विजया पूर्णा मानस्तोकाऽ पराजिता, भवानी पार्वती दुर्गा हैमवत्यंबिका शिवा।
शिवा भवानी रुद्राणी शंकरार्ध-शरीरिणी, एतै-नीम-पदै-र्दिव्यैः स्तुता शक्रेण धीमता।
आयुर्-आरोग्यम्-ऐश्वर्यं सुख-संपत्तिकारकम्, क्षय-पस्मार कुष्ठादि-ताप - ज्वर - निवारणम्।

आरती

ॐ जय जगदीश हरे, स्वामी जय जगदीश हरे।
भक्तजनों के संकट क्षण में दूर करे, ओ३म् जय जगदीश हरे।।
जो ध्यावे फल पावे दुःखविनशे मन का, स्वामी दुःखविनशे मन का।
सुख सम्पत्ति घर आवे कष्ट मिटे तन का, ओ३म् जय जगदीश हरे।।

मात-पिता तुम मेरे शरण पड़ूँ में किसकी, स्वामी शरण पड़ूँ में किसकी।
तुम बिन और ना दूजा आस करूँ में जिसकी, ओ३म् जय जगदीश हरे।।

तुम-पूरण-परमात्म तुम अन्तर्यामी, स्वामी तुम अन्तर्यामी।
पारब्रह्म परमेश्वर तुम सबके स्वामी, ओ३म् जय जगदीश हरे।।

तुम-करुणा के सागर तुम पालन कर्त्ता, स्वामी तुम पालन कर्त्ता।
मैं सेवक तुम स्वामी कृपा करो भर्त्ता, ओ३म् जय जगदीश हरे।।

तुम हो एक अगोचर सबके प्राणपति, स्वामी तुम सबके प्राणपति।
किस विधि मिलों दयामय तुमको मैं कुमति, ओ३म् जय जगदीश हरे।।

दीन बन्धु दुःख हर्ता रक्षक तुम मेरे, स्वामी रक्षक तुम मेरे।
अपने चरण लगावो द्वार पड़ा में तेरे, ओ३म् जय जगदीश हरे।।

विषय विकार मिटाओ पाप हरो देवा, स्वामी पाप हरो देवा।
श्रद्धा भक्ति बढ़ाओ सन्तन की सेवा, ओ३म् जय जगदीश हरे।।

प्रातः स्मरणीय स्तोत्र

एक-श्लोकी-नवग्रहस्तोत्रम्

ब्रह्मा-मुरारिः-त्रिपुरान्त-कारी,
भानुः शशी भूमिसुतो बुधश्च,
गुरुश्च शुक्रः शनि-राहु केतवः
कुर्वन्तु सर्वे मम सुप्रभातम्।।

एक श्लोकी रामायण

आदौ राम-तपोवनादि-गमनं, हत्वा मृगं कांचनं
वैदेही-हरणं जटायु-मरणं सुग्रीव सम्भाषणम्।
बाली निर्दलनं समुद्र तरणं लंकापुरी-दाहनं
पश्चात् रावण कुम्भकर्ण-हननं चैतत्-हि-रामायणम्।

अर्थः पहले राम का वनवास, सुवर्णमृग का मारना, रावण द्वारा सीता का हरण, जटायु का मरण, सुग्रीव के साथ प्रेम का वार्तालाप, बाली का मारना, समुद्र का लंघन, लंकापुरी का जलाना, अन्त में रावण कुम्भकर्ण का हनन।

एकश्लोकी भागवत्

आदौ देवकि-देवगर्भ जननं गोपीगृहे-वर्धनम्
माया-पूतनि-जीवितापि-हरणं गोवर्द्धनो-द्धारणम्
कंस-च्छेदन कौरवादि-हननं कुन्ती सुता-पालनम्।
एतत्-भागवतं पुराण कथितं श्रीकृष्ण-लीलामृतम्।

अर्थः- पहले देवकी के गर्भ से भगवान् का जन्म, गोकुल में बाल कृष्ण का पालन पोषण, पूतना का मारना, गोवर्द्धन का उद्धार, कंस का मारना, कौरवों की विजय - यही है संक्षिप्त में भागवत् की कथा।

सप्तर्षि - स्मरणम्

कश्यपो-अत्रिः-भरद्वाजः, विश्वामित्रोऽथ गौतमः
जमदग्नि-र्वसिष्ठश्च सप्त-ते ऋषयः स्मृताः।

सप्तचिर-जीवि स्तुतिः

अश्वत्थामा बलि व्यासः, हनुमान् च विभीषणः
कृपः परशुरामश्च, सप्त-ते चिरजीविनः

पंचदेवी स्तुतिः

उमा उषा च वैदेही, रमा गंगेति पंचकम्
प्रातर्-एव स्मरेत्-नित्यं घोर-संकट-नाशनम्।।

पंचकन्या स्तुतिः

अहल्या द्रौपदी तारा, कुन्ती मन्दोदरी तथा
पंचकन्या स्मरेत्-नित्यं महापातक-नाशनम्।

सप्तपुरी स्तुतिः

अयोध्या मथुरा माया काशी कांची ह्यवन्तिकाः।
पुरी द्वारवती चैव सप्तता मोक्षदायिकाः।।

हकारादि-पञ्चदेव स्तुतिः

हरं हरिं हरिश्चन्द्रं हनुमन्तं हलायुधम्
पंचकं हं स्मरेत्-नित्यं घोर-संकटनाशनम्

प्रातर्वन्दनीय स्तुतिः

प्रातः काले पिता-माता, ज्येष्ठा-भ्राता तथैवच
आचार्याः स्थाविराः चैव, वन्दनीया दिने दिने।

अर्थः- पिता, माता, ज्येष्ठ भाई, आचार्य तथा सभी वृद्ध। इन को प्रातःकाल प्रणाम करना चाहिए।

मातृतीर्थम्

नास्ति मातृसमं तीर्थं पुत्राणां तारणाय च
हितायात्र परत्रार्थं यैस्तु माता प्रपूजिता।

अर्थः- माता के समान कोई तीर्थ नहीं है-जो पुत्र माता का आदर करता है उस के इहलोक तथा परलोक का सुधार होता है।

पितृ तीर्थम्

वेदैर्-अपि च किं पुत्र ! पिता येन प्रपूजितः
एष पुत्रस्य वै धर्म-स्तथा तीर्थं नरेष्विह।।

अर्थः- हे पुत्र जो पिता का आदर करता है, उस को वेद पढ़ने की आवश्यकता नहीं, पिता ही पुत्र का धर्म है, पिता ही पुत्र का तीर्थ हैं।

मृतसंजीवनी मंत्र

इस मन्त्र से शिलिंग पर दूध सहित जल चढ़ाने से रोगी को शीघ्र आराम मिलता है।

ॐ हौं जूं सः, ॐ भूभुर्वः स्वः, ॐ त्र्यम्बकं यजामहे, ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं, ॐसुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्, ॐ भर्गो देवस्य धीमहि, ॐ उर्वारुकमिव बन्धनाद्, ॐ धियो यो नः प्रचोदयात्, ॐ मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्, ॐ स्वः भुवः भूः ॐ सः जूं हौ ॐ।

सूर्य उपासना

शास्त्रों में दर्ज है सूर्य की उपासना से आरोग्य की प्राप्ति होती है। अतः नहाने तथा मुख प्रक्षालन के पश्चात् सूर्य की ओर मुख करके प्रणाम करते हुये पढ़ें:-

ॐ मित्राय नमः। ॐ रवये नमः। ॐ सूर्याय नमः। ॐ भानवे नमः। ॐ खगाय नमः। ॐ पूष्णे नमः। ॐ हिरण्यगर्भाय नमः। ॐ मरीचये-नमः। ॐ आदित्याय नमः। ॐ सवित्रे नमः। ॐ अर्काय नमः। ॐ भास्कराय नमः। ॐ मित्र-रवि-सूर्य-भानु-खग-पुष्प-हिरण्यगर्भ-मरीच्यादित्य सवित्रार्क-भास्करेभ्यो नमः।

असाध्य रोग निवृत्ति मंत्र

रोगान्-अशेषान्-अपहंसि-तृष्टा
रुष्टा तु कामन्-सकलान्-अभीष्टान्।
त्वाम्-आश्रितानां न विपत्-नराणाम्
त्वाम्-आश्रिता ह्याश्रियतां प्रयान्ति।।

दुर्गा सप्तशती का सारभूत मंत्र

जिस घर में इस मंत्र की गूंज होगी उस घर में लक्ष्मी, सतबुद्धि श्रद्धा, लज्जा, हर समय विद्यमान रहती है।

या श्रीः स्वयं सुकृतिनां भवनेष्वलक्ष्मीः
पापात्मनां कृतधियां हृदयेषु बुद्धिः,
श्रद्धा सतां कुलजन-प्रभवस्य लज्जा,
तां त्वां नताःस्म परिपालय देवि! विश्वम्।

नवग्रहों के छोटे तथा आसान मन्त्र

"सूर्य" ओ३म् रं रवये नमः।
"चन्द्र" ओ३म् सौं सोमाय नमः।

"भौम" ओ३म् भौं भौमाय नमः।

"बुध" ओ३म् बं बुधाय नमः।

"गुरु" ओ३म् गुं गुरवे नमः।

"शुक्र" ओ३म् शुं शुक्राय नमः।

"शनि" ओ३म् शं शनैश्चराय नमः।

"राहु" ओ३म् राम् राहवे नमः।

"केतु" ओ३म् कैं केतवे नमः।

बारह राशियों के मन्त्र

मेषः- ओ३म् ह्रीं श्रीं श्रीलक्ष्मीनारायाणाय नमः।

वृषः- ओ३म् गोपालाय उत्तरध्वजाय नमः।

मिथुनः- ओ३म् क्लीं कृष्णाय नमः।

कर्कः- ओ३म् ह्रीं हिरण्यगर्भाय अव्यक्तरूपिणे नमः।

सिंहः- ओ३म क्लीं ब्रह्मणे जगदाधाराय नमः।

कन्याः- ओ३म् पीं पीताम्बराय नमः।

तुलाः- ओ३म् तत्त्वनिरंजनाय तारक रामाय नमः।

वृश्चिकः- ओ३म् नारायणाय सूरसिंहाय नमः।

धनुः- ओ३म् श्रीं देवकृष्णाय ऊर्ध्वजाय नमः।

मकरः- ओ३म् श्रीं-वत्सलाय नमः।

कुम्भः- ओ३म् श्रीं उपेन्द्राय अच्युताय नमः।

मीनः- ओ३म् क्लीं उद्धृताय उद्धारिणे नमः।

हर प्रकार के मंगल प्राप्ति का मन्त्र

सर्व मंगल मंगल्ये, शिवे सर्वार्थ साधिके,
शरण्ये त्रयम्बके, गौरि नारायणि नमोस्तुते।

विपित्ति नाश का मंत्र

शरणागत दीनार्त-परित्राण परायणे,
सर्वस्यार्ति हरे देवि नारायणि नमोस्तुते।

सभी उलझनों से छुटकारा पाने का मंत्र

सर्वाबाधा-विर्निमुक्तो-धन धान्य-समन्विताः
मनुष्यो मत्प्रसादेन, भविष्यति-न संशयः।

भय नाश का मन्त्र

सर्वस्वरुपे-सर्वेशे सर्वशक्ति-समन्विते
भयेभ्यः त्राहि नो देवि ! दुर्गे देवि नमोस्तुते।

आरोग्य तथा सौभाग्य मंत्र

देहि सौभाग्यम् आरोग्यं देहि मे परमं सुखम्,
रूपं देहि जयं-देहि यशो देहि द्विषो जहि।

विद्या प्राप्ति का मन्त्र

कृष्ण कृष्ण महाकृष्ण सर्वज्ञ त्वं प्रसीद मे,
रमा-रमण विश्वेश, विद्याम्-आशु प्रयच्छ मे।।

हर प्रकार के उलझनों से मुक्त होने के लिए शीघ्र सिद्धि देने वाला शिव मंत्रः-

भगवान् शंकर के डमरु से प्राप्त 14 सूत्रों का एक ही श्वास में बोलने का अभ्यास करें-शरीर को स्वस्थ रखने के लिए इस मन्त्र का उच्चारण किया जाता है, बुखार मृगी आदि बेहोशी के रोग के समय इस मन्त्र का उच्चारण करते हुये छींटे दिये जाने से रोग की निवृति होती हैः-

मन्त्रः- अ इ उण्। ऋ लृक्। ए ओङ। ऐ औच्। ह य व र ट्। लण्। ञ, म, ङ ण नम्। झ भ ङ् घ ड ध श। ज ब ग ड् - द श। ख फ छठ थ - च ट, तव्। क, प, य्। शष सर्। हल्।

संतान प्राप्ति का मंत्र

देवकी सुत गोविन्द ! वासुदेव जगत्पते
देहि से तनयं कृष्ण। त्वाम् - अहं शरणं गतः।

सामूहिक कल्याण मंत्र

देव्या यया ततमिदं जगदात्म शक्त्या,
निश्शेष देव गण शक्तिसमूह मूर्त्या।
तामम्बिकाम खिलदेव महर्षि पूज्यां,
भक्त्या नताः स्म विदधातु शुभानि सा नः।।

शुभ फल की प्राप्ति का मंत्र

करोतु सा नः शुभहेतुरीश्वरी।
शुभानि भद्राण्यभिहन्तु चापदः।।

पाप नाश का मंत्र

हिनस्ति दैत्यतेजांसि स्वनेनापूर्य या जगत्।
सा घण्टा पातु नो देवि पापेभ्योऽनः सुतानिव।।

महामारी नाश का मंत्र

जयन्ती मङ्गला काली भद्रकाली कपालिनी।
दुर्गा क्षमा शिवा धात्री स्वाहा स्वधा नमोऽस्तु ते।।

दारिद्र्यदुःखादिनाश का मंत्र

दुर्गे स्मृता हरसि भीतिम शेषजन्तोः
स्वस्थैः स्मृता मतिम् अतीव शुभां ददासि।
दारिद्र्यदुःखभयहारिणि का त्वदन्या
सर्वोपकार करणाय सदाऽऽर्द्रचित्ता।।

रक्षा पाने का मंत्र

शूलेन पाहि नो देवि पाहि खड्गेन चाम्बिके।
घण्टास्वनेन नः पाहि चापज्यानिःस्वनेन च।।

प्रसन्नता प्राप्ति का मंत्र

प्रणातानां प्रसीद त्वं देवि विश्वोर्तिहारिणि।
त्रैलोक्य वासिनाम् ईड्ये लोकानां वरदा भव।।

पापनाश तथा भक्ति प्राप्ति का मंत्र

नतेभ्यः सर्वदा भक्त्या चण्डिके दुरितापहे।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि।।

मोक्ष प्राप्ति का मंत्र

त्वं वैष्णवी शक्तिर् अनन्तवीर्या
विश्वस्य बीजं परमासि माया।
सम्मोहित देवि समस्तमेतत्
त्वं वै प्रसन्ना भुवि मुक्तिहेतुः।।

अन्नपूर्णा स्तुतिः

ज्योहिं अन्न की थाली आप के सामने आये। तो इस श्लोक का उच्चारण करना चाहिये।

अन्नपूर्णे सदापूर्णे शंकर प्राण वल्लभे।
ज्ञान वैराग्य सिद्ध्यर्थं भिक्षां देहि च पार्वति।।

अर्थः- जो सदा पूर्ण शंकर की प्राण प्रिया पार्वती है वह अन्न पूर्णा है उससे मैं ज्ञान वैरागय और शुभ कामनाओं के सिद्धि के लिये अन्नरूपी भिक्षा मांगता हूँ।

पुरुष-सूक्तम्

पुरुषमेधाः पुरुषस्य नारायणस्यार्षम्।
ॐ सहस्रशीर्षा, पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात्।
सभूमिं विश्वतो वृत्वा त्यतिष्ठत् दशाङ्गुलम्।।
पुरुष एवेदं सर्वं यत् भूतं चत् च भव्यम्।
उत्तामृत त्वस्ये शानो, यत् अन्नेनाति रोहति।।
एतावानस्य महिमातो ज्यायान-च, पुरुषः।
पादोस्य, विश्वा भूतानि त्रिपाद् अस्या मृतं दिबि।।
त्रिपात् ऊर्ध्वं उदैत्पुरुषः पादोऽस्येहा भवत् पुनः।
ततो विश्वं व्याक्रामत् साशना नशने अभि।।
तस्मात् विराड् अजायत विराजो अधिपुरुषः।
स जातो अत्यरिच्यत, पश्चात् भूमिम्-अथो पुरः।।
यत् पुरुषेण हविषा देवा यज्ञम्-अतन्वत।
वसन्तो अस्यासीत्-आज्यं ग्रीष्म इध्मः शरत् हविः।।
तं यज्ञं बर्हिषि प्रोक्षन् पुरुषं जातम्-अग्रतः।
तेन देवा अयजन्त साध्या ऋषयश्च ये।।
तस्मात् यज्ञात् सर्वहुतः सम्भृतं पृषत् आज्यम्।
पशून् तान् चक्रे वायव्यान् आरण्यान् ग्राम्यांश्चये।।
तस्मात् यज्ञात् सर्वहुतः ऋचः सामानि जज्ञिरे।
छन्दासि जज्ञिरे तस्मात् यजु तस्मात् अजायत।।
तस्मात्-अश्वा-अजायन्त ये के चोभयादतः।
गावो ह जज्ञिरे तस्मात् तस्मात् जाता अजावयः।।
यत् पुरुषं व्यदधुः कतिधा व्यकल्पयन्।
मुखं किमस्य कौ बाहू का उरू पादा उच्यते।।
ब्रह्माणोस्य मुखं-आसीत्-बाहू राजन्यः कृतः।

ऊरू तदस्य यत् वैश्यः पद्भ्यां शूद्रो अजायत।।
चन्द्रमः मनसो जातश्चक्षोः सूर्यो अजायत।
मुखात् इन्द्रश्चाग्निश्च प्राणात् वायुः अजायत।।
नाभ्या आसीत् अन्तरिक्षं शीर्ष्णो द्यौः समवर्तत।
पद्भ्यां भूमि दिंशः श्रोत्रात् तथा लोकान्-अकल्पयन्।।
सप्तास्या सन् परिधयः त्रिः सप्त समिधः कृताः।
देवा यत् यज्ञं तन्वाना आबध्नन् पुरुषं पशुम्।।
यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमा न्यासन्
ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्या सन्ति
देवाः।।

सूर्याष्टकम्

आदिदेव नमस्तुभ्यं प्रसीद मम भास्कर।
दिवाकर नमस्तुभ्यं प्रभाकर नमोऽस्तु ते।।

सप्ताश्वरथमारूढं प्रचण्डं कश्यपात्मजम्।
श्वेतपद्मधरं देवं तं सूर्यं प्रणमाम्यहम्।।
लोहितं रथमारूढं सर्वलोकपितामहम्।
महापापहरं देवं तं सूर्यं प्रणमाम्यहम्।।
त्रैगुण्यं च महाशूरं ब्रह्मविष्णुमहेश्वरम्।
महापापहरं देवं तं सूर्यं प्रणमाम्यहम्।।
बृंहितं तेजःपुञ्जं च वायुमाकाशमेव च।
प्रभुं च सर्वलोकानां तं सूर्यं प्रणमाम्यहम्।।
बन्धूकपुष्पसङ्काशं हारकुण्डलभूषितम्।
एकचक्रधरं देवं तं सूर्यं प्रणमाम्यहम्।।
तं सूर्यं जगत्कर्तारं महातेजःप्रदीपनम्।
महापापहरं देवं तं सूर्यं प्रणमाम्यहम्।

संस्कृत पढ़ें

शांतिपाठ

भद्रंकर्णेभिः शृणुयाम देवाः, भद्रं पंश्येमाक्षिभिर्यजत्राः। स्थिरैरंगैः तष्टुवांसस्तनूभि र्व्यशेम देवहित्त यदायुः, स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः

स्वस्तिनः ताक्ष्यों अरिष्टनेमीः स्वस्ति नो बृहस्पतिः दधातु।।1।।

स्वस्तिप्रजाभ्यः परिपालयन्तां, न्यायेन मार्गेण महीं महीपाः।

गोब्राह्मणेभ्यः शुभमस्तु नित्यं, लोकाः समस्तः सुखिनो भवन्तु।।2।।

काले वर्षतु पर्जन्यः पृथिवी सस्यशालिनी। देशोय क्षोभरहितो ब्राह्मणाः सन्तु निर्भयाः ।।3।।

दुर्जनः सज्जनो भूयात् सज्जनः शान्तिम् आप्नुयात्। शान्तिम् उच्येत बन्धेभ्यो मुक्तश्चान्यान् विमोचयेत्।।4।।

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः, सर्वे भद्राणि पश्यन्तु, मा कश्चिद् दुःखभाग्भवेत्।।5।।

राजस्वस्ति प्रजास्वस्ति देशस्वस्ति तथैव च। यजमान गृहे स्वस्ति, स्वस्ति गोब्राह्मणेषु च ।।6।।

विधेहि देवि कल्याणं विधेहि परमां श्रियं रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि।।7।।

शन्नो मित्रः, शं वरुणः, शन्नो भवत्वर्यमा, शन्नो इन्द्रो बृहस्पतिः, शन्नो विष्णुरुरुक्रमः, नमो ब्रह्मणे, नमो वायवे, नमस्ते वायो, त्वमेव प्रत्यक्षं ब्रह्मासि, त्वामेव प्रत्यक्षं ब्रह्म वदिष्यामि, ऋतं वदिष्यामि, सत्यं वदिष्यामि, तन्मामवतु, तद्वक्तारमवतु, अवतु मामवतु वक्तारं, शान्तिः शान्तिः शान्तिः।।8।।

सह नौ अवतु, सह नौ भुनक्तु, सहवीर्य करवावहै,

तेजस्विनाम् अधीतमस्तु माद्विषावहै शान्तिः शान्तिः शान्तिः।।9।।

गायत्री अष्टकम्

सुकल्याणीं वाणीं सुरमुनिवरैः पूजित पदाम्।

शिवामाद्यां वन्द्यां त्रिभुवनमयीं वेद जननीम्।।

परां शक्तिं स्त्रष्टुं विविध विधि रूपा गुण मयीम्।

भजेऽम्बां गायत्रीं परममृतमानन्द जननीम्।।1।।

अर्थ : गायत्री वाणी का कल्याण करने वाली है। सुर (देवता), मुनि द्वारा इसकी पूजा की जाती है। इसे शिवा कहते हैं। यह आद्या है, त्रिभुवन में वन्दनीय है, वेद-जननी है, पराशक्ति है, गुणमयी है तथा विविध रूप धारण करके प्रादुर्भूत होती है। उस अमृत रूप आनन्द की जननी माता गायत्री का हम भजन करते हैं।

विशुद्धां सत्वस्थामखिल दुख दोषार्निहरणीम्।

निराकारां सारां सुविमल तपो मूर्त्तिम तुलाम्।।

जगज्ज्येष्ठां श्रेष्ठाम् सुरसुरपूज्यां श्रुतिनुताम्।

भजेऽम्बां गायत्रीं परममृतमानन्द जननीम्।।2।।

अर्थ : गायत्री विशुद्ध तत्व वाली, सत्वमयी तथा समस्त दुख, दोष एवं आर्त (पीडा) हरने वाली है। वह निराकार है, सारभूत है और अतुल तप की मूर्ति एवं विमल है। यह संसार में सबसे महान् है, ज्येष्ठ है। देवता तथा असुरों से पूजित है, उस अमृत एवं आनन्द की जननी माता गायत्री का हम भजन करते हैं।

तपो निष्ठाभीष्टास्वजनमन सन्ताप शमनीम्।

दयामूर्तिस्फूर्ति यतितति प्रसादैक सुलभाम्।।

वरेण्यां पुण्यां तां निखिल भव बन्धाप हरणीम्।

भजेऽम्बां गायत्रीं परममृतमानन्द जननीम्।।3।।

अर्थ : गायत्री का तपोनिष्ठ रहना ही अभीष्ट है। वह स्वजनों के मानसिक सन्तापों को शमन करने वाली है। वह स्फूर्तिमती है, दयामूर्ति है और उसकी प्रसन्नता प्राप्त कर लेना अत्यन्त सुलभ है। वह संसार के समस्त बन्धनों को हरण करने वाली है एवं वरण (पूजा, सत्कार) करने के योग्य है, उस परम अमृत एवं आनन्द की जननी माता गायत्री का हम भजन करते हैं।

सदाराध्यां साध्यां सुमति मति विस्तार करणीम्।

विशोकामालोकां हृदयगत मोहान्ध हरणीम्।।

परां दिव्यां भव्यामगम भव सिन्ध्वेक तरणीम्।

भजेऽम्बां गायत्रीं परममृतमानन्द जननीम्।।4।।

अर्थ : गायत्री निरन्तर आराधना करने योग्य है और उसकी आराधना करना अत्यन्त साध्य (सरल) है। वह सुमति का विस्तार करने वाली है। वह प्रकाशमय है और शोकरहित है और हृदय में रहने वाले मोहान्धकार को दूर करने वाली है। वह परा (ब्रह्म विद्या से युक्त) है, दिव्य (प्रकाशमय) है, अगम संसार सागर से तरने के लिए नौका समान है, उस परम अमृत एवं आनन्द की जननी माता गायत्री का हम भजन करते हैं।

अजां द्वैतां त्रैतां विविध गुण रूपां सुविमलाम्।

तमो हन्त्रीं तन्त्रीं श्रुति मधुरनादां रसमयीम्।।

महामान्यां धन्यां सततकरुणाशील विभवाम्।

भजेऽम्बां गायत्रीं परममृतमानन्द जननीम्।।5।।

अर्थ : गायत्री अजन्मा है, द्वैता (दार्शनिक) तथा त्रैता (रक्षा करने वाली) है, त्रिगुण एवं सुविमल रूपमयी हैं। तम को दूर करती है। विश्व की सच्चालिका है। वाणी सुनने में मधुर एवं रसमयी है। वह महामान्या है, धन्य है और उसका वैभव निरन्तर करुणाशील है। उस परम अमृत एवं आनन्द की जननी माता गायत्री का हम भजन करते हैं।

जगद्धात्रीं पात्रीं सकल भव संहार करणीम्।
सुवीरां धीरां तां सुविमल तपो राशि सरणीम्।।
अनेकामेकां वै त्रयजगद धिष्ठान पदवीम्।
भजेऽम्बां गायत्रीं परममृतमानन्द जननीम्।।6।।

अर्थ : गायत्री संसार की माता है और सकल संसार को संहार करने की भी उसकी शक्ति है। वह वीर है, धीर है और उसका जीवन पवित्र तपोमय है। वह एक होते हुये भी अनेक है। उसकी पद्वी संसार की अधिष्ठान गायत्री है। उस परम अमृत एवं आनन्द की जननी माता गायत्री का हम भजन करते हैं।

प्रबुद्धां बुद्धां तां स्वजनयति जाड्याप हरणिम्।
हिरण्यां गुण्यां तां सुकविजन गीतां सुनिपुणाम्।।

सुविद्यां निरवद्यामकथ गुण गाथां भगवतीम्।

भजेऽम्बां गायत्रीं परममृतमानन्द जननीम्।।7।।

अर्थ : गायत्री प्रबुद्ध है, बोधमयी है, स्वजनों की जड़ता को नाश करने वाली है, हिरण्यमयी (ज्योतिर्मय) है, गुणमयी है, जिसकी निपुणता सुकवि जनों द्वारा गाई जाने वाली है। निरवद्य (दोष रहित) उनके गुणों की गाथा अकथनीय है, वे भगवती अम्बा गायत्री उस परम अमृत एवं आनन्द की जननी माता गायत्री का हम भजन करते हैं।

अनन्तां शान्तां यां भजित बुध वृन्दः श्रुतिमयीम्।

सुगेयां त्र्येयां यां स्मरति हृदि नित्यं सुरपतिः।।

सदा भक्त्या शक्त्या प्रणति गतिभिः प्रीतिवशगः।

भजेऽम्बां गायत्रीं परममृतमानन्द जननीम्।।8।।

अर्थ : गायत्री अनन्त है, शान्त है, इसका भजन करके पंडित लोग वेदमय हो जाते हैं। इसका गान, ध्यान तथा स्मरण इन्द्र नित्यप्रति हृदय से करता है। सदा भक्तिपूर्वक, शक्ति के साथ, आत्म-निवेदनपूर्वक, प्रेमयुक्त आनन्द एवं अमृत की जननी माता गायत्री की मैं उपासना करता हूँ।

गायत्री मन्त्र का महत्व

गायत्री की महिमा सभी वेदों तथा पुराणशास्त्रों में सविस्तार दर्ज है—अथर्व-वेद में स्वयं वेद्भगवान् का कहना है-
"स्तुता मया वरदा वेदमाता प्रचोदयन्तां पावमानी द्विजानाम्, आयुः प्राणं प्रजां पशुं कीर्ति द्रविणं ब्रह्मवर्चसम्"।
अर्थः— मेरे द्वारा स्तुति की गई द्विजों को पवित्र करने वाली वेदमाता गायत्री आयु प्राण सन्तति पशु कीर्ति धन ब्रह्मतेज देने वाली है।
ॐ भूर्भुवः स्वः तत्-सवितुर् वरेण्यं, भर्गो-देवस्य धीमहि, धियो यो-नः प्रचोदयात्।
अर्थः— मैं उस शक्ति का चिन्तन करता हूँ जो शक्ति ॐ ब्रह्मरूप हैं, भूर्भुवः स्वः जो शक्ति तीनों लोकों में व्याप्त है, तत-जिस को वेदों ने तत् नाम से पुकारा है सविता-जो शक्ति इस सृष्टि को बनाती है, पालन करती है, नाश करती है, "वरेण्यम्" जो वरण करने के योग्य है, भर्गः- जो तेजो रूप है, देवः जो द्योतनशील है, अथवा ऐश्वर्य वाली है, ऐसी उस महान् शक्ति का धीमहि-चिन्तन करता हूँ, वह शक्ति 'धियः' मेरी बुद्धि को, प्रचोदयात्- सत् कर्मों में प्रेरित करे।

गायत्री मन्त्र का महत्व क्यों? *शब्द नित्य है (शब्द ब्रह्म) वर्तमान विज्ञान भी यही मानता है, आज जो बातें हम करते हैं, अथवा हमारे मन की लहरें आकाश में अथवा सृष्टि के अन्तराल में किसी न किसी रूप में विद्यमान रहती है, सृष्टि के आरम्भ से ही ऋषि मुनि साधक गायत्री मन्त्र के अनुष्ठान करते आये हैं, उन ऋषियों मुनियों साधकों की साधनायें भावनायें तपश्चर्यायें इस छोटे से गायत्री मन्त्र के पीछे तेजोपुंज के रूप में एकत्रित है, जो व्यक्ति इस गायत्री मन्त्र का उच्चारण अथवा जप करता है उस साधक की सफलता में वह तेजोपुंज*

अवश्य सहायक बनता है, साधक ज्यों ही इस मन्त्रराज का जप अथवा उच्चारण करने लगता है तो उसी क्षण मंत्र के प्रभाव का अनुभव करने लगता है, यही है इस गायत्री मन्त्र के महत्व का रहस्य।

गायत्री जप विधिः

शुद्ध आसन पर पद्मासन में पूर्व की ओर मुख कर के पानी का एक लौटा और एक थाली तर्पण के लिये रख कर नमस्कार करते हुए पढ़े (यदि नदी के तट पर करना हो तो थाली की आवश्यकता नहीं):-

प्रणवस्य ऋषि ब्रह्मा गायत्रं छन्द एवच, देवोग्नि-व्याहृतिषु च विनियोगः प्रकीर्तितः, प्रजापते-व्याहृतयः पूर्वस्य परमेष्ठिनः। व्यस्ताश्चैव समस्ताश्च ब्राह्मम्-अक्षरम्- ओम्-इति। व्याहृतीनां समस्ताना दैवतं तु प्रजापतिः, व्यस्तानाम्-अयम्-अग्निश्च वायुः सूर्यश्च-देवताः। छन्दश्च व्यहृतीनाम्-एकाक्षराणाम्-उक्ताख्यम्-द्वयक्षराणाम्- अत्युक्-ताख्यम् विश्वामित्रा-ऋषि-श्छन्दो, गायत्रं सविता तथा, देवतो-पनये जप्ये गायत्र्यै योग उच्यते आवाहयामि गायत्रीं, सर्व-पाप-प्रणाशि-नीम्। न गायत्र्याः परं जप्यं, नव्याहृति-समं हुतम्, आगच्छ वरदे देवि, जप्ये मे सन्निधौ भव। गायन्तं त्रायसे यस्मात्-गायत्री त्वं ततःस्मृता, अग्नि- र्वायुश्च सूर्यश्च बृहस्पत्याप-एव-च, इन्द्रश्च-विश्वे-देवाश्च देवताः सम्-उदाहृताः। एवम्-आर्ष-छन्दो दैवतं विनियोगं चानुस्मृत्य। गायत्र्या शिखाम्-अवद्ध्य गायत्र्यैव समन्ततः, आत्मन-श्चापः वरिक्षिप्य, प्राणायामं कुर्यात्, ओजोसीति गायत्रीम्-आवहृय देवानाम्-आर्षम् (अपने आप को पानी छिड़कें अंजलि धारण करते हुये पढ़ेः- ओजोसी सहोसि बलम्-असि भ्राजोसि देवानां धाम

नामासि, विश्वम्-असि-विश्वायुः सर्वम्-असि-सर्वायुः, अभि-भूः-अंगन्यास-कीजिये दोनों हाथों की ऊँगलियों से स्पर्श करते हुये पढ़ें: "अ" नाभौ (नाभिको) "उ" हृदि (हृदय को) "म" शिरसि (सिरको)।। ॐ "भू"-अंगुष्ठाभ्यां नमः (दोनों अंगूठों को) भुवः तर्जनीभ्यां नमः (अंगूठे के साथ वाली ऊँगलियों को), "स्वः" मध्यमाभ्यां नमः (बीच वाली ऊँगलियों को) "महः" अनामिकाभ्यां नमः, (सब से छोटी की साथ वाली ऊँगलियों को "जनः" कनिष्ठकाभ्यां नमः (छोटी ऊँगलियों को "तपः सत्य" करतल पृष्ठाभ्यां नमः (दोनों हाथ के तलवों को आपस में स्पर्श करें। "भू" पादयोः (पावों को) "भुवः" जान्वोः (गुठनों को) "स्वः" गुह्ये (गुह्यस्थान को) "महः नाभौ" (नाभि को) "जनः" हृदि (हृदय को) "तपः" कण्ठे (गले को) "सत्यं" शिरसिं (सिर को), ॐ "भूः" हृदयाय नमः "भुवः" शिरसि स्वाहा, "स्वः" शिखायै वौषट् (चोटी को) महः कवचाय हूँ, (वस्त्रों को) जनः नेत्राभ्यां वौषट् (नेत्रों को) "तपः" सत्यम्-अस्त्राय "फट्" चुटकी मारे।। "तत्-सवितुर्" अंगुष्ठाभ्यां नमः, "वरेण्यं" तर्जनीभ्यां नमः, "भर्गो-देवस्य मध्यमाभ्यां नमः", "धीमहि" अनामिकाभ्यां नमः, "धियो योनः" कनिष्ठकाभ्यां नमः, "प्रचोदयात्" करतल करपृष्ठाभ्यां नमः तत् "पादयोः सवितुर्" जान्वोः (गुठनों को) "वरेण्यं" कट्या कमर को, भर्गो नाभौ "देवस्य" हृदये "धीमहि" कण्ठे "धियोः" नासिकायां "यो" चक्षुषोः (नेत्रों को) "नः ललाटे" (माथे को) "प्रचोदयात्" शिरसि,। "तत् सवितुर्" हृदयाय नमः, "वरेण्यं" शिर-से स्वाहा, "भर्गो देवः" शिखायै वौषट् 'धीमहि' कवचाय हूँ (वस्त्रों को "धियो योनः "नेत्राभ्यां वौषट् "प्रचोदयात् अस्त्राय फट्" (चुटकी मारिये) "आपः" स्तनयोः (स्तनों को) "ज्योतिः" नेत्रयोः,

"रसो" मुखे "अमृतं" ललाटे "ब्रह्म-भूभूर्वः स्वरों (शिरसि) प्रणायाम करें।

क्या महिलाओं को गायत्री साधना जप अनुष्ठान आदि करने का अधिकार है?

वेदों शास्त्रों पुराणों के स्वाध्याय से यह स्पष्ट होता है कि पुरुष हो या स्त्री उपासना के अधिकारी हैं, प्राचीनकाल में गार्गी, मैत्रेयी देवयानी, लोपामुद्रा आदि महिलाओं ने गायत्री शक्ति की उपासना से ही आत्मा को समुन्नत बनाया था सावित्री ने एक वर्ष तक गायत्री मंत्र की साधना की थी जिस साधना से हीं वह अपने पति को यमराज से लौटा सकी। स्त्री और पुरुष दोनों ही गायत्री माता की सन्तान हैं, स्त्री सधवा हो या विधवा अपने जीवन को सफल बनाने के लिये गायत्री मन्त्र का जप किया करें।

कन्याओं को भी यज्ञोपवीत संस्कार का अधिकार है (धर्मशास्त्र)

शास्त्रों में दरज है कि वैदिक संस्कृति में कन्याओं को यज्ञोपवीत ग्रहण करने का वैसा ही अधिकार है जैसा बालकों को, वैदिक काल में स्त्रियां वेद-शास्त्र पढ़ा करती थी। गोभिलीय गृह्य सूत्र में लिखा है:-

प्रावृतां यज्ञोपवीतिनीम् अभ्युदानयन् जपेत्
सोमोऽददत् गन्धर्वाय इति

अर्थातः:- कन्या को कपड़ा पहने हुये, यज्ञोपवीत धारण किये हुये पति के निकट लायें तथा यह मन्त्र पढें। इस मन्त्र से स्पष्ट है कि कन्या यज्ञोपवीत किये हुये हो। यह श्लोक भी इसकी पुष्टि करता है।

पुराकल्पे हि नारीणां मौञ्जीबन्धनम् इष्यते।
अध्यापनं च वेदानां सावित्री वाचनं तथा।

अर्थात्:- प्राचीन काल में स्त्रियों का मौञ्जीबन्धन-संस्कार होता था, वे वेदादि शास्त्रों का अध्ययन भी करती थी। हारीत संहिता तथा पराशर संहिता में कहा है।

"द्विविधा स्त्रियां ब्रह्मावादिन्यः, सद्योवध्वश्च। तत्र ब्रह्मवादिनीनाम् उपनयनम्, अग्निबन्धनम्, वेदाध्ययनम् स्व-गृहे भिक्षा इति, वधूनाम तु उपस्थिते विवाह कथंचित उपनयनं कृत्वा विवाहः कार्यः"।

अर्थातः:- दो प्रकार की स्त्रियां होती हैं एक 'ब्रह्मवादिनी' जिन का उपनयन होता है, जो अग्निहोत्र करती है, वेदाध्ययन करती है अपने परिवार में ही भिक्षावृति से रहती है और दूसरी वे जिन का उपनयन संस्कार करके विवाह होता है। इसकी पुष्टि 'निर्णय सिन्धुकार' ने भी अपने पुस्तक के पृष्ट 414 पर की है।

वेद मन्त्रों के अर्थों को स्पष्ट करने वालों को 'ऋषि' कहा जाता है "**ऋषयो मन्त्र द्रष्टारः**" कई वेद मन्त्रों के अर्थ खोलने वाली '**ऋषिकायें** भी हुई है ऋग्वेद में इस प्रकार की लगभग 30 ऋषिकाओं के नाम आते हैं जैसे गार्गी, मैत्रेयी, मदालसा, अनुसूय्या, देवयानी, अहिल्या, कुन्ती, द्रौपदी इत्यादिं गायत्री की उपासक रही हैं

इसके अतिरिक्त मनु महाराज प्रत्येक धर्म कार्य में स्त्री-पुरुष का समान अधिकार मानते है। मनु ने घर में अग्निहोत्र आदि धर्मकार्यों के आयोजन की मुख्य जिम्मेदारी स्त्री को ही सौंपी है और यह आदेश दिया है कि पुरुष को प्रत्येक धर्म कार्य स्त्री को साथ लेकर करना चाहिये जैसे "**शोचे धर्म अन्नपक्त्यां**" अर्थात् घर की शुद्धि, धर्मकार्यों का आयोजन और भोजन बनाना आदि स्त्री को सौंपा है मनु ने संस्कारों को सभी के लिये समान रूप दिया है वहां पर स्त्री-पुरुष का कोई भेद नहीं है सभी संस्कार मन्त्रपूर्ववती करने चाहिये वह स्त्री का हो या पुरुष का संस्कार ब्रह्मण वर्ग के

लिये जरूरी है चाहे वह स्त्री हो अथवा पुरुष। कश्मीरी पण्डित लौगाक्ष के 24 संस्कारों को ही मानते हैं हम लड़की के केवल 9 संस्कार करते हैं और लड़के के 24 संस्कार। मनु स्मृति में लिखा है '**जन्मना जायते शुद्रः संस्कारात् द्विज उच्चते**' अर्थात् संस्कार करने पर ही हम अपने आप को ब्रह्मण कहला सकते हैं। शास्त्रों में लिखा है कि लड़की माता-पिता का क्रिया कर्म कर सकती है तथा लड़की अपने माता-पिता का दाह संस्कार भी कर सकती है परन्तु धर्म शास्त्र में यह भी लिखा है कि यज्ञोपवीत के बिना हम कोई भी धार्मिक कार्य अथवा क्रिया कर्म नहीं कर सकते हैं। इससे स्पष्ट होता है कि वैदिक काल में कन्याओं का यज्ञोपवीत संस्कार होता था। यह बात भी है कि जब हम अपने लड़के का विवाह करते हैं तो लग्न के समय लड़के को छः धागों वाला यज्ञोपवीत पहनाते है और लड़के से कहते हैं कि पहले आप को तीन धागों वाला यज्ञोपवीत था अब छः धागों वाला यज्ञोवीत पहनाते है इसमें से तीन धागे आपको अपनी स्त्री के हैं अर्थात् आप को आज से अपनी स्त्री के धार्मिक कार्यों का चार्ज भी लेना है क्योंकि उसको गृहस्थ का पूरा कार्य है तथा बच्चों की देखभाल करनी है इस से स्पष्ट होता है कि लड़की को भी यज्ञोपवीत धारण करने का अधिकार था परन्तु समय बीतने के साथ-साथ यह संस्कार केवल लड़कों तक ही सीमित रहा है जैसे कर्ण वेध का संस्कार पहले दोनों लड़कों तथा लड़कियों को करते थे परन्तु समय बीत जाने के साथ-साथ यह संस्कार केवल लड़कियों तक ही सीमित रहा। आप किसी वृद्ध माता जी से भी पूछें कि पहले पहल स्त्रियां भी लंगोट तथा आटीपन लगाती थी, आटीपन को मेखला कहते हैं जो कि यज्ञोपवती संस्कार पर ही कमर में बांधा जाता है इससे भी स्पष्ट होता है कि पहले पहल लड़कियों को भी यज्ञोपवीत संस्कार

किया जाता था।

सम्पादकः

यज्ञोपवीत कब?

कश्मीरी पण्डित यज्ञोपवीत को विशेष महत्वपूर्ण स्थान देते आये हैं जबकि कश्मीरी पण्डितों का गायत्री मन्त्र सामूहिक गुरुमन्त्र है, यह संस्कार कश्मीरी पण्डितों की संस्कृति का अंग बन चुका है। धर्म शास्त्र की आज्ञा है यह संस्कार ब्राह्मण को 7वें वर्ष से 16 वर्ष तक करना चाहिये, प्राचीनकाल में यह संस्कार गुरुकुल में किया जाता था तब से ब्रह्मचारी गुरुकुल में ही ठहरता था- चूँकि विद्यार्थी गुरुकुल में वेदों का पठन पाठन शास्त्र विद्या तथा शस्त्र विद्या यहां तक कि प्रत्येक प्रकार की विद्या को प्राप्त करता था तथा ब्रह्मचर्य का पालन 25 वर्ष तक करता था इसलिये उन विद्यार्थियों को ब्रह्मचारी कहते थे, जब ब्रह्मचारी गुरुकुल से विद्या सम्पूर्ण करके घर वापस आता था उसको समावर्तन कहते थे- गर्भ से लेकर यज्ञोपवती तक के 9 संस्कार बालक को घर में ही किये जाते थे। यज्ञोपवीत से लेकर 13 संस्कार कश्मीरी पण्डित ब्रह्मचारी को गुरुकुल में ही करते थे जो सभी संस्कार वेदों के पठन-पाठन से सम्बन्धित होते थे- "वेद" कहते हैं ज्ञान को, वह इंजीनरी हो या साईंस अथवा डाक्टरी आदि। समय बदलता है तो समय के साथ मनुष्य को भी बदलने पर विवश होना पड़ता है। अब हम यज्ञोपवीत संस्कार गुरुकुल के बदले घर में ही करते हैं, केवल यज्ञोपवती ही नहीं बल्कि गर्भ से लेकर समावर्तन तक के सभी 22 संस्कार एक ही दिन में यज्ञोपवती के दिन ही करते हैं, मानिये अब यह संस्कार हम केवल अपनी प्राचीन संस्कृति को समारक रूप में जीवित रखने के लिये ही करते हैं।

आज के युग में गुरुकुलों का स्थान लिया है कॉलिजों और यूनिवर्सिटियों ने, वर्तमानकाल में जब तक एक

विद्यार्थी वेदाभ्यास यानी इंजीनरी, डाक्टरी व साईंस आदि कोई ट्रेनिंग कर रहा है वह *विद्यार्थी तब तक* ब्रह्मचारी ही *कहलायेगा यदि दैवयोग से किसी कारण* वश इस *अवस्था तक विद्यार्थी का यज्ञोपवती न किया हो अवश्य कीजिये।*

श्राद्ध

श्राद्ध का क्या अर्थ है?

शास्त्रों में लिखा है:- **'श्रद्धया दीयते' इति श्राद्धः 'श्रद्धया क्रियते यस्मात् श्राद्धं तेन प्रकीर्तितम्'।** **अर्थात्:** श्रद्धा से किया जाने वाला कार्य जो पितरों के निमित किया जाता है अथवा पितरों के निमित श्रद्धा से जो कुछ भी दिया जाता है श्राद्ध कहलाता है शास्त्रों में मनुष्य के लिये तीन ऋण बताये गये हैं **देव ऋण, ऋषि ऋण, पितृ ऋण।** इनमें से मनुष्य श्राद्ध के द्वारा पितृ ऋण चुका सकता है, विष्णु पुराण में कहा गया है कि श्राद्ध से तृप्त होकर पितृ गण समस्त कामनाओं को पूर्ण करता हैं हमारे सनातन धर्म में एक वर्ष में एक सम्पूर्ण पक्ष पूज्य पितरों के निमित शास्त्रीय कर्मादि द्वारा अपनी श्रद्धा प्रकट करने के लिये नियत है। अपने माता-पिता जिन से हमें शरीर प्राप्त हुआ है हमारा पालण पोषण हुआ है यदि हम उन्हें विशेष सत्कार न करें उस से बढ कर कोई कृतघ्नता नहीं है, उनके नाम से दान करने पर उन की आत्मा तृप्त हो जाती है तथा शान्ति प्राप्त करती है पिण्ड दान से कष्ट मुक्ति होती है। चन्द्रमा मन का अधिष्ठाता है वह हमारे मन में संकल्प से की हुई क्रिया तथा मन द्वारा दिये हुये अन्न व जल को सूक्ष्म रूप से आकृष्ट *करता है और पितरों तक पहुचाने में मदद करता है। आश्विन मास के कृष्ण पक्ष में सभी मृतक* पितरों के श्राद्ध किये जाते हैं उन दिनों चन्द्रमा अन्य मासों की अपेक्षा पृथ्वी के निकटत्तर हो जाता है इस

कारण उसकी आकर्षण शक्ति का प्रभाव पृथ्वी तथा उसमें अधिष्ठित प्राणियों पर विशेष रूप से पडता है तथा तृप्त जितने भी जीव या पितर पितृ लोक में होते हैं उनके निमित दिया हुआ पिण्ड दान उन पितरों को करता है। इस बात में कोई शंका नहीं है कि मृतक पिण्डदान को नहीं पाता है विज्ञान ने यह सिद्ध किया है कि तपर्ण के जल या श्राद्ध के अन्न को मृतक सूक्ष्म शरीर को प्राप्त करके आकाश में सूक्ष्मता से उस को खींच सकता है जैसे रेडियो में वह यन्त्र है जो इंग्लैण्ड, जर्मनी, रूस तथा दूर देशों के शब्दों को खींच सकता है इसी प्रकार मृतकों में पितृ लोक में जाने से उनके पास वह शक्ति सूक्ष्मता वश प्राप्त हो जाती है जो पिण्ड दान तर्पण इत्यादि प्राप्त कर सकती है।

श्रद्ध संकल्प विधि

पितृ ऋण चुकाने के निमित्त श्राद्ध अवश्य करें, यदि आप श्राद्ध करने में असमर्थ है तो संकल्प करें, ऐसी धर्मशास्त्र की आज्ञा है। श्राद्ध संकल्प के लिये पहले सामग्री एकत्रित करें, एक थाली में चावल, थोड़ा सा नमक, फल दक्षिणा आदि रखें, थोड़ा सा तिल, धूप, दीप, फूल, अर्घ, पवित्र तिलक, केसर या चन्दन का तिलक जिस पितर का श्राद्ध हो उस का फोटो, तिलक, फूल की मालादि से सजा कर सामने रखें, यदि फोटो न हो तो भगवान् विष्णु का अथवा भगवान् कृष्ण का फोटो रखें। पद्मासन में शुद्ध आसन पर पूर्व की ओर मुख करके बैठिये, संकल्प करने से पहले श्रीमद्भगवद्गीता का कम से कम एक अध्याय का पाठ करें, यदि ऐसा न हो सके, तो पंचांग के पाठ प्रकरण से अष्टादशश्लोकी गीता का पाठ अवश्य करें।

ॐ तत्-सत्-ब्रह्म, अद्य-तावत्-तिथौ-अद्य (मास पक्ष वार का नाम लेकर) **जैसे वैशाख-मासस्य**

कृष्णपक्षस्य, (अथवा) शुक्लपक्षस्य तृतीयस्यां तिथौ-भौम-वासरा-न्वितायां-विष्णु-प्रीत्यर्थम्-दीप-धूप संकल्पात् सिद्धिर्-अस्तु-दीपो नमः धूपोनमः। बायाँ यज्ञोपवीत रख कर तिल सहित जल से तर्पण करते हुये पढ़ेः- नमः पितृभ्यः-प्रेतेभ्यः, नमो धर्माय विष्णवे नमो यमाय रुद्राय कान्तार पतये नमः।

ॐ तत् सत्-ब्रह्म-अद्य-तावत्-तिथौ-अद्य (मास-पक्ष तिथि वार का नाम लेकर) पित्रो... प्रपिताम-हाय। मात्रे पिता-मह्यै प्रपितामह्यै। माता महाय, प्रमाता-महाय, वृद्ध प्रमाता-महाय, प्रमातामह्यै वृद्ध-प्रमातामह्यै समस्तमाता-पितृभ्यो द्वादश-दैवतेभ्यः पितृभ्यः नित्यकर्म निमितं दीपः स्वधाः, धूपः, स्वधः, जिस पितर का श्राद्ध हो उसी का नाम गोत्रसहित लेकर संकल्प का पानी जो आपने हाथ में लिया होगा चावल आदि पर छिड़कते हुये पढ़ें- ॐ तत्-सत्-ब्रह्म-अद्य तावत्-तिथौ-अद्य मास-पक्ष-तिथि वार का नाम लेकर पढ़ेंः- सांवत्सरिके श्राद्धे (यदि काम्बर पक्ष (पितृपक्ष) का श्राद्ध हो) कन्यांकगत आपरि-पाके श्राद्धे परलोके वैकुण्ठ पदवीप्राप्त्यर्थं आत्मनः पुण्य वृद्धयर्थं इदं-अन्नं दक्षिणा सहितं-फल-मूलवस्त्रादि-सहितं संकल्पयामि संकल्पयामि संकल्पयामि (दायाँ यज्ञोपवीत) रखकर फिर से तर्पण करते हुये पढ़ेंः-

नमो-ब्रह्मणे-नमो-अस्तु-अग्नये-नमः पृथिव्यै-नमः औषधीभ्यः नमो वाचस्पतये-नमो-विष्णवे-बृहते कणोमि। इति-एतासाम्-एव-देवतानां-सारिष्टिं-सायुज्यं सलोकतां सामीप्यम्-आप्नोति य एवं विद्वान्-स्वाध्यायम्-अधीते।

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः।

श्राद्ध से पित्रों की तृप्ती होती है।

जन्म दिन पूजा

जन्म दिन पूजा आरम्भ करने से पहले कमरे में एक कम्बल अथवा कोई शुची तौलिया बिछाये फिर पूजा की सामग्री लायेंः रत्नदीप, धूप, नारिवन उस को सातगांठ लगाये, थोडा सा दूध, दही, घी, केसर, शहद, चीनी, सर्वोषधि (आरी), फूल, जंग के लिये एक थाली में चावल, उस पर थोडा सा नमक तथा पैसे रखें, अर्घ्य के लिये थोडा सा धोया हुआ चावल यज्ञोपवीत, पवित्र, अथवा थोडा द्रमन घास या सोने की अंगूठी, एक थाली, एक कवली छोटी बाल्टी में पानी उस में थोडा सा दूध तथा दही डालें, पानी छोडने के लिये एक कवली। पूजा आरम्भ करने से पहले यज्ञोपवीतधारी यज्ञोपवीत धारण करें। यज्ञोपवीत धारण करते समय कोई कन्या यजमान के कन्धे को तीन बार जंग की थाली का स्पर्श करें। यज्ञोपवीत धारण करने का मन्त्र

यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापर्तेयत् सहजं पुरस्तात् आयुष्यं अग्रयं प्रतिमुञ्च शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः। जिस ने यज्ञोपवीत धारण नहीं किया होगा अथवा लडकी को पूजा आरम्भ करने से पहले उत्तर की ओर मुंह करके हाथ जोड कर यह श्लोक पढ़ेंः

नमस्ते शारदे देवि काश्मीर पुरवासिनी त्वामहं प्राथर्ये नित्यं, विद्या ज्ञानं च देहि मे।।

शुक्लाम्बरधरं विष्णुं शशि-वर्णं चतुर्भुजम्। प्रसन्नवदनं ध्याये सर्व-विघ्नोपशान्तये।

अभिप्रेतार्थ-सिद्धयर्थं पूजितो यः सुरैर्-अपि। सर्व-विघ्नच्छिदे तस्मै श्री गणाधिपतये नमः।।1।।

हृदय और मुख को जल छिड़कते हुए पढ़ें।

तीर्थे स्नेयं तीर्थ-मेव समानानां भवति।

मा नः शंस्योर्-अररुषो धूतिः प्राणङ् मर्त्यस्य रक्षा-णो ब्रह्मणस्पते।

अनामिका उंगली में पवित्र धारण करके अपने आप को तिलक, अर्घ, फूल लगाते हुये पढें।

परमात्मने पुरुषोत्तमाय पंचभूतात्मकाय विश्वात्मने मंत्रानाथाय आत्मने नारायणाय आधारशक्त्यै समालभनं गन्धो नमः अर्घो नमः पुष्पं नमः।।

रत्न दीप, धूप को तिलक, अर्घ, पुष्प अपर्ण करके सूर्य भगवान् को थाली में तिलक तथा अर्घ, पुष्प अर्पण करते हुये पढें:-

नमो धर्म-निधनाय नमः स्व तसाक्षिणे। नमः प्रत्यक्षदेवाय भास्कराय नमो नमः।।

खोसू से थाली में रखे हुये नारीवण के ऊपर अर्घ सहित जल की धारा डालते हुये पढें:-

यत्रास्ति-माता न पिता न बन्धु-भ्रातापि नो यत्र सुहृत्-जनश्च न ज्ञायते यत्र दिनं न रात्रि-स्तत्रात्मदीपं शरणं प्रपद्ये। आत्मने नारायणाय-आधरशक्त्यै धूपदीपस-ङ्कल्पात् सिद्धिर्-अस्तु धूपो नमः दीपो नमः।।

जल सहित खोसू में थोड़ा सा तिलक और तीन पुष्प डालते हुये पढें:-

सं वः सृजामि हृदयं संसृष्टं मनो अस्तु वः। संसृष्टास्तन्वः सन्तु वः संसृष्टः प्राणो अस्तु वः, संयावः प्रियास्तन्वः, सं प्रिया, हृदयानि वः। आत्मा वो अस्तु, सं प्रियः सं प्रियस्तन्वो मम।

इसी जल की धारा को नारीवण पर डालते हुये पढें:-

अश्विनोः प्राणस्तौ ते प्राणं दत्तां तेन जीव। मित्रा-वरुणयोः प्राणस्तौ ते प्राणं दत्तां तेन जीव। बृहस्पतेः प्राणः सं ते प्राणं ददातु तेन जीव, जन्मोत्सव-देताभ्यो जीवादानं परिकल्पयामि नमः।

चावल सहित दो दर्भ सीधे हाथ में लेकर तीन बार गायत्री मन्त्र पढ़ें:-

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्-वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि, धियो योनः प्रचोदयात् '3' जन्मोत्सव-देवतानां- अर्चाम्-अहं करिष्ये उों कुरुष्व।।

हाथ में पकड़ें हुये दो दर्भ निर्माल में डालकर फिर से दो दर्भ आसन के रूप में नारीवण के सामने डालते हुये पढ़ें:- सप्त-जन्मोत्सव देवतानां आसनं नमः। चावल सहित दो दर्भ हाथ में पकड कर केवल चावल को कन्धे से फैकते हुये पढ़ें:- सप्त-जन्मोत्सवदेताभ्यः युष्मान्-पूजयामि। उों-पूजय।। दो दर्भ इसी तरह पकड़ते हुये पढ़ें:- सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात्। सभूमिं विश्वतो वृत्वात्यतिष्ठत्-दशांगुलम् जन्मोत्सवदेवता आवाहयिष्यामि। उों-आवाहय।।

पहले पकड़े हुये दो दर्भ निर्माल में ढाल कर तीन बार फूल नारीवण पर डालते हुए पढ़ें:-

भगवन् ! पुण्डरीकाक्ष ! भक्तानु-ग्रहकारक-अस्मत् दयानु-रोधेन सन्निधानं कुरु प्रभो ।।3।।

दोनों कन्धो के ऊपर चावल फैंक कर प्राणायाम करके खोसू में जल डालते हुये पढ़ें:-

पाद्यार्थम्-उदकं नमः। शन्नो देवीरभिष्टय-आपो भवन्तु पीतये। शंयोर्-अभिस्रवन्तु नः।

लाय, केसर, सर्वौषधि, दर्भ, जल, सब चीजें खोसू में डालकर नारीवण पर जल छोड़ते हुए पढें।

अश्व-त्थामने, बलये, व्यासाय, हनुमते, कृपाचार्याय, मार्काण्डेयाय, परशुरामाय, सप्तचिरजीवेभ्यः पाद्यं नमः।।

पाद्य का बचा हुआ पानी निर्माल में डालकर फिर से खोसू में पानी डालते हुये पढ़ें:-

शन्नो देवीर्-अभीष्टये-आपो भवन्तु पीतये। शंयोर्-अभिस्रवन्तु नः।
जल, केसर, दर्भ, घी, चावल, जौ, सर्वोषधि, दूध ये आठ चीजें खोसू में डालकर नारीवण पर डालते हुये पढ़ें:-
अश्वत्थामन्, बले, व्यास, हनुमन्, कृपाचार्य, मार्काण्डेय, परशुराम, सप्त-चिर, जीव इदं वो ऽर्घ्यं नमः। शुद्ध जल डालते हुये पढ़ें:- प्रजापति-जन्मोत्सवदेवताभ्यः आचमनीयं नमः। दूध वगैरह जल डालते हुये पढ़ें:- तद्विष्णोः परमं पदं सदा पश्यन्ति सूरयः। दिवीव चक्षुराततं तद्विप्रासो विपण्यवो जागृवांसः समिन्धते विष्णो-र्यत्परमं पदम्। प्रजापति जन्मोत्सवदेवताभ्यः स्नाने नमः। किसी कटोरी में फूलों का आसन बनाते हुये पढ़ें:-
आसनाय नमः गरुडासनाय नमः पद्मा-सनाय नमः शतदल-पद्मा-सनाय नमः, सहस्रदल-पद्मासनाय नमः। किमासनं ते गरुढासनाय, किं भूषणं कौस्तुभ-भूषणाय, लक्ष्मीकलत्राय, किम्-अस्ति, देयं-वागीश किं ते वचनीयम्-अस्ति।।
नारीवण को आसन पर बिठाते हुये पढ़ें:- उत्तिष्ठ भगवन् विष्णो उत्तिष्ठ कमलापते ! उत्तिष्ठ त्रिजगन्नाथ ! त्रैलोकी मंगलं कुरु।। नारीवण को सात तिलक लगाते हुये पढ़ें:-
अश्वत्थाम्ने, बलये, व्यासाय, हनुमते, कृपाचार्याय मार्काण्डेयाय परशुरामाय सप्तचिर-जीवेभ्यः समालभनं गन्धो नमः। इन्हीं सात नामों का उच्चारण करते हुये नारीवण पर अर्घ और पुष्प चढ़ाते हुये पढ़ें:-
अश्वत्थाम्ने, बलये व्यासाय, हनुमते, कृपाचार्याय, मार्काण्डेयाय, परशुरामाय, सप्तचिर

जीवेभ्य अर्घो नमः पुष्पं नमः।। धूप रत्नीदीप, कपूर उठाकर घुमायें। यह मंत्र पढ़ें:-

तेजोसि शुक्रमसि ज्योतिर्सि धामासि, प्रियं देवानामंऽनादृष्टं देवयजनं देवाताभ्यस्त्वा देवताभ्यो गृहणामि, यज्ञेभ्यस्त्वा यज्ञिभ्यो, गृहणामि, जन्मोत्सवदेवताभ्यः धूपं रत्नदीपं कर्पूरं च परिकल्पयामि नमः।

नमस्कार करते हुये पढे:-

जय नारायण, जय पुरुषोत्तम, जय वामन कंसारे। उद्धर माम्ऽसुरेश-विनाशन्, पति-तोऽहं संसारे। घोरं हर मम नरकरिपो, केशव कल्मषाभारम्। माम्-अनुकम्पय दीनम्-अनाथं कुरु भवसागरपारम्। भगवते वासुदेवाय लक्ष्मीसहिताय नारायणाय। सप्त-जन्मोत्सव-देवताभ्यः चामरं छत्रं परिकल्पयामि नमः।

फूल चढ़ाते हुये पढ़ें:-

ध्येयं सदा परिभवघ्नम्अभीष्टदोहं तीर्थास्पदं शिव-विरिंच-नुतं शरण्यम्।

भृत्यार्तिहं प्रणतपाल भवाब्धिपोतं वन्दे महापुरुष ते चरणार-बिन्दम्। नमस्कार करते हुये पढें:-

उभाभ्यां जानुभ्यां पाणिभ्यां शिरसा उरसा वचसा च अष्टांग-नमस्कारं करोमि नमः।

कटोरी में थोड़ा दूध, शहद या क्षीर रख कर अर्पण करते हुये पढें:-

वासुदेवाय लक्ष्मीसहिताय नारायणाय प्रजापति-जन्मोत्सवदेवताभ्यः मात्रामधुपर्कं ॐ नमो नैवेद्यं निवेदयामि नमः।

दक्षिणा डालते हुये पढें:- जन्मोत्सव-देवाताभ्यः दक्षिणायै तिल-हिरण्य रजत निष्कर्ण ददानि।
फिर से दक्षिणा अर्पण करते हुये पढें:- एता देवताः सदक्षिणान्नेन प्रीयन्तां प्रीताः सन्तु।।
फूल चढाते हुये पढें:-
उों तद्विष्णोः परम पदं सदापश्यन्ति-सूरयः दिवीव चक्षुर्-आततम्। तद्विप्रासो विपण्यवो जागृवांसः समिन्धते विष्णोर्यत्परमं पदम्। अब नैवेद्य तहर या क्षीर थाली में लाकर एक पात्र में अलग चटू और 7 म्यचियाँ रखें, नैवेद्य के साथ ही मिश्री भी रखें। नैवेद्य की थाली को दोनों हाथों से पकड़कर सारा प्रोप्पुन पढे। (प्रोप्पुन विजयेश्वर पंचांग में अलग से लिखा है)
आज्ञा मांगते हुये पढें:-
आज्ञा मे दीयतां नाथ नैवेद्यस्यास्य भक्षणे। शरीर यात्रा सिद्धयर्थं भगवन् क्षन्तुम्-अर्हसि।।
पुष्प चढ़ाते हुये पढें:-
आपन्नोस्मि शरण्योस्मि सर्वावस्थासु सर्वदा। भगवंस्त्वां प्रपन्नोस्मि रक्ष मां शरणा-गतम्।
पवित्र निकालकर, हाथ में नारीवण बांधकर, चटू कहीं बाहर रखकर, निर्माल नदी में डालकर नैवेद्य के साथ शकर दायें हथेली में रखकर मुंह में डालते हु पढें:-
र्माकाडण्डेय नमस्तुभ्यं सप्तकल्पान्त जीवन, आयुर्-आरोग्यं सिद्धर्यथं प्रसीद भगवन्मुने।
मार्काण्डेय महाभाग सप्तकल्पान्त-जीवन, चिरऽजीवी यथा त्वं तु मुनीनां प्रवरद्विज, कुरुष्व मुनिशार्दूल, तथा मां चिरजीविनम्।।

प्रेप्युन

एक थाली में नैवेद्य तथा दूसरी में चटू और पांच म्यचियां या टुकड़े रख कर गणेश जी का ध्यान करके शुद्ध पानी अपने आप पर छिडकते हुये पढ़ें:-

तीर्थे स्नेयं तीर्थम्-एव, समानानां भवति, मानः शंसो अररुषो धूर्तिः प्राणड्-मर्त्यस्य रक्षाणो ब्रह्मणस्पते। अपने आप को तिलक लगाते हुये पढ़ें:-

परमात्मने पुरुषोत्तमाय पंच-भूतात्मकाय विश्वात्मने मन्त्रनाथाय, आत्मने नारायणाय-आधर-शक्त्यै-समालभनं गन्धो नमः अर्घो नमः, पुष्पं नमः। दीप को तिलक लगाते हुये तथा पुष्प चढाते हुये पढ़ें:-

स्वप्रकाशो महादीपः सर्वत-स्तिमि-रापहः प्रसीद मम गोविन्द दीपोयं परिकल्पितः।

धूप को तिलक लगाते हुये पढे:-

वनस्पति रसो दिव्यो गन्धाढ्यो गन्धवत्-तमः आधरः सर्वदेवानां धूपोयं परिकल्पितः।

सूर्य भगवान् का ध्यान करके थाली में तिलक पुष्प डालते हुये पढ़ें:- नमो धर्म-निधानाय, नमः स्वकृत-साक्षिणे, नमः प्रत्यक्ष-देवाय भास्कराय नमो नमः।

कवली से थाल में जल डालते हुये पढ़ें:- यत्रास्ति माता न पिता न बन्धुः, भ्रातापि नो यत्र सुहृत जनश्च, न ज्ञायते यत्र दिनं न रात्रिः तत्रात्म-दीपं शरणं प्रपद्ये। आत्मने नारायणाय-आधर-शक्तये, दीप-धूप-संकल्पात् सिद्धिर्-अस्तु, दीपो नमः, धूपो नमः।

नैवेद्य को दोनों हाथों से पकड़ते हुये पढ़ें

अमृतेश-मुद्रया-अमृतीकृत्य अमृतम्-अस्तु अमृतायतां नैवेद्यम्। सावित्राणि सावित्रस्य देवस्यत्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनो-र्बाहुभ्यां-पूष्णो हस्ताभ्याम्-आददे महागणपतये कुमाराय श्रियै सरस्वत्यै लक्ष्म्यै विश्वकर्मणे द्वार्देवताभ्यः प्रजापतये ब्रह्मणे कलश-देवताभ्यः ब्रह्मविष्णु महेश्वर-देवताभ्यः चतुर्वेदेश्वराय सानुचराय ऋतु-पतये नारायणाय दुर्गायै त्र्यम्बकाय वरुणाय यज्ञपुरुषाय अग्नि-ष्वात्तादिभ्यः पितृ-गणदेवताभ्यः। भगवते वासुदेवाय संकर्षणाय प्रद्युम्नाय अनिरुद्धाय सत्याय-पुरुषाय अच्युताय माधवाय गोविन्दाय-सहस्रनाम्ने विष्णवे लक्ष्मी सहिताय नारायणाय भगवते भवाय देवाय-शर्वाय-देवाय-रुद्राय-देवाय पशुपतये देवाय उग्राय-देवाय भीमाय देवाय ईशनाय देवाय महा-देवाय पार्वती सहिताय परमेश्वराय भगवते विनायकाय एकदन्ताय कृष्णपिंगलाय गजाननाय लम्बोदराय भालचन्द्राय हेरम्बाय आखुरथाय विघ्नेशाय विघ्नभक्षाय वल्लभा-सहिताय श्रीमहागणेशाय। भगवते क्लीं कां कुमाराय षण्मुखाय मयूरवाहनाय पार्वती नन्दनाय सेनाधिपतये कुमाराय। भगवते ह्रां ह्रीं सः सूर्याय सप्ताश्वाय अनाश्वाय एकाश्वाय नीलाश्वाय प्रत्यक्षदेवाय तेजोरूपाय परमार्थ-साराय प्रभासहिताय आदित्याय। भगवत्यै अमायै कामायै चार्वङ्ग्ये टंकधारिण्यै तारायै पार्वत्यै यक्षिण्यै श्री शारिका-भगवत्यै श्री शारदा-भगवत्यै श्री महाराज्ञीभगवत्यै श्री ज्वाला भगवत्यै, व्रीडा भगवत्यै वैखरी भगवत्यै वितस्ता भगवत्यै

गंगाभगवत्यै यमुनाभगवत्यै कालिकाभगवत्यै सिद्धलक्ष्म्यै महालक्ष्म्यै महात्रिपुरसुन्दर्यै सहस्रनाम्न्यै देव्यै भवान्यै अभयंकरीदेव्यै भवान्ये क्षेमंकरीभगवत्यै सर्वशत्रुघातिण्यै इहराष्ट्राधिपतये आनन्देश्वर भैरवाय इन्द्राय वज्रहस्ताय अग्नये शक्तिहस्ताय यमाय दण्डहस्ताय नैर्ऋतये खड्ग-हस्ताय वरुणाय पाशहस्ताय वायवे ध्वजहस्ताय कुवेराय-गदा-हस्ताय ईशानाय, त्रिशूलहस्ताय, ब्रह्मणे पद्महस्ताये विष्णावे-चक्रहस्ताय, अनन्तादिभ्योऽष्टाभ्यः कुलनागदेवताभ्यः अग्न्या-दित्याभ्यां वरुण-चन्द्रमोभ्यां कुमार-भौमाभ्यां विष्णु-बुधाभ्यां इन्द्रा-बृहस्पतिभ्यां सरस्वती-शुक्राभ्यां, प्रजापति-शनैश्चराभ्यां गणपति-राहुभ्यां, रुद्रकेतुभ्यां ब्रह्मध्रुवाभ्यां, अनन्ता-गस्त्याभ्यां ब्रह्मणे कूर्माय ध्रुवाय अनन्ताय हरये लक्ष्म्यै कमलायै शिख्यादिभ्यः पंच-चत्वारिंशत्-वास्तोष्पति-याग-देवताभ्यः ब्राह्म्यादिभ्यो मातृभ्यः गौर्यादिभ्यो मातृभ्यः ललितादिभ्यो मातृभ्यः दुर्गा-क्षेत्रा-गणेश्वर-देवताभ्यः राकादेवताभ्यः त्रिका-देवताभ्यः सिनीवाली-देवताभ्यः यामी-देवताभ्यः रौद्री-देवताभ्यः वारुणी-देवताभ्यः बार्हस्पत्य-देवताभ्यः ॐ भू र्देवताभ्यः ॐ भुवो देवताभ्यः ॐ स्व र्देवताभ्यः ॐ भूर्भुवः स्व र्देवताभ्यः अखण्ड-ब्रह्माण्ड-यागदेवताभ्यः धूर्भ्यः उपधूर्भ्याः महागायत्र्यै सावित्र्यै-सरस्वत्यै हेरकादिभ्यो वदुकादिभ्यः, उत्पन्नम्-अमृतं दिव्यं प्राक्-क्षीरो-दधि-मन्थनात्-अन्नम्-अमृतरूपेण नैवेद्यं प्रति-गृह्यताम्।

ईष्ट देवता का ध्यान करते हुये पढेः उो तत्सत्-ब्रह्म-अद्य तावत् तिथौ अद्य अमुक-मासस्य अमुक-पक्षस्य अमुक-तिथौ आत्मनो वाङ्मनः कार्योपार्जित-पापनि वारणार्थम्, उों नमो नैवेद्यं निवेदयामि नमः।

"चुट्ट" को स्पर्श करते हुये पढेः- या काचित्-योगिनी-

रौद्रा-सौम्या घोरतरा परा। खेचरी भूचरी रामा तुष्टा भवन्तु मे सदा। चुट्टू को अंगूठे से तिलक लगाकर अर्घफूल डालते हुये पढ़ें:- आकाश मातृभ्योऽन्नं नमः, आकाशमातृभ्यः समालभनं गन्धो नमः, अर्घो नमः पुष्पं नमः। चुट्टू के सात (7) म्यचियां अथवा सात छोटे प्रसाद के भाग रखे हुये होते हैं- पहली म्यची को स्पर्श करते हुये पढ़ें:- भगवते वासुदेवाय अन्नं क्षीरं मोदकादीन् समर्पयामि नमः। (2) दूसरी को स्पर्श करते हुये पढ़ें:- भगवते भवाय देवाय अन्नं समर्पयामि नमः (3) तीसरी को स्पर्श करते हुये पढ़ें: भगवते विनायकाय अन्नंसमर्पयामि नमः चौथी को स्पर्श करते हुये पढ़ें:- (4) ह्रां ह्रीं सूर्याय अन्नं समर्पयामि नमः। पांचवी को स्पर्श करते हुए पढ़ें: (5) इष्टदेवी भगवत्यै अन्नं मोदकान्-मिष्ठानं-क्षीरं समर्पयामि नमः। अंतिम दो भागों या दो म्यचियों पर अर्घ पानी डालते हुये पढ़ें- यस्मिन्-निवसति क्षेत्रो क्षेत्रपालाः सकिंकराः। तस्मै निवेदयाम्यद्य बलिं पानीय सुयंतम्, क्षां-क्षेत्राधिपतये अन्नं नमः रां राष्ट्राधिपतये अन्नं नमः- सर्वाभय-वरप्रदो मयि पुष्टि पुष्टिपति-दधातु। दोनों हाथ में फूल लेते हुये प्रणाम करते हुये पढ़ें:- आपन्नोस्मि शरण्योस्मि सर्वावस्थासु सर्वदा। भगवन्-त्वां-प्रपन्नोस्मि रक्ष मां शरणागतम्। उभाभ्यां जानुभ्यां पाणिभ्यां शिरसा वचसा चोरसा मनसा च नमस्कारं करोमि नमः।

तर्पणः- सीधा हाथ रखते हुये पढ़ें:- नमो ब्रह्मणे, नमो अस्त्वग्नये, नमः पृथिव्यै, नमः औषिधिभ्यः, नमो वाचे नमो वाचस्पतये, नमो विष्णवे, बृहते, कृणोमि, इत्येतासाम्-एव-देवतानां-सा-रि-ष्टिं-सायुज्यं सलोकतां सामीप्यम्-आप्नोति-य एवं विद्वान्-स्वाध्यायम्-अधीते।

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः

प्राणायाम

श्वास प्रश्वास की गति को रोकना प्रणायाम कहलाता है। प्राणायाम के तीन भाग हैं:-

(1) पूरक, (2) कुम्भक (3) रेचक।



पूरक:- पूरक का अर्थ है श्वास का आकर्षण। प्राणायाम द्वारा गायत्री मन्त्र से बोलते हुये शुद्ध वायु को बाहर से खींच कर फेफडों में फैंकना 'पूरक' कहलाता है।



कुम्भक:- अन्दर लिये हुए वायु को कुछ क्षण के लिये रोका जाता है ताकि फेफडों की सम्पूर्ण ग्रन्थियों में यह वायु प्रवेश करे और फेफड़े बलवान हो जायें इस समय भी गायत्री मन्त्र का उच्चारण करना होता है।

रेचक:- रेचक का तात्पर्य है रुकी हुई वायु का निःसरण। रेचक विधि से फेफड़ों में रुकी हुई वायु को



धीरे-धीरे गायत्री मन्त्र पढते हुये बाहर छोड़ते हैं। इस प्रकार अशुद्ध वायु बाहर आ जाती है और फेफड़ों को विश्राम मिलता है और व्यक्ति की मानसिक शक्ति बढती है और व्यक्ति से ओज व तेज प्रकट होता है, प्राणायाम करने से सभी प्रकार की चिन्ता, कष्ट इत्यादि मिट जाते हैं।

प्राणायाम मन्त्र:- ॐ भूः, ॐ भुवः, ॐ स्वः, ॐ महः, ॐ जनः, ॐ तपः, ॐ सत्यम्। ॐ तत्सवितुवरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि, धियो यो नः प्रचोदयात्। ॐ आपो ज्योति रसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भुवः स्वरोम्। शास्त्रों में लिखा है।

यथा पर्वतधातूनां दोषान् हरति पावकः
एवम् अन्तर्गतं पापं प्राणायामेन दुह्यते।।

अर्थः पर्वत से निकले धातुओं का मल जैसे अग्नि से जल जाता है वैसे प्राणायाम से आन्तरिक पाप जल

जाते हैं।

आचमनः- हमारे प्रत्येक धार्मिक कार्य में तथा दैनिक जीवन में आचमन का बहुत महत्त्व है, हथेली को मोड़ कर, कनिष्ठिका (सबसे छोटी अंगुली) और अंगूठे को अलग कर ले शेष अंगुलियों को सटा कर आचमन करें आचमन तीन मन्त्रों से तीन बार की ज़ाती हैः-

1. ॐ केशवाय नमः, 2. ॐ नारायणाय नमः, 3. ॐ माधवाय नमः।

आचमन के विषय में शास्त्रों में लिखा हैः-

यः क्रियां कुरुते मोहाद् अनाचम्यैव नास्तिकः।
भवन्ति हि वृथा तस्य क्रिया सर्वा न संशयः।।

अर्थः आचमन न करने पर हमारे सब कार्य व्यर्थ हो जाते हैं।

वैज्ञानिक आधार से आचमन कण्ठ शोधन करने के लिये किया जाता है तथा आचमन करने से कफ के निःस्रित हो जाने के कारण श्वास-प्रश्वास क्रिया में और मन्त्रादि के शुद्ध उच्चारण में मदद मिलता है, तीन बार आचमन करने की क्रिया धर्म ग्रन्थों द्वारा निर्दिष्ट है, इस से कामिक, मानसिक, तथा वाचिक त्रिविधि पापों की निवृत्ति होती है।

भोज़न खाने से पूर्व आचमन का मन्त्रः-

अन्तः चरसि भूतेषु गुहायां विश्वतोमुखः त्वंयज्ञः, त्वं वष्टकारः, आपो ज्योति रसोमृतं ब्रह्म भूर्भुवः स्वरोम्।। अमृतोपस तरणमसि। अर्थातः जलरूपी अमृत से ढक्कन खोलता हूँ। भोजन खाने के पश्चात् आचमन का मन्त्रः **अन्तः चरसि भूतेषु गुहायां विश्वतोमुखः त्वंयज्ञः, त्वं वष्टकारः, आपो ज्योति रसोमृतं ब्रह्म भूर्भुवः स्वरोम्।। अमृतोपिधानमसि** अर्थातः इस जलरूपी ढक्कन को बन्द करता हूँ।

पवित्री - पव्यथर

हमारे प्रत्येक धार्मिक कार्य में 'पवित्री' धारण करने का

बहुत महत्व है। यह कुशा से बनाई जाती है। कुशा को पवित्र माना जाता है इस विषय में शास्त्रों में लिखा है:-

कुशमूले स्थितो ब्रह्मा-कुशमध्ये जनार्दनः।
कुशाग्रे शंकरो देवः त्रयो देवाः कुशे स्थिताः।।

अर्थातः- कुशा में तीनों देवता ब्रह्मा, विष्णु और शंकर विद्यमान है।

पवित्री कुशा के तीन तिनकों से बनाई जाती है पवित्री पहन कर आचमन करने से 'कुशा' झूठी नहीं होती है। पवित्री दाहिने हाथ की अनामिका ऊंगली में लगाई जाती है। पवित्री ऊंगली में लगाते समय 'ॐ भूर्भुवः स्वः, मन्त्र पढ़ना चाहिये।

सन्ध्योपासन, पूजन, जप, पितृ कर्म यज्ञादि पर पवित्रि धारण की जाती है लिखा भी है:-

स्नाने होमे जपे दाने, स्वध्याये, पितृकमर्णि करो सदर्भौ कुर्वीत तथा सन्ध्याभिवादने।

भारतीय संस्कृति

आगतं स्वागतं कुर्यात्
गच्छन्तं वृष्ठतोन्वियात्

अर्थः अतिथि के आने पर आगे बढ कर उस का स्वागत करें और उनके प्रस्थान (जाते) करते समय कुछ दूर तक उनके पीछे पीछे जायें।

आचारहीनं न पुनन्ति वेदा

आचार हीन व्यक्ति को वेद भी पवित्र नहीं कर सकते हैं।

देवी की परिक्रमा एक बार, सूर्य भगवान् की 7 बार गणेशजी की 3 बार, विष्णु जी की 4 बार तथा शिव जी की आधी प्रदक्षिणा करनी चाहिये।

भगवान विष्णु के सामने 9 बार, शंकर के सामने 11 बार और गणेश जी के सामने 4 बार आरती घुमानी चाहिये।

हाथों में तीर्थ





अग्नि पुराण में लिखा है:-

पैत्र्यं मूले प्रदेशिन्याः कनिष्ठायाः प्रजापतेः।
ब्राह्म्यम् अङ्गुष्ठमूलस्थं तीर्थं दैवं कराग्रतः॥
सव्य पाणि तेल वह्नेतीर्थं सोमस्य वामतः।
ऋषीणां तु समग्रेषु अङ्गुली पर्व सन्धिषु॥

अर्थातः मनुष्य के दोनों हाथों में कुछ देवताओं के तीर्थस्थान हैं, चारों अंगुलियों के अग्रभाग में देवतीर्थ, इसी कारण देवताओं को तर्पण में जलाञ्जलि अंगुलियो से दी जाती है। तर्जनी अंगुली के मूलभाग में 'पितृ तीर्थ' इसी कारण पितरो को अंगूठे के बीच में से तर्पण में जलाञ्जलि दी जाती है, कनिष्ठा के मूल भाग में 'प्रजापति तीर्थ' इसी कारण ऋषियों को प्रजापति तीर्थ से तर्पण में जलाञ्जलि देने का विधान है, अंगूठे के मूल भाग में ब्रह्मतीर्थ है।

सन्ध्या उपासना विधि

सन्ध्या का वास्तविक अर्थ है दिन और रात्रि के मिलने का समय, सांयकाल।

शास्त्रों में सन्ध्या के विषय में लिखा है:-

संध्यामुपासते ये तु सततं संशितव्रताः।
विधूतपापास्ते यान्ति ब्रह्मलोकं सनातनम्॥

अर्थात्: जो नियम पूर्वक प्रतिदिन संध्या करते हैं वे पापरहित हो कर सनातन ब्रह्मलोक को प्राप्त होते हैं।

संध्योपासना हमारी संस्कृति का एक महत्वपूर्ण अंग है परन्तु समय के साथ साथ संध्योपासना का लोप होता जा रहा है इस को फिर से सुदृढ करने के निमित मैं संक्षिप्त रूप में शास्त्रानुसार संध्या उपासना विधि यहां पर लिख रहा हूँ ताकि हमारे नवयुवक इस को अपना कर अपने जीवन का उद्धार करें तथा अपनी संस्कृति के अंग भूत सन्ध्या उपासना विधि का प्रचार करें। हमारे पूर्वज दरिया के किनारे सन्ध्या करते थे परन्तु विस्थापन के कारण काश्मीरी पण्डित पूरे विश्व में भिखर गया और ऐसे स्थानो पर गये जहां पर दरिया, नदियां नही है इस कारण आप अपने बाथरूम में भी सन्ध्या कर सकते है (यह शास्त्र की आज्ञा है।)

जब आप स्नान के लिये बाथरूम में नहाने के लिये जायेंगे तो सबसे पहले बायाँ पाँव धोते हुये पढ़ें- ॐ **नमोस्त्व-नन्ताय**

सहस्त्र मूर्तये, सहस्त्र-पादाक्षि-शिरोरु-बाहवे। सहस्त्र-नाम्ने पुरुषाय शाश्वते, सहस्त्र-कोटी-युगधारिणे नमः। दायाँ पाँव धोते हुये पढ़ें- ॐ नमः कमलनाभाय नमस्ते जलशायिने। नमस्ते केशवानन्त वासुदेव नमोस्तुते॥ अञ्जलि में जल उठा कर पढ़ें-गंगा-प्रयाग-गय नैमिष-पुष्करादि तीर्थानि यानि भुवि सन्ति हरिप्रसादत्। आयान्तु तानि कर पद्म-पुटे मदीये, प्रक्षालयन्तु वदनस्य निशाकलङ्कम्। इसी जल से मुँह धोते हुये पढ़ें- तीर्थे स्नेयं तीर्थमेव समानानां भवति मानः। शंस्यो-अरुरुषो धूर्तिः प्राणङ्मर्त्यस्य रक्षाणो ब्रह्मणस्पते। यज्ञोपवीत दोनों हाथों के अँगूठों में रख कर तीन बार गायत्री मन्त्र पढ़ते हुये धोयें- ॐ भूर्भुव- स्वः तत्-सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्। यज्ञोपवीत को पहले दायें भुजा में डालते हुये पढ़ें- यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापते-र्यत्-सहजं परस्तात। आयुष्यम्-अग्रं प्रतिमुञ्च शुभ्रं, यज्ञोपवीतं बलम्-अस्तु-तेजः, प्राणायाम कीजिये, प्राणायाम करके नमस्कार करते हुये पढ़ें- नमो-अग्नये-अप्सुषदे, नम इन्द्राय, नमो वरुणाय, नमो वारुण्यै, नमोऽपां पतये, नमोऽदभ्यः। स्नान करते हुये पढ़ें- ॐ तत्-विष्णोः परमं पदं सदा पश्यन्ति सूरयः। दिवीव चक्षुर्-आततम् तत्-विप्रासो विपन्यवो जागृवांसः समिन्धते विष्णोर्यत्-परमं पदम्॥

माथे पर सात बार पानी छिड़कते हुये पढ़ें- ॐ भूः, ॐ भुवः ॐ स्वः, ॐ महः, ॐ जनः, ॐ तपः, ॐ सत्यम्। प्राणायाम तथा उपस्थान करते हुये पढ़ें- ॐ हंसः शुचिषत्-वसुरन्त-रिक्षसत्-होता-वेदिषत्-अतिथि-दुरोण-सत्। नृषत्-वरसत्, ऋत-सत्-व्योमसत्-अब्जा गोजा ऋतजा, अद्रिजा ऋतम्। सूर्यदेवता को नमस्कार करते हुये पढ़ें- नमो धर्मनिधानाय, नमः सुकृत साक्षिणे नमः प्रत्यक्षदेवाय भास्कराय नमो नमः। तर्पण करते हुये पढ़ें- ॐ नमो देवभ्यः यज्ञोपवीत गले में रखते हुये पढ़ें- स्वाहा ऋषिभ्यः, बायाँ यज्ञोपवीत रखकर तर्पण करते हुये पढ़ें- स्वधा पितृभ्यः दायाँ यज्ञोपवित रखकर पढ़ें- आब्रह्मस्तम्बपर्यन्तं ब्रह्माण्डं सचराचरं जगत्-तृप्यतु तृप्यतु-एवम्-अस्तु। गोविन्द गोविन्द हरे मुरारे, गोविन्द गोविन्द रथाङ्गपाणे, गोविन्द गोविन्द मुकुन्द कृष्ण गोविन्द गोविन्द नमो नमोस्तु। स्नान करके सूर्य भगवान् के ओर नमस्कार करते हुये पढ़ें- ॐ गायत्र्यै नमः, सावित्र्यै नमः, सरस्वत्यै नमः। ॐ प्रणवस्य ऋषि-ब्रह्मा, गायत्रं छन्द एव च। देवोग्नि-व्याहृतिषु च, विनियोगः प्रकीर्तितः, प्रजापते व्याहृतयः, पूर्वस्य परमेष्ठिनः, व्यस्ताश्चैव समस्ताश्च, ब्राह्मम्-अक्षरम्-ओम्-इति। व्याहृतीनां समस्तानां, दैवतं तु प्रजापतिः। व्यस्तानाम्-अयम्-अग्निश्च, वायुः सूर्यश्च देवताः। छन्दश्च व्याहृतीनाम्-एकाक्षराणां- उक्ताख्यं, द्व्यक्षराणां- अत्युक्ताख्यम्। विश्वामित्र ऋषिश्छन्दो, गायत्रं सविता तथा

देवतो पनये जप्ये, गायत्र्या योग उच्यते। आवाहयामि गायत्रीं, सर्वपापप्रणाशिनीम्। न-गायत्र्याः परं जप्यं, न व्याहृति-समं हुतम्। आगच्छ वरदे देवि, जप्ये मे सन्निधो भव। गायन्तं त्रायसे यस्मात् गायत्री त्वं ततः स्मृता। अग्नि-र्वायुश्च सूर्यश्च बृहस्पत्या-प एव च। इन्द्रश्च विश्वे देवाश्च देवताः समुदाहृताः। एवम्-आर्ष छन्दो दैवतं, विनियोगं चानु-स्मृत्य। गायत्र्या शिखां-आबद्ध्य, गायत्र्यैव समन्ततः। आत्मनश्चापः परिक्षिप्य प्राणायामं कुर्यात्। अपने आप को पानी छिड़क कर अंजलि धारण करते हुये पढ़े- ॐ ओजोसि सहोसि बलं-असि भ्राजोसि देवानां धाम नामासि। विश्वं-असि विश्वायुः सर्वं-असि सर्वायुर्-अभिभूः तीन आचमन एक साथ करते हुये पढ़े :- ॐ सूर्यश्च मामन्युश्च- मन्युपतयश्च मन्युकृतेभ्यः। पापेभ्यो रक्षन्ताम्। यत्-रात्र्या पाप-अकार्षं, मनसा वाचा हस्ताभ्यां, पद्भ्यां-उदरेण शिश्ना। रात्रिस्तत्-अवलुम्पतु, यत् किंचित् दुरितं मयीदम्-अहं- आपोऽमृत-योनौ सूर्य ज्योतिषि जुहोमि स्वाहा, अब सारे शरीर पर पानी छिड़कते हुये पढ़े- ॐ आपो हिष्ठा मयोभुव-स्तान ऊर्जे दधातन महे रणाय चक्षसे। यो वः शिवतमो रस-स्तस्य भाजयते हनः। उशतीर्-इव मातरः। तस्मा-अरंगमाम वो, यस्य क्षयाय जिन्वथ आपो जनयथा च नः। ॐ शन्नो देवीर् अभीष्टये-आपो भवन्तु पीतये शंयोर अभिस्रुवन्तु नः। तीन बार आचमन करते हुये पढ़ें- ॐ अन्तः-चरसि-भूतेषु गुहायां विश्वतो मुखः। त्वं यज्ञस्त्वं वषट्कार-आपोज्यातिः रसोमृतं ब्रह्मभूर्भुवः स्वरोम्। उपस्थान करते हुये पढ़ें:- शुक्रियं रुद्रस्य-य उदगात्-पुरस्तात्-महतो अर्णवात्-बिभ्राज-मानः सरिरस्य मध्ये। स माम्-ऋषभो रोहिताक्षः, सूर्यो विपश्चित्-मनसा पुनातु। यत्-ब्रह्मा-वादिष्म तन्मा मा हिंसीत्-सूर्याय बिभ्राजाय वै नमो नमः बायाँ यज्ञोपवीत रखकर सभी पितरों का तर्पण करके फिर से तर्पण करते हुये पढ़ें:-मातृपक्ष्या-स्तु ये केचित्-ये चान्ये पितृपक्षजाः। गुरु-क्ष्वरशुर बन्धूनां ये कुलेष्षु समुद्भवाः, ये प्रेतभावम्-आपन्ना ये चान्ये श्राद्धवर्जिता, जलदानेन ते सर्वे लभन्तां तृप्तिम्-उत्तमाम् दायाँ यज्ञोपवीत रखकर तर्पण करते हुये पढ़ें:- ॐ नमो देवेभ्यः गले में यज्ञोपवीत रख कर स्वाहा ऋषिभ्यः बायाँ यज्ञोपवीत रखकर स्वधापितृभ्यः दायाँ यज्ञोपवीत रखकर पढें:- आब्रह्मस्तम्ब-पर्यन्तं ब्रह्माण्डं सचराचरं। जगत्-तृप्यतु तृप्यतु तृप्यतु एवम् - अस्तु सूर्य देवता को नमस्कार करते हुये पढ़ें:-नमो धर्मनिधानाय नमः सुकृत-साक्षिणे नमः प्रत्यक्ष देवाय भास्काराय नमो नमः, शान्तिः पुष्टि-स्तथा तुष्टिः सन्तु मे त्वत्-प्रसादतः, सर्वपाप-प्रशान्तिश्च तीर्थराज नमोस्तुते।

नोटः- यदि आप पूरी विधि अनुसार सन्ध्या करना चाहते हैं तो आप हमारे कार्यालय द्वारा छपाई हुई 'सन्ध्या' मंगा सकते है।

कश्मीरी पण्डितों के गोत्र और जाति

हमारे पास ई0 1889 की छपी हुई एक पुस्तक मौजूद है, जिस में कश्मीरी पण्डितों के गोत्र और ज़ाते दर्ज है, उसी पुस्तक के आधार पर आम जनता की जानकारी के लिये विजयेश्वर पञ्चांग में हम ने गोत्र तथा ज़ात दर्ज किये है।

सं0	गोत्र	ज़ात
1	दत्तात्रेय	कौल, नगारी, जिन्सी, जलाली, वातल, सुल्तान, ओगरा, ऐमा, मोज़ा, दीनत, ताती, बसीह, किसू, मन्डल, सांगरी, राफिज़, बालव, द्राबी, बामज़ाई, र्शगा, पडरू
2	उपमान	रीवू।
3	धौह्म	राज़दान्।
4	कण्ठ धौम्या	राज़दान, वाँगनी, मुजू, शेर
5	स्वामिन मुद्गल्य	ज़ावेह, राज़दान, मुशरान, चन्ना, कण्ठ, खज़ांची, हस्त, वालव, मोंगा, देवानी, जटू, ज़ोतन, पोट, शोरा, लाला (राज़दान), नदन, ऋषि।
6	स्वामिन गौतम	गुरिटू, राज़दान, थपलू, नकैब, तहलाचार, काक, लाबरू, पारमन, ज़र्मी, पदौरा, लंगर, च्रंगू, खोसा, काकापोरी, बादाम, रैणा, काज़ी, चल्लू, प्याला।
7	स्वामिन गौतम लौगाक्ष	जोखू, राज़दान
8	स्वामिन भारद्वाज	तिक्कू, मुंशी, कहर, मिसकीन, घडियाली, बाज़ारी, खान, गगरू
9	पालदेव वास गार्गेय	शिवपूरी, पण्डित, मल्ला, पतू, मीरखोर, कदलभुजू, कोकरू, हंगरू, पंडित (ठठू), भवनू,

सं0	गोत्र	ज़ात
		बकाया, खशू, किचलू, मिसरी, खर, माम, खैचरी
10	पत सास कौशिक	गंजू, कुचरू, सोलू, ज़दू, अम्बारदार, कुली, वैष्णवी, ब्राब्रू, मुसलमान, कमान, वांचू, मियां, जवानशेर, जाला, पंजू, मट्टू, फोतदार, सत्मान।
11	देवपत सामिन औपमन्यु कौशिक	शिवपूरी
12	देव औपमन्यु	खोसू, मेवा, पण्डित
13	भव कापिष्ठल औपमन्यु	वानी, खान
14	सामिन वास औपमन्यु	डुल्लू
15	राजपराशर	राज़दान
16	स्वामिन वास औपमन्यु	भट्ट, वल्ली
17	स्वामिन औपमन्यु	गिगू
18	कश औपमन्यु	भटट
19	भूतवास औपमन्यु लौगाक्ष	पैशन, जालपुरी, ठाकुर

सं0	गोत्र	ज़ात
20	राजभूत लौगाक्ष देवल	भान
21	रात्रि भार्गवा	ज़ित्शू
22	भूत लौगाक्ष धौम्या गौतम	हण्डू
23	देवसामिन गौतम कौशक मुद्गल्य भारद्वाज	पण्डित, कोकिल
24	स्वामिन मुद्गल्य पाराशर	गीरू
25	स्वामिन वास	तुफची
26	वरीवस	साहनी
27	वशिष्ठ गार्ग्य	पण्डिता
28	स्वामिन कौशिक	ठाकर, वातल, जालपुरी
29	स्वामिन भार्गवा	वाली, बटव
30	स्वामिन कौशिक भारद्वाज	भट्ट, कोकरू
31	स्वामिन शाण्डल्य	पण्डित, वास
32	स्वामिन वास आत्रेय	टुस्सू, गासी, वाज़ा
33	स्वामिन गौतम आत्रेय शलान कौत्स	रैणा, भटट

सं0	गोत्र	ज़ात
34	स्वामिन गौतम आत्रेय	चोलू
35	स्वामिन कण्ठ कश्यप	लाब्रू
36	स्वामिन गार्गेय	कचामा
37	स्वामिन गण भौशक	पावेह
38	स्वामिन गौतम भारद्वाज	कमदा
39	स्वामिन वास लौगाक्ष	तव
40	दरभारद्वाज	दर, त्रिसल, मिसरी, जवानशेर, कन्धारी, थालचूर, ओठू, तुर्की, वागुज़ारी, बांगी
41	वशिष्ठ भारद्वाज	भटट, हखू, हण्डू
42	शर्मण भारद्वाज	भटट, माड, कल्लू, वल्ली
43	शर्मण भारद्वाज	भटट
44	देव भाराज कौशिक	देवा
45	शाण्डल्य भारद्वाज	भटट
46	नन्द कौशिक भारद्वाज	भटट
47	कौशिक भारद्वाज	भटट
48	शाण्डली	कार

सं0	गोत्र	ज़ात
49	चण्द शाण्डली	साधू
50	वर्षाण्डली	जोगी
51	वरवासक शाण्डली	सफाया
52	वरदेव शीलान कपी	मोटा
53	मित्र शाण्डली	सैद
54	देव शाण्डली	भतफूल
55	राज शाण्डली	वख
56	सम शाण्डली	भटट, ददरू
57	स्वामिन ऋषि क़नि गार्गेय	कोल, कमज़ात
58	शेलान कौत्स	तेलवान, कोल, मुक्कू
59	कौत्स आत्रेय	भटट, राज़दान
60	राजदत आत्रेय	
	शलान कौत्स	भटट
61	शर्मण आत्रेय	गद्दू
62	भव आत्रेय	वारिकू
63	स्वामिन वार्षिकन	काठजू, काव, चौथाई
64	भव कापिष्ठल	काव

सं0	गोत्र	ज़ात
65	रात्र विशवामित्र अगरस्त	त्रकरू, मटटू
66	दर केशटल	लदव, भटट
67	कण्ठ कश्यप	वासव, राज़दान, भटट, आनन्द
68	मित्र कश्यप	भटट, खेडा
69	दत्तशर्मण कण्ठ कश्यप	ब्राडू, रैणा
70	देव कश्यम मुद्गल्य कश्यप	ब्राडू
71	देव कश्यप मुद्गल्य गौतम	आखन
72	स्वामिन भार्गव भारद्वाज	
	ओस अत्री	कल्लू
73	देव गर्गी	बहान
74	देव वसिष्ट	अकबलू
75	देव कौत्स आत्रेय	बडग़ामी
76	देव विश्वामित्र वार्षिगन	वांगू
77	देव गौतम	भटट
78	देव कण्ठ कश्यप	कार
79	देव लौगाक्ष	पण्डित, सन्तापोरी
80	देव कौशक	भटट

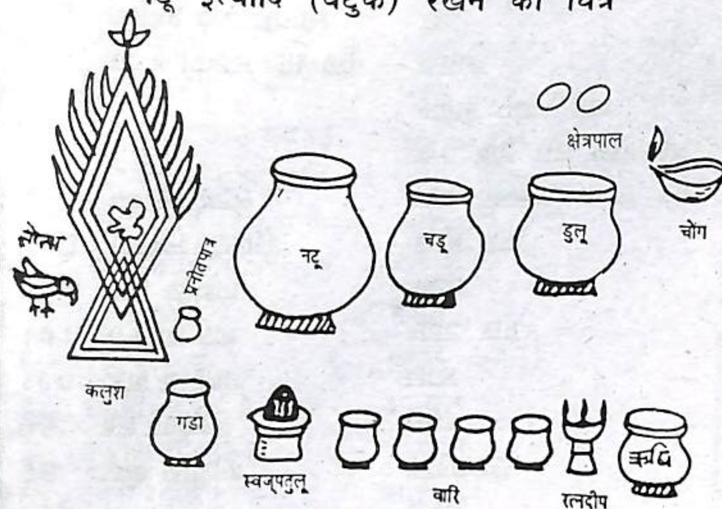
सं0	गोत्र	ज़ात
81	अर्थ वार्षिण शाण्डल्य	चौधरी
82	कौशिक	भटट, सलमान
83	पत्त सामिन कौशिक	
	देव रात्र परवार	पण्डित, वाईल
84	वसिष्ट	भटट, रंगाटेंग
85	रात्र विश्वामित्र अगस्त	पण्डित
86	कार चन्द शाण्डल्य	चौधरी, कार
87	मित्रा कौशिक	पण्डित
88	शरमताकौत्स	भटट, सस
89	दतवास	कहार
90	वसिष्ट स्वामिन मुद्गल्य	भण्डारी
91	ईश्वर शाण्डल्य कौशिक	रावल, नखासी
92	दत दत शैलान कौत्स	भटट, सत्थू, कसवा, मलिक, कहकशू
93	रात्र वार्षिगण	कोतर
94	पाराशर	पचिह
95	आत्र भार्गव	हापा

सं0	गोत्र	ज़ात	सं0	गोत्र	ज़ात
96	भूत लौगाक्ष	पण्डित	110	स्वामिन आत्रेय	शाल, हण्डू, जदवाली, सिक, चक
97	राज वसिष्ट	शँगलू	111	शाण्डल्य	शायिर
98	ऋषि कौशिक	काशकारी	112	स्वामिनवास गार्गी	सम, नन्द, गदवा, दत्त, हलमत, लंगू, ऋषि
99	दत्त वार्षिमण	सनर	113	स्वामिन गोश वास औपमन्यू-	चकू
100	ऋषि कविगार्ग	ज़ारू	114	शमर्ण कौत्स आत्रेय	रगू, नन्द, गदवा, दत्त
101	समवास गार्ग	भटट, सम	115	देव पाराशर	यच्छ
102	नन्द कौशिक	भटट	116	कण्ठ धौम्या	काव ब्रेठ
103	स्वामिन हासवसी	खान, कटू	117	दर वार्षिमण	सफाया, बखशी, कुचरू, शाली
104	भव कापिष्ठल	राडू, कल्ला, सापन, लटू, कटू, वांटू, चूर, चूदर, गीरू, हकीम, वांगनू, शैव	118	दर कापिष्ठल औपमन्यु	मीच
105	भव कापिष्ठल औपमन्यु	कठारू	119	मित्रा स्वामिन कौशिक आत्रेय	पाण्डित हण्डू
106	स्वामिन वास लौगाक्ष	छटू	120	वासुदेव पालगार्ग्य	पटवारी
107	दरभारद्वाज	ज़ंगम	121	पत स्वामिन कौशिक	कन्ना, कितरू, दरबारी, बल्ली, गणहार, सराफ, पीर
108	देव भारद्वाज	तू			
109	भूत औपमन्य	खि, रैबरी, त्रारू, सैदा, उप्पल			

शेष पृष्ट 285 पर

शिवरात्रिपूजा

शिवरात्रि के लिये कलश
नटू इत्यादि (वटुक) रखने का चित्र



पूजा के लिये सामग्रीः- चूना दूध, दही, फूल, तिल, काण्ठगण, सिन्दूर, नारीवन (मौली), रत्नदीप, चोंग, आईना जंग के लिये चावल, पवित्र, (यदि पवित्र न मिले, तो उतने समय के लिये अनामिका ऊँगली में स्वर्ण की अँगूठी डाल कर रखें, अगर दर्भ न मिले तो दूर्वा यानि द्रमन घास प्रयोग में लायें), दर्भ, नाबद, कालामिर्च, लोंग, किशमिश। पूजा के स्थान पर बटुकनाथ के पास ही ब्रह्मकलश चूने से बनाये, ब्रह्मकलश का चित्र में देखें ब्रह्मकलश पर एक लोटा रखिये, उस में विष्टर, पानी, फूल डाल कर रखें-कलश के ईशानी कोन से क्रमशः सबवटुक नुटू डुलिजियाँ आदि दक्षिण की ओर आरियों पर पहले से ही सज्जा कर रखें, पूजास्थान को इस भावना से सजाये कि आज मैंने पार्वती सहित भगवान् शंकर को निमन्त्रित करना है, वटुकनाथ के दायें और अन्त में चोंग रखें, चोंग से जरा उत्तर की ओर दो कटोरियाँ (क्षेत्रपाल रखें) जैसा कि हमने नकशे में दिखाया है-अव यजमान को चाहिये

आसन पर पूर्व की ओर हाथ में फूल लेकर कलश पूजा आरम्भ करे थोड़े-थोड़े फूल कलश पर डालते जायें और पढ़ते रहें-

ॐ कारो-यस्य मूलं क्रम-पद-जठर च्छन्द-विस्तीर्ण-शाखा। ऋक्-पत्रं सामपुष्पं यजुर-उचितफलः स्यात्-अथर्वः प्रतिष्ठा।। यज्ञच्छाया-सुशीतो द्विजगण-मधुपैः गीयते यस्य नित्यं। शक्तिः सन्ध्या-त्रिकालं-दुरितभयहरः पातु नो वेद-वृक्षः।। मुक्ता-विद्रुम-हेमनील-धवल-च्छायै-र्मुखैस्त्रीक्षणै युक्तामृइन्दुः निबद्ध-रत्न-मुकटां तत्त्वात्मवर्णात्मिकाम्।। गायत्रीं वरदाभयां-कुशकरां शूलं कपालं गुणं। शंखं चक्रम्-अथार-बिन्द युगलं हस्तै-र्वहन्तीं भजे।। आयातु वरदा देवी त्रयक्षरा ब्रह्मवादिनी। गायत्री च्छन्दसां मातर्-ब्रह्म-योने-नमोस्तुते (तीन बार पढ़िये।)

भद्रं-पश्येम-प्रचरेम, भद्रं-भद्रं वदेम शृणुयाम भद्रम्। तन्नो मित्रो वरुणो माम-हन्ताम्-अदितिः सिन्धुः, पृथ्वी उत द्यौः। अभि नो देवीरवसा महः शर्मणा नृपत्नीः, अच्छिन्न-पत्राः सचन्ताम्। इहेन्द्राणीमु-पह्वये, वारुणानीं स्वस्तये, अग्नायीं सोमपीतये।। मही द्यौः पृथिवी च न इमं यज्ञं मिमिक्षताम्, पिपृतां नो भरीमभिः।। तयोर्-इत्-घृतवत्-पयो, विप्रा रिहन्ति धीतिभिः, गन्धर्वस्य ध्रुवे पदे। स्योना पृथिवी भवानृ-क्षरा, निवेशनी, यच्छाऽनः शर्म सप्रथः।। अतो देवा अवन्तु नो यतो विष्णु- र्विचक्रमे पृथिव्या सप्त धामाभिः। इदं विष्णु र्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम् समूढमस्य पांसुरे।। त्रीणि पदा विचक्रमे विष्णुर्गोपा अदाभ्यः, अतो धर्माणि धारयन्। विष्णोः कर्माणि पश्यत यतो व्रतानि पस्पृशे, इन्द्रस्यः युज्यः सखा।

तत् विष्णोः परमं पदं सदा पश्यन्ति सूरयः, दिवीव चक्षुर-आततम्।। तत्-विप्रासो विपन्यवो जागृवांसः समिन्धते-विष्णोर्यत् परमं पदम्।। ॐ गायत्र्यै नमः, ॐ भुर्भूवः स्वः-तत्-सवितु-र्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् (तीन बार) पढ़ें।

क्षेत्रपालों को अर्घ डालते हुये पढ़ें:- अश्वमेधे घोराणामार्षम्।। ॐ द्रष्ट्रे नमः, उपद्रष्ट्रे नमोऽनुद्रष्ट्रे नमः, ख्यात्रे नमः उपख्यात्रे नमो, नुक्शास्त्रे नमः, शृण्वते नमः, उपशृण्वते नमः, सते नमः, असते नमो, जाताय नमो, जनिष्यमानाय नमो, भूताय नमो, भविश्यते नमः, चक्षुषे नमः, श्रोत्राय नमो, मनसे नमो, वाचे नमो, ब्रह्मणे नमः, शान्ताय नमः, तपसे नमः।। भूतंभव्यं भविष्यत्-वषट्-स्वाहा नमः, ऋक्-साम-यजु-र्वषट् स्वाहा नमो, गायत्री त्रिष्टुप् जगती वषट् स्वाहा नमः। पृथिव्यन्तरिक्षं द्यौर्वषट् स्वाहा नमः। अन्नं कृषिवृष्टिः वषट् स्वाहा नमः, पिता पुत्रः पौत्रो वषट् स्वाहा नमः। प्राणो व्यानोऽपानो वषट्स्वाहा नमो, भूर्भुवः स्वर्वषट् स्वाहा नमः। यो विश्व-चक्षुर्-उत-विश्वतो मुखो विश्वतो हस्त, उत विश्वतस्पात्। सं बाहुभ्यां धमते संपतत्रै-र्द्यावापृथिवी जनयन् देव एकः।। ॐ आब्रह्मन्-ब्राह्मणो ब्रह्म-वर्चस्वी जायताम्-अस्मिन्- राष्ट्रे, राजन्य इषव्यः शूरो महारथो जायतां, दोग्ध्री धेनु-र्वोढा- नड्वान्-आशुः सप्ति-र्जिष्णू- रथेश्ठः, पुरन्ध्रि-र्योषा, सभेयो, युवास्य यजमानस्य वीरो जायतां निकामे निकामे नः पर्जन्यो वर्षतु फलवतीर्न ओषधयः पच्यन्तां योगक्षेमो नः कल्पताम्।। कलश पर अर्घ चढ़ाते

हुये पढ़ेः- "इषे त्वोर्जे त्वेति ब्रह्मणः-" इषे त्वार्जे त्वां वायवः स्थो, पायवः स्थ देवो वः, सविता प्रार्पयतु श्रेष्ठतमाय कर्मणे, आप्यायद्धव-मध्न्या देवभागं, प्रजावतीरन-मीवा- अयक्ष्मा मावस्ते न ईशत माघशंसः, परिवो रुद्रस्य हेति-र्वृणक्तु, ध्रुवा-अस्मिन्-गोपतौ स्यात् ब्रह्वी-र्यजमानस्य पशुन्-पाहि-यजमानस्य पशुपा असि, देवस्य त्वा सवितुः प्रसवे-श्विनोबाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्यां-आदधे, गोषदसि प्रत्युष्ठं रक्षः, प्रत्युष्टरातिः प्रेयमागा-द्धिषणा बर्हिरुछ मनुना कृता, स्वधया वितष्टा उर्वन्तरिक्षं वीहीन्द्रस्य परिषू-तमसि माधो, मोपरि, परस्त ऋद्धया, स मा च्छेत्ता, ते मा रिषत् देवबर्हिः शतवल्शं विरोह सहस्रवल्शं विवयं रुहेम, आदित्या, रास्नासीन्द्राण्या सन्नहन्नं पूषा ते ग्रन्थिं ग्रथ्नातु, स ते मा स्थात्-इन्द्रस्य त्वा बाहुभ्यां-उद्यच्छे बृहस्पतेस्त्वा मूर्ध्ना हरामि देवं गममसि, तदा हरन्ति कवयः, पुरस्तात्-देवेभ्यो जुष्टं-इह बहिर्-आसदे, वसोः पवित्रमसि शतधारं वसूनां पवित्रमसि सहस्रधारं-अय क्ष्मा वः प्रजया संसृज़ामि रायस्पोषेण बहुला भवन्तीः। मधुमत् धृतवत पिन्वमाना जीवा जीवन्तीर्- उपतः सदेम, मातरिश्वानो घर्मोसि द्यौर्-असि पृथिव्यसि विश्वधाया परेण, धाम्ना हनुतासि माह्वाः, सा विश्वायुः सा विश्व्यचाः सा विश्वधाया हुतस्तोको हुतो, द्रप्सोग्नये बृहते नाकाय स्वाहा, द्यावा-पृथिवीभ्यां संपृच्यध्वं-ऋतावरी, ऊर्मिणा मधुमत्तमा मान्द्राधानस्य सातयः, इन्द्रस्य त्वा भागं, सोमेना-तनत्-म्यदस्तम्-असि विष्णवे-विष्णो हव्यं रक्षस्वापो जागृत। महितृणां मवोस्तु द्युम्नं मित्रस्यार्यम्णः, दुराधर्षं

वरुणस्य, नहि तेषाममाचन नाध्वसु वरणेषु ईशे रिपुर-अधशंसः, यस्मै पुत्रासो अदितेः प्रजीवसे मर्त्यीय ज्योति-यच्छन्त्यः जस्रम्-सोमानं स्वरणं कृणुहि ब्रह्मणस्पते, कक्षीवन्तं य औषजो यो रैवाण्यो अमीवहा वसुवित्-पुष्टिवर्धनः सनः सिषक्तु यस्तुरः मानः शंसो अररुषो धूर्तिः प्राणङ् मर्त्यस्य रक्षाणो ब्रह्मणस्पते।

अब प्रणीतपात्र में जो कलश के समाने दायें तरफ है, उस में तिल अक्षत पुष्प अर्घ और तीन मन्त्रों से तीन फूल डालते हुये पढ़ें:-

सं वः सृजामि हृदयं संसृष्टं मनो अस्तु वः। (1) संसृष्टास्तन्वः सन्तु वः संसृष्टः प्राणो अस्तु वः (2) संय्यावः प्रियास्तन्वः सं प्रिया हृदयानि वः। आत्मा वो सं प्रियः संप्रियास्तन्वो मम। (3) प्रणीतपात्र के दुर्भ अथवा विष्टर से कलश और क्षेत्रपालों को छीटें देते हुये पढ़ें: अग्नेर-आयुर-असि तस्य ते मनुष्या आयुष्कृतस्-तेन-अस्मै अमुष्मै आयु-र्धेहि। इन्द्रस्य प्राणः स ते प्राणं ददातु यस्य प्राणस्तस्मै ते स्वाहा। पितृणां प्राणस्ते ते प्राणन्ददतु येषां प्राणस्तेभ्यो वः स्वाहा। मरुतां प्राणास्ते ते प्राणन्ददतु येषां प्राणस्तेभ्यो वः स्वाहा। विश्वेषां देवनां प्राणास्तेते प्राणन्ददतु येषां प्राणस्तेभ्यो वः स्वाहा। प्राजापतेः प्राणः परमे-मेष्ठिनः प्राणस्तौ-ते प्राणं-दत्तां ययो-प्राणस्ताभ्यां वां स्वाहा।। यदऽसर्पस्-तत्सर्पिर्-अभवो-यत्-नवमैः तत्-नवनीतम् अभवो-मत्-अद्रि-यथा-तत्-घृतम्-अभवो। घृतृस्य धाराम्- अमृतस्य-पन्थामिन्द्रेण दत्तां प्रयन्त मरुद्भिः। तत्त्वा विष्णुरन्वपश्यत्-तत्त्वेडा-गव्यैर-अयत्। पावमानेन त्वा स्तोमेन गायत्र्या वर्तन्या पांशोवीर्येणोद्धराम्यसौ।

बृहता त्वा रथन्तरेण त्रिष्टुभा वर्तन्या शुक्रस्य वीर्येणोत्सृजाम्यसौ। अग्नेस्त्वा मात्रया जगत्या वर्तन्या देवस्त्वा सवितोन्नयतु जीवातवे जीवनस्याया असौ। देवा आयुष्मन्तस्ते-अमृतेना आयुष्मान्तस्तेषाम्-अयम्-आयुषा-आयुष्मान्-अस्त्वसौ। ब्रह्मायुष्मत्-तत्-ब्राह्मणैः- आयुष्मत्-तस्यायम्- आयुषा-आयुष्मान्-अस्त्वसौ। अग्निर्-आयुष्मान्-स वनस्पतिभिर्-आयुष्मान्-तस्यायम्-आयुषा-युष्मान्-अस्त्वसौ। यज्ञ आयुष्मान्-स-दक्षिणाभिः आयुष्मान- तस्यायम्-आयुषा-आयुषामन-अस्त्वसौ। ओषधयः आयुष्मतीः-ता-अद्भिर्-आयुष्मती-स्तासाम-अयम्-आयुषा-युष्मान्-अस्त्वसौ इमम्-अग्न-आयुषे वर्चसे कृधि तिग्ममो जो वरुण संशिशाधि। मातेवास्मा अदिते शर्मयच्छ विश्वेदेवा जरदष्टिर्यथासत्।। अश्विनो प्राणस्तौते प्राणं दत्तां तेन जीव, मित्रावरुणयोः प्राणस्तौ ते प्राणं दत्तां तेन जीव बृहस्पतेः प्राणः स ते प्राणं दत्तात् तेन जीव। अब पूजा स्थान के सभी दिशाओं को अर्घ तिल अर्पण करते हुए तथा सभी सामग्री को छींटे देते हुये पढ़ेः- ये देवाः पुरः संदोग्निनेत्रा रक्षोहणस्ते नः पान्तु ते नोऽवनतु तेभ्यः स्वाहा। ये देवा दक्षिणात् सदोयमनेत्रा रक्षोहणस्ते नः पान्तु ते नोवन्तु तेभ्यः स्वाहा। ये देवाः पश्चात् सदो मरुत् नेत्रा रक्षोहणस्ते नः पान्तु ते नो वन्तु तेभ्यः स्वाहा। ये देवा उत्तरात् सदो मित्रावरुण नेत्रा रक्षोहणस्तेनः पान्तु नोवन्तु तेभ्यः स्वाहा। अपने आप को तिलक लगाते हुये पढ़ेः-

अध्वर्योयं यज्ञो अस्तु देवा ओषधीभ्यः पशुभ्यो मे धनाय। विश्वस्मै भूताय ध्रवो अस्तु देवाः स पिन्वस्व घृतवत्-देवयज्ञ। अर्घफूल चढ़ाते हुये

पढें:- इहैवैधि मा पच्योष्ठाः पर्वता इवाविचाचलत्। इन्द्र इहेव ध्रुवः- तिष्ठेह यज्ञमुदारय। दो दर्भ के तिनके अपने आसन के रूप में डालते हुये पढें:- इमम-इन्द्रो-अदीधरत्-ध्रुवं-ध्रुवेण हविषा हविः। तस्मै सोमे अधिव्रुत्-तस्मा उ ब्रह्मणस्पतिः (कलश को आसन डालते हुये पढें:-) ध्रुवा द्यौर्ध्रुवा पृथ्वी ध्रुवासः पर्वता इमे। ध्रुवं विश्वमिदं, जगत् ध्रुवो राजा विशामसि। भूमि को तिलक फूल और अक्षत लगाते हुये पढे:- मही द्यौः पृथ्वी च न इमं यज्ञं मिमिक्षताम्। पिपृतां नो भरीमभिः, (आकश को) बडित्था पर्वतानां क्षेत्रं बिभर्षि पृथिवि प्रया भूमिं प्रवत्वति मह्ना जिनोषि महिनि - (कलश को)- निषुसीद गणपते गणेषु त्वामाहु-विर्प्रतमं कवीनाम्। न ऋते त्वत्क्रियते किंचनारे महामर्कं मधवन् चित्रमर्च। कुमारं माता सुवतिः समुब्धं गुहा बिभर्ति न ददाति पित्रे। अनीकमस्य नमिनज्जनासः पुराः पश्यन्ति निहित-मरतौ। अश्वपूर्वां रथमध्यां हस्तिनाद- प्रमोदिनीम्। श्रियं देवीमुपह्वये श्रीर्मां देवीः जुषताम्। इयं शुष्मेभि-र्बिसखा इवारुजत्-सानु-गिरीणान्त विश्वभिर-ऊर्मिभिः। पारावतघ्नीम्-अवसे सुवृक्तिभिः-सरस्वतीम् आविवासेम धीतिभिः। कांस्यस्मितां हिरण्य-प्राकाराम-आर्द्रां ज्वलन्तीं तृप्तां तर्पयन्तीम् पद्मे स्थितां पद्मवर्णां ताम्-इहोपह्वये श्रियम्। विशवकर्मा विश्वदेवो विश्व जित विश्वदर्शितः। ते त्वा घृतस्य धारया श्रैष्ठाय समसूषत। ब्रह्मा देवानां पदवीः कवीनाम्-ऋषिर्विप्राणां महिषो मृगाणाम्। श्येनो गृद्रणां स्वधितिः-वनानां सोमः पवित्रम् अत्येति रेभन्। प्रतत् वष्णुः स्तवते वीर्येण मृगो न भीमःकुचरो गिरिष्ठाः।

यस्योरुषु त्रिषु विक्रमणेष्व-धिक्षियन्ति भुवनानि विश्वा। यो रुद्रो अग्नौ, योऽप्सु य ओषधीषु यो वनस्पतिषु। योरुद्रो विश्वा भुवना विवेश तस्मै रुद्राय नमो अस्तु देवाः।। अग्निमीडे पुरोहितं यज्ञस्य देवम्-ऋत्विजम्-होतारं रत्नधातमम्।। इषे त्वोर्जे त्वा वायवः स्थो पायवः स्थ देवो वः सविता प्रार्पयत, श्रेष्ठतमाय कर्मणे।। अग्न आयाहि वीतये गृणानो हव्यदातये निहोता सत्सि बर्हिषि। शन्नो देवीर्-अभीष्टय आपो भवन्तु पीतये शंय्योरऽभि-स्रवन्तु नः। आहं पितृन् सुविदत्रां अवित्सि न पातञ्च विक्रमणंच विष्णोः बर्हिषदो ये स्वधया सतुस्य भाजन्त पित्वस्त इहागमिष्ठाः।। वषट्ते विष्णवास आकृणोमि तन्मे जुषस्व शिपिविष्ट हव्यम्। वर्धन्तु त्वा सुष्टुतयो गिरो मे यूयं पात स्वस्तिभिः सदा

नः। फाल्गुने शक्ति सहिताय चक्रिणे नः। क्रियासहिताय दामोदराय नमः। दुर्गायै नमः। त्र्यम्बकाय नमः। वरुणाय नमः। यज्ञपुरुषाय नमः। अग्निष्वान्तादिभ्यः पितृगणदेवाभ्यो नमः।। रात्रीं प्रपद्ये जननीं सर्वभूत निवेशिनीम। भद्रां भगवतीं कृष्णां विश्वस्य जगतो निशाम्। संवेशिनी संयमीं ग्रहनक्षत्रमालिनीम्। प्रापन्नोहं शिवां रात्रीं भद्रे पारमशीमहि नमः। कालरात्र्यै नमः। तालरात्र्यै नमः, राज्ञिरात्र्यै नमः, शिवरात्र्यै नमः। यो रद्रो अग्नौ य अप्सु य ओषधीषु यो वनस्पतिषु। यो रुद्रो विश्वाभुवना विवेश तस्मै रुद्राय नमो अस्तु देवाः।। क्षेत्रस्य पतिना वयं हितेनेव जायमसि गामश्वं पोषयित्वा स नो मृडातीदृशे। द्वादश्यां देवीपुत्र हेरकनाथाय, त्रयोदश्यां देवीपुत्र वटुकनाथाय, त्रिपुरान्तकाय, भुतबलेभ्यः,

वेतालराजाय अग्निवेताल राजाय, अग्निजिह्वाय, बहुखातकेश्वराय, करालाय स्थान क्षेत्रपालाय कामाख्याय मंगलराजाय एकपादाय योगिनीबलेभ्यो, भीमरूपिणो विश्वक्सेनाय, तारकाख्याय, जयक्-सेनाय हाटकेश्वराय, तेजाय, राजराजेश्वराय चण्डाय समस्तशिवरात्रीयागदेवताभ्यः विष्णु पञ्चायतन-देवताभ्यः अभयंकारीदेव्यै क्षेमंकरीभवान्यै सर्वशत्रुघातिन्यै इहराष्ट्राधिपतये आनन्देश्वर भैरवाय तिलतण्डुलमात्रं दधिमधुमिश्रं ॐ नमो नैवेद्यं निवेदयामि नमः।

(कलश पर फल अर्घ चढ़ाते हुये पढें):- (1) हिरण्यगर्भः समवर्तताग्ने भूतस्य जातः पतिर-एक आसीत् स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम (2) यः प्राणतो निमिषतश्च राजा पतिर्विश्वस्य जगतो बभूव। ईशेयो अस्य द्विपदश्च-तुष्पदः कस्मै देवाय हविषा विधेम। (3) य ओजदा बलदा यस्य विश्व उपासते प्रशिषं यस्य देवाः। यस्य छायामृतं यस्य मृत्युः कस्मै देवाय हविषा विधेम। (4) येन द्यौर्-उग्रा पृथिवी दृढा येन सुस्तम्मितं येन नाकम्। यो-अन्तरिक्षं विममेवरीयः कस्मै देवाय हविषा विधेम। (5) य इमे द्यावा पृथिवी तस्तभाने आधारय द्रोधसी रेजमाने। यस्मिन् नधि वितताः सूर एति कस्मै देवाय हविषा विधेम। (6) यस्येमे विश्वे गिरयो महित्वा समुद्रं रसया सहाहुः। दिशो यस्य प्रदिशः पञ्चदेवी कस्मै देवाय-हविषा विधेम। (7) आपो ह-यन्महती विश्वम्-आयुः-गर्भं दधाना जनयन्तीर्-अग्निम्।। ततो देवानां निरवर्त-तासुर्-एकः कस्मै देवाय हविषा विधेम। (8) आ नः प्रजां जनयतु

प्रजापति-धार्ता दधातु सुमनस्यमानः। संवत्सर ऋतुभिश्चाक्लृपानो मयि पुष्टिं पुष्टिपतिर्दधातु।
(9) अर्चन्तस्वा हवामहे अर्चन्तः समिधीमहि। अग्नेर-अर्चतः ऊतये अर्चत प्रार्चत प्रियमेधसो अर्चत। अर्चन्तु पुत्रका उत पुरं न धृष्णाम्-अर्चत-अर्चत।

।।इति कलश पूजा।।

शिव पूजा

भद्रपीठ या थाली में "सुञपुतलू" अथवा "पार्थिवेश्वर" रखकर नारी कचलू अथवा "खोसू" से पात्र में जलधारा डालते हुये पढ़ें:

ॐ अस्य श्री आसन-शोधन-मन्त्रस्य मेरुपृष्ठ-ऋषिः सुतलं छन्दछः कूर्मो देवता आसन-शोधने विनियोगः।

पृथ्वि माता को तिलक, फूल, चावल चढ़ाते हुये पढ़ें:-

प्रींपृथिव्यै आधार-शक्त्यै समालभनं गन्धोनमः, अर्घोनमः, पुष्पं नमः।

हाथ जोड़कर पढ़ें:- पृथ्वि त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता, त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरु चासनम्।

दर्भ के दो तिनके अनामिका अंगुलियों में रख कर गणेश जी का ध्यान रखते हुये पढ़ें:-

(1) शुक्लाम्बर-धरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भु-जम्, प्रसन्न-वदनं ध्याये सर्व विघ्नोप-शान्ये। अभि-प्रीतार्थ-सिद्ध्यर्थं पूजितो यः सुरैर्-अपि, सर्व-विघ्न छिदे तस्मै गणाधि-पतये नमः।

(2) कर्पूर-गौरं करुणाव-तारं संसार-सारं भुजगेन्द्र-हारम्, सदा रमन्तं हृदयार-बिन्दे भवं भवनी-सहितं नमामि।

(3) गुरु-र्ब्रह्मा गुरु-र्विष्णु, गुरुः साक्षत्-महेश्वरः,

गुरुर्-एव, जगत्-सर्वं तस्मै श्री गुर-वे नमः, गुर-वे नमः, परम-गुर-वे नमः, परमेष्ठ-गुर-वे नमः, परमाचाया नमः, आदि-सिद्धिभ्यो नमः। दर्भ के दो तिनके पकड़कर अंगन्यास कीजियेः- हृदय को दोनों हाथों से छूते हुये पढें:- ॐ यो रुद्रो अग्नौ हृदयाय नमः, सिर को स्पर्शः- यो अप्सु य औषधीषु शिरसे स्वाहा, चोटी कोः- यो वनस्पतिषु शिखाये वष्ट् वस्त्रों को स्पर्श करते हुये पढ़ें:- यो रुद्रो विश्वाभुवना विवेश-कवचाय हुम्। नेत्रों को स्पर्श करते हुयेः- तस्मै रुद्राय नेत्राभ्यां वौषट्, चुटकी मारते हुये पढें:- नमोअस्तु देवा अस्त्राय फट्। चारों और तिल फेंकते हुये पढें:- अपसर्पन्तु ते भूतो ये भूता भुवि संस्थिताः, ये भूता विघ्नकर्त्तार-स्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया। प्रणायाम करके हृदय और मुख को जल की छींटे देतें हुये पढें:- तीर्थे-स्नेयं तीर्थम्-एव समानानां, भवति मानः, शंस्योर्-अरुरुषो धूर्तिःप्राणङ् मर्त्यस्य रक्षाणो ब्रह्मणस्पते।

अनामिका अंगुली पर पवित्र ऊपर की ग्रन्थि (पर्व) पर धारण करते हुये पढ़ें:-

वसोः पवित्रम्-असि श्यातधारं वसूनां पवित्रम्-असि सहस्रधारम, अयक्ष्मा वः प्रजया संसृजामि रायस्पोषेण बहुला भवन्ति।

यजमान को तिलक लगाते हुये पढ़ें:-

मन्त्रार्थाः सफलाः सन्तु पूर्णाः सन्तु मनोरथाः शत्रूणां बुद्धि-नाशोस्तु मित्राणाम्-उदयस्तव आयुर्-आरोग्यम्-ऐश्वर्यम्- एतत्-त्रितयम्- अस्तु ते जीव-त्वं शरदः शतम्। अपनी मध्यमा अंगुली से अपने आपको तिलक लगाते हुये पढ़े:-

परमात्मने पुरुषोत्तमाय पंच-भूतात्मकाय विश्वात्मने

मन्त्र-नाथाय आत्मने नारायणाय-आधार-शक्त्यै समालभनं गन्धोनमः अर्घोनमः पुष्पंनमः।

चोंग (दीप) को तिलक अक्षत और पुष्प चढ़ाते हुये पढ़ें:-

स्वप्रकाशो महादीपः सर्वतस्तिमरा-पहः, प्रसीद मम गोविन्द दीपोयं परिकल्पितः।

धूप को तिलक अर्घ पुष्प चढ़ाते हुये पढ़ें:-

वनस्पति-रसो दिव्यो गन्धाढ्यो गन्ध वत्तमः आधारः सर्वदेवानां धूपोयं प्रति-गुह्यताम्।

सूर्य देवता को निर्माल्य के थाल में अर्घ, चावल, फूल चढ़ाते हुये पढें:- **नमो धर्म निधानाय नमः स्वकृत-साक्षिणे, नमः प्रत्यक्ष देवाय भास्कराय नमोनमः।**

दर्भ सहित कटौरी से शिवलिंग अथवा सुज़्पुतलू पर जलधारा डालते हुये पढ़ें:-

यत्रास्ति-माता, न पिता न बन्धुर्-भ्रातापि नो यत्र सुहृत्-जनश्च, न ज्ञायते, यत्र दिनं न रात्रि-स्तत्रात्मदीपं शरण प्रपद्ये। आत्मने नारायणाय-आधार-शक्तये धूप-दीप संकल्पात्-सिद्धिर्-अस्त् धूपो, नः दीपो नमः। ॐ तत्-सत्-ब्रह्म-अद्य तावत् तिथौ-अद्य, फाल्गुनमासस्य कृष्णपक्षस्य तिथौ-द्वादश्यां वासरा-नित्वायां महागणपतये कुमाराय श्रियै सरस्वत्यै लक्ष्म्यै विश्वकर्मणे द्वारदेवताभ्यः प्रजापतये ब्रह्मणे कलश-देवताभ्यः ब्रह्म, विष्णु-महेश्वर- देवताभ्यः चतुर्वेदेश्वराय सानुचराय मासपतये नारायणाय फाल्गुने शक्ति-सहिताय चक्रिणे क्रिया-सहिताय गोविन्दाय दुर्गायै त्र्यम्बकाय वरुणाय यज्ञ पुरुषाय अग्नि-ष्वातादिभ्यः पितृगण-देवताभ्यः भगवते भवाय देवाय, उग्राय देवाय, भीमाय देवाय,

ईशानाय देवाय, ईश्वराय देवाय-महादेवाय, पार्वती सहिताय, परमेश्वराय, देवीपुत्राय-वटुकनाथाय कालरात्र्यै तालरात्र्यै राज्ञरात्र्यै शिवरात्र्यै समस्त-शिवरात्रि-देवताभ्यः धूपदीप संकल्पात्-सिद्धिर्-अस्तु धूपो नमः दीपो नमः।

बायां यज्ञोपवीत रखकर तिल सहित पानी से पितरों को जल देते हुये सञपुतलू पर जलधारा डालते हुये पढ़ें:-

समस्तमातापितृभ्यो द्वादश-दैवतेभ्यः पितृभ्यो धूपः स्वधा दीपः स्वधा, दायें भुजा में यज्ञोपवीत धारण करके विष्टर अथवा दर्भ के जल से पूर्ण खोसू या नारी कचलू में तिलक और पुष्प डालते हुये पढ़ें:-

सं वः सृजामि हृदयंसंसृष्टं मनो अस्तु-वः। संसृष्टः-तन्वः सन्तु वः। संसृष्टः प्रणोऽस्तु वः। सं या वः प्रिया-स्तन्वः सं प्रिया हृदयानि वः, आत्मा वो-अस्तु सं प्रियः संप्रिया तन्वोमम।

इसी खोसू के जल से सञ्पुलू अथवा शिवलिंग या पार्थिवेश्वर और सारे वटुक नाथ को जल की छींटे दर्भ के तिनकों अथवा विष्टर से देते हुये पढ़ें:-

अश्विनोः प्राणः तौ ते प्राणं दत्तां तेन जीव, मित्रा-वरुणयोः प्राणः-तौ ते प्राणं दत्तां तेन जीव बृहस्पतेः प्राणः स ते प्राणं ददातु तेन जीव, समस्त-शिवरात्रि-देवताभ्यः जीवादानं परिकल्पयामि नमः।

अक्षत (चावल) सहित दर्भ के दो तिनके सीधे पकड़कर यह मन्त्र तीन बार पढ़ें:-

ॐ भूः पुरुषम्-आवाहयामि नमः। ॐ भुवः पुरुषम्-आवाहयामि नमः। ॐ स्वः पुरुषम्-आवाहयामि नमः। (3)

गायत्री मन्त्र तीन बार पढ़ें:- "ॐ भू र्भुवः स्वः तत्-सवितुर्-वरेण्यं, भर्गो देवस्य धीमहि, धियो

यो नः प्रयोदयात्"।(3)

यह मन्त्र भी तीन बार पढ़ें:-

"ॐ तत्-पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि तन्नो रुद्रः प्रचोदायत्। (3)

यह मन्त्र पढ़कर फिर से पढ़ें:-

ॐ तत्-सत्-ब्रह्म अद्य तावत् तिथौ अद्य फाल्गुन मासस्य कृष्ण पक्षस्य तिथौ महापर्वणि द्वादश्यां परतः त्रयोदश्यां वारान्वितायां, भगवतः भवस्य देवस्य, शर्वस्य देवस्य, पशुपतेः देवस्य, उग्रस्य देवस्य, भीमस्य देवस्य, ईशानस्य देवस्य, महादेवस्य पार्वती सहितस्य, परमेश्वरस्य देवीपुत्र वटुक-नाथस्य, कालरात्र्याः तालरात्र्याः शिवरात्र्याः समस्त-शिवरात्रि-देवतानां अर्चाम् अहं-कारिष्ये, ॐ कुरुष्व।

हाथ में पहले से पकड़े हुये दर्भ के दो तिनके निर्माल्य में छोड़कर, तिल सर्षप और जव को भी कन्धों पर से फेंके, अब शंकर की मूर्ति के सामने दर्भ के दो-दो तिनके (दर्भ के अभाव में दो-दो फूल) आसन के रूप में डालते हुये पढ़ें:-

ॐ विश्वेश्वर महादेव राजराजेश्वरे-श्वर आसनं दिव्यम्-ईशान दास्येहं परमेश्वर, भगवत् भवस्य दवेस्य, ईशानस्य देवस्य महादेवस्य पार्वती सहितस्य परमेश्वरस्य इदम्-आसनं नमः।

चावल सहित दर्भ के दो तिनके अनामिका और मध्यमा अंगुली पर अंगूठे से दबा कर यदि घंटी आपके पास हो बायें हाथ से बजाते हुये पढ़ें:-

भगवते भवाय देवाय, शर्वाय देवाय, पशुपतये देवाय-रुद्राय देवाय, भीमाय देवाय, ईशानाय देवाय, ईश्वराय देवाय, महादेवाय पार्वती-सहिताय, परमेश्वराय देवीपुत्र-वटुक-नाथाय, कालरात्र्यै

समस्त-शिवरात्रि-देवताभ्याः युष्मान्-पूजयामि ॐ पूजय।

चावलों को कंधों पर से फेंक कर दर्भ के पहले से रखे हुये दो तिनको को हाथ में ही रख कर नये चावल के दानों के सहित पकड़ कर पढ़ें:-

भगवन्तं भवं देवं, शर्वं देवं, रुद्रं देवं, पशुपतिंदेवं, उग्रंदेवं, भीमं देवं, ईशानं देवं ईश्वरं देवं, महादेव पार्वतीसहित परमेश्वर देवीपुत्र-वटुक-नाथं कालरात्रि तालरात्रि शिवरात्रि समस्त शिवरात्रि-देवता आवाहयिष्यामि, ॐ आवाहय।।

भगवान् शंकर की मूर्ति पर फूल चढ़ाते हुय पढ़ें:-

लिंगेऽद्य भक्त-दयया क्षणमात्रम्-एकं स्थानं निधाय भव-मत्- विहितांपुरारे। सर्वेश विश्वमय! हृत्कमलादि-रूढ पूजा गृहाण भगवन् भव मेद्य तुष्टः! भूमेर-जलात्-च, पवनात्-अनलात्-हिमांशोर्-उष्णार्चिषो हृदयतो गगनात-समेत्य, लिंगद्य सन्मणिमये मत्-अनुग्रहार्थ भक्त्यैक-लभ्य! भगवन् कुरु सन्निधानम् भगवन् पार्वतीनाथ भक्तानुग्रह-कारक अस्मत्-दयानुरोधेन सन्निधानं कुरु प्रभो।।

दोनों हाथों में मुट्ठीभर फूल उठाकर तीन बार गायत्री मन्त्र पढ़कर भगवान् शंकर पर फूल चढ़ाते हुये पढ़ें:-

इत्या-हूय तु गायत्रीं त्रिसम्-उच्चार्य तत्त्व-वित्, मनसा चिन्तितैर्-द्रव्यै-र्देवम्-आत्मनि पूजयेत्, तेजोरूपं ततः क्षिप्त्वा प्रतिमायां पुनर्यजेत्।

दोनों कन्धों से जव फेंक कर प्राणयाम करें और खोसू में जल डालते हुये पढ़ें:-

पाद्यार्थम्-उदकं नमः, शन्नो देवीर्-अभिष्टये आपो भवन्तु पीतये, शंयोर-अभि-स्रवन्तु नः।

अब यही खोसू हाथ में लेकर पढ़ें:- भगवन्तः पाद्यं

पाद्यम्।
खोसू का जल भगवान् शंकर पर डालते हुये पढ़ें:-
महादेव महेशान महानन्द परात्-पर, गृहाण पाद्यं मत्-दत्तं पार्वती परमेश्वर।। भगवते भवाय देवाय पार्वती-सहिताय परमेश्वराय देवीपुत्र-बटुक-नाथाय, कालरात्र्यै शिवरात्र्यै समस्त-शिवरात्रि-देवताभ्यः पाद्यं नमः।
इस पाद्य से बचा हुआ जल निर्माल्य पात्र में डालकर खोसू में जल डालते हुये पढ़ें:-
शन्नो देवीर्-अभीष्टय आपो भवन्तु पीतये शंयोर्-अभि-स्रवन्तुनः। दर्भ, दूध, घी, दही, चावल, पानी, केसर, शहद यह आठ वस्तु इकट्ठे अर्घ्य कहलाते हैं- यही जल की धारा शंकर भगवान् अथवा सञ्पुलू पर डालते हुये पढ़ें:-
भगवन्तो-अर्घ्यम् अर्घ्यम्। त्र्यम्बकेश सदाचार विपदां प्रतिघातक अर्घ्यं गृहण देवेश सम्पत्-सर्वार्थ-साधक। भगवन् भवदेव पार्वती-सहित-परेमेश्वर देवीपुत्र-वटुकनाथ, कालरात्रि तालरात्रि राज्ञरात्रि शिवरात्रि समस्त-शिवरात्रि-देवताः इदं वो-ऽर्घ्यं नमः। अब भगवान् शंकर को पञ्चदश स्नान कीजियेः- जल, दूध, दही, शहद, घी, गन्ना, सर्वोषधि, धान्य की फुल्लियाँ, फूल, फल, सोना, रत्न, सर्षप, इत्र इन सबको मिलाकर शिवलिंग पर जल की धारा डालते हुये पढ़ें:-
(1) असंख्याता सहस्राणि ये रुद्रा अधिभूम्यां, तेषां सहस्र-योजनेव धन्वानि तन्मसि, (2) योस्मिन्-मह-त्यर्णवे- अन्तरिक्षे भवा-अधि। तेषां सहस्र योजनेव धन्वानि तन्मसि, (3) ये नीलग्रीवाः शितिकण्ठा दिवं रुद्रा उपाश्रिताः, तेषां० (4) ये नीलग्रीवा शिति-कण्ठाः शर्वा-अधः क्षमा-चराः

तेषां० (5) ये वनेषु शिषिपिंजरा नीलग्रीवा विलोहिता: तेषां० (6) येऽत्रेषु विविर्धन्त पात्रेषु पिबतो जनान्। तेषां० (7) ये भूतानाम् अधिपतयो विशिखासः कपर्दिनः। तेषां० (8) ये पथीनां पथि रक्षय ऐड मृदाय व्युधः। तेषां० (9) ये तीर्थानि प्रचरन्ति सृकावन्तो निषणिः। तेषां० (10) ये एतावन्तो वा-भूयांसो वा दिशो रुद्रा वितिष्ठिरे तेषां सहस्त्र योजनेव धन्वानि तन्मसि। ॐ यो रुद्रो-अग्नौ यो-अप्सु य-औषधीषु यो वनस्पतिशु यो रुद्रो विश्वा भुवना विवेश तस्मै रुद्राय नमो-अस्तु-देवाः। भगवते भवाय देवाय उमा-सहिताय शिवाय पार्वती-सहिताय-पर-मेश्वराय पंचदश-स्नानं परिकल्पयामि नमः।

देवता तथा पितरों के लिये चावल, दही, तिल, शहद और घी सहित जलसे तर्पण करते हुये पढ़ें:-

ब्रह्मादयः-देवाः तृप्यन्ताम् (गले में यज्ञोपवीत रखकर पढ़े:- सनकादयः ऋषयः तृप्यन्ताम्।

यज्ञोपवीत दायाँ रख कर पढ़ें:-

स्वाहा ऋषिभ्यः-

बायाँ यज्ञोपवीत रख कर पढें:

स्वधापितृम्यः, दायाँ यज्ञोपवीत रख कर पढ़ें:-

आब्रह्मस्-तम्ब-पर्यन्तं ब्रह्माण्डं सचराचरं जगत्-तृप्यतु तृप्तयु तृप्यतु।

शंकर भगवान् अथवा सुजपुतलू पर फिर से स्नान के निमित जल धारा डालते हुये पढ़ें:-

त्र्यम्बंकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्। उर्वारुकम्-इव बन्धनात- मृत्योर-मुखीय मामृतात्। शिवरात्रि-देवताभ्यः मन्त्रगुडकं नमः।।

बायें हथेली के मध्य में थोड़ा सा चावलों सहित जल लेकर और उसी हाथ की तर्जनी और अंगूठे में थोड़ा

सा चावलों सहित जल लेकर उसी हाथ को देवताओं यानि बटुकराज के चारों और घुमाकर उस जल और चावलों को अपने बायें कन्धे पर से फेंकते हुये पढ़ें:-

रक्षोहणं वाजिनम्-आजिधर्मि मित्रं पृथिष्टम्-उपयामि शर्म। शिशनो अग्निः कृतुभिः समिद्धः सनो देवः सरिषः पातु नक्तम्। शिवरात्रि देवताभ्यः आरात्रिकां परिकल्पयामि नमः।

दायें अंगूठे तथा तर्जनी यानी अंगूठे की साथ वाली अंगुली से शिवमूर्ति का स्पर्श करके अपने नेत्रों से लगाते हुये पढ़ें:-

भवाय देवाय उमासहिताय शिवाय पार्वती सहिताय परमेश्वराय नेत्र स्पर्शनं नमः।

अब जहां शंकर की मूर्ति को बिठना हो वहां फूलों से आसन सजाते हुये पढ़ें:-

आसनाय नमः वृषभासनाय नमः शतदल-पद्मासनाय नमः सहस्रदल पद्मासनाय नमः।

अब सोने के वर्कों और फूलों की मालाओं से शंकर भगवान् तथा वटुकनाथ को सजाकर महिम्नापार तथा देवी के पंचस्तवी आदि के श्लोक पढ़ते हुये फूल चढ़ाते जायें।

भगवान् शंकर पर वस्त्र के रूप में फूल चढ़ाते हुये यह श्लोक पढ़ें:-

कालाग्निरुद्र सर्वज्ञ वरदा-ऽभयदायक वस्त्रं गृहाण देवेश दिव्य-वस्त्रोप-शोभितम्। समस्त शिवरात्रि-देवताभ्यः वस्त्रं परिकल्पयामि नमः।

यज्ञोपवीत के रूप में पुष्प चढ़ाते हुये पढ़ें:-

यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतरे-यत् सहजं पुरस्तात्, आयुष्यम्-अग्रयं प्रतिमुञ्च शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलम्-अस्तु तेजः। समस्त शिवरात्रि-देवताभ्यः यज्ञोपवीतं परिकल्पयामि नमः।।

शंकर की मूर्ति वटुकनाथ और बाकी पात्रों को सिंदूर का तिलक तथा शंकर को चन्दन लगाते हुये पढ़ें:

त्रिपुरान्तक देवेश पार्वती-प्राण-वल्लभ! गृहाण गन्धं काश्मीर-चन्द्रचन्दन कल्पितम्। भगवते भवाय देवाय, महादेवाय, ईशानाय देवाय, उमासहिताय शिवाय, पार्वती सहिताय परमेश्वराय देवीपुत्र-वटुकनाथाय कालारात्र्यै तालरात्र्यै शिवरात्र्यै समस्त- शिवरात्रि देवताभ्यः अर्घोनमः पुष्पं नमः। महादेव-मृढानीश जग्त-ईश निरंजन धूपं गृहाण देवेश साज्यं गुग्गुल-कल्पितम्। ॐ तत्-सत्-ब्रह्म-अद्यतावत्-तिथौ अद्य फाल्गुनमासस्य कृष्णपक्षस्य तिथौ .... समस्त शिवरात्रि-देवताभ्यः रत्नदीपं कर्पूरं परिकल्पयामि नमः। चामरम्-रजनीनाथ मरीचिप्रभम्-उत्तम्। हेमदण्डयुतं देव गृहाण गिरिजापते, ॐ तत्-सत्-ब्रह्म अद्य-तावत् तिथौ अद्य-कृष्णपक्षस्य तिथौ ... . समस्तशिवरात्रि देवताभ्यः चामरं परिकल्पयामि नमः। फूलों का छत्र चढ़ाते हुये पढें:-

नवरत्नमयं दिव्यं मुक्ता-जाल-विभूषितम् गृहाण छत्रं भगवान्-शिव-भद्रासन-प्रद। समस्त शिवरात्रिदेवताभ्यः छत्रं परिकल्पयामि नमः।

आईना दिखाते हुये पढ़ें:-

एताभ्यः समस्त शिवरात्रि देवताभ्यः आदर्शं परिकल्पयामि नमः।

फिर से सभी वटुकनाथादि को फूल चढ़ाते हुये पढ़ें:-

एताह्मं देवतानां-अर्ध्यदानादि-अर्चन-विधिः सर्वः परि पूर्णः अस्तु।

दूध, कन्द या नाभद वटुक में डालते हुये पढ़ें:-

क्षीराज्य-मधुसंमिश्रं शुभ्र दध्ना समन्वितम्।

षड्-रसैश्च समायुक्तं गृहाण-अन्नं निवेदये।
समस्तशिवरात्रि-देवताभ्यः मात्रा-मधुपर्कं चरुं नमो नैवेद्यं निवेदयामि नमः।

फूलों की अंजलि चढ़ाते हुये पढ़ेंः-

हर विश्वा-खिलाधार निराधार निराश्रय पुष्पाँजलिम्-इमं शम्भो गृहाण वरदो भव।
समस्त शिवरात्रि-देवताभ्यः पुष्पाँजलिम् समर्पयामि नमः।

मन से अर्ध परिक्रमा करते हुये पढ़ेंः-

यानि कानि च पापानि ब्रह्म-हत्यादिकानि च।
तानि सूर्वानि प्रणश्यन्ति शिवस्यार्ध-प्रदक्षिणात्।

भगवान् शंकर पर फूल चढ़ाते हुये पढ़ेंः-

नाग्रेन्द्र-हाराय त्रिलोचनाय भस्माङ्ग-रागाय महेश्वराय, देवाधिदेवाय दिगम्बराय तस्मै नकारा नमः शिवाय। मातंग-चरमा-म्बर-भूषणाय समस्त-गीर्वाण गणार्चिताय त्रैलोक्यनाथाय पुरान्तकाय तस्मै मकाराय नमः शिवाय। वशिष्ठ-कुम्भोत्-भव-गौतमादि-मुनीद-वंद्याय गिरीश्वराय, श्री नीलकण्ठाय वृष-ध्वजाय तस्मै वकारायनमः शिवाय। यज्ञ-स्वरूपाय जटाधराय पिनाक-हस्ताय सनातनाय। नित्याय शुद्धाय निरंजनाय तस्मै यकाराय नमः शिवाय। आत्मा त्वं गिरिजा मतिः सहचराः प्राणाः शरीरं गृहं, पूजा-ते विषयोप-भोग रचना, निद्रा समाधिस्थितिः। संचारः पदयोः प्रदक्षिण विधिः स्त्रोत्राणि सर्वा गिरः। यत्यत् कर्म करोमि तत् तत्-अखिलं शम्भो-स्तवाराधनम्।।

उभाभ्यां जानुभ्यां शिरसा-उरसा वचसा नमस्कारं करोमि नमः।

चावल आदि को संकल्प करते हुये पढ़ेंः-

अन्नं नमः अन्नं नमः आज्यं अद्य दिने-अद्य यथा संकल्पात्-सिद्धिर्-अस्तु। अन्न-हीनं विधि-हीनं द्रव्य-हीनं मन्त्र हीनं यत्-गतं तत्सर्वम्-अछिद्रं सम्पूर्णम्-अस्तु, एवम्-अस्तु खोसू में दायें हाथ की अंगुलियों के ऊपर से जल डाल कर उसी जल से शंकर भगवान् तथा वटुकनाथ आदि को वही जल आचमन के रूप में देते हुये पढ़ें:-

शं नो देवीर्-अभीष्टये आपो भवन्तु पीतये शंयोर-अभिस्रवन्तु नः समस्त-शिवरात्रि-देवताभ्यः दक्षिणायै तिल हिरण्य-रजत निष्कर्णं ददानि।

फिर से कुछ सिक्के आदि अर्पण करते हुये पढ़ें:-

ऐता देवताः सदक्षिणा-न्नेन प्रीयन्तां प्रीताः सन्तु।

वटुकनाथ को फूल चढ़ाते हुये पढ़ें:-

नाथं नाथं त्रिभुवन-नाथं भूति-सितं त्रिशूल-धरं। उपवीती-कृतं भोगिनम्-इन्दु-कलाशेखरं वन्दे।

सभी घर के सदस्य एकत्रित होकर सामूहिक रूप में 108 बार यह मन्त्र पढ़ें, आप को इस मन्त्र के उच्चारण करने से अवश्य शान्ति मिलेगी और आप की मनोकामना पूर्ण होगी। (मन्त्र)

ॐ नमः शम्भवाय च, मयोभवाय च, नमः शंकराय च, मयस्कारय च, नमः शिवाय च शिवतराय च।।

विश्वदेव विधिः

वटुकनाथ के सामने ही अग्नि जलाकर, उस अग्नि के दक्षिण पश्चिम-कोण पर विष्टर (दर्भ), तिल और चावल पानी सहित एक कटौरी रखें इस पात्र को प्रणीतपात्र कहते है, उस प्रणीत पात्र में तीन बार फूल डालते हुये पढ़ें:-

संवः सृजामि हृदयं संसृष्टं मनो अस्तु वः (1) संसृष्टाः तन्वः सन्तु वः संसृष्टः प्राणो-अस्तु वः (2) संय्यावः प्रिया-स्तन्वः संप्रिया हृदयानि वः, आत्मा वो-अस्तु संप्रियः संप्रिया-स्तन्वोमम (3)।

दर्भ के दो तिनके अग्नि में जलाकर दायें और फेंकते हुये पढ़ें:-

निर्दग्धं रक्षो निर्दग्धा-रातिर्-अपाग्ने, अग्नि-मामादं जहि निष्क्रव्या-दं सीधा देवयजनं वह।

प्रणायाम करके अग्नि के दायें और रखते हुये प्रणीतपात्र में से नौ बार छिड़कते हुये पढ़ें:-

ऋतंत्वा सत्येन परिसमू-ह्यामि (1) सत्यं त्वर्तेन परिसमूह्यामि (2) ऋत्त-सत्याभ्यां-त्वां परिसमूह्यामि (3) ऋतं त्वा सत्येन पर्युक्षामि (4) सत्यंत्वर्तेन पर्युक्षामि (5) ऋत-सत्याभ्यां त्वां पर्युक्षामि (6) ऋतं त्वा सत्येन परि-षिंचामि (7) सत्यं त्वेंन परिषिञ्चामि (8) ऋतसत्याभ्यांत्वा पर्युक्षामि (9) अग्नि के चारों और दर्भ के चार काण्ड पूर्व दक्षिण उत्तर पश्चिम से छोड़ते हुये पढ़ें:-

अग्नये शुकारूढाय स्वाहासहिताय पावकाय त्रिनेत्राय तेजोरूपाय शक्ति-सहिताय समालभनं गन्धो नमः अर्घो नमः पुष्पं नमः।

घी सहित पकाये हुये अन्न या रोटी पर दर्भ के दो तिनके लगाते हुये पढ़ें:-

वैश्वदेवस्य सिद्धस्य सर्वतोग्र्यस्य अन्नस्य जुहोति-पाकस्य घृतेन संलिप्य स्वस्ति-अस्तु घृतम्-अभिधार्य।

इसी अन्न रोटी चुचवुर से अग्नि में आहुतियाँ डालते हुये पढ़ें:-

मित्राय स्वाहा, वरुणाय स्वाहा, इन्द्राय स्वाहा,

इन्द्राग्निभ्यां स्वाहा, विश्वेभ्यो-देवेभ्यः स्वाहा, प्राजपतये स्वाहा, अनुमत्यै स्वाहा, ध्वान्वन्तरये स्वाहा, वास्तोष्पतये स्वाहा, वासुदेवाय स्वाहा, लक्ष्मी सहिताय नारायणाय स्वाहा।

किसी थाली आदि में सिलोना सहित चावल आदि रख कर सभी परिवार वाले उस थाली को हाथों से स्पर्श करते हुये इसी पंचांग के पृष्ट नं. 152 से निवेदयामि नमः तक प्रेप्युन पढ़ें:-

प्रेप्युन करके अग्नि के दायें और पूर्व की ओर सिरे वाले दर्भ बिछाये उसी बिछाई हुई दर्भ पर दक्षिण पश्चिम कोण से पक्ति में (लाईन) साँप आकार में रोटी के तीन-तीन टुकड़े देवताओं को बलि देवें आगे लिखे छतीस नामों से रोटी के टुकड़े या अन्न डालते हुये पढ़ें:-

तक्षाय नमः, उपतक्षाय नमः, अम्बा-नामासि-नमस्ते, दुला-नामासि नमस्ते, नितंत्री-नामासि नमस्ते, चुपनीका-नामासि नमस्ते, अभ्रयन्ती-नामासि नमस्ते, मेघयन्ती नामासि नमस्ते, वर्षयन्ती-नामासि-नमस्ते, नन्दिन्यै नमस्ते, सुभगे नमस्ते, सुमङ्लि-नमस्ते, भद्रं-करि नमस्ते, श्रियै हिरण्य-केश्यै नमः, वनस्पतिभ्यो नमः, धर्माय नमः, अधर्माय नमः वैश्रवणाय-राज्ञे नमः, भूतोभ्यो-नमः इन्द्राय नमः, इन्द्र-पुरुषेभ्यो नमः, ब्रह्मणे नमः, ब्रह्म-पुरुषेभ्यो नमः ऊर्ध्वं आकाशाय नमः, स्थण्डिले दिंवचरेभ्या-भूतेभ्यो नमः, नक्तं चरेभ्यो नमः (36) षट् त्रिंशत् तक्षादिभ्यो-अन्नं नमः, आचमनीयं नमः। बायाँ यज्ञोपवीत रखकर दर्भ बिछाते उस दर्भ पर तिल और जल से छींटे देते हुये पढ़ें:-

समस्त-माता-पितृभये-द्वादश-दैतेभ्यः पितृभ्यो भूपृष्ठे दर्भास्तरणे तिलोदकेन अवने-जनं स्वधा।

इसी बिछाई हुई दर्भ को अंगूठे से स्पर्श करते हुये पढ़ें:-

उशन्तस्तवा-हवामह उशन्तः समिधीमहि, उशन् आवह पितृन्- हविषे अत्तवे।

तिल, पानी, दूध, दीप, धूप, अन्न, घी और शहद यह आठ द्रव्य पितरों का अन्न होता है यह एक पात्र में रखें और पढ़ें:-

तिलास्तोयं तथा क्षीरं दीपधूपौ बलिस्तथा, मधु-सर्पिः समायुक्म्- अष्टांगम्-अन्न-सम्भवम्।

बायाँ घुटना पृथिवी पर रखकर पितरों का नाम उच्चारण करते हुये पात्र में रखा हुआ यह अन्न दर्भ पर रखते हुये यह मंत्र पढ़ें:-

देवताभ्यः पितृभ्यश्च महा-योगिभ्य एवच। नमः स्वधाच स्वाहाच नित्यम्-एव-भवतु-इह।

ॐ तत्-सत्-ब्रह्म-अद्य तावत्-तिथौ अद्य फाल्गुनमासय कृष्णपक्षस्य तिथौ द्वादश्यां .... वारान्वितायां।

पितरों का नाम लेते हुये अन्न दर्भ पर डालते जाये,

पितामह-एतत्-ते अन्नं ये च त्वानु, प्रपितामह एतत्-ते अन्नं ये च त्वानु, मात एतत-ते अन्नं याश्च-त्वानु।

इसी भाँति मृत स्त्रियों के नामलेते हुये अन्न रखते जायें और सभी मृत-पितरों को अन्न डालकर जिन के नाम याद न हों रोटी के टुकड़े अन्नादि हाथ में लेकर यह मन्त्र पढ़ें:-

मातृपक्ष्यास्तु ये के चित्-ये चान्ये पितृपक्षजाः गुरु-श्वशुर-बन्धूनां ये कुलेषु समुद्भवाः, ये प्रेतभावम्-आपन्ना ये चान्ये श्राद्ध-वर्जिता-अन्न-दानेन ते सर्वे लभन्ताम् तृप्तिम्-उत्तमाम्। समस्त-मातापितृभ्यो द्वादश-दैवतेभ्य पितृभ्योऽनं स्वधा।

अन्न का लेप साफ करें और तिलक फूल चढ़ाते हुये पढ़ें:-

समस्त-माता-पितृभ्यः समालभनं गन्धः स्वधा, समस्तमातापितृभ्यः अर्घ्यः स्वधा, धूपः स्वधा।

तर्पण करते हुये पढ़ें:-

समस्तमाता-पितृभ्यः तिल-मधु-मिश्रमुदक-पात्रम्-आचमनीयं जलं स्वधा।

तर्पण करते हुये पढ़ें:-

समस्तमाता-पितृभ्यः हिमपानं स्वधा क्षीरपानं स्वधा मधुपानं स्वधा तिलोदकं स्वधा उदक-तर्पणं हिमं हिमं रजतं रजतम्।।

दायाँ यज्ञोपवीत रखते हुये पढ़ें:-

वसन्ताय नमः, ग्रीष्माय नमः, वर्षाभ्यो नमः, शरदेनमः हेमन्ताय नमः शिशराय नमः, षड्-ऋतुभ्यो नमः।

अग्नि में अन्न की आहुति डालते हुये पढ़ें:-

अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा।

हाथ धोकर प्राणायाम करके अग्नि को तीन बार छिड़कते हुये पढ़ें:-

ऋतुंत्वा सत्येन विमुंचामि (1) सत्यं त्वर्तेन विमुंचामि (2) ऋत सत्याभ्यां त्वा विमुंचामि (3)

अग्नि के चारों तरफ छोड़ी हुई दर्भ उत्तर दिशा से उठाते हुये पढ़ें:-

यज्ञस्य सन्ततिर-असि यज्ञस्य त्वा सन्तत्यै नयामि।

फूल हाथ में लेते हुये अग्नि देवता से आशीर्वाद माँगते हुये पढ़ें:-

धर्मं देहि, धनं देहि, पुत्रपौत्रान्-च देहि मे, आयुर-आरोगयम्-ऐश्वर्यम् देहि मे हव्य-वाहन, तेजोसि तेजो मयि देहि।

अग्नि की ज्योति हाथ में अपनी ओर लेते हुये पढ़ें:-

इत्यात्मानं देहि भगवन् सन्निधत्स्व।

पृथ्वी पर थोड़ा सा अन्न फिर से डालते हुये पढ़ें:-

भगवन्-यक्ष्म एतत्-तेऽन्नं नमः, एतत्-ते-आचमनीयं नमः

यज्ञोपवीत गले में रखते हुये पढ़ें:-

काण्ठोपवीती-हन्त-मनुष्यः सनकादिभ्य-ऋषिभ्यः अन्नं नमः आचमनीयं नमः।

दायाँ यज्ञोपवीत रख कर "चट्टू" को हाथों से पकड़ कर तिलक पुष्प लगाते हुये पढ़ें:-

या काचित्-योगिनी रौद्रा सौम्या घोरतरा परा, खेचरी भूचरी रामा तुष्टा भवतु मे सदा, आकाश-मातृभ्यो-अन्नंनमः, समाल- भनं गन्धोनमः अर्घो नमः पुष्पं नमः।

भगवान् शंकर का ध्यान मन में रख कर किसी पात्र में थोड़ा सा अन्न रखते हुये पढ़ें:-

शिवरात्रि-देवता-भ्यः अन्नं समर्पयामि नमः

अब जो दर्भ पर आपने अन्नकण रखे हैं उनके पास ही पृथ्वी पर और प्राणियों का अन्न डालते हुये पढ़ें:-

(गोग्रास) सौर-भेय्याः स्वर्ग-हिताः पवित्रा पुण्यराशयः, प्रति-गृह्णन्तु मे ग्रासं गावः त्रैलोक्य-मातरः। गोभ्योऽननं नमः, ऐन्द्र-वारुण-वाय-व्या-याम्या-नैऋति-काश्च-ये, वायसाः-प्रति-गृहणन्तु इमं पिण्डं मयोद्-धृतम्, काकेभ्यः अन्नं नमः, श्चानौ द्वौ शाव-शवलौ वैवस्वत-कुलोद-भवौ, ताभ्यां पिण्ड प्रदास्यामि स्याताम्-एतो-अहिंसकौ श्वभ्यः श्वानकेभ्यः अन्नं नमः।

बायाँ यज्ञोपवीत रख कर पढ़ें:-

रौरवाधीन-सत्वानां-प्रेत-द्वार-निवासिनाम्-अर्थिनां याचमानानाम्-अक्षय्यम्-उपतिष्ठतु।

दायाँ यज्ञोपवीत रख कर पढ़ें:-

शुनां च पतितानां च श्वपचां पाप-रोगिणाम्।

वायसानां क्रिमीणां च शनकैर्-निक्षिपेत्-भुवि, देवा मनुष्याः पशवो वयांसि-सिद्धाः सयक्षोरग-दैत्यसंघाः, प्रेता पिशाचाः तरवः समस्ता ये चान्नम्-इच्छन्ति मया प्रदत्तम्। पिपीलिका कीट-पतंग-काद्या बुभुक्षिताः कर्मणि बद्ध-वद्धाः, प्रयान्तु ते तृप्तिम्-इदं मयान्नं तेभ्यो विसृष्टं सुखिनो भवन्तु। येषां न माता पिता न बन्धुर् नैवान्न-सिद्धिर्-न तथान्नम्-अस्ति तत्-तृप्तयेऽन्नं भुवि दत्तम्-एतत्-ते यान्तु तृप्तिं मुदिता भवन्तु, भूतानि सर्वाणि तथान्नम्-एतत्-अयं चरिष्णुर्-न ततो-न्यत्-अस्ति तस्मात्-अहं भूत-निकाय-भूतम्-अन्नं प्रयच्छामि भवाय तेषाम्। चतुर्दशो भूतगणो य एष तत्र स्थिता येऽखिल-भूत-संघाः, तृप्त्यर्थम्-अन्नं हि मया विसृष्टं, तेषाम्-इषं ते मुदिता भवन्तु, इत्युच्चार्य नरो दद्यात्-अन्नं श्रद्धा समन्वितः, भुवि भूतोप-काराय गृही सर्वाश्रयो यतः।

बायाँ यज्ञोपवीत रख कर अंगूठे के तरफ से अन्न सलोना सहित डालते हुये पढ़ें:-

यमाम धर्मराजाय मृत्यवे चान्तकाय च, वैवस्वताय कालाय सर्वप्राणहराय च, औदुम्बराय नीलाय, ब्रध्नाय परमेष्ठिने, वृकोदराय भीमाय चित्रगुप्ताय वै नमः, पाशहस्त कृतान्ताय प्रेताधिपतये नमः श्रीयमराज-धर्मराज-चित्रगुप्त-तृप्तयेऽस्तु!

दायाँ यज्ञोपवीत रखकर "पवित्र" निकाल कर सभी डुलिजियों और सञ्वारियों में ऋषिडुलिजियों में सतसोस दूध, अन्न सलोना डालते हुये पढ़ें:-

(नोटः- वैश्वदेव प्रायः हर एक पूजा में करना होता है, परन्तु यह अन्न आदि डालना केवल शिवरात्रि में ही होता है:)

ये विश्व-भाविन भूता ये च तेषु-अनुयायिनः,

आहरन्तु बलिं तुष्टाः प्रयच्छन्तु शिवं मम।
योऽस्मिन्-निवसति क्षेत्रे क्षेत्रपालः सकिंकरः,
तस्मै निवेदया-म्यद्य बलिं पानीय-संयुतम्।
क्षां-क्षेत्राधिपतये-बलिं नमः, रां राष्ट्राधिपतये
बलिं नमः, सर्वे-अभय-वरप्रदा मह्येपुष्टिं पुष्टिपतयो
ददातु।

बायाँ यज्ञोपवीत रखकर अन्नकणों पर फूल चढ़ाते हुये पढ़ें:-
आयुः प्रजां धनं विद्यां स्वर्गमोक्षी सुखानि च,
प्रयन्छन्तु तथा राज्यं नृणां प्रीताः पितामहाः
(1) एष पिण्डो मया दत्तः तव हस्ते जनार्दन,
गयायां पितृरूपेण स्वयम्-एवोप- गृह्यताम् (2)
आत्मनश्चार्थ-लाभाय क्षेमाय विजयाय च, शत्रूणां,
बुद्धि-नाशाय पितृन्-उद्धरणाय च (3) पंचक्रोशं
गयाक्षेत्रं क्रोशम्-एकं गयाशिला, यत्र तत्र
स्मरेत्-नित्यं पितृणां दत्तम्-अक्षयम्।

दायाँ यज्ञोपवीत रखकर देवताओं का विसर्जन (शिवरात्रि
विषयक)-दर्भ के दो तिनके चावल सहित हाथ में
रखकर तीन बार पढ़ें:-
ॐ भूः पुरुषं विसर्जयामि नमः, ॐ भुवः
पुरुषं विसर्जयामि नमः, ॐ स्वः पुरुषं विसर्जयामि
नमः (3)
ॐ तत्-पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि तन्नो
रुद्रः प्रचोदयात् (3) ॐ तत्-सत्-ब्रह्म अद्य-तावत्
तिथौ अद्य फाल्गुनमासस्य कृष्णपक्षस्य द्वादश्यां
वारान्वितायां भवस्य देवस्य उग्रस्य देवस्य भीमस्य
देवस्य कालरात्र्याः तालरात्र्याः शिवरात्र्याः समस्त
शिवरात्रि-देवतानाम्-पूजनमऽच्छिद्रं सम्पूर्णम्-अस्तु
एवम्-अस्तु।

चावल सहित जल से तर्पण करते हुये पढ़ें:-
एताभ्यो देवताभ्यो यवोदकं नमः उदक-तर्पणं

नमः। आज्ञा मे दीयतां नाथ नैवेद्य-स्यास्य भक्षणे, शरीर-यत्रा सिद्ध्यर्थं भगवन् क्षन्तुम्-अर्हसि।

प्रार्थना के रूप में पढ़ें:-

आपन्नोसिम शरण्योसि सर्वावस्थासु सर्वदा, भगवन्-त्वां प्रपन्नोस्मि रक्ष-मां शरणा-गतम्। हर-शम्भो महादेव शरणागत-वत्सल नान्यः त्रातासि मे कश्चित् ऋते त्वत्-परमेश्वर, आशिरा-वन्तं निमग्नो-स्मि दुस्तरे भव कर्दमे प्रसीद कृपया शम्भो पादाग्रेण- उद्धरस्व माम्। यत्-कृतं यत् करिष्यामि तत् सर्वं न मया कृतम् त्वया कृतं तु फलभुक्-त्वम्-एव परमेश्वर। शब्द ब्रह्ममये स्वच्छे देवि त्रिपुर-सुन्दरि, यथा शक्तिं जपं पूजां गृहाण परमेश्वरि। दर्शनात्-पाप-शमनी, जपात्-मृत्यु-विनाशिनी, पूजिता दुःख-दौर्भाग्य-हरा त्रिपुर-सुन्दरी। आहवानं नैव जानामि नैवजानामि पूजनम्-पूजा-पाठं न जानामि क्षम्यतां परमेश्वर।

प्रणाम करते हुये पढ़ें:-

उभाभ्यां जानुभ्यां पाणिभ्यां शिरसा चोरसा च वचसा च मनसा च नमस्कारं करोमि नमः।

तर्पण करते हुये पढ़ें:-

नमो ब्राह्मणे, नमो अस्तवग्नये, नमः पृथिव्यै, नमः औषधीभ्यः, नमो वाचे, नमो वाचस्पतये, नमो विष्णवे, बृहते कृणोमि इति एतासाम्-एव देवतानां सामीप्यं साष्टितां सायुज्यं सलोकतां- आप्नोति य एवम्-विद्वान् स्वाध्यायम्-अधीते। ॐ नमः शम्भवाय च, मयोभवाय च, नमः शंकराय च, मयस्कारय च नमः शिवाय च, शिवतराय च।।

घर के सभी सदस्य मिलकर
विजयेश्वर पंचांग से आरती पढ़ें।

यज्ञ, यज्ञोपवीत, जातकर्म (काहनेथर) तथा देवगौण के लिये सामग्री की सूची

सामग्री	जातकर्म (काहनेथर) के लिए	यज्ञ के लिए	यज्ञोपवीत के लिए	देवगौण के के लिए
चूना	200 ग्राम	2 किलो	3 किलो	250 ग्राम
आटा चावल	X	1 किलो	2 किलो	X
नमक	X	2 पैक्यट	4 पैक्यट	X
जव	2 किलो	15 किलो	30 किलो	2 किलो
चावल	2 किलो	7 किलो	10 किलो	250 ग्राम
घी	1 किलो	7 किलो	7 किलो	1 किलो
शक्कर	500 ग्राम	3 किलो	7 किलो	1 किलो
खजूर	250 ग्राम	1 किलो	2 किलो	250 ग्राम
नारियल	250 ग्राम	1 किलो	2 किलो	250 ग्राम
नीलोफर (पम्बच)	250 ग्राम	1 किलो	2 किलो	250 ग्राम
बादाम	250 ग्राम	1 किलो	2 किलो	250 ग्राम

पन्न पूजा की सामग्री

धूप, रत्नदीप, कर्पूर, सिन्दूर, नारीवन, दूध, दही, फूल, चावल, जव, दूर्वा (द्रमुन), कपास का काता हुआ धागा, जाफल, एक रूपये का सिक्का।

पंचगव्य की सामग्री

गोमूत्र, गोभर, दूध, वही, घी एक ही गाय का।

सामग्री	जातकर्म (काहनेथर) के लिए	यज्ञ के लिए	यज्ञोपवीत के लिए	देवगौण के के लिए
नाबद	250 ग्राम	3 किलो	2 किलो	X
क0 गण	50 ग्राम	½ किलो	½ किलो	X
श्रीफल	2 अदद	12 अदव	20 अदव	X
कन्द	2 अवद	12 अदव	20 अदव	X
काला तिल	250 ग्राम	2 किलो	3 किलो	100 ग्राम
सर्वोशद्धि	3 आरी	12 आरी	12 आरी	2 अदव
ज़ाफल	2 अदद	2 अदद	2 अदव	2 अदव
नारीवन (मौली)	1 गोला	½ किलो	½ किलो	1 गोला
सिन्दूर	25 ग्राम	100 ग्राम	100 ग्राम	25 ग्राम
धूप	1 डब्बा	3 डब्बे	3 डब्बे	1 डब्बा
अगरबती	1 डब्बा	1 डब्बा	1 डब्बा	X
काफूर	1 पैक्यट	1 पैक्यट	2 डब्बे	1 पैक्यट
स0 इलाची	5 रु0	100 ग्राम	200 ग्राम	X
कैसर	X	1 ग्राम	1 ग्राम	X

गृह प्रवेश की सामग्री

गौमाता का फोटू, श्री मद्भगवत् गीता, महालक्ष्मी अथवा इष्टदेवी का फोटू, लाल झण्डियां (6), पानी से भरा हुआ घड़ा, दूध का घड़ा, दही, घी, चावल, धान्य, सात अनाज (थोड़ी मात्रा में), फूल, रत्नदीप, सिन्दूर, केसर, नारीवन, तिल, लाय, जव, किशमिश, शहद, मिट्ठाई, नमक, अखरोट

सामग्री	जातकर्म (काहनेथर) के लिए	यज्ञ के लिए	यज्ञोपवीत के लिए	देवगौण के के लिए
गोबर	थोडा सा	1 किलो	1 किलो	
फूल	2 किलो	5 किलो	7 किलो	2 किलो
मिट्टी का कलश	1	1 अदद	2 अदद	1 छोटा
बडा द्वीप	1 अदद	1 अदद	1 अदद	1 छोटा
टाकू	3 अदद	5 अदद	20 अदद	20 अदद
कलश के लिये वस्त्र	2½ मीटर	2½ मीटर	2½ मीटर	2½ मीटर
देवत गुल के लिये वस्त्र	2½ मीटर	X	2½ मीटर	2½ मीटर
ब्राह्मण के लिये वस्त्र	X	X	2½ मीटर	X
तौलिया	1 अदद	2 अदद	2 अदद	2 अदद
अखरोट	100	संख्या के अनुसार	संख्या के अनुसार	100 अदद
वस्त्र देवगौण	X	X	X	100 अदद
वस्त्र नेत्र पट	X	X	5 मीटर खदर	X
वस्त्र मेखलि महाराज	X	X	गीरि वस्त्र	X
शहद	20 ग्राम	X	X	X

पांच प्रकार के फूल, पांच प्रकार के फल, पांच खूटियां (16 अंगुल लम्बी), पांच चोरस पत्थर, 5 अदद प्रतिमायें (वृषभ, घोडा, हाथी, मनुष्य) ताम्बे के पत्र पर बनी होनी चाहिये तथा चांदी का सांप होना चाहिये, 5 मिट्टी की वारियां, रत्नदीप के लिए 5 दीप, धूप कण्ठगण, तिल, सिन्दूर, नारीवन, लाय, दूध, दही, सर्षप सर्वौषधि, घी, फूल, चावल, नाबद, किशमिश।

सामग्री	जातकर्म (काहनेथर) के लिए	यज्ञ के लिए	यज्ञोपवीत के लिए	देवगौण के लिए
दालचीनी	5 रु0	100 ग्राम	200 ग्राम	X
रुंग	5 रु0	100 ग्राम	200 ग्राम	X
काली मिर्च	5 रु0	100 ग्राम	200 ग्राम	X
ब्रय	2 रु0	2 रु0	2 रु0	1 रु0
सशर्प	2 रु0	2 रु0	2 रु0	1 रु0
लाय	2 रु0	2 रु0	2 रु0	X
लाल चन्दन	2 रु0	2 रु0	2 रु0	X
सफेद चन्दन	2 रु0	2 रु0	2 रु0	X
किशमिश	5 रु0	100 ग्राम	200 ग्राम	X
जिरिश	5 रु0	100 ग्राम	200 ग्राम	X
खोबानी		500 ग्राम	500 ग्राम	X
रुई	थोडी बहुत	थोडी बहुत	थोडी बहुत	थोडी बहुत
लकडी	25 किलो	1 क्वैटल	2 क्वैंटल	10 किलो
मिट्टी	छोटी गुत्थी	1 गुत्थी	2 गुत्थी	1 किलो

शंकु प्रतिष्ठा की सामग्री (कन दिनुकसामान)

सात तीर्थो और नदियों का जल, 7 धातु (सोना, चान्दी, ताम्बा, लोहा, पीतल, कांसी, जस्द) 7 अनाज (गेंहू, मक्की, जव, माछ, मूंग, चना, मटर) सात औषधियां (शऔंठ, हल्दी, बुनफशा, गुलाब पत्र, ग्यवथीर, कल व्युठ, पुदीना) पांच मिटियां (पांच तीर्थस्थानों की मिटटी)

सामग्री	जातकर्म (काहनेथर) के लिए	यज्ञ के लिए	यज्ञोपवीत के लिए	देवगौण के के लिए
समिधा (तुलमूरि)	X	X	1000 तुलमूरि 9 inch लम्बी	X
तुलमूर	X	X	6 ft लम्बी	X
भिक्षा पात्र	X	X	1 थाली	X
घी पात्र	X	X	1 बौली	X
वारीदान	X	X	1 अदद	X
वुपल हाक़	X	X	थोडा सा	X
टय्क तोल	X	X	250 ग्राम संख्या के अनुसार	250 ग्राम संख्या के अनुसार
हवन सामग्री	1 डब्बा	3 डब्बे	3 डब्बे	1
रंग बफ पांच प्रकार का	X	250 ग्राम एवं	250 ग्राम एवं	X
चौकी	X	X	X	जितने का देवगौण हो

मुण्डन

धर्मशास्त्र के अनुसार जीवन में दो बार मुण्डन करना जरूरी है पहले जब चूढ़ा कर्म (ज़रकासय) संस्कार किया जाता है दूसरा माता, पिता के दसवें दिन पर। दसवें दिन पर जो भी कोई क्रिया कर्म करेगा चाहे भाई मित्र ब्राहमण या और कोई हो मुण्डन करना ज़रूरी है।

यज्ञ से देवताओं की और श्राद्ध से पितरों की तृप्ति होती है।

ऋतु पति

प्रेप्युन में ऋतुपति नारायण का नाम आता है वहां अपने अपने मास का ऋतुपति पढ़ना होता है इसी कारण यहां पर हर मास का ऋतुपति नारायण लिख रहा हूं।

वैशाखे:- शोभासहिताय, जनार्दनाय, विभूति सहिताय, मधुसूदनाय

ज्येष्ठे:- महिमा सहिताये, उपेन्द्राय, इच्छा सहिताय, त्रिविक्रमाय

आषाढे:- लक्ष्मी सहिताय, यज्ञ पुरुषाय, धरती सहिताय, वामनाय

श्रावणे:- कान्ति सहिताय, वासुदेवाय, रतिसहिताय, श्रीधराय

भाद्रपदे:- प्राप्रिसहिताय, हरये, माया सहिताय, हृषिकेषाय

आश्विने:- पराकाम्या सहिताय, योगीश्वराय, धी सहिताय, पद्मनाभाय

कार्तिके:- लिगमासहिताय, पुण्डरी काक्षाय, गरिमासहिताय, दामूदराय

मार्ग शीर्षे:- रुक्षमणि सहिताय, कृष्णाय, श्री सहिताय केशवाय,

पौषे:- प्रिया सहिताय क्रष्णाय, श्री सहिताय केशवाय

माधे:- प्रीतिसहिताय, अच्युताय, कान्ता सहिताय, माधवाय

फाल्गुने:- शाक्ति सहिताय, चक्रिणे, क्रयासहिताय, गोविन्दाय

चैत्रे:- सिद्धि सहिताय, वैकृण्ठाय, मतिसहिताय, विष्णवे

अधिमासे:- सत्यभामा सहिताय, नरकारये, निष्कला सहिताय, महा मार्तण्डाय

तर्पण के लिये कुछ जानकारी

तपर्ण करते समय पहले महीना, पक्ष, तिथि और वार का नाम लें उस के पश्चात पित्रों का नाम लें जैसे:-

मासः- वैशाख मासस्य ज्येष्ठ मासस्य, आषाढ मासस्य,

श्रावण मासस्य, भाद्रमासस्य, आश्विन मासस्य, कार्तिक मासस्य, मार्गमासस्य, पौष मासस्य, माघ मासस्य, फाल्गुन मासस्य, चैत्र मासस्य।

पक्षः- शुक्लपक्षस्य, कृष्णपक्षस्य।

तिथिः- प्रतिपदि, द्वितीयस्यां, तृतीयस्यां, चर्तुथ्यां, पंचम्यां, षष्ठ्यां, सप्तम्यां, अष्टम्यां, नवम्यां, दशम्यां, एकादश्यां द्वादश्यां, त्रयोदश्यां, चतुर्दश्यां, पूर्णिमायां, अमावस्यां।

वारः-

रविवारः रविवासरानितायां, **सोमवारः** सोमवासरानितायां **मंगलवारः** मंगलवासरानितायां, **बुधवारः** बुधवासरानितायां **गुरुवारः** गुरुवासरानितायां, **शुक्रवारः** शुक्रवासरानितायां **शनिवारः** शनिवासरानितायां।

पित्रों का नाम लेने की विधिः-

पिता :- पित्रे (पिता का नाम) पितामहे (दादा का नाम) प्रपितामहे (परदादा का नाम)

मात्रे :- मात्रे (माता का नाम) माता की सास (पितामहि) माता की सास की सास (प्रपितामहि)

नाना :- मातामाहे (परनाना) प्रमातामाह्ये (उसका पिता) वृद्ध प्रमातामाह्ये

नानी :- मातामह्यै (परनानी) प्रमातामह्यै (उस की सास) वृद्ध प्रमातामह्यै

तपर्ण करते समय यह खयाल रखें कि यदि मातापिता जीवित हैं तो उन का नाम न लीजिये, पित्रों के नाम के साथ गोत्र का नाम भी लेना होता है जैसे

तत्सत् ब्रह्म, अध्य तावत् तिथौ अद्य माघ मासस्य कृष्ण पक्षस्य, तिथौ अमावस्यां, मंगल वासरानितायां पित्रे विष्णुदराय, भारद्वाजाय, पितामहाये कृष्णदराय, भारद्वाजाये प्रपितामहाये राज्यदराय भारद्वाजाये, मात्रे लीला वती देवयै, भारद्वाज्यै पितामह्यै अमरावती देव्यै, भारद्वाज्यै पितामह्यै अरनदती देव्यै भारद्वाज्यैः।

यहां पर "भारद्वाज" गोत्र का नाम है।

यदि तिथि "दि" हो तो दोतिथियां पढ़ी जाती हैं यथा

द्वितीयस्यां परता तृतीयस्यां।

कुम्भ देने की विधि

सामग्री: पानी का लोटा, विष्ठुर (न होने पर दर्भ का छोटा तिनका), थोड़ा सा काला तिल और ताम्बे का छोटा लोटा (कुम्भ गडव)

विधि: बायां यज्ञोपवीत रखकर शुद्ध आसन पर बैठकर एक थाली में ताम्बे के छोटे लोटे (कुम्भ गडव) को रखें। दायें हाथ पर विष्ठुर या दर्भ का तिनका और थोड़ा तिल डालें और बायें हाथ से पानी का लोटा उठायें और दायें हाथ पर पानी की धारा को इस प्रकार डालें ताकि दायें अंगूठे की तरफ पानी की धारा, तिल, दर्भ, सहित कुम्भ गडवे में गिरता रहे और आप इस मन्त्र का उच्चारण जल धारा डालते हुये करें।

कुम्भो वनिष्टुः जनिता शचीभिः
यस्मिन्नग्रे योन्यां गर्भो अन्तः
प्लाशिः व्यक्तः शतधार उत्सो
दोहेन कुम्भीं स्वधां पितृभ्यः।

तत्सत्ब्रह्म (मास का नाम) मासस्य (पक्ष शुक्ल कृष्ण) पक्षस्य (तिथि का नाम) तिथौ (वार का नाम) वासरे (पिता या माता का नाम) पितोः परलोके क्षुत पिपासानिवारनार्थं सोद् कुम्भान्न दान सहिते नित्य कुम्भे एत्ते तिलोदकं एतत् ते उदक तर्पणं हिमं हिमं रजतं रजतं। दायां यज्ञोपवीत रखें और थाली में पानी डालते हुये पढ़ें।

नमो धर्म निधानाय नमः सुकृत साक्षिणे, नमः
प्रत्यक्ष देवाय भास्कराय नमो नमः।

स्वयं सिद्ध मुहूर्त

चैत्र शुक्ल प्रतिपदा, राम नवमी, अक्षया तृतीया, विजयादशमी, दीपावली।

आमदन खर्च का चित्र

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुंभ	मीन
लाभ	8	2	8	2	5	8	2	8	5	14	14	5
हानि	5	14	11	8	5	11	14	5	11	11	11	11

आमदनी और खर्च के अंकों के जोड़ से एक कम करके आठ पर भाग दीजिये, यदि

(1) एक बाकी बचे:- तो यह वर्ष सुख शान्ति के वातावरण में तथा आदर मान से व्यतीत होगा, यदि आप नौकरी करते हैं तो अचानक तर्की की सम्भावना है यदि आप नौकरी के तलाश में हैं तो प्रयत्न करने पर अवश्य सफलता होगी, यदि आप तिजारत करते हैं तो आप कारोबार को विशाल बनाने के निमित्त बेखटके धन लगायें, आप के कारोबर को विशाल बनाने के निमित्त यह वर्ष रिकार्ड होगा, कारोबार सम्बन्धित प्रत्येक काम में आप को लाभ रहेगा, विद्यार्थियों के लिये भी यह वर्ष अनुकूल है आप प्रयत्न कीजिये आशा से अधिक सफलता होगी।

(2) दो बाकी बचे:- जिन तर्की की आशाओं को लेकर आप बहुत समय से प्रतीक्षा कर रहे हैं प्रायः सभी आशायें पूर्ण होगी हर आरम्भ किये हुये कार्य में सफलता निश्चित रूप से होगी, सफलता के साथ साथ आदरमान की दृष्टि से भी यह वर्ष उत्तम रहेगा, आप परिश्रम कीजिये ग्रह आप के सहायक हैं। यदि आप व्योपारी हैं आपका व्योपार यदि खाद्य पदार्थों से सम्बन्धित है तो उत्तम लाभ की आशा रखें, यदि आप कपड़े सम्बन्धित काम करते हैं तो लाभ की आशा न रखें, किरयाना लोहा मशीनरी सम्बन्धित काम करने वाले व्योपारी लाभ में रहेंगे, यदि आप का काम फलों बागों से सम्बन्धित है तो दौड़-धूप अधिक परन्तु अन्त में जाकर आपने खसारा में ही रहना होगा। नौकरी पेशा

होने पर नौकरी सम्बन्धित कोई समस्या क्यों न हो जरा सी सावधानी से कदम उठाने पर हर समस्या का समाधान होगा, हर पहलू से उत्तम समय होने पर भी शरीर के विषय में सावधान रहना चाहिये, शरीर को स्वस्थ रखने के लिये उपाय के रूप में किसी भी मादक द्रव्य का सेवन न करें रविवार को निश्चित रूप से वैष्णव रहें।

(3) तीन बाकी बचे:- तो यह वर्ष संघर्ष को होगा, कोई भी कार्य उलझनों व रुकावटों का सामना किये बिना सफल नहीं होगा, घरेलू परेशानियां भी आप को घेरी रखेंगी केवल परिवार में सन्तान पक्ष से शन्ति रहेगी घर में कोई महोत्सव रचाने का प्रोग्राम बनेगा जिस में अधिक से अधिक धन राशि का व्यय होगा शरीर के विषय में सावधान रहिये चोट आदि लगने का भी अन्देशा है, किसी रिश्तेदार मित्र अथवा किसी विश्वासपात्र से धोखा लगने का योग है, उपाय के रूप में 'हनुमान चालिसा' अथवा 'बहुरूपगर्भ' का पाठ नियम से करें किसी भी दिन नागा न करें, यदि किसी दिन पाठ न कर सकोगे तो दूसरे दिन भी उस दिन का पाठ करें, यदि आप विद्यार्थी हैं आप को इस वर्ष सावधान रहना चाहिये रात दिन परश्रिम करने पर ही सफलता की आशा रखें, वह सफलता भी इच्छानुसार नहीं होगी, यदि आप इस वर्ष सफलता चाहते हैं तो नियम से घर के किसी वृध्द सदस्य अथवा माता-पिता के चरणों को प्रातः प्रणाम करके नित्य उन से आर्शिवाद प्राप्त करें।

(4) यदि चार बाकी बचे:- तो यह वर्ष संघर्ष तथा दौड़-धूप में ही गुजरेगा हर एक कार्य में कोई न कोई उलझन खड़ी होगी, यदि आप नौकरी पेशा है तो मर्जी के उलट स्थान परिवर्तन होगा, गृहस्थी होने पर घरेलू परेशानियां आप को घेरी रखेंगी, आमदनी इस वर्ष ज्यों की त्यों बनी रहेगी परन्तु खर्च के नये-नये रास्ते निकल आयेंगे यदि आप व्योपारी हैं, तो लेनदेन के विषय में सावधान रहें अचानक धोखा लगने का अन्देशा है, लेनदेन अथवा धन के सम्बन्ध में किसी गैर का विश्वास न कीजिये बाद में पछताना पडेगा, जायदाद सम्बन्धित कोई झगडा खड़ा होने का अन्देशा है, जायदाद सम्बन्धित किसी झगड़े का आरम्भ दिख पड़ते ही आपस में सुलह करने में दिलचस्पी रखें नहीं तो अन्त में हानि उठानी पड़ेगी। यदि आप विद्यार्थी हैं इस वर्ष पठनपाठन के विषय में सावधान रहें ज़रा सी ढील करने पर पास होने की आशा न रखें उपाय के रूप में नित्य प्रातःकाल उठ कर घर के किसी वृध्द विशेषतया माता-पिता के

चरणों का स्पर्श करके आशीर्वाद प्राप्त करें निश्चय रखिये वह आशीर्वाद रामबाण का काम करेगा।
5 शेष बचे:- तो वर्ष भर मानसिक अशान्ति बनी रहेगी, कोई भी कार्य बिना रुकावट के सफल नहीं होगा, वर्षभर घरेलू परेशानियों से छुटकारा नहीं मिलेगा, धन की दशा भी डांवा डोल रहेगी, कभी धन आवश्यकता अनुसार मिलता रहेगा कभी तंगदस्ती से भी दुचार होना पडेगा, कभी अचानक लाभ की भी सम्भावना है। उस लाभ की आशा में अधिक विश्वास न रखें, उपाय के रूप में, घर में कोई महोत्सव या मकान आदि बनाने का प्रोग्राम बनाये ऐसे शुभकामों में लगे रहना आपके लिये शान्ति का कारण बनेगा, यदि यात्रा का प्रोग्राम बनें अवश्य बनायें घर की अपेक्षा आप यात्रा में सुखी रहेंगे, विद्यार्थी वर्ग को चेतावनी है कि आप पढ़ाई में आलस्य न करें परिश्रम करने पर आप अच्छी पोजिशन में सफल होंगे।
6. शेष बचना:- आपके वर्ष भर की शान्ति की सूचना है, आपको किसी महापुरुष से संयाग होगा जो आप की मानसिक शान्ति का कारण बनेगा, कोई भी कार्य जो आप हाथ में लेंगे उस में अवश्य सफलता होगी, आर्थिक स्थिति में वृद्धि होगी, मान की दृष्टि से यह वर्ष उत्तम रहेगा, सामाजिक तथा धार्मिक कामों से दिलचस्पी बनी रहेंगी, नौकरी पेशा वर्ग के लिये यद्यपि यह वर्ष दौड़-धूप तथा संघर्ष का ही होगा परन्तु मान प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी, व्योपारी वर्ग भी लाभ में रहेगा, विद्यार्थियों के लिये, यह वर्ष सफलता का है, धन लाभ के साथ-साथ खर्च का योग भी बलवान है, प्राय: खर्च शुभकामों में ही होगा घर में विवाह आदि महोत्सव रचाने का प्रोग्राम बनेगा।
7 शेष बचें:- तो इस वर्ष आपका भाग्योदय होगा, आप केवल प्रोग्राम ही न बनायें अपितु हर प्रोग्राम को अमली रूप देने का प्रयत्न कीजिये, इस वर्ष ग्रह अनुकूल हैं आपके कठिन से कठिन काम को सफल बनाने में सहायक होंगे, यदि आप गृहस्थी हैं तो घर में कोई महोत्सव रचाने का प्रोग्राम अवश्य बनेगा, यदि आप मकान या जायदाद बनाने का विचार रखते हैं तो इस वर्ष इस शुभ अवसर को हाथ से न जाने दें यदि आप व्यापार करते हैं, या नौकरी अथवा विद्यार्थी हैं आप का हर काम जरा सा ध्यान देने से अवश्य सफल होगा, सम्भव है आपको यात्रा का प्रोग्राम बने इसमें भी सन्तोषजनक सफलता होगी, आपका स्वास्थ भी इस वर्ष ठीक रहेगा, धन लाभ के साथ-साथ खर्च का भी योग है।

8 शेष बचें:- अर्थात यदि कुछ न बचे तो वर्ष भर संघर्ष तथा दौड़ धूप का माहोल रहेगा है, गृहस्थी होने पर घरेलू परेशानियां आप का पीछा छोडेंगी नहीं, यदि आप नौकरी करते हैं, तो दफ्तर में प्रायः मन अशान्त रहेगा सम्बन्धित अफसरों से अनबन रहेगी, नौकरी सम्बन्धित तरक्की की कोई आशा न रखें, हर एक कार्य ज्यों का त्यों लटकता रहेगा, यदि आप व्योपार करते हैं परश्रिम बहुत करना होगा परन्तु पल्ले कुछ नहीं पडेगा। यदि आप विद्यार्थी हैं परिश्रम करने पर भी सन्तोषजनक सफलता नहीं होगी, यद्यपि यह वर्ष हर पहलू से ढीला ही रहेगा ऐसा होने पर भी धार्मिक प्रवृत्ति, सामाजिक कामों से दिलचस्पी बनी रहेगी, उपाय के रूप में आप हर सोमवार को भगवान् शंकर पर जल चढाया करें।

जातक मिलाप–प्रकरण

बल देखने की विधि:- लग्न और चन्द्रमा से वर वधू की जन्माकुण्डली के पहले चौथे, 7वें, 8वें, 12वें घर में जितने पापग्रह होगें उतने बल मानिये, एक पाप ग्रह का एक बल माना जाता है। बृहस्पति और शुक्र एक घर में इकट्ठे हों तो उसका भी एक बल मानिये यदि लड़के के जन्म कुण्डली में शुक्र से चौथे, 8वें, घर में कोई पाप ग्रह हों तो उतने बल लड़के के और मान लीजिए, राक्षस जाति का भी एक बल मानिये।

नक्षत्र:- अश्विनी, भरणी, कृत्तिका, रोहिणी, मृगशिरा, आर्द्रा, पुनर्वसु तिष्या आश्लेषा, मघा, पूर्वाफाल्गुनी, उत्तराफाल्गुनी, हस्त, चित्रा, स्वाती, विशाखा, अनूराधा ज्येष्ठा, मूल, पूर्वषाढा, उत्तराषाढा, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषक् पूर्वाभाद्रपद, उत्तराभाद्रपद्, रेवती।

षष्टाष्टक:- लड़के अथवा लड़की की राशि से आठवीं और छठी राशि षष्टाष्टक कहलाती है, जैसे मिथुन, मकर।

नवपंचक:- लड़के अथवा लड़की की राशि से नवीं और पाँचवी राशि नवपंचक कहलाती है। जैसे मेष और सिंह।

द्विर्द्वादशी:- लड़के अथवा लड़की की राशि से दूसरी या बारहवीं हो तो द्विर्द्वादशी कहलाती है। जैसे मेष और मीन।

जातक मिलाप सारिणी

वधु ↓	वर →	मेष			वृष			मिथुन			कर्क			सिंह			कन्या		
		अश्वि	भरण	कृति	कृति	रोहि	मृग	मृग	आद्र	पुर्न	पुर्न	ति	अश्ले	मघा	पूफा	उफा	उफा	हस्ते	चित्र
मेष	अश्वि	28	33	28	18	21	22	26	17	19	23	31	28	21	25	15	11	9	13
	भरण	34	28	29	19	22	14	18	26	27	31	23	25	20	18	26	21	20	4
	कृति	27	29	28	18	10	16	20	20	21	25	26	23	16	20	20	15	15	18
वृष	कृति	18	20	19	28	20	26	17	17	18	22	23	20	18	22	22	21	21	23
	रोहि	23	23	11	20	28	36	27	23	22	26	27	12	10	24	27	26	26	20
	मृग	23	14	18	35	28	29	24	22	26	26	19	21	19	15	24	23	26	13
मिथुन	मृग	27	18	22	19	27	20	28	33	31	19	12	14	23	19	28	31	34	21
	आर्द्र	19	27	21	18	24	26	34	28	25	12	20	13	23	29	21	24	24	27
	पुर्न	20	27	23	20	22	23	31	24	28	15	22	17	22	26	21	24	25	27
कर्क	पुर्न	22	29	25	22	24	25	18	10	14	28	35	29	16	20	15	18	19	21
	तिष्य	30	21	26	23	25	18	11	18	21	35	28	30	19	15	23	26	27	12
	अश्ले	26	24	22	19	11	19	12	12	15	28	29	28	15	15	18	21	21	26
सिंह	मघा	20	20	16	17	9	17	21	22	20	16	19	16	28	30	27	16	16	21
	पूफा	26	18	20	21	23	15	19	28	26	22	17	16	30	28	35	24	22	7
	उफा	16	26	20	21	26	24	28	20	21	17	25	19	27	35	28	17	16	13
कन्या	उफा	13	22	16	21	26	24	31	23	24	20	28	22	17	25	18	28	17	24
	हस्त	10	20	17	22	25	26	33	22	24	20	28	23	18	22	16	26	28	28
	चित्र	13	5	19	23	20	12	19	26	25	21	12	27	22	8	14	24	27	28

जातक मिलाप सारिणी

वधु ↓	वर →	तुला			वृश्चिक			धनु			मकर			कुम्भ			मीन		
		चित्र	स्व	विश	विशा	अनु	ज्ये	मूल	पूष	उषा	उषा	श्रव	धनि	धनि	शत	पूभा	पूभा	उभा	रेव
मेष	अश्वि	22	26	22	18	25	14	13	25	23	25	26	20	20	15	16	14	24	26
	भरण	13	29	21	17	17	19	20	18	26	27	26	10	10	20	24	22	17	26
	कृति	27	15	19	15	19	25	24	18	12	13	11	25	25	27	19	17	19	11
वृष	कृति	22	10	14	20	24	30	20	13	7	12	10	23	29	31	23	20	22	14
	रोहि	19	15	9	15	29	23	14	19	11	16	17	20	26	24	30	27	27	19
	मृग	12	25	18	24	21	24	15	10	17	21	25	13	19	27	29	26	18	27
मिथुन	मृग	14	27	20	14	11	14	23	18	25	20	23	11	13	21	23	25	17	26
	आर्द्र	20	27	20	13	17	3	16	28	28	23	23	17	19	12	17	19	26	26
	पुर्न	20	28	22	15	21	7	14	27	27	22	[illegible]	17	18	14	16	18	28	27
कर्क	पुर्न	20	28	22	20	26	11	8	21	21	26	27	21	12	8	10	16	26	25
	तिष्य	11	26	21	19	18	21	17	11	21	26	25	13	4	14	18	24	18	27
	अश्ले	25	12	17	15	20	26	22	16	8	13	13	26	17	19	11	17	21	13
सिंह	मघा	24	11	16	22	25	33	25	19	8	3	4	18	24	25	18	18	19	13
	पूफा	10	25	18	24	23	25	19	17	24	19	18	4	10	19	24	24	17	25
	उफा	16	25	16	22	31	17	9	25	25	20	20	11	17	11	15	15	26	25
कन्या	उफा	16	25	16	18	27	13	14	29	29	24	24	16	16	10	14	17	28	27
	हस्त	20	26	18	20	26	13	15	27	28	23	24	18	19	8	13	16	26	27
	चित्र	20	19	26	28	11	25	27	14	22	17	18	15	16	24	16	19	10	19

जातक मिलाप सारिणी

वधु ↓	वर →	मेष			वृष			मिथुन			कर्क			सिंह			कन्या		
		अश्वि	भरण	कृति	कृति	रोहि	मृग	मृग	आद्र	पुर्न	पुर्न	ति	अश्ले	मघा	पूफा	उफा	उफा	हस्ते	चित्र
तुला	चित्र	22	14	28	23	20	12	13	21	19	20	11	26	25	11	17	17	20	21
	स्वा	27	29	17	12	15	26	27	26	28	29	27	14	13	25	25	25	27	21
	विशा	22	22	20	15	10	18	19	20	21	22	21	18	17	19	17	17	18	27
वृश्चिक	विशा	16	16	14	19	14	22	12	12	13	19	18	15	21	23	21	17	18	27
	अनु	24	15	19	24	27	20	10	15	20	26	18	21	24	20	29	25	26	11
	ज्ये	12	18	24	29	22	22	12	2	5	10	20	26	31	23	16	12	12	24
धनु	मूल	12	20	24	19	13	13	21	15	12	8	17	23	25	19	9	13	13	26
	पूषा	26	18	18	12	18	10	18	27	27	23	13	17	19	17	25	28	27	13
	उषा	24	26	12	6	10	17	25	27	27	23	23	9	8	24	25	28	28	21
मकर	उषा	27	28	14	12	16	22	20	22	22	28	28	14	4	20	21	24	24	17
	श्रव	27	26	13	11	16	25	22	21	22	28	26	15	6	18	20	23	24	19
	धनि	20	11	26	23	20	12	9	16	16	22	13	28	19	5	12	16	17	15
कुम्भ	धनि	20	11	26	30	27	19	12	19	18	13	4	19	25	11	18	17	19	17
	शत	15	21	28	32	25	27	20	12	13	8	14	20	26	20	12	11	8	25
	पूभाद्र	18	25	20	24	31	31	24	17	18	13	20	13	19	25	16	15	15	17
मीन	पूभाद्र	14	21	16	19	26	26	25	18	19	18	25	18	17	23	14	16	16	18
	उभाद्र	24	16	18	21	26	18	17	25	28	27	19	21	18	16	25	27	26	9
	रेव	25	24	11	14	17	26	25	24	26	25	27	14	13	23	23	25	26	19

वधु



जातक मिलाप सारिणी

वधु ↓	वर →	तुला			वृश्चिक			धनु			मकर			कुम्भ			मीन		
		चित्र	स्व	विश	विशा	अनु	ज्ये	मूल	पूषा	उषा	उषा	श्रव	धनि	धनि	शत	पूभा	पूभा	उभा	रेव
तुला	चित्र	28	27	34	23	6	20	27	14	22	25	26	23	18	26	18	12	3	12
	स्वा	28	28	20	9	21	16	23	27	19	22	23	26	21	20	25	19	19	12
	विशा	34	19	28	17	16	20	27	22	14	17	17	30	24	26	20	14	13	4
वृश्चिक	विशा	22	7	16	28	27	31	21	16	8	12	12	25	24	25	19	19	18	9
	अनु	6	21	16	28	28	31	15	13	21	25	26	12	11	21	24	24	18	27
	ज्ये	19	15	19	31	30	28	14	16	16	20	20	25	24	18	10	9	21	21
धनु	मूल	26	21	26	22	15	15	28	28	26	15	15	20	28	21	14	16	25	26
	पूषा	13	27	21	17	15	17	28	28	34	22	23	6	14	23	28	30	23	31
	उषा	21	19	13	9	23	17	26	34	28	16	14	15	23	23	29	31	31	23
मकर	उषा	24	22	16	13	27	21	16	23	17	28	26	26	17	17	23	30	30	22
	श्रव	26	22	17	14	27	22	17	23	14	25	28	28	18	18	21	28	29	22
	धनि	22	24	29	26	12	26	21	7	16	26	27	28	18	23	19	26	15	22
कुम्भ	धनि	18	20	24	25	11	25	29	15	24	18	18	19	28	33	28	18	7	14
	शत	26	19	26	26	21	19	22	24	24	18	18	24	33	28	19	8	17	16
	पूभाद्र	18	26	20	20	26	11	15	29	30	24	23	20	28	19	28	17	22	20
मीन	पूभाद्र	11	19	13	19	25	9	15	29	30	29	28	25	17	7	16	28	33	30
	उभाद्र	2	19	12	18	19	21	24	22	30	29	29	14	6	16	21	33	28	35
	रेव	12	11	4	10	27	22	26	29	21	20	21	22	14	16	18	29	34	28

राशि कूट चक्र

मित्र षष्टाष्टक	मेष+वृश्चिक	मिथुन+मकर	सिंह+मीन	तुला+वृष	धनु+कर्क	कुम्भ+कन्या
शत्रु षष्टाष्टक	वृष+धनु	कर्क+कुम्भ	कन्या+मेष	वृश्चिक+मिथुन	मकर+सिंह	मीन+तुला
मित्र नवपंचक	मेष+सिंह	मिथुन+तुला	सिंह+धनु	तुला+कुम्भ	धनु+मेष	कुम्भ+मिथुन
शत्रु नवपंचक	वृष+कन्या	कर्क+वृश्चिक	कन्या+मकर	वृश्चिक+मीन	मकर+वृष	मीन+कर्क
मित्र द्विर्द्वादशी	मेष+मीन	मिथुन+वृष	सिंह+कर्क	तुला+कन्या	धनु+वृश्चिक	कुम्भ+मकर
शत्रु द्विर्द्वादशी	वृष+मेष	कर्क+मिथुन	कन्या+सिंह	वृश्चिक+तुला	मकर+धनु	मीन+कुम्भ

देखने की विधिः- मेष राशि की वृश्चिक राशि के साथ मित्र षष्टाष्क है जो शुभ है इसी प्रकार वृष राशि का धनु राशि के साथ शत्रु षष्टाष्टक है जो मिलाप के लिए अशुभ है।

नोटः- मित्रषाष्टाष्टक, मित्रनवपंचक, मित्रद्विर्द्वादशी निषेध नहीं-अपितु शुभफलदायक है।

नाड़ी देखने का चित्र

आद्य नाड़ी	अश्वि	आर्द्रा	पुन	उफा	हस्त	ज्येष्ठा	मूला	शत	पूभा
मध्य नाड़ी	भर	मृग	तिष्या	पूफा	चित्रा	अनू	पूषा	धनि	उभा
अन्त्य नाड़ी	कृति	रोहि	आश्ले	मघा	स्वाति	विशा	उषा	श्रव	रेव

नाड़ी देखने की विधिः- जन्मपत्री मिलाने के लिए दोनों वधू-वर का नक्षत्र अवश्य मालूम होना चाहिए यदि दोनों का नक्षत्र आद्य नाडी की पंक्ति में हो तो आद्य नाड़ी दोष होता है, ऐसे ही यदि दोनों का नक्षत्र मध्यनाड़ी की पंक्ति

में हो तो मध्य नाड़ी दोष होता है, यदि दोनों वर-वधू का नक्षत्र अन्त्य नाड़ी की पंक्ति में हो तो अन्त्य नाड़ी दोष होता है। नाड़ी दोष विशेष हानिकारक माना जाता है।

जाती देखने का चित्र

देव जाति	अनू	मृग	श्रवण	पुनर्व.	रेवती	स्वाति	हस्त	तिष्या	अश्वि
मनुष्य जाति	पूषा	पूफा	पूभा.	उफा.	उषा	रोहि	भर	आद्रा	उभा
राक्षस जाति	मघा	आश्ले	धनि	कृति	ज्येष्ठा	मूला	शत	चित्रा	विशा

देखने की विधिः- अनूराधा नक्षत्र होने पर देवजाति, ऐसे ही पूर्व फाल्गुनी नक्षत्र के लिए मनुष्य जाति, मघा नक्षत्र की राक्षस जातिः-

देव जाति + राक्षस जाति = मध्यम
राक्षस जाति + देव जाति = मध्यम
राक्षस जाति + मनुष्य जाति = अशुभ

मनुष्य जाति + देव जाति = शुभ
देव जाति + मनुष्य जाति = शुभ
मनुष्य जाति + राक्षस जाति = अशुभ

दोनों लड़के तथा लड़की की एक ही जाति का होना शुभफल होता है, विशेषतया यदि लड़की की जाति राक्षस हो और लड़के की मनुष्य जाति हो तो विशेष हानिकारक होती है।

वधू-वर मिलाप सारिणी देखने की विधिः-

जन्मपत्री मिलान के लिए वर्ण, वश्य, तारा, योनि, ग्रहमैत्री, गण, भकूट, नाड़ी यह आठ मानिये पर्चे होते हैं यदि वर्ण आपस में (वधू वर का) मिले तो एक गुण मानिये। 1 अंक मिलता है, जब वश्य का आपस में मिलान होगा, तो

के दो अंक यानी 2 गुण मिलते हैं ऐसी ही क्रमशः तारा के मिलान में 3 गुण योनि के मिलान में 4 गुण होते हैं अर्थात् 8 पर्चो में क्रमशः 1+2+3+4+5+6+7+8 कुल मिलाकर 36 गुण होते हैं, वधू वर के मिलान में 36 में से 18 गुण मिले तो विवाह शुभफलदायक होगा।

सारिणी देखने के लिये दोनों लड़के, लड़की की जन्मराशि का ज्ञान होना आवश्यक है, मानिये लड़के की राशि है मेष और लड़की की राशि है मिथुन। मेष राशि वाले का नक्षत्र होगा अश्विनी, भरणी अथवा कृतिका और मिथुन राशि वाले का नक्षत्र होगा मृगशिर, आर्द्रा पुनर्वसु, सारिणी में देखिये हर राशि के नीचे नक्षत्र लिखे हैं। उदाहरण के रूप में मानिये लड़के की राशि है मेष और नक्षत्र है भरणी, ऐसे ही लड़की की राशि है मिथुन मानिये नक्षत्र है मृगशिर-सारिणी में देखिये:- भरणी नक्षत्र की खड़ी पंक्ति और मृगशिर की पड़ी पंक्ति जहां आपस में मिलती है वहां सारिणी में 18 दर्ज हैं, यानी वधू-वर के मिलान में 18 गुण हैं, इसलिये यह मिलान शुभ है। दूसरा उदाहरण देखिये, लड़के की राशि है सिंह और नक्षत्र है मघा, लड़की की राशि है कन्या और नक्षत्र है "हस्त" सारिणी में देखिये "मघा" नक्षत्र की खड़ी पंक्ति और हस्त की पड़ी पंक्ति में केवल 16 गुण मिलते हैं अतः मिलाप शुभ नहीं होगा।

मंगल दोष विचार

1. शनि भौमोथवा कश्चित् पापोवा तादृशोभवेत्।
   तेष्वेव भवनेषु भौम दोष विनाशकृत्।।

   जिस जन्म कुण्डली में वह लड़की की हो या लड़के की 1, 4, 7, 8, 12वें घर में यदि मंगल हो उसी के जवाब में, जन्मचक्र से अथवा राशि चक्र से कोई क्रूरग्रह (यह आवश्यक नहीं मंगल ही हो) सूर्य, भौम, शनि, राहु इन्हीं घरों में यानी 1, 4, 7, 8, 12वाँ हों तो मंगल का दोष नहीं होता है।

2. "अजे लग्ने व्यये चापे पाताले वृश्चिके कुजे,
   द्यूने मृगे कर्किचाष्टे भौम दोषो न विद्यते।।"

   लड़के अथवा लड़की की कुण्डली में, लग्न में मेष राशि का मंगल हो, वृश्चिक का मंगल चौथा हो,

मकर राशि में सातवाँ हो, कर्क का आठवां हो, धनु का बारहवाँ हो तो भौम का यानी मंगल का दोष नहीं होता है।

3. सप्तमस्थो यदा भौमो गुरुणा च निरीक्षितः
तदातु सर्वसौरण्यं स्यात् मंगलीदोष नाशकृत्।।
यदि सातवाँ मंगल हो, उस पर बृहस्पति की दृष्टि हो तो मंगल का दोष नहीं होता है।
4. भौम यदि वक्री, नीच, अस्त अथवा शत्रु के घर में हो तो मंगल का दोष नहीं होता है।

नाड़ी दोष अपवाद

1. लड़के अथवा लड़की का नक्षत्र यदि रेवती, रोहिणी, मृगशिर, तिष्या, कृतिका, उत्तराभाद्रपद्, श्रवणी, आर्द्रा तथा ज्येष्ठा हो तो नाड़ी दोष नहीं होता है।
2. यदि लड़के-लड़की में से एक की राशि कन्या और दूसरे की मिथुन, एक ही धनु, दूसरे की मीन, एक की तुला, दूसरे की राशि वृष हो तो नाड़ी दोष नहीं होता है।
3. वर तथा कन्या की राशि एक हो परन्तु नक्षत्र अलग-अलग हो तो नाड़ी दोष नहीं होता है अथवा वर तथा कन्या का नक्षत्र एक हो और राशि अलग-अलग हों तो नाडी दोष नहीं होता है।
4. नाड़ी दोष होने पर यदि पाद भेद हो तो भी नाड़ी दोष नहीं होता है।
5. वर और वधू के राशि स्वामियों अथवा नवांश स्वामियों की यदि आपस में मित्रता हो-तो राक्षस जाति तथा षष्ठाष्टक आदि का दोष नहीं होता है।

यात्रा प्रकरण

यात्रा के लिए उत्तम नक्षत्रः- अश्विनी, पुनर्वसु, अनुराधा, तिष्या, मृगशिर, रेवती हस्त धनिष्ठा।

यात्रा के लिए निषेध नक्षत्रः- भरणी, कृतिका, आर्द्रा, आश्लेषा, मघा, चित्रा, स्वाति, विशाखा।

यात्रा के लिये मध्यम नक्षत्रः- रोहिणी, उत्तराफा॰, उत्तराषाढ़ा, उत्तरभा॰, पूर्वाफा, पूर्वाषा, ज्येष्ठा, मूला, शतभिषक्।

यात्रा के लिये अशुभ योगः- कालदण्डः धौम्यः, ध्वांक्षः, उन्मूलम्, मुस्लम्, मुद्रगरम्, काण्डः, क्षयः, शूलम्।

यात्रा के लिये अशुभ चन्द्रमाः- अपनी राशि से चौथा, आठवाँ, बारहवाँ।

यदि यात्रा को जाना आवश्यक हो तोः- बृहस्पतिवार, शुक्रवार, रविवार को रात्रि में यात्रा को जाने में कोई दोष न मानिये, ऐसी ही सोमवार, शनिवार और मंगलवार-इन तीन वारों का दोष दिन को न मानिये।

वार दोष निवारण के लियेः- रविवार को सुपारी खाकर यात्रा को जायें, सोमवार को दूध अथवा खीर, मंगलवार को आँवला अथवा कांजी, खट्टी पदार्थ, बुधवार को मीठा, बृहस्पतिवार को दही, शुक्रवार को कच्चा दूध, शनिवार को उड़द अथवा तहर।

घातचन्द्र—घातवार

मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	राशि
1	5	9	2	6	10	3	7	4	8	11	12	चन्द्र
रवि	शनि	सोम	बुध	शनि	शनि	गुरु	शुक्र	शुक्र	भौम	गुरु	शुक्र	वार

मेष राशि वालों के लिए पहला घात चन्द्रमा है, ऐसे ही रविवार भी घातवार है, घातचन्द्रमा केवल यात्रा के लिये निषेध है।

यात्रा के लिए उत्तम योगिनी तथा चन्द्रमा

दिशा	वार	बायें योगिनी	पीछे योगिनी	सन्मुख चन्द्रमा	दायां चन्द्रमा
पूर्व	रवि, भौम, बुध, गुरु, शुक्र	द्वितीया दशमी,	षष्ठी चतुर्द,	मेष, सिंह, धनु,	मकर, कन्या, वृष,
पशिचम	सोम; बुध, गुरु, शनि,	पंचमी, त्रायो,	प्रतिपदा, नवमी,	मिथुन, तुला, कुंभ	कर्क, वृश्चि, मीन
दक्षिण	सोम, भौम, बुध, शुक्र शनि	प्रतिपद् नवमी	द्वितीया, दशमी	मकर, कन्या, वृष,	मिथुन, तुला, कुम्भ
उत्तर	सोम, शुक्र, शनि, रवि	षष्ठी, चतुर्द	पंचमी, त्रयोदशी	कक, वृश्चिक, मीन	मेष, सिंह, धनु

देखने की विधिः

शत्रु मित्र चक्रम्

सूर्य का चन्द्रमा, भौम और गुरु मित्र है, शुक्र, शनि, राहु शत्रु है, बुध सूर्य का न शत्रु न मित्र हैं।

ग्रह	सूर्य	चन्द्र	भौम	बुध	बृहस्पति	शुक्र	शनि	राहु
मित्र	चन्द्र भौम गुरु	सूर्य बुध	सूर्य चन्द्र गुरु	सूर्य शुक्र राहु	सूर्य चन्द्र भौम	बुध शनि राहु	बुध शुक्र राहु	बुध शुक्र शनि
शत्रु	शुक्र शनि राहु	राहु	बुध राहु	चन्द्र	बुध शुक्र	सूर्य	सूर्य चन्द्र भौम	सूर्य चन्द्र भौम
सम	बुध	भौम शुक्र गुरु, शनि	शुक्र शनि	भौम गुरु शनि	शनि राहु	भौम गुरु	गुरु	गुरु

जन्म राशि की प्रधानता

विवाहे सर्वमांगल्ये यात्रादौ ग्रह गोचरे। जन्म राशेः प्रधानत्वं नाम राशि न चिन्तयेत्।।
विवाहादि समस्त मंगल कार्य, यात्रा ग्रह दशा इत्यादि में जन्म राशि की ही प्रधानता है नाम राशि की नहीं। इस कारण जन्म राशि को ही देखना चाहिये।

बारह राशियों का वर्ष फ़ल तथा मासिक फल 2015-16 के लिए

मेष (Aries) राशि का वर्षफल



नक्षत्र	अश्विनी				भरणी				कृतिका
चरण	1	2	3	4	1	2	3	4	1
नामाक्षर	चु	चे	चो	ला	ली	लू	ले	लो	अ

वर्ष के आरम्भ पर बारहवें भाव में सूर्य, चन्द्र तथा मंगल का एक साथ बैठना शरीर सुख का सूचक नही है दसवे भाव में बुध तथा पहले भाव में शुक्र होने से किसी नये पद की प्राप्ति, शत्रुओं को पराजय का सुख, व्यवसाय में वृद्धि, मानसिक सुख शन्ति के साथ साथ उत्तम गृह सुख, हर तरफ मान में वृद्धि, जनहित कार्यों में वृद्धि, पहले भाव में शुक्र होने से सुख और धन की प्राप्ति, शत्रु का नाश, विवाह अथवा पुत्र जन्म का योग, विध्याध्ययन में सफलता सब प्रकार के आमोद-प्रमोद और वैभव विलास की प्राप्ति, सत्यता की ओर झुकाव, व्यापार में वृद्धि जलीय पदार्थों तथा सुगन्धित द्रव्यों तथा फेन्सी गुडस से लाभ इत्यादि। गोचर चक्र के शुभाशुभ ग्रहों पर विचार करने से प्रतीत होता है कि मेष राशि वालों का यह वर्ष संघर्षमय होते हुये भी सफलता का ही वर्ष रहेगा। वर्ष के आरम्भ पर अस्वस्थ होने के कारण

वृ मे मी सू चं भौ के मि कुं क शु म बु गु तु सिं धं कं वृं रा श

मानसिक चिन्ता का योग तथा फजूल खर्च का योग। यदि आप किसी प्रकार का कारोबार करते हैं तो पैसा फस जाने का योग। यदि आप को जायदाद सम्बन्धित कोई समस्या है तो वह अवश्य हल होगी और आप लाभ में रहेगें। आप की आर्थिक स्थिति भी सन्तोषजनक रहेगी, गृहस्थी होने पर गृहस्थ सुख का उत्तम योग किसी नवजात शिशु के आगमन का योग जिस की प्रतीक्षा आप बहुत समय से कर रहे हैं। विद्यार्थियों के लिये हर प्रकार से सफलता देने वाला वर्ष। यदि आप किसी

प्रकार की ट्रेंनिग इत्यादि करना चाहते हैं तो थोडा सा प्रयत्न करने से सफलता अवश्य होगी। क्रूर ग्रहों को शान्त करने के लिये वैष्णव रहना ज़रूरी है तथा इस मन्त्र का उच्चारण नित्य किया करें।

ॐ ह्रीं श्रीं श्री लक्ष्मी नारायणाय नमः।

मेष राशि का मासिक फल

अप्रैल मास के आरम्भ पर ग्रहों की अस्तव्यस्ता के कारण यह मास संघर्ष के माहोल में ही गुज़रेगा। विशेषतौर से पहले भाव का भौम बारहवें भाव का सूर्य तथा बुध आप को अस्वस्थ रख सकता है जो आप के लिये चिन्ता का कारण बनेगा।

मई शरीर सम्बन्धित स्थिति इस मास में भी गत मास की तरह ही चिन्ता जनक है परन्तु शेष ग्रहों की स्थिति को देखते हुये किसी प्रकार के भय का कोई योग नहीं है आप की आर्थिक स्थिति भी सन्तोषजनक ही रहेगी, गृहस्थी होने पर गृहस्थ सुख का योग।

जून ग्रहों में विशेष फेरबदल होने के कारण यह महीना हर प्रकार से शान्ति के माहोल में गुज़रेगा, शरीर सुख का उत्तम योग, यदि आप को जाईदाद सम्बन्धित कोई समस्या है उस का समाधान निकलने का योग। नौकरी पेशा होने पर पदोन्नति का योग। विद्या प्राप्ति के लिये उत्तम महीना।

जुलाई शुभाशुभ ग्रहों पर विचार करने से विदित होता है कि यह मास हर प्रकार से सुख और शान्ति के माहोल में गुज़रेगा, नौकरी पेशा होने पर दरबार में आदर व मान का योग, यदि आप नौकरी की तलाश में हैं इस मास में इस प्रकार के कागजात हरकत में आ सकते है।

अगस्त मास के आरम्भ पर मंगल चौथे भाव में आया है जो शरीर सुख का सूचक नही है यदि आप को जातक से किसी अच्छे ग्रह की दशा चल रही है तो किसी प्रकार के भय का कोई योग नही। शुभ ग्रहों का पलडा भारी होने के कारण यह महीना शान्ति के माहोल में गुज़रेगा।

सप्तम्बर बारवें भाव का चन्द्रमा तथा केतु और आठवें भाव का शनि देव आप को हर समय अशान्त रख सकता हैं।

फजूल परेशानी का योग, शनि देव पाचवें भाव को देख रहा हैं जिस के कारण सन्तान सम्बन्धित कोई परेशानी का योग। किसी शुभ कार्य पर धन खर्च का योग, विद्यार्थियों के लिये सफलता का महीना।

अक्टूबर मास के आरम्भ पर शुभ ग्रहों का पलडा भारी होने के कारण यह महीना हर प्रकार से शान्ति के माहोल में गुज़रेगा। आप की आर्थिक स्थिति भी सन्तोष जनक रहेगी। आप जो भी काम करते हैं आप का काम अच्छी प्रकार से चलता रहेगा।

नवम्बर मास के आरम्भ पर पाचवें भाव में चार ग्रहों चन्द्रमा, भौम, बृहस्पति तथा शुक्र का एक साथ आना शुभ योग का सूचक है बहुत देर से रुका हुआ कार्य अवश्य चल पडेगा। घर पर कोई शुभकार्य करने का प्रौग्राम बन सकता है।

दिसम्बर आठवें भाव का सूर्य, बुध तथा शनि शरीर सुख का सूचक नही है प्रायः सर दर्द अथवा आंखों में तकलीफ रह सकती है परन्तु बृहस्पति त्रिकोण में होने से किसी प्रकार के भय का कोई योग नही है यदि आप किसी प्रकार का कारोबार करते हैं उस में हर प्रकार से लाभ।

जनवरी नये वर्ष के आरम्भ पर ग्रहों में कुछ बदलाव आने के कारण यह महीना हर प्रकार से सुख और शान्ति के माहोल में गुज़रेगा, आप की आर्थिक स्थिति भी ज्यूं की ज्यूं रहेगी। आप का प्रत्येक कार्य सन्तोषजनक रहेगा। विद्यार्थियों के लिये सफलता का महीना।

फरवरी मास के आरम्भ पर सभी ग्रहों को राहु तथा केतु ने अपने घेरे में रखा है जो आप के लिये हर प्रकार से लाभप्रद रहेगा। आप जो भी कार्य करते हैं उस में आशा से अधिक लाभ तथा सफलता। स्त्री पक्ष के शरीर की ओर से थोडी चिन्ता।

मार्च आठवें भाव में चन्द्रमा, भौम का एक साथ होना शरीर सुख के लियें अशुभ माना गया है परन्तु आठवें भाव का शनि दीर्घायु का सूचक तथा शुभ माना गया है ऐसा मिला जुला योग होने पर भी शरीर के विषय में सावधान रहने की जरूरत है।

वृष (Taurus) राशि का वर्षफल



नक्षत्र	कृतिका			रोहिणी				मृगशिरा	
चरण	2	3	4	1	2	3	4	1	2
नामाक्षर	इ	उ	ए	ओ	वा	वि	वृ	बे	वो

वर्ष के आरम्भ पर सात ग्रहों का शुभ स्थिति में होना वृष राशि वालों के लिये हर प्रकार से शुभ फल को दर्शाता है गोचर चक्र फलित के अनुसार ग्यारहवें भाव में सूर्य, चन्द्रमा, तथा भौम के होने से हर प्रकार का लाभ, धन प्राप्ति, उत्तम भोजन, नवीन पद, आध्यात्मिक एवं मांगलिक कार्यों का होना, वृद्धि, व्यापार में पर्याप्त लाभ, मित्रों से लाभ, स्त्री सुख तरल पदार्थों से आय और वृद्धि, आरोग्य और धन लाभ, आय में आशातीत वृद्धि, भूमि आदि से लाभ, भाइयों की ओर से लाभ, कार्यों में सफलता का योग, व्यवसाय में वृद्धि, मानसिक सुख शान्ति के साथ साथ उत्तम गृह सुख, हर ओर मान में वृद्धि, जनहित कार्यों में वृद्धि इत्यादि।



गोचर चक्र के ग्रहों को वेधाष्टकवर्ग की कसौटी पर परखने से विदित होता है कि वृष राशि वालों के लिये यह वर्ष शुभ सन्देश लेकर आया है विशेष तौर से शारीरिक सुख का योग आप जो भी कार्य करते है उस में आदर व मान के साथ साथ पदोन्नति का योग। कारोबारी होने पर आशा से अधिक लाभ का योग यदि आप अपने कारोबार को बडाना चाहते हैं तो ग्रह आप के अनुकूल हैं इस समय को हाथ से जाने मत दो। यदि आप को सन्तान सम्बन्धित किसी प्रकार की समस्या है तो इस वर्ष उस समस्या का समाधान आवश्य निकलेगा, घर पर कोई शुभकार्य करने का परोग्राम बनेगा, यदि आप किसी सामाजिक संगठन के साथ जुडे हुये है तो वहां पर हर प्रकार से आदर व मान का योग। विद्यार्थियों के लिये हर प्रकार से सफलता देने वाला वर्ष। क्रूर ग्रहों को शान्त करने

के लिये निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण नित्य करें।

ॐ गोपालाय उत्तरध्वजाय नमः।

वृष राशि का मासिक फल

अप्रैल बारहवें भाव का भौम शरीर को अस्वस्थ रख सकता है परन्तु किसी विशेष भय का कोई योग नहीं हैं आप जो भी कार्य करते है आप का कार्य अच्छी प्रकार से चलता रहेगा तथा आर्थिक स्थिति भी सन्तोषजनक रहेगी, गृहस्थी होने पर गृहस्थ की ओर से शान्ति। विद्या प्राप्ति के लिये उत्तम महीना।

मई ग्रहों की शुभाशुभ स्थिति के अनुसार शरीर अस्वस्थ रहने का योग विशेषतौर से रक्त विकार अथवा सर दर्द का योग। यदि जातक में किसी अच्छे ग्रह की दशा चल रही है तो किसी प्रकार के भय का कोई योग नहीं। सातवें भाव में शनि का होना गृहस्थ सुख का सूचक हैं, विद्यार्थियों के लिये सफलता देने वाला महीना।

जून पहले भाव में सूर्य, भौम तथा शुक्र का एक साथ होना आप के स्वभाव में चिडचिडापन ला सकता है जो कि आप के लिये परेशानी का कारण बन सकता है। आप जो भी कार्य करते हैं वह अच्छी प्रकार से चलता रहेगा। आप की आमदनी भी सन्तोषजनक ही रहेगी।

जुलाई मास के आरम्भ पर ग्रहों में बदलाव आने के कारण यह महीना संर्घष के माहोल में ही गुज़रेगा। आप जो भी कार्य करते है बिना रुकावट के सफलता का कोई योग नहीं। यदि आप कारोबार करते हैं तो अपने कारोबार को सीमित रखे ऐसा न हो कि आप को हानि का मुंह देखना पडे।

अगस्त शुभाशुभ ग्रहों की स्थिति एक जैसी होने के कारण यह मास हर प्रकार से शान्ति के माहोल में ही गुज़रेगा, आप कारोबार करते हैं या नौकरी, आप का कार्य अच्छी प्रकार से चलता रहेगा, आप की आर्थिक स्थिति भी आशानुरूप ही रहेगी, गृहस्थी होने पर गृहस्थ सुख का उत्तम योग।

सप्तम्बर तीसरे भाव में भौम तथा शुक्र होने से साहस में वृद्धि, शत्रुओं पर विजय यदि आप नौकरी करते हैं तो पदोन्नति का योग। अपने अफसर लोगों के साथ उठने बैठने

का अवसर मिलेगा जो आप के लिये हर प्रकार से लाभदायक रहेगा, आप की आर्थिक स्थिति में विशेष बदलाव का कोई योग नही है।

अक्टूबर मास के आरम्भ पर शुभाशुभ ग्रहों पर विचार करने से मालूम होता है कि यह मास हर प्रकार से सुख और शान्ति के माहोल में गुज़रेगा यदि आप को सन्तान पक्ष से किसी प्रकार की चिन्ता है तो उस का समाधान इस मास से अवश्य हो गा। विद्यार्थियों के लिये हर प्रकार से सफलता देने वाला महीना।

नवम्बर चौथे भाव में चार ग्रहों चन्द्रमा, भौम, बृहस्पति तथा शुक्र का एक साथ होना शुभ फल का ही सूचक है यदि आप को जमीन जाईदाद का कोई मसला है तो वह इस मास में हल हो सकता है यदि आप किसी प्रकार की जाईदाद खरीदना चाहते हैं तो समय जाया मत कीजिये, ग्रह आप के अनुकूल है।

दिसम्बर मास के आरम्भ पर अशुभ ग्रहों का पलडा भारी होने के कारण यह मास कुछ अशान्ति के वातावरण में ही गुज़रेगा। बने बनाये कार्य बिगड सकते है परन्तु किसी प्रकार के हानि का कोई योग नहीं है गृहस्थी होने पर गृहस्थ की ओर से लाभ तथा मानसिक शान्ति का योग।

जनवरी मास के आरम्भ पर छठे भाव में भौम आने से शत्रु पक्ष आप पर हावी नही हो सकता है जिस कारण दफतर का माहोल आप के अनुकूल रहेगा तथा दरबार में हर समय आदर व मान का योग। कारोबारी होने पर आशा से अधिक लाभ की सम्भावना विद्या प्राप्ति के लिये उत्तम महीना।

फरवरी ग्रहों में खास बदलाव न आने के कारण यह मास भी गतमास की तरह शान्ति के वातावरण में ही गुज़रेगा। आप जो भी कार्य करते हैं आप का काम अच्छी प्रकार से चलता रहेगा यदि आप नौक़री की तलाश में हैं तो थोडा सा प्रयत्न करने से आप का यह कार्य अवश्य सिद्ध होगा।

मार्च मास के आरम्भ पर अशुभ ग्रहों का पलडा भारी होने के कारण यह मास कुछ अस्तव्यस्त स्थिति में ही गुज़रेगा, गृहस्थ पक्ष की ओर से परेशानी का योग अथवा गृहस्थ के किसी सदस्य के शरीर की ओर से चिन्ता का योग। अशुभ ग्रहों का प्रभाव आप की आर्थिक स्थिति पर नहीं होगा।

मिथुन (Gemini) राशि का वर्षफल



नक्षत्र	मृगशिरा		आर्द्रा				पुनर्वसु		
चरण	3	4	1	2	3	4	1	2	3
नामाक्षर	क	कि	कु	घ	ङ	छ	के	को	ह

वर्ष के आरम्भ पर पांच ग्रहों का शुभ स्थिति में होना तथा मंगल का वेध में होना शुभ फल को दर्शाता हैं। गोचर फलित के अनुसार दसवें भाव में सूर्य तथा चन्द्रमा होने से धन, स्वास्थ्य, मित्रादि का सुख, राज्याधिकारियों और प्रतिष्ठित लोगों से मित्रता, सज्जनों द्वारा लाभ, प्रत्येक कार्य में सफलता, पदोन्नति का सुअवसर, मान गौरव की प्राप्ति, अभीष्ट की सिद्धि, स्वस्थ शरीर, राज्य की ओर से धन और सम्मान की प्राप्ति, नौकरी में पदोन्नति, उत्तम गृहस्थ सुख, ग्यारहवें भाव में शत्रु तथा दूसरे भाव में बृहस्पति होने से धन की वृद्धि, आदर मान में वृद्धि, सभी कार्यों में सफलता। स्त्री सम्बन्धित सुखों में वृद्धि, मित्रों का पूर्ण सहयोग तथा कुटम्ब में सुख की वृद्धि, विवाह अथवा पुत्र जन्म का योग। शत्रुओं के विरुद्ध कार्य करने की आवश्यकता, हर तरफ से मान तथा आदर का योग, परोपकार तथा दानादि की ओर प्रवृति बडती है इत्यादि। गोचक्र के ग्रहों पर विचार करने से मालूम होता है कि मिथुन राशि वालों के लिये यह वर्ष हर प्रकार से सुख और शान्ति के माहोल में गुज़रेगा यदि आप नौकरी करते हैं तो दफतर का माहोल आप के अनुकूल रहेगा, दरबार में हर समय आदर व मान का योग आप की आर्थिक स्थिति भी सन्तोषजनक रहगी, व्यापारी अथवा किसी प्रकार का ठेकेदार होने पर आशा से अधिक लाभ, यदि आप किसी सामाजिक संगठन के साथ सम्बन्ध रखते हैं तो वहां पर हर समय आदर व मान का योग तथा सामाजिक सेवा की ओर प्रवृति दिनों दिन बडती रहेगी जो आप के लिये लाभदायक रहेगी, गृहस्थी होने पर गृहस्थ सुख का योग, विद्यार्थी वर्ग के लिये हर प्रकार से सफलता का वर्ष, क्रूर ग्रहों को शान्त करने के लिये वैष्णव रहें तथा इस मन्त्र

का उच्चारण नित्य करें।

ॐ क्लीं कृष्णाय नमः।

मिथुन राशि का मासिक फल

अप्रैल मास के आरम्भ पर ग्रहों की स्थिति के अनुसार यह महीना हर प्रकार से सुख ओर शान्ति के माहोल में गुज़रेगा, शारीरिक स्थिति भी ठीक ही रहेगी, ग्यारहवां भौम तथा शुक्र आप की आर्थिक स्थिति को सन्तोषजनक ही रखेगा परन्तु खर्च का योग भी प्रबल है।

मई ग्रहों में विशेष फेरबदल न होने के कारण यह मास भी हर प्रकार से सुख और शान्ति के वातावरण में गुज़रेगा। देर से रुके हुये कार्यों का समाधान अवश्य होगा यदि आप गृहस्थ धारण करना चाहते है तो इस मास में इस प्रकार की बात कहीं चल सकती है जो आप के अनुकूल होगी।

जून मास के आरम्भ पर सूर्य तथा भौम आप के बारहवें भाव में आये हैं जो आप के शरीर को अस्वस्थ रख सकते हैं प्रायः रक्त विकार अथवा सर दर्द का योग परन्तु शेष ग्रहों की स्थिति को देखते हुये किसी प्रकार की हानि का कोई योग नहीं है आप की आर्थिक स्थिति ज्यों की त्यों रहेगी।

जुलाई इस मास के आरम्भ पर मंगल देव तथा सूर्य आप के पहले भाव में आये हैं जो चिडचिडापन के सूचक है यह आप की क्रोध मात्रा को बडा सकते हैं जो आप के लिये हानि कारक रहेगा। आप जो भी कार्य करते हैं आप का काम सुचारू रूप से चलता रहेगा।

अगस्त शुभाशुभ ग्रहों को देखते हुये यह मास सामान्य रूप से व्यतीत होगा आप जिस प्रकार का कार्य करते हैं वह भिन्ना किसी रुकावट के चलता रहेगा, कारोबारी होने पर लाभ में कुछ कमी होने पर भी काम अच्छा रहेगा, गृहस्थी होने पर स्त्री सुख का योग। विद्यार्थियों के लिये सफलता का महीना।

सप्तम्बर मास के आरम्भ पर अशुभ ग्रहों का पलडा भारी होने पर भी यह मास शान्ति से ही व्यतीत होगा, संघर्ष करने पर ही कार्य में सिद्धि का योग। अपने मित्रों तथा सम्बन्धियों के साथ अनबन का योग जो आप के लिये परेशानी का कारण

बनेगा, गृहस्थी होने पर घर के किसी सदस्य के शरीर की परेशानी।

अक्टूबर ग्रहों में विशेष सुधार होने से यह महीना हर प्रकार से शान्ति से गुज़रेगा आप का कार्य बिना किसी रुकावट के चलता रहेगा। आप की आर्थिक स्थिति भी सन्तोषजनक रहे गी, यदि आप को किसी प्रकार का वाहन इत्यादि का कोई परोग्राम है तो उस को अमली रूप दीजिये।

नवम्बर गोचर चक्र के ग्रहों के अनुसार यह महीना संघर्ष का होते हुये भी हर प्रकार से सफलता तथा लाभ से परिपूर्ण रहेगा, कार्यों में रुकावट आने पर भी कार्यों में सफलता का योग, आर्थिक दृष्टि से यह महीना तंग रहते हुये भी ठीक ही रहेगा। सन्तान पक्ष से कोई शुभ समाचार का योग।

दिसम्बर मास के आरम्भ पर गोचर चक्र में सभी ग्रहों का बायें ओर होना शुभ फल का सूचक नही है यह योग संघर्ष का ही सूचक है आप जो भी कार्य करते हैं बिना रुकावट के हल होगा नहीं, नौकरी पेशा होने पर दफतर का माहोल आप के अनुकूल नहीं रहेगा।

जनवरी मास के आरम्भ पर नव ग्रहों में से केवल दो ग्रहों की स्थिति अच्छी होने के कारण यह मास भी दौडधूप के माहोल में ही गुज़रेगा, आप के बने बनाये काम बिगड सकते हैं नौकरी पेशा होने पर दफतर का माहोल आप के अनुकूल न होने के कारण मानसिक चिन्ता का योग, विद्यार्थियों के लिये भी संघर्ष का महीना।

फरवरी मास के आरम्भ पर आठवें भाव का सूर्य आप को शरीर से अस्वस्थ रख सकता है यदि जातक से ग्रहों की स्थिति अच्छी है तो किसी प्रकार का कोई भय नहीं, सातवें भाव में शुक्र तथा बुध होने से गृहस्थ सुख का योग, अविवाहित होने पर विवाह सम्बन्धित बाते आगे बड सकती हैं।

मार्च छठे भाव में भौम तथा शनि का एक साथ होना आप के लिये हर प्रकार से लाभदायक। आप नौकरी करते हैं या कोई कारोबार आप को आशा से अधिक लाभ का योग आप की आर्थिक स्थिति सन्तोषजनक रहेगी, विद्यार्थियों के लिये सफलता का महीना।

कर्कट (Cancer) राशि का वर्षफल



नक्षत्र	पुन	तिष्य				आश्लेषा			
चरण	4	1	2	3	4	1	2	3	4
नामाक्षर	हि	हु	हे	हो	डा	डी	डु	डे	डो

वर्ष के आरम्भ पर ग्रहों की अस्तव्यस्त स्थिति को वेधाष्टकवर्ग की कसौटी पर परखने से मालूम होता है कि कर्कट राशि वालों के लिये यह वर्ष हर प्रकार से दौड धूप तथा संघर्षमय ही रहेगा। आप जो भी कार्य करते है आप का कार्य बिना किसी रुकावट के सिद्ध होगा नहीं। यदि आप किसी प्रकार का कारोबार करते हैं तो अपने काम को सीमित रखें ऐसा न हो कि आप को हानि का मुंह देखना पडे। यदि आप किसी सियासी या सामाजिक गठबन्धन से सम्बन्ध रखते है तो वहां पर आप पर झूठा आरोप लगने की सम्भावना है इस कारण इन संगठनों से दूरी रखने में ही लाभ है। वर्ष के उत्तरार्ध में ग्रहों में बदलाव आने से ककर्ट राशि वालों में एक परिवर्तन जैसा प्रतीत होगा। प्रत्येक कार्य बिना किसी रुकावट के चलता रहेगा। आप की आमदनी भी इच्छानुसार रहेगी, अच्छे अच्छे कार्यों पर धन का सार्थक खर्च होगा, गृहस्थी होने पर स्त्री पक्ष की ओर से लाभ तथा शान्ति का योग। यदि आप को सन्तान पक्ष की ओर से किसी प्रकार की कोई समस्या है वह वर्ष के अन्तिम दिनों में समाप्त होगी उस का कोई न कोई हल निकल आयेगा। यदि आप अभी अविवाहित हैं तो इस वर्ष विवाह बन्धन में बन्द होने का योग तथा वह भी आप की इच्छा के अनुसार होगा। विद्यार्थी वर्ग के लिये हर प्रकार से सफलता देने वाला वर्ष है यदि आप उच्च विद्या के लिये कहीं जाने का परोग्राम बनाते हैं तो उस को शीघ्र अमली रूप दीजिये, ग्रह आप के अनुकूल हैं। क्रूर ग्रहों को शान्त करने के लिये नित्य भगवान् शंकर पर पानी डालें तथा इस मन्त्र का उच्चारण करें।

ॐ ह्रीं हिरण्य गर्भाय अव्यक्त रूपिणे नमः।

कर्कट राशि का मासिक फल

अप्रैल मास के आरम्भ पर शुभाशुभ ग्रहों पर विचार करने से विदित होता है कि यह मास अशान्ति के माहोल में ही गुज़रेगा कार्यों में रुकावट के बाद ही सफलता का योग परन्तु किसी हानि का कोई योग नहीं, नौकरी पेशा होने पर अपने अफसर लोगों के साथ अनबन का योग, जो परेशानी का कारण बनेगा।

मई मास के आरम्भ पर चार ग्रहों का शुभ होना शुभ फल को दर्शाता है जिस के फलस्वरूप यह महीना हर प्रकार से शान्ति के माहोल में गुज़रेगा, घर का माहोल भी अच्छा ही रहेगा, आप की आमदनी भी आशानुरूप रहेगी, नौकरी पेशा वालों को चाहिये कि वह सावधानी से दफतर में काम करें ऐसा न हो आप पर झूठा इल्जाम लगे।

जून पांच ग्रहों का शुभ स्थिति में होना तथा बृहस्पति का वेध मे होना हर प्रकार से सफलता देने वाला तथा लाभदायक योग है आप जो भी कार्य करते हैं कारोबार या नौकरी वह अच्छी प्रकार से चलता रहेगा, आमदनी कम होने पर भी मानसिक शान्ति का योग, गृहस्थी होने पर गृहस्थ सुख का योग।

जुलाई मास के आरम्भ पर बारहवें भाव का भौम तथा सूर्य आप को शरीर से अस्वस्थ रख सकता है विशेष तौर से रक्त विकार अथवा सर दर्द का योग यदि जातक में किसी अच्छे ग्रह की दशा चल रही है तो किसी प्रकार के भय का कोई योग नहीं ऐसा न होने पर सावधान रहने की आवश्यकता।

अगस्त दूसरे भाव का बृहस्पति तथा शुक्र होने से हर प्रकार के कार्य में सफलता तथा लाभ यदि आप किसी प्रकार का कारोबार करते हैं तो आशा से अधिक लाभ का योग, रुके हुये कार्य सब चल पडेंगे, परिवार में हर प्रकार से सुख का अनुभव होगा, घर में किसी नवजात शिशु के आगमन का योग।

सप्तम्बर मास के आरम्भ पर अशुभ ग्रहों का पलडा भारी

होने पर भी यह मास हर प्रकर से शान्ति के माहोल में गुज़रेगा क्योंकि बृहस्पति की स्थिति बहुत अच्छी होने से अशुभ ग्रहों का प्रभाव विशेष नहीं होगा। इस कारण आप जो भी कार्य करते हैं आप का काम अच्छी प्रकार से चलता रहेगा।

अक्टूबर वर्ष के शेष महीनों में बृहस्पति की स्थिति दृढ होने से हर प्रकार से शान्ति तथा लाभ की प्राप्ति, क्योंकि बृहस्पति को फलित शास्त्र में एक महत्वपूर्ण स्थान है उस के प्रभाव से आप का काम अच्छी प्रकार से चलता रहेगा तथा लाभ भी आशा से अधिक रहेगा।

नवम्बर द्वितीय भाव में बृहस्पति तथा शुक्र के एक साथ होना हर प्रकार से शुभफल को दर्शाता है विशेष तौर पर यह आप की आमदनी को प्रभावित कर सकता है आप को आशानुरूप हर कार्य में लाभ होगा यदि आप किसी प्रकार का कारोबार अथवा ठेकेदारी करते हैं तो आशा से अधिक लाभ।

दिसम्बर मास के आरम्भ पर पांच ग्रहों का शुभ स्थिति में होने से यह महना हर प्रकार से सुख और शान्ति में गुज़रेगा आप की आमदनी के साथ साथ खर्च के बडे बडे परोग्राम बन सकते हैं सन्तान पक्ष से कोई शुभ सन्देश मिलने का योग, विद्यार्थियों के लिये सफलता का महीना।

जनवरी ग्रहों में विशेष बदलाव न आने के कारण यह महीना भी गतमाह की तरह सुख और शान्ति के माहोल में गुज़रेगा, आप का कार्य बिना किसी रुकावट के चलता रहेगा, चौथे भाव का भौम आप को शरीर से थोडा बहुत अस्वस्थ रख सकता है परन्तु किसी भय का कोई योग नहीं है।

फरवरी शुभाशुभ ग्रहों का पलडा एक जैसा होने के कारण यह महीना थोडा बहुत संघर्षपूर्ण होने के साथ हर प्रकार से सफलतापूर्वक तथा लाभदायक होगा लाभ के साथ साथ खर्च का योग भी प्रबल है गृहस्थी होने पर गृहस्थ सुख का योग, विद्या प्राप्ति के लिये हर प्रकार से सफलता देने वाला महीना।

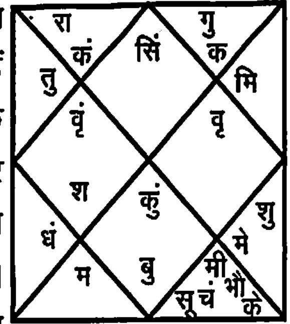
मार्च पांचवे भाव में चन्द्रमा, मंगल तथा शनि का एक साथ होना शुभ फल का सूचक नहीं है। विशेषतौर से सन्तान पक्ष की ओर से चिन्ता का योग, यदि आप को सन्तान पक्ष की ओर से कोई समस्या है तो वह समस्या इस महीने में ज्यों की त्यों रहेगी।

सिंह (Leo) राशि का वर्षफल



नक्षत्र	मघा				पूर्वा फाल्गुनी				उ फा0
चरण	1	2	3	4	1	2	3	4	1
नामाक्षर	म	मि	मु	मे	मो	टा	टि	टू	टे

वर्ष के आरम्भ पर अशुभ ग्रहों का पलडा भारी है गोचर फलित के अनुसार आठवें भाव में सूर्य, चन्द्रमा तथा भौम होने से अपने बुरे कर्मों का फल प्राप्ति, शत्रुओं से झगड़ा, बवासीरी, अपच आदि, राज भय, स्त्री को कष्ट, अधिक खर्च, अपमान का भय, श्वास, खांसी आदि छाती के रोग, झगडा, विवाद और मानसिक क्लेश, धन का नाश, परदेस गमन, कार्य की हानि, पुरुषार्थ निष्फल, भाइयों से अनबन, पाप में अधिक प्रवृति, शत्रु भय इत्यादि गोचर चक्र के ग्रहों को वेधाष्टक वर्ग इत्यादि कसौटी पर परखने से प्रतीत होता हैं कि सिंह राशि वालों का नव वर्ष विशेष लाभदायक नहीं है विशेषतौर से आप को शरीर के विषय में सावधान रहना पडेगा यदि जातक में किसी अच्छे ग्रह की दशा चल रही है तो किसी भी प्रकार का कोई भय नहीं है ऐसा न होने पर सावधान रहने की ज़रूरत है यदि आप नौकरी करते हैं तो अपने कार्य में पूरी ईमानदारी के साथ जुट जाये ऐसा न हो आप पर कोई झूठा इल्ज़ाम लग जाये जो आप के लिये चिन्ता का कारण बनेगा। शनि आप के दरबार को देख रहा है शनि की नज़र मनहूस मानी जाती है इस कारण दफतर का माहोल भी आप के अनुकूल नहीं रहेगा, गृहस्थी होने पर गृहस्थ की ओर से शान्ति तथा लाभ का योग, यदि आप अविवाहित हैं और शादी के बन्धन में बन्धने जा रहे हैं तो इस प्रकार की बात अवश्य बनेगी। विद्यार्थियों के लिये हर प्रकार से सफलता का वर्ष, यदि आप उच्च विद्या प्राप्ति के लिये कहीं जाने का परोग्राम बना रहे हैं तो ऐसा परोग्राम ज़रूर बनाये ग्रह आप के अनुकूल हैं। क्रूर ग्रहों को शान्त करने के लिये वैष्णव रहें तथा इस मन्त्र से नित्य भगवान् शंकर पर जल ढाला करें।



ॐ क्लीं ब्रह्मणे जगदाधाराये नमः।

सिंह राशि का मासिक फल

अप्रैल मास के आरम्भ पर शुभाशुभ ग्रहों का पलडा एक जैसा होने के कारण यह महीना सामान्य रूप से गुज़रेगा। आप की आमदनी सन्तोष जनक न होते हुये भी किसी प्रकार की तंगदस्ती महसूस नहीं होगी, बारहवां बृहस्पति तथा आठवां सूर्य आप को शरीर के विषय में चिन्तित रखेगा। गृहस्थी होने पर गृहस्थ की ओर से शान्ति का योग।

मई ग्रहों ने विशेष प्रकार का बदलाव न आने के कारण यह मास भी गत मास की तरह सामान्य रूप से गुज़रेगा। शारीरिक रूप से आप स्वस्थ रहेंगें परन्तु आप की पाचन शक्ति थोडा बहुत प्रभावित रहेगी। आप नौकरी करते हैं या कारोबार आप का काम अच्छी प्रकार से चलता रहेगा, विद्यार्थियों को चाहिये कि कटिबद्ध होकर परिश्रम करें तभी सफलता की आशा रखें।

जून शुभाशुभ ग्रहों पर विचार करने से प्रतीत होता है कि मास हर प्रकार से शान्ति के माहोल में गुज़रेगा, नौकरी पेशा होने पर पदोन्नति का योग, अथवा इस प्रकार से कागज़ हरकत में आ सकते हैं, दफतर का माहोल आप के अनुकूल रहेगा, सन्तान पक्ष से कोई शुभ सन्देश मिलने का योग। विद्यार्थियों के लिये संघर्ष का महीना।

जुलाई चार ग्रहों का शुभ होना हर प्रकार से शुभफल को दर्शाता है आप जो भी कार्य करते हैं आप का काम अच्छी प्रकार से चलता रहेगा, लाभ भी आशा से अधिक होगा। गृहस्थी होने पर गृहस्थ की ओर से लाभ तथा शान्ति। यदि आप अविवाहित है तो विवाह से सम्बन्धित बात चल सकती है। विद्या के लिये उत्तम महीना।

अगस्त मास के आरम्भ पर ग्रहों में बहुत फेरबदल होना शुभ फल का सूचक नही, सूर्य, भौम तथा बुध तीनों ग्रह बारहवें भाव में आये है जो शरीर सुख के सूचक नहीं अतः आपको शरीर के विषय सावधान रहने पडेगा, आप की आमदनी भी प्रभावित हो सकती है।

सप्तम्बर ग्रहों में विशेष परिवर्तन न आने के कारण यह मास भी गत मास ही तरह अस्तव्यस्त माहोल में ही गुज़रेगा, शरीर अस्वस्थ रहने का योग चोट का भय, दसवें भाव का स्वामी शुक्र बारहवें भाव में होने से दफतर का माहोल आप के

अनुकूल रहे गा, अफसर लोगों के साथ उठने बैठने का अवसर मिलेगा।

अक्टूबर गोचर चक्र में पहले भाव का बृहस्पति तथा मंगल शुभ नहीं माना जाता है इस कारण यह महीना दौड धूप के माहोल में ही गुज़रेगा, बने बनाये कार्य बिगड सकते हैं परन्तु विशेष हानि का कोई योग नहीं है यदि जातक से कोई अच्छी दशा चल रही है तो यह मास भी शान्ति के माहोल में गुज़रेगा।

नवम्बर मास के आरम्भ पर अशुभ ग्रहों का पलडा भारी होना शान्ति का सूचक नहीं है गोचर चक्र में केवल तीन ग्रह शुभ स्थिति में हैं। इस मिले जुले योग से यह मास संघर्ष का होते हुये भी अन्ततः लाभदायक ही रहेगा, गृहस्थ की ओर से किसी सदस्य की शारीरिक चिन्ता का योग।

दिसम्बर शुभाशुभ ग्रहों की स्थिति पर विचार करने से मालूम होता है कि यह माह भी दौडधूप के माहोल में ही गुज़रेगा आप जो भी कार्य करते हैं बिना रुकावट के हल होगा नही परन्तु किसी हानि का योग भी नहीं है। यदि आप को जाईदाद सम्बन्धित कोई समस्या है तो वह लटकती ही रहेगी।

जनवरी नव ग्रहों में केवल तीन ग्रहों का शुभ स्थिति में होना संघर्ष का ही सूचक है इस कारण यह मास भी दौडधूप तथा अशान्ति के माहोल में ही गुज़रेगा, शत्रु पक्ष आप पर हावी होने का प्रयत्न करेगा जो आप के लिये अशान्ति का कारण बनेगा। विद्यार्थियों के लिये संघर्ष का महीना।

फरवरी पांच ग्रहों का शुभ होना हर प्रकार से शुभफल का सूचक है आप जो भी कार्य करते है आप का काम अच्छी प्रकार से चलता रहेगा नौकरी पेशा होनें पर दफतर का माहोल आप के अनुकूल रहेगा, व्योपारी होने पर आशा से अधिक लाभ, पहले भाव में राहु होने से स्थान परिवर्तन का योग अथवा यात्रा का योग।

मार्च वर्ष के अन्तिम मास में ग्रहों की स्थिति को देखते हुये लगता है कि यह मास भी दौडधूप के माहोल में गुज़रेगा यद्यपि विशेष लाभ नहीं होगा परन्तु किसी प्रकार की हानि का भी कोई योग नहीं है। चौथा भौम आप के शरीर को प्रभावित कर सकता है। विद्यार्थियों के लिये हर प्रकार से सफलता देने वाला मास।

कन्या (Virgo) राशि का वर्षफल



नक्षत्र	उ फाल्गुनी			हस्त				चित्रा	
चरण	2	3	4	1	2	3	4	1	2
नामाक्षर	टो	पा	पी	पू	ष	ण	ठ	पे	पो

वर्ष के आरम्भ पर छः ग्रहों का शुभ होना तथा ग्यारहवें भाव में कर्क राशि का बृहस्पति होना शुभफल का सूचक है गोचर फलित के अनुसार धन लाभ, काम सुख, छोटी परन्तु लाभदायक यात्रायें, वाणिज्य व्यवसाय मे लाभ, उत्तम भोजन, शरीर सुख, वाहन तथा ख्याति की प्राप्ति, अच्छी तथा मनोरजक पुस्तकें पढने का अवसर, शत्रुओं पर विजय, शरीरिक तथा मानसिक सुख, लेखन तथा वाद्य कला में ख्याति, प्रतिष्ठ की प्राप्ति, समस्त कार्यों में सफलता, विवाह अथवा पुत्र जन्म का योग, नौकरी में पदोन्नति तथा व्यापार में वृद्धि, पुत्रों तथा राज्याधिकारियों से सुख, शुभ कार्यों में रुचि, कुटुम्बियों से धन तथा सुख की प्राप्ति, विद्या प्राप्ति का उत्तम योग, भूमि प्राप्ति का योग इत्यादि गोचर चक्र के शुभाशुभ ग्रहों को वेध अष्टकवर्ग की कसौटी पर परखने से प्रतीत होता है कि कन्या राशि वालों के लिये यह वर्ष कोई शुभ सन्देश लेकर आया है फलित ज्योतिष में ग्यारवें बृहस्पति का एक महत्वपूर्ण स्थान



मिला है कन्या राशि वालों को ग्यारहवें भाव में बृहस्पति बैठा है तथा शेष ग्रहों की स्थिति भी सन्तोष जनक है जिस के प्रभाव से हर प्रकार से लाभ तथा शान्ति का योग आप जो भी कार्य करते है उस में आशा से अधिक लाभ तथा हर प्रकार से आदर व मान का योग। अपने रिशतेदारों मित्रों के साथ सम्बन्ध सुदृढ हो जायें गे, घर पर कोई विशेष कार्यक्रम करने का योग बन सकता है जिस की प्रतीक्षा आप बहुत समय से कर रहे थे। यदि आप नौकरी की तलाश में हैं तो थोडा सा प्रयत्न करने से उसमें सफलता हो सकती है विद्यार्थियों के लिये हर प्रकार से सफलता का वर्ष। क्रूर ग्रहों को शान्त

करने के लिये इस मन्त्र का उच्चारण नित्य करें।

ॐ पीं पीताम्बराय नमः।

कन्या राशि का मासिक फल

अप्रैल मास के आरम्भ पर ग्यारहवें भाव में बृहस्पति का होना शुभ फल का सूचक है इस शुभ योग के प्रभाव से यह मास हर प्रकार से सुख शान्ति के माहोल मे गुज़रेगा, रुके हुये कार्य हल हो जाये गे, आर्थिक स्थिति भी सुदृढ हो जायेगी, विद्या प्राप्ति का उत्तम योग।

मई पहले भाव का राहु आप को स्थान परिवर्तन या कोई छोटी मोटी यात्रा भी करा सकता है जो आप के लिये लाभदायक रहेगी आप जो भी कार्य करते हैं आप का कार्य अच्छी प्रकार से चलता रहे गा, नौकरी पेशा होने पर पदोन्नति का योग, व्यापारी होने पर आशा से अधिक लाभ।

जून ग्यारहवें भाव का बृहस्पति तथा शुक्र आप के हर कार्य को सफल बनाये गे यदि आप को किसी प्रकार की कोई समस्या है तो उस का समाधान अवश्य निकल आयेगा। घर पर कोई शुभ कार्यक्रम का परोग्राम बन सकता है जिस की प्रतीक्षा आप बहुत समय से कर रहे हैं।

जुलाई ग्रहों में कोई खास बदलाव न आने के कारण यह महीना भी गत मास की तरह सुख और शान्ति के माहोल में गुज़रेगा आप की आमदनी भी सन्तोषजनक रहेगी तथा आप का कार्य भी बिना किसी रुकावट के चलता रहेगा, नौकरी पेशा होने पर दफतर का माहोल आप के अनुकूल रहेगा।

अगस्त मास के आरम्भ पर बृहस्पति तथा शुक्र स्थान बदल कर बारहवें भाव में आये हैं जो आप की पाचन शक्ति को प्रभावित कर सकते हैं ग्यारहवें भाव में तीन ग्रहों की युति आप की आर्थिक स्थिति को सुदृढ रखेंगे परन्तु खर्च के साधन भी बडेंगे। विद्या प्राप्ति के लिये हर प्रकार से शुभ महीना।

सप्तम्बर शुभाशुभ ग्रहों को देखते हुये यह महीना हर प्रकार से सुख और शान्ति के माहोल में गुज़रेगा आप जो भी कार्य करते हैं उस में बिना रुकावट के लाभ तथा सफलता। सन्तान पक्ष से कोई शुभ समाचार मिलने का योग, गृहस्थी होने पर

स्त्री पक्ष से शान्ति का योग। विद्यार्थियों के लिये सफलता का महीना।

अक्टूबर मास के आरम्भ पर बारहवें भाव में भौम तथा बहृस्पति का एक साथ होना शरीर सुख के लिये मध्यम प्रायः चोट अथवा रक्त विकार का योग परन्तु किसी प्रकार के भय का कोई योग नही है, ग्यारहवां शुक्र आप की आर्थिक स्थिति को ठीक रख सकता है। विद्या प्राप्ति का उत्तम महीना।

नवम्बर बारहवें भाव में चार ग्रहों चन्द्रमा, भौम, बृहस्पति तथा शुक्र की युति फलित शास्त्र की दृष्टि से शुभ नही माना जाता हैं प्रायः आप के शरीर को प्रभावित कर सकते हैं यदि आप को जातक से किसी अच्छे गृह की दशा चल रही है तो किसी प्रकार का भय नहीं है ऐसा न होने पर शरीर के विषय में सावधान रहें।

दिसम्बर शुभ ग्रहों का पलडा भारी होने के कारण यह महीना हर प्रकार से सुख और शान्ति के माहोल में गुज़रेगा। नौकरी पेश होने पर दफतर का माहोल आप के अनुकूल रहेगा, यदि आप नौकरी की तलाश में हैं तो थोडा सा परिश्रम करने से आप का यह मसला हल हो सकता है।

जनवरी शुभाशुभ ग्रहों पर विचार करने से प्रतीत होता हैं कि यह मास संघर्ष का होते हुये भी हर प्रकार से शान्ति के माहोल में ही गुज़रेगा। कार्यों में रुकावट आने पर भी प्रत्येक कार्य हर प्रकार से अच्छी प्रकार सम्पन्न होगा, गृहस्थी होने पर गृहस्थ पक्ष की ओर से शान्ति का योग।

फरवरी केवल तीन ग्रहों का शुभ स्थिति में होना दौड धूप का ही सूचक है इस कारण प्रत्येक कार्य में सावधानता की जरूरत है ऐसा न हो कि आप पर किसी प्रकार का झूठ इलजाम लगे जो आप के लिये अशान्ति का कारण बने, दफतर का माहोल भी आप के अनुकूल नहीं रह सकता है।

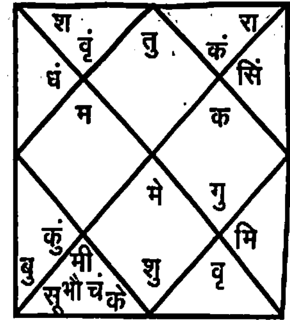
मार्च मास के आरम्भ पर छः ग्रहों का शुभ स्थिति में होना हर प्रकार से शुभ फल का सूचक है आप जो भी कार्य करते है आप का कार्य अच्छी प्रकार से चलता रहेगा। नौकरी पेशा होने पर पदोन्नति का योग, घर पर कोई शुभ कार्य का प्रोग्राम बन सकता है। जिस से सभी सम्बन्धि सम्मिलित हो सकते हैं। विद्यार्थियों के लिये हर प्रकार से संघर्ष का महीना।

तुला (Libra) राशि का वर्षफल



नक्षत्र	चित्रा		स्वाति				विशाखा		
चरण	3	4	1	2	3	4	1	2	3
नामाक्षर	रा	री	रू	रे	रो	ता	ति	तु	ते

वर्ष के आरम्भ पर केवल तीन ग्रहों का शुभ स्थिति में होना संघर्ष का ही सूचक है छठे भाव मे सूर्य, चन्द्रमा तथा भौम की युति से कार्य सिद्धि और सुख की प्राप्ति, अन्नवस्त्रादि का लाभ शत्रुओं पर विजय, रोगों का नाश राज्याधिकारियों से लाभ, शरीर स्वस्थ, यश और आनन्द की प्राप्ति महिलाओं से वार्तालाप का अवसर, अपने घर में सुख पूर्वक रहने का अवसर, ज्यादा खर्च, धन अन्न तथा स्वणादि प्राप्ति, वैयक्तिक प्रभाव में वृद्धि इत्यादि गोचर चक्र के ग्रहों पर विचार करने से प्रतीत होता है कि यह वर्ष दौडधूप तथा संघर्ष का होत हुये भी अन्ततः हर प्रकार से सफलता तथा लाभ से परिपूर्ण होगा कार्यों मे रुकावट आने पर भी आप का प्रत्येक कार्य सिद्ध, होगा, बारहवें भास में राहु का होना फज़ूल खर्ची का सूचक है यदि आप को ज़मीन जाईदाद इत्यादि का कोई मसला है वह लटकता ही रहेगा क्योंकि वर्ष के आरम्भ पर शनि देव आप के चौथे भाव को पूर्ण दृष्टि से देख रहा है शनि देव आप की आमदनी को भी प्रभावित कर सकता है जिस कारण कभी कभी तंगदस्ती का योग भी है गृहस्थी होने पर स्त्री पक्ष से लाभ तथा शान्ति, सन्तान पक्ष से कोई शुभ सन्देश मिलने का योग, यदि आप किसी सामाजिक संगठन से सम्बन्धित है तो उससे दूर रहना ही आप के लिये ठीक रहेगा, विद्यार्थियों के लिये हर प्रकार से सफलता देने वाला वर्ष, यदि आप उच्च विद्या प्राप्ति के लिये कहीं जाने का प्रोग्राम बना रहे हैं तो उस के लिए ग्रह आप के अनुकूल है। क्रूर ग्रहों को शान्त करने के लिये निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करें



ॐ तत्वनिरंजनाय तारक रामाय नमः।

तुला राशि का मासिक फल

अप्रैल मास के आरम्भ पर अशुभ ग्रहों का पलडा भारी होने के कारण यह महीना दौड धूप के माहोल में ही गुज़रेगा बने बनाये कार्य बिगड सकते है नौकरी पेशा होने पर दफतर का माहोल भी आप के अनुकूल नही रहेगा जो आप के लिये चिन्ता का कारण बनेगा परन्तु आप की आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

मई ग्रहों में विशेष बदलाव न आने के कारण यह महीना भी गत मास की तरह अशान्ति के माहोल में ही गुज़रेगा, बारहवें भाव का चन्द्रमा तथा राहु आप के शरीर को भी प्रभावित कर सकते हें, प्रत्येक कार्य में संघर्ष के पश्चात ही सफलता का योग, विद्या प्राप्ति के लिये उत्तम महीना।

जून मास के आरम्भ पर आठवें भाव का सूर्य, भौम तथा बुध आप को अस्वस्थ रख सकते हैं प्रायः रक्त विकार अथवा सर दर्द का योग, नौकरी पेशा होने पर स्थान परिवर्तन का योग बनता है यदि ऐसा हुआ तो वह आप के लिये लाभदायक रहेगा। व्यापारी वर्ग के लिये परेशानी का मास ही रहेगा, हानि का योग।

जुलाई मास के आरम्भ पर ही ग्रहों की अस्त व्यस्त स्थिति को देखते हुये प्रतीत होता है कि यह मास भी अस्तव्यस्त स्थिति में गुज़रेगा, कभी धन की अधिकता कभी धन की कमी, शारीरिक स्थिति भी डांवा डोल ही रहेगी, भाई बन्धुओं से सम्बन्ध दृढ होंगे, विद्या प्राप्ति के लिये उत्तम महीना।

अगस्त ग्रहों में विशेष बदलाव आने के कारण चह मास हर प्रकार से सुख और शान्ति के माहोल में गुज़रेगा, आप जो भी कार्य करते हैं वह अच्छी प्रकार से चलता रहेगा, आप की आमदनी में भी वृद्धि हो सकती है, कारोबारी होने पर कार्य में वृद्धि तथा आशा से अधिक लाभ। गृहस्थ सुख का योग।

सप्तम्बर अशुभ ग्रहों का पलडा भारी होने पर भी यह मास हर प्रकार से सुख और शान्ति के माहोल में गुज़रेगा प्रत्येक कार्य बिना रुकावट के सिद्ध होगा। आप की आमदनी भी

सन्तोष जनक रहेगी, गृहस्थी होने पर गृहस्थ की ओर से मानसिक शान्ति, नौकरी पेशा होने पर पदोन्नति का योग।

अक्टूबर बारहवें भाव का सूर्य तथा राहु आप के शरीर से अस्वस्थ रख सकता है यदि जातक से अच्छे ग्रह की दशा चल रही है तो किसी प्रकार का कोई भय नहीं। ग्यारहवां बृहस्पति तथा भौम आप के प्रत्येक कार्य में सफलता देने वाला है तथा आप को आशा से अधिक लाभ की प्राप्ति।

नवम्बर मास के आरम्भ पर ग्यारहवें भाव में चार ग्रहों चन्द्रमा, भौम, बृहस्पति तथा शुक्र की युति शुभ फल को दर्शाती है इस योग के प्रभाव से आप की चिरकाल की कामना सिद्ध हो जायेगी प्रत्येक कार्य में सफलता का योग तथा साथ साथ लाभ की प्राप्ति।

दिसम्बर फलित ज्योतिष के अनुसार बारहवां भौम तथा राहु शरीर सुख के सूचक नही है परन्तु ग्यारहवां बृहस्पति हर एक समस्या का हल करने की शक्ति रखता है इस कारण किसी प्रकार के भय का कोई योग नहीं है आप की आमदनी भी सन्तोषजनक रहेगी तथा खर्च की अच्छी प्रकार होगा।

जनवरी शुभाशुभ ग्रहों के प्रभाव से यद्यपि यह मास दौडध् ूप का ही रहेगा परन्तु ग्यारहवें बृहस्पति के होने से किसी प्रकार के भय का कोई योग नही। आप का कार्य अच्छी प्रकार से चलता रहेगा, घर पर मित्रों, सम्बन्धियों का आना जाना जोरों पर रहेगा, विद्यार्थियों के लिये सफलता मा महीना।

फरवरी पहले भाव का भौम शुभ फल का सूचक नही है यह आप के गुस्से की मात्रा को बडा सकता है जो आप के लिये शुभफल का सूचक नहीं है यदि आप नौकरी करते हैं तो अपने अफसर लोगों से सावधान रहें तथा निष्काम भाव से अपने कार्य में लगे रहें वह आप के हित में रहेगा।

मार्च ग्रहों में थोडा सा बदलाव आने के कारण यह महीना हर प्रकार से शान्ति के माहोल में ही गुज़रेगा, नौकरी पेशा होने पर दफतर का माहोल आप के अनुकूल रहेगा, आमदनी भी ठीक ही रहेगी, सन्तान पक्ष से कोई शुभ समाचार विद्यार्थियों के लिये सफलता देने वाला महीना।

वृश्चिक (Scorpio) राशि का वर्षफल



नक्षत्र	वि0	अनुराधा				ज्येष्ठा			
चरण	4	1	2	3	4	1	2	3	4
नामाक्षर	तो	न	नी	नू	ने	नो	या	यी	यू

वर्ष के आरम्भ पर वृश्चिक राशि वालों के गोचर चक्र में केवल दो ग्रह चौथा बुध तथा नवां कर्क राशि का बृहस्पति शुभ स्थिति में है गोचर फलित के अनुसार माता को सुख, जमीन जायदाद में वृद्धि, अच्छे विद्वानों तथा भद्र पुरुषों तथा उच्च पदस्थ लोगों से मित्रता, घरेलू जीवन का अच्छा सुख, धन मे वृद्धि, पुत्र जन्म का योग, भाग्योदय, राज्य में मान तथा पदोन्नति, हर कार्य में सफलता, भाइयों से सुख तथा लाभ, धार्मिक कार्यों में रुचि इत्यादि वर्ष के आरम्भ पर केवल दो ग्रहों का शुभ होना किसी चमत्कार का सूचक नहीं है परन्तु नवें भाव में कर्क राशि का बृहस्पति होना हर प्रकार से लाभदायक तथा शान्तिदायक है क्योंकि फलित ज्योतिष में बृहस्पति को विशेष स्थान मिला है जुलाई मास तक बृहस्पति नवें भाव में फिर वर्ष के अन्त तक दसवें भाव में बृहस्पति का होना आप के लिये हर प्रकार से शुभ फलदायक रहेगा, यदि आप को ज़मीन जाईदाद सम्बन्धित कोई समस्या है तो उस समस्या का समाधान इस वर्ष अवश्य होगा यदि आप वाहन इत्यादि लाना चाहते है तो अवश्य इस कार्य को अमली रूप दीजिये। घर पर कोई शुभकार्य करने का प्रोग्राम बनेगा जिस में सभी मित्र सम्बन्धि जन समिलित हो सकते हैं गृहस्थी होने पर स्त्री पक्ष की ओर से मानसिक शान्ति का योग, परन्तु गृहस्थ के किसी वृद्ध के शरीर की समस्या आप को चिन्तित रख सकती है। सूर्य, भौम तथा चन्द्रमा की युति आप को कभी कभी शरीर से अस्वस्थ भी रख सकती है, विद्यार्थियों के लिये हर प्रकार से सफलता देने वाला वर्ष। क्रूर ग्रहों को शान्त करने के लिये आप नित्य



इस मन्त्र का उच्चारण करें तथा वैष्णव रहें।

ॐ नारायणाय सूरसिंहाय नमः।

वृश्चिक राशि का मासिक फल

अप्रैल मास के आरम्भ पर शुभाशुभ ग्रहों के अनुसार यह महीना हर प्रकार से शान्ति तथा सुख के माहोल में गुज़रेगा, आप में आस्तिक प्रवृति बडती रहेगी जो आप के लिये लाभदायक रहेगी, आप में परोपकार की प्रवृति बडती रहेगी, व्यापारी वर्ग के लिये आशा से अधिक लाभ।

मई ग्रहों में विशेष बदलाव न आने के कारण यह महीना भी हर प्रकार से सुख और शान्ति के माहोल में गुज़रेगा, आप की आमदनी भी सन्तोषजनक रहेगी, आप जो भी कार्य करते हैं आप का कार्य अच्छी प्रकार से चलता रहेगा, तथा लाभ भी ठीक ही रहेगा।

जून सातवें भाव में सूर्य, भौम तथा बुध के एक साथ होने से स्त्री पक्ष से मानसिक चिन्ता ऐसा न होने पर परिवार के किसी सदस्य की ओर से चिन्ता परन्तु शेष ग्रहों को देखते हुये किसी प्रकार के भय का कोई योग नही है नौकरी पेशा होने पर स्थान परिवर्तन का योग, विद्या प्राप्ति के लिये उत्तम महीना।

जुलाई मास के आरम्भ पर आठवें भाव में सूर्य तथा भौम का होना शरीर सुख का सूचक नही है रक्त विकार चोट का भय यदि जातक से किसी अच्छे ग्रह की दशा चल रही है तो किसी प्रकार का भय नही ऐसा न होने पर शरीर के विषय में सावधान रहने की जरूरत, विद्या प्राप्ति के लिये उत्तम महीना।

अगस्त मास के आरम्भ पर दसवें भाव में बृहस्पति के आने से दरबार में बहुत दिनों से रुकी हुई पदोन्नति का योग, दरबार में हर समय आदर व मान का योग आमदनी की दृष्टि से भी यह महीना हर प्रकार से लाभदायक रहेगा, गृहस्थी होने पर स्त्री पक्ष से शान्ति, विद्या प्राप्ति के लिये उत्तम महीना।

सप्तम्बर शुभाशुभ ग्रहों का पलडा एक जैसा होने के कारण यह महीना हर प्रकार से सामान्य रूप में ही गुज़रेगा आप की आमदनी भी कभी कभी डगमगाती हुई दिखेगी परन्तु आप का

हर कार्य अच्छी प्रकार से चलता रहेगा, खर्च के बडे बडे प्लान बनेंगे विद्यार्थियों के लिये संघर्ष का महीना।

अक्टूबर मास के आरम्भ पर चार ग्रहों का शुभ स्थिति में होना हर प्रकार से शुभफल को दर्शाता है विशेष तौर से आप की आर्थिक स्थिति दृढ रहेगी। आप जो भी कार्य करते हैं आप का कार्य अच्छी प्रकार से चलता रहेगा तथा लाभ भी आशा के अनुरूप ही होगा।

नवम्बर मास के आरम्भ पर ग्रहों की अस्तव्यस्त स्थिति को देखते हुये ऐसे प्रतीत होता है कि यह मास दौड धूप के माहोल में ही गुज़रेगा बने बनाये कार्यों में रुकावट का योग जो आप की अशान्ति का कारण बनेगा नौकरी पेशा होने पर दफतर का माहोल आप के अनुकूल न होते हुये भी अफसर लोगों के साथ अच्छी बनेगी।

दिसम्बर बारहवें भाव का शुक्र तथा ग्यारहवें भाव का भौम आप की आर्थिक स्थिति को दृढ रख सकता है तथा किसी अच्छे कार्य पर धन खर्च करने का प्रोग्राम बन सकता है जिस की प्रतीक्षा आप बहुत समय से कर रहे हैं, सन्तान पक्ष से कोई शुभ समाचार मिलने का योग।

जनवरी मास के आरम्भ पर बारहवें भाव का भौम आप के शरीर को प्रभावित कर सकता है व्यापारी होने पर लोगों के पास पैसा फस जाने का योग तथा थोडी सी हानी का योग, नौकरी पेशा होने पर आप का कार्य अच्छी प्रकार से चलता रहेगा। विद्या प्राप्ति के लिये उत्तम महीना।

फरवरी चार ग्रहों का मास के आरम्भ पर शुभ होना शुभफल का सूचक है आप जिस प्रकार का कार्य करते हैं उस में आशा से अधिक लाभ तथा शान्ति का योग, यदि आप किसी काम की तलाश में है उस प्रकार के काम के लिये ग्रह अनुकूल नही हैं विद्यार्थियों के लिये सफलता का महीना।

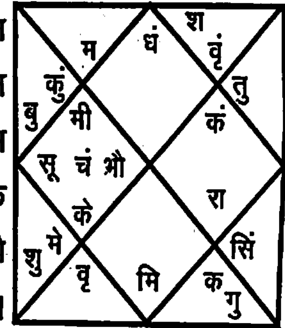
मार्च पहले भाव का भौम तथा शनि शुभफल के द्योतक नही है यह आप के प्रत्येक कार्य में अडचन ला सकते है। इस कारण आप प्रत्येक कार्य को मन लगा कर करें तभी सफलता की आशा रखें। विद्यार्थियों को भी चाहिये कि डट कर पढाई करें तभी सफलता की आशा रखें। यदि आप किसी ट्रेनिंग इत्यादि के लिये कोशिश करते हैं तो थोडा सा प्रयत्न करने पर उस में सफलता होगी।

धनु (Sagittarius) राशि का वर्षफल



नक्षत्र	मूला				पूर्वाषाढा				उत्तरा0
चरण	1	2	3	4	1	2	3	4	1
नामाक्षर	ये	या	भा	भी	भू	ध	फ	ढ	भे

वर्ष के आरम्भ पर अशुभ ग्रहों का पलडा भारी होने के कारण धनु राशि वालों के लिये नया वर्ष कोई शुभ सन्देश लेकर नही आया है गोचर फलित के अनुसार चौथे भाव में सूर्य, चन्द्रमा, भौम तथा केतु की युति होने से मानसिक तथा शारीरिक व्यथा, घरेलू झगडों के कारण सुखों में कमी, जमीन जाईदाद सम्बन्धी अनेक प्रकार की समस्यायें, मान हानि का योग, विवाहित जीवन में अडचन, स्वजनों से झगडा, छाती में विकार, जल तथा स्त्री जाती से भय, स्त्री सुख की कमी इत्यादि गोचर चक्र के ग्रहों को ज्योतिष फलित की कसौटी पर परखने से प्रतीत होता हैं यह वर्ष धनु राशि वालों के लिये दौड धूप तथा संघर्ष से परिपूर्ण होगा आप का कोई भी कार्य बिना अडचन के सिद्ध होगा नही, बने बनाये काम बिगड सकते हैं आप की आर्थिक स्थिति भी डांवां डोल ही रहेगी कभी धन की कमी कभी धन की अधिकता।



गृहस्थी होने पर स्त्री पक्ष की ओर से शान्ति परन्तु घर के किसी सदस्य की ओर से किसी प्रकार की चिन्ता का योग यदि आप किसी प्रकार का कारोबार करते हैं तो अपने कार्य को ज्यादा बडाने की कोशिश नही करना वह आप के लिये हानि कारक रहे गा कुछ पैसा फसने का योग भी है यदि आप को जातक में ग्रहों की स्थिति अच्छी है तथा किसी अच्छे ग्रह की दशा चल रही है तो गोचर चक्र के पूरे ग्रहों पर भी उस दशा का प्रभाव अच्छी ही पडेगा तथा धनु राशि वालों का यह वर्ष फिर शान्ति के माहोल में ही गुज़रेगा, पंचम स्थान में शुक्र होने से विद्यार्थियों के लिये सफलता का वर्ष रहेगा, क्रूर ग्रहों को शान्त करने के लिये इस मन्त्र का उच्चारण करें

तथा भगवान् शंकर पर नित्य जल चढायें।

ॐ श्री देव कृष्णाय ऊर्ध्वजाय नमः।

धनु राशि का मासिक फल

अप्रैल मास के आरम्भ पर अशुभ ग्रहों का पलडा भारी होने के कारणं यह महीना दौडधूप के माहोल में ही गुज़रेगा आप जो भी कार्य करते हैं आप का कार्य अच्छी प्रकार से चलता रहेगा नौकरी पेशा होने पर दफतर का माहोल अनुकूल न होने पर भी आदर व मान का योग, विद्या प्राप्ति के लिये उत्तम महीना।

मई दसवें भाव में चन्द्रमा तथा राहु होने से नौकरी पेशा होने पर स्थान परिवर्तन का योग जो आप के लिये शुभ नहीं रहेगा, व्यापारी होने पर कार्य में सिद्धि तथा लाभ का योग, गृहस्थी होने पर स्त्री पक्ष की ओर से लाभ तथा शान्ति का योग, अपने सम्बन्धियों के साथ अनबन का योग।

जून मास के आरम्भ पर पांच ग्रहों का शुभ स्थिति में होना हर प्रकार से आप के लिये लाभ प्रद रहेगा आप जो भी कार्य करते हैं आप का कार्य बिना किसी अडचन के सिद्ध होगा तथा आशानुरूपं फल भी मिलेगा, देर से टिके हुये कार्य भी सिद्ध होने का योग, सन्तान पक्ष से कोई शुभ समाचार मिलने का योग।

जुलाई आठवें भाव का बृहस्पति आप के शरीर को प्रभावित कर सकता है यदि आप शरीर से पहले से ही अस्वस्थ हैं तो सावधान रहने की जरूरत, आप की आर्थिक स्थिति कुछ डांवां डोल दिखाई देती रहेगी जो आप की परेशानी का कारण बनेगा। पांचवें भाव में शुक्र होने से विद्यार्थियों के लिये सफलता देने वाला महीना।

अगस्त मास के आरम्भ पर ही आठवें भाव में सूर्य तथा भौम देवता का आना शुभफल के सूचक नही हैं विशेष तौर से रक्त विकार अथवा चोट का भय, परन्तु नवें भाव में बृहस्पति के आने से किसी प्रकार के भय का कोई योग नही है, आप को आस्तिकता की ओर प्रवृति बडेगी।

सप्तम्बर मास के आरम्भ पर शुभ ग्रहों का पलडा भारी होने के कारण यह महीना हर प्रकार से शान्ति के माहोल में

गुज़रेगा यदि आप नौकरी करते हैं तो दफतर का माहोल आप के अनुकूल रहेगा बहुत देर से टिकी हुई विभागीय पदोन्नति का योग, आप की आमदनी भी सन्तोषजनक रहेगी।

अक्टूबर पांच ग्रहों का शुभ होना हर प्रकार से शुभफल को दर्शाता है आप जिस प्रकार का काम करते हैं आप का काम चलता रहेगा तथा लाभ भी आशा के अनुरूप मिलता रहेगा यदि आप नौकरी इत्यादि की तलाश में हैं तो आप विश्वास रखें कि आप का यह काम अवश्य होगा।

नवम्बर सभी ग्रहों का नवें, दसवें, ग्यारहवें तथा बारहवें भाव में होना एक शुभ योग का सूचक जो आप के प्रत्येक कार्य पर अपना शुभ प्रभाव डाले बिना नहीं रहेगा। आप की आमदनी भी सन्तोषजनक रहेगी तथा खर्च के प्लान भी बनते रहेंगे। विद्या प्राप्ति के लिये उत्तम महीना।

दिसम्बर बारहवें भाव का सूर्य तथा बुध आप के शरीर को प्रभावित कर सकता है परन्तु शेष ग्रहों की स्थिति को देखते हुये किसी प्रकार के भय का कोई योग नहीं है नौकरी पेशा होने पर दरबार में आदर व मान योग, अपने अफसर लोगों से अच्छी बनेगी जो आप के लिये शुभ है।

जनवरी मास के आरम्भ पर छः ग्रहों का शुभ स्थिति में होना हर प्रकार से शुभ फल को दर्शाता है इस शुभ योग के प्रभाव से आप का प्रत्येक कार्य सफलता पूर्वक सम्पन्न होगा, रुके हुये कार्य हरकत में आयेंगे, आप की आर्थिक स्थिति हर प्रकार से सन्तोषजनक रहेगी।

फरवरी ग्रहों में खास बदलाव न होने के कारण यह महीना भी हर प्रकार से शान्ति के माहोल में ही गुज़रेगा किसी नवजात शिशु के आगमन का योग अथवा सन्तानपक्ष से कोई शुभ सन्देश का योग। आप की आमदनी भी ठीक ही रहेगी परन्तु खर्च का योग भी प्रबल है, विद्या प्राप्ति के लिये उत्तम योग।

मार्च मास के आरम्भ पर बारहवें भाव में भौम तथा चन्द्रमा का होना शरीर सुख का सूचक नही है परन्तु गोचर चक्र में पांच ग्रहों के शुभ स्थिति में होने से किसी प्रकार के भय का कोई योग नही है गृहस्थी होने पर स्त्री पक्ष की ओर से शुभफल परन्तु घर के किसी सदस्य के शरीर सम्बन्धित चिन्ता का योग। विद्यार्थियों के लिये सफलता का महीना।

मकर (Capricorn) राशि का वर्षफल



नक्षत्र	उत्तराषाढा			श्रावण				धनिष्ठा	
चरण	2	3	4	1	2	3	4	1	2
नामाक्षर	भो	ज	जी	खी	खू	खे	खो	ग	गी



वर्ष के आरम्भ पर आठ ग्रहों का शुभ स्थिति में होना हर प्रकार से शुभ फल की ओर इशारा हैं गोचर फलित के अनुसार तीसरे भाव में सूर्य, चन्द्र तथा भौम के होने से रोगों से मुक्ति, सुख चैन, सज्जनों एवं उच्च राज्याधिकारियों से मेल मिलाप, पुत्रों और मित्रों से धन लाभ तथा सम्मान, लक्ष्मी तथा मान प्रतिष्ठा की प्राप्ति, स्वस्थ शरीर, शत्रुओं पर विजय, बन्धु जनों से लाभ, जनता से प्रेम, भाग्य में वृद्धि, साहस में वृद्धि, वैयक्तिक प्रभाव में वृद्धि, राज्य की ओर से सहायता, तर्क शक्ति में वृद्धि, आनन्द की वृद्धि, धन आभूषणों की प्राप्ति, भाषण शक्ति में वृद्धि और लाभ, विद्या प्राप्ति का उत्तम योग, सम्बन्धियों से धन की प्राप्ति, सातवां बृहस्पति होने से चिन्ता में वृद्धि, चोट आदि से भय, राज्य के कर्मचारियों से अनबन तथा उन से भय और हानि का योग, धन होते हुये भी धन की कमी, सन्तान सुख का कोई योग नहीं इत्यादि। गोचर चक्र के सभी ग्रहों को अष्टकवर्ग तथा वेध की कसौटी पर परखने से विदित होता है यह वर्ष मकर राशि वालों के लिये दौड धूप का होते हुये भी अन्ततत: सफलता से पूर्ण तथा हर प्रकार से लाभदायक रहे गा, आप जो भी कार्य करते हैं आप का कार्य अच्छी प्रकार से चलता रहेगा तथा लाभ भी होता रहेगा, घर पर कोई शुभ कार्य करने का प्रोग्राम बन सकता है जिस की प्रतीक्षा आप बहुत समय से कर रहे थे, यदि आप को प्रापर्टी सम्बन्धित कोई मसला है वह इस वर्ष में अवश्य हल होगा विद्यार्थियों के लिये हर प्रकार से सफलता का वर्ष यदि आप उच्च विद्या अथवा ट्रेनिंग के लिये कही जाना चाहते है तो ग्रह आप के सहायक रहेंगे। क्रूर ग्रहों को शान्त करने के लिये

आप नित्य भगवान् शंकर पर जल चडाया करें तथा इस मन्त्र का उच्चारण नित्य करें।

ॐ श्रीं वत्सलाय नमः।

मकर राशि का मासिक फल

अप्रैल शुभाशुभ ग्रहों का पलडा एक जैसा होने के कारण यह महीना हर प्रकार से शान्ति के माहोल में ही गुज़रेगा आप की आमदनी भी सन्तोषजनक रहेगी नौकरी पेशा होने पर दफतर का माहोल आप के अनुकूल रहेगा तथा दफतर में आदर व मान का योग, विद्या प्राप्ति के लिये उत्तम महीना।

मई मास के आरम्भ पर चौथे भाव का सूर्य तथा भौम आप के शरीर को प्रभावित कर सकता है। यदि आप शरीर से पहले से ही अस्वस्थ हैं तो सावधान रहने की जरूरत, आप जो भी कार्य करते हैं वह अच्छी प्रकार से चलता रहेगा परन्तु आमदनी आप के अनुरूप नही रहने से चिन्ता का योग।

जून अशुभ ग्रहों का पलडा भारी होने के कारण यह महीना दौड धूप के माहोल में ही गुज़रेगा आप जो भी कार्य करते हैं बिना रुकावट के सिद्ध होगा नही आप की आर्थिक स्थिति भी डांवां डोल रहेगी कभी धन की अधिकता कभी धन की कमी आप जो भी कार्य करते हैं अपने काम को अच्छी प्रकार से करो तभी सफलता होगी।

जुलाई मास के आरम्भ पर छठे भाव में सूर्य तथा भौम का एक साथ होना हर प्रकार से शुभफल को दर्शाता हैं यदि आप नौकरी करते हैं तो दफतर का माहोल आप के अनुकूल रहेगा तथा आप को देर से रुकी हुई विभागीय पदोन्नति का अवसर मिल सकता है।

अगस्त सातवें भाव में सूर्य, भौम तथा बुध का एक साथ होना स्त्री पक्ष की ओर से चिन्ता का सूचक अथवा घर के किसी सदस्य की ओर से शारीरिक चिन्ता का योग, ऐसा अशुभ योग होने पर भी किसी विशेष भय का कोई योग नही है आप की आमदनी ठीक ही रहेगी, विद्या प्राप्ति के लिये उत्तम महीना।

सप्तम्बर शुभाशुभ ग्रहों का पलडा एक जैसा होने के कारण

यह महीना हर प्रकार से सुख और शान्ति के माहोल में गुज़रेगा। आठवां सूर्य तथा बृहस्पति आप को थोडा बहुत अस्वस्थ रख सकता है। ग्यारहवां शनि आप की आर्थिक स्थिति को दृढ रखेगा।

अक्टूबर ग्रहों में विशेष बदलाव न आने के कारण यह महीना भी गत मास की तरह ही शान्ति के माहोल में गुज़रेगा, घर पर सगे सम्बन्धियों का आना जाना ज़ोरों पर रहेगा, सामाजिक कार्यों की ओर प्रवृति बडेगी, विद्यार्थियों के लिये सफलता का महीना।

नवम्बर मास के आरम्भ पर आठवें भाव में चार ग्रहों चन्द्रमा, भौम, बृहस्पति तथा शुक्र का एक साथ होना शरीर सुख का सूचक नही है यह आप को शरीर की ओर से चिन्तित रख सकते हैं परन्तु यदि जातक में आठवें भाव की स्थिति अच्छी है तो किसी प्रकार के भय का कोई योग नही है।

दिसम्बर ग्यारहवें भाव में सूर्य, बुध तथा शनि का एक साथ आना आप की आर्थिक स्थिति के लिये अच्छा है कारोबारी वर्ग को आशा से अधिक लाभ का योग, नौकरी पेशा होने पर भी हर प्रकार से लाभदायक तथा सफलता देने वाला महीना।

जनवरी शुभ ग्रहों का पलडा भारी होने के कारण यह महीना हर प्रकार से शान्ति तथा सुख के माहोल में गुज़रेगा आप का कार्य अच्छी प्रकार से चलता रहेगा, किसी छोटी मोटी यात्रा का प्रोग्राम भी बन सकता है जो आप के लिये लाभप्रद रहेगी। विद्यार्थियों के लिये हर प्रकार से सफलता देने वाला महीना।

फरवरी ग्रहों में खास हेर फेर न होने के कारण यह मास भी गतमास की तरह सुख और शान्ति के माहोल में ही गुजरेगा आप की आमदनी खर्च के अनुसार ही रहेगी, खर्च का योग भी प्रबल है, सन्तान पक्ष से कोई शुभ समाचार मिलने का योग।

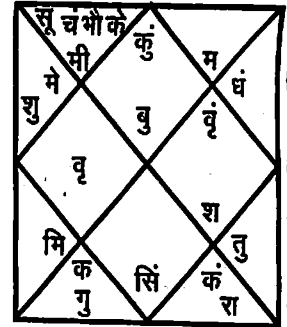
मार्च मास के आरम्भ पर पांच ग्रहों का शुभ होना हर प्रकार से सुख और शान्ति के सूचक है दरबार में अथवा समाज में हर प्रकार से आदर व मान का योग, यदि आप लेखक है तो किसी प्रकार से सम्मानित करने का अवसर मिल सकता है।

कुम्भ (Aquarius) राशि का वर्षफल



नक्षत्र	धनिष्ठा		शतभिषजि				पू0 भाद्रपदा		
चरण	3	4	1	2	3	4	1	2	3
नामाक्षर	गु	गे	गो	स	सी	सू	से	सो	द

वर्ष के आरम्भ पर अशुभ ग्रहों का पलडा भारी होने के कारण कुम्भ राशि वालों के लिये इस वर्ष का आरम्भ सर्घष के साथ होगा परन्तु आगे चलते ग्रहों में बदलाव आने के कारण बिगडी हुई स्थिति सुधर सकती है गोचर फलित के अनुसार तीसरा शुक्र तथा आठवां राहु होने से मित्रों की वृद्धि शत्रुओं की पराजय, धन की प्राप्ति, साहस में वृद्धि, नौकरों का सुख, मान सम्मान में वृद्धि, भाग्योदय, राज्य की ओर से लाभ, बहिन भाइयों का सुख, धर्म में रुचि, अकस्मात धन की वृद्धि, शरीर अस्वस्थ इत्यादि गोचर चक्र के ग्रहों को वेधाष्टक वर्ग की कसौटी पर परखने से विदित होता है कि कुम्भ राशि वालों के लिये यह वर्ष संघर्ष का होते हुये भी किसी हानि का सूचक नही है आप जो भी कार्य करते हैं आप का कार्य अच्छी प्रकार से चलता रहेगा परन्तु आप की आमदनी सन्तोषजनक न होने के कारण चिन्ता का योग।



घर पर खर्च के बडे बडे प्लान बनते रहेंगे तथा खर्च भी होगा परन्तु किसी से मांगने की नौबत नही आयेगी यदि आप नौकरी करते हैं तो राज्याधिकारियों की ओर से मान सम्मान तथा लाभ अथवा विभागीय पदोन्नति का योग। यदि आप अविवाहित हैं तो इस प्रकार का कार्य इस वर्ष आवश्य हो सकता है आठवां राहु आप को स्थान परिवर्तन भी करा सकता है जो आप के लिये लाभदायक रहेगा, सन्तान पक्ष की ओर से चिन्ता का योग। विद्यार्थियों के लिये हर प्रकार से सफलता देने वाला महीना। क्रूर ग्रहों को शान्त करने के लिये नित्य इस मन्त्र का उच्चारण करते रहे।

ॐ श्रीं उपेन्द्राय अच्युताय नमः।

कुम्भ राशि का मासिक फल

अप्रैल मास के आरम्भ पर केवल तीन ग्रहों का शुभ स्थिति में होना दौड धूप का ही सूचक है परन्तु आप के किसी कार्य में किसी प्रकार की अडचन का कोई योग नहीं है आप की आर्थिक स्थिति डीली होने पर किसी प्रकार से अशान्ति देने वाली नही है।

मई पांच ग्रहों का शुभ स्थिति में होना शुभ फल को दर्शाता है इन के प्रभाव से यह महीना सुख और शान्ति के माहोल में ही गुज़रेगा यदि आप को मकान इत्यादि किसी प्रकार की प्रार्पटी का कोई मसला है तो वह अवश्य हल होगा आप की आर्थिक स्थिति भी सुदृढ रहेगी।

जून शुभाशुभ ग्रहों के अनुसार यह मास भी गत मास की तरह सुख और शान्ति के माहोल में गुज़रेगा आप जो भी कार्य करते है आप का काम अच्छी तरह से चलेगा तथा लाभ भी आशा के अनुरूप मिलेगा, गृहस्थी होने पर गृहस्थी की ओर से शान्ति का योग।

जुलाई मास के आरम्भ पर ग्रहों में बदलाव आने के कारण शरीर अस्वस्थ रह सकता है परन्तु किसी विशेष भय का कोई योग नही है यदि आप को सन्तान पक्ष से किसी प्रकार की चिन्ता है उस समस्या का समाधान थोडा बहुत निकल सकता है शेष आप जो भी काम करते हैं आप का कामं चलता रहेगा।

अगस्त मास के आरम्भ पर छठे भाव में तीन क्रूर ग्रहों का एक साथ बैठना शुभ फल का सूचक, शत्रु पराजय का योग दरबार में हर समय आदर व मान का योग तथा अपने अफसरों के साथ मिलने जुलने का अवसर जो आप के लिये हर प्रकार से लाभदायक रहेगा, विद्या प्राप्ति के लिये भी हर प्रकार से सफलता देने वाला मास।

सप्तम्बर शुभाशुभ ग्रहों का पलडा एक जैसा होने के कारण यह महीना सामान्य रूप से शान्ति के माहोल में ही गुज़रेगा आप की आमदनी भी आशानुरुप ठीक रहेगी, स्त्री पक्ष से कुछ मानसिक अशान्ति, नौकरी पेशा होने पर दरबार का माहोल आप के अनुकूल रहेगा, यदि आप किसी सामाजिक

संगठन से सम्बन्ध रखते हैं तो वहां पर आदर व मान का योग।

अक्टूबर मास के आरम्भ पर आठवें भाव का सूर्य बुध तथा राहु आप के शरीर को प्रभावित कर सकते है। जिस कारण शरीर थोडा बहुत अस्वस्थ रह सकता है। शेष ग्रहों के देखते हुये यह महीना हर प्रकार से शान्ति के माहोल में ही गुज़रेगा तथा आप की आमदनी भी सन्तोषजनक रहेगी।

नवम्बर ग्रहों की अस्तव्यस्त स्थिति को देखने से विदित होता है कि यह मास कुछ अशान्ति के माहोल में ही गुज़रेगा, बने बनाये कार्यों में अडचन आने के कारण मानसिक अशान्ति का योग, आप की आर्थिक स्थिति भी बिगडती हुये दिखे गी परन्तु किसी प्रकार की हानि का कोई योग नहीं है।

दिसम्बर मास के आरम्भ पर आठवां भौम आप को शरीर से अस्वस्थ रख सकता है परन्तु शेष ग्रहों की स्थिति को देखते हुये किसी प्रकार के भय का कोई योग नही है आप की आर्थिक स्थिति में मनोवाञ्छित सुधार होगा आप का प्रत्येक कार्य बिना रुकावट के चलता रहेगा।

जनवरी शुभाशुभ ग्रहों को देखते हुये प्रतीत होता है कि नये वर्ष का पहला मास कुम्भ राशि वालों के लिये कोई विशेष शुभ सन्देश लेकर नहीं आया है शरीर अस्वस्थ रहने का योग, मानसिक चंचलता का योग, नौकरी पेशा होने पर दरबार की ओर से चिन्ता का योग, विद्यार्थियों के लिये भी सघंर्ष का महीना।

फरवरी मास के आरम्भ पर बारहवें भाव का सूर्य आप को शरीर से अस्वस्थ रख सकता है, ग्यारहवें भाव का बुध तथा शुक्र आप की आर्थिक स्थिति को सुदृढ बनायेगा तथा प्रत्येक कार्य में मनोवांछित सफलता का योग, गृहस्थी होने पर स्त्री पक्ष से शान्ति तथा लाभ।

मार्च बारहवां बुध तथा शुक्र होने से घर पर कोई शुभ प्रोग्राम बनने का योग जिस में आप के मित्र सम्बन्धी सम्मिलित होने का योग, किसी शुभ कार्य पर धन खर्च करने का योग, दसवें भाव में चन्द्रमा, भौम तथा शनि के होने से दरबार में आदर व मान का योग।

मीन(Pisces)राशि का वर्षफल



नक्षत्र	पू0	उत्तराभाद्रपदा				रेवती			
चरण	4	1	2	3	4	1	2	3	4
नामाक्षर	दि	दु	थ	झ	ञ	दे	दो	चा	चि

वर्ष के आरम्भ पर चार ग्रहों का शुभ स्थिति में होना तथा दो ग्रहों का वेध में होना हर प्रकार से शुभफल को दर्शाता है गोचर फलित के अनुसार सुख और आनन्द की प्राप्ति, रोगों से मुक्ति, गृहस्थ सुख, धन प्राप्ति, हर कार्य में सफलता, पद की प्राप्ति, कारोबार में उन्नति, कोई स्थिर लाभ घर में मांगलिक उत्सव, पुत्र जन्म की संभावना, तर्क शक्ति, सूझ बूझ में वृद्धि, सद्गुणों में वृद्धि, धन की प्राप्ति, स्वस्थ शरीर, उत्तम स्त्री सुख, राज्य की ओर से सुख, विद्या में उन्नति, गायन वादन में रुचि, शत्रुओं का नाश, व्यापार में अचानक वृद्धि, यात्रादि में धन का लाभ, मित्रों तथा राज्य की ओर से लाभ इत्यादि गोचर चक्र के शुभाशुभ ग्रहों पर विचार करने से विदित होता है कि मीन राशि वालों के लिये यह वर्ष शुभ सन्देश लेकर आया है फलित ज्योतिष ने बृहस्पति को उच्च स्थन दिया है यदि गोचर चक्र या जन्म चक्र में बृहस्पति की स्थिति अच्छी होगी तो कोई भी क्रूर ग्रह आप को प्रभावित नहीं कर सकता है

गोचर चक्र में पांचवें भाव में बृहस्पति का होना हर प्रकार से शुभफल का सूचक है विशेष तौर से यह विद्या प्राप्ति तथा सन्तान सुख के लिये उत्तम माना जाता है यदि आप को सन्तान पक्ष से किसी प्रकार की कोई समस्या है तो वह इस वर्ष में हल हो सकती है, आप के घर में पुत्र जन्म का योग, आप की आर्थिक स्थिति भी सन्तोष जनक रहेगी तथा व्यापारी होने पर आशा से अधिक लाभ, यदि आप उच्च विद्या के लिये कहीं जाने का प्रोग्राम बना रहे हैं तो उस को अमली रूप दीजिये, ग्रह आप के अनुकूल हैं। क्रूर ग्रहों को शान्त करने के लिये इस मन्त्र उच्चारण नित्य करें।

ॐ क्लीं उद्धृताय उद्धारिणे नमः।

मीन राशि का मासिक फल

अप्रैल मास के आरम्भ पर ग्रहों की स्थिति को देखने से विदित होता है कि यह मास सामान्य रूप से शान्ति के माहोल में ही गुज़रेगा आप का काम भी सामान्य रूप से चलता रहेगा, नौकरी पेशा होने पर दफतर का माहोल आप के अनुकूल रहेगा, विद्यार्थियों के लिये उत्तम महीना।

मई शुभाशुभ ग्रहों का एक जैसा होना शुभ फल को दर्शाता है इस कारण यह मास हर प्रकार से शान्ति के माहोल में ही गुज़रेगा सन्तान पक्ष की ओर से कोई शुभ समाचार शरीर स्वस्थ रहने का योग, आप की आर्थिक स्थिति भी दृढ रहेगी।

जून मास के आरम्भ पर पांच ग्रहों का शुभ स्थिति में होना हर प्रकार से शुभ फल का सूचक है आप जो भी कार्य करते हैं बिना रुकावट के सफलता का योग, नौकरी पेशा होने पर विभागीय पदोन्नति का योग जिस की प्रतीक्षा आप बहुत समय से करते आये हैं, विद्या प्राप्ति के लिये भी उत्तम महीना।

जुलाई चौथे भाव का सूर्य और भौम आप को शरीर से अस्वस्थ रख सकता है परन्तु शेष ग्रहों की स्थिति को देखते हुये किसी प्रकार के भय का कोई योग नहीं है, समाज में आदर व मान का योग, गृहस्थी होने पर गृहस्थ के किसी सदस्य की चिन्ता का योग। विद्यार्थियों के लिये सफलता का महीना।

अगस्त मास के आरम्भ पर पाचवें भाव में सूर्य, भौम तथा बुध के होने से सन्तान पक्ष की ओर से चिन्ता का योग, नौकरी पेशा होने पर शत्रु पक्ष आप पर हावी होने का प्रयत्न करेगा जो आप के लिये चिन्ता का कारण बनेगा, आप की आर्थिक स्थिति आशानुरूप रहेगी।

सप्तम्बर अशुभ ग्रहों का पलडा भारी होने के कारण यह मास दौड धूप के माहोल में ही गुजरेगा आप जो भी काम करते हैं बिना रुकावट के हल होगा नही यदि आप कोई कारोबार करते हैं तो आप इस को ज्यादा फैलाव मत दो ऐसा न हो कि आप को हानि का मुंह देखना पडे।

अक्टूबर ग्रहों में विशेष बदलाव न आने के कारण यह महीना भी गत मास की तरह दौडधूप तथा संघर्ष के माहोल में गुजरेगा बिना किसी कारण के चिन्ता का योग, कभी धन की कम भी महसूस होगी और खर्च के बडे बडे प्लान भी बनते रहेंगे, विद्यार्थियों के लिये संघर्ष का महीना।

नवम्बर चार ग्रहों का शुभ स्थिति में होना शुभ फल का ही सूचक है, शरीर स्वस्थ रहने का योग गृहस्थी होने पर गृहस्थ सुख का योग किसी विशेष व्यक्ति के साथ मिलने का अवसर मिलेगा जो आप के लिये लाभप्रद रहेगा आप की आर्थिक स्थिति भी सन्तोषजनक ही रहेगी।

दिसम्बर मास के आरम्भ पर शुभाशुभ ग्रहों का पलडा एक जैसा होने के कारण यह मास हर प्रकार से सुख और शान्ति के माहोल में गुज़रेगा आप के रुके हुये कार्य भी हरकत में आयेंगे नौकरी पेशा होने पर अफसर लोगों के साथ मिलने जुलने का अवसर मिलेगा। विद्यार्थियों के लिये हर प्रकार से दौड धूप तथा संघर्ष का महीना।

जनवरी मास के आरम्भ पर आठवां भौम आप को शरीर से अस्वस्थ रख सकता है विशेषतौर से चोट का भय अथवा रक्त विकार, यदि जातक से अच्छे ग्रह की दशा चल रही है तो किसी प्रकार के भय का कोई योग नहीं है आप की आमदनी तथा खर्च एक जैसा रहेगा। गृहस्थी होने पर गृहस्थ की ओर से शान्ति का योग, विद्यार्थियों के लिये सफलता का महीना।

फरवरी मास के आरम्भ में ग्रहों में विशेष बदलाव न होने के कारण शरीर अस्वस्थ रहने का योग, दरबार का योग उत्तम, दरबार में आदर व मान का योग, आप की आमदनी भी ठीक ही रहेगी, सन्तान पक्ष की ओर से मानसिक चिन्ता, विद्या प्राप्ति के लिये उत्तम महीना।

मार्च ग्रहों की अस्तव्यस्त स्थिति पर विचार करने से प्रतीत होता है कि यह मास दौड धूप के माहोल में ही गुजरेगा आप जो भी कार्य करते है बिना परेशानी के हल नही होगा, व्यापारी होने पर आशा के अनुरूप लाभ नही होगा परन्तु हानि का योग भी नही है। विद्यार्थियों के लिये हर प्रकार से संघर्ष का महीना।

साढ-सत्ती

तुला वृश्चिक धनु

तुला तुला राशि वालों की साढसत्ती 9 सप्तम्बर 2009 को आरम्भ हुई है तथा 26 जनवरी 2017 को समाप्त होगी, साढसत्ती का प्रभाव आमतौर पर अशुभ ही होता है परन्तु यदि जातक में शनि देव की स्थिति अच्छी होगी तो साढसत्ती का प्रभाव थोडा सा कम होता है, शनि देव आप की आर्थिक स्थिति तथा गृहस्थ जीवन को थोडा प्रभावित कर सकता है व्यापारी वर्ग के लिये हर प्रकार से लाभदायक। शनि देव को शान्त करने के लिए वैष्णव रहें तथा इस मन्त्र का उच्चारण करें।

ओऽम् शन्नो देवी: आभिष्टाये आपोभवन्तु
पीतये शंय्यो: यो: अभि स्रवन्तु: न:

वृश्चिक वृश्चिक राशि वालों की साढसत्ती 15 नवम्बर 2011 को आरम्भ हुई है तथा 24 जनवरी 2020 को समाप्त होगी, साढसत्ती का समय 7 वर्ष 6 महीने होता है परन्तु शनि के वक्री होने से कभी कभी आठ वर्षों तक भी साढसत्ती रहती है। शनि देव आप के भाग्यस्थान जन्मस्थान तथा चौथे भाव को पूर्ण दृष्टि से देख रहा है शनि की नजर को फलित ज्योतिष में मनहूस माना जाता है यह आप को कभी कभी शरीर से अस्वस्थ रख सकती है। इस को शान्त करने के लिये इस मन्त्र का उच्चारण नित्य करें

ओऽम् ह्रीं हिरण्य गभार्य अव्यक्त रूपपिणे नम:।।

धनु धनु राशि वालों की साढसत्ती 2 नवम्बर 2014 को आरम्भ हुई है तथा 29 अप्रैल 2022 को समाप्त होगी, शनि देव आप के धन भाव, छठे भाव तथा तीसरे भाव को पूर्ण दृष्टि से देख रहा है शनि देव आप की आर्थिक स्थिति को अस्तव्यस्त कर सकता है जिस के प्रभाव से कभी धन की कमी तथा कभी धन की अधिकता, भाई बन्धुओं से अनबन का योग, शनि देव को शान्त करने के लिये इस मन्त्र का उच्चारण नित्य करें।

ओऽम् शं शनैश्चराय नम:।।

ढय्या

सिंह **मेष**

सिंह सिंह राशि वालों की ढय्या 2 नवम्बर 2014 से आरम्भ हुई। यह आम तौर पर ढाई वर्ष तक रहती है इस समय शनि देव का ही प्रभाव होता है शनि का प्रभाव प्रायः खराब ही रहता है शरीर को अस्वस्थ रख सकता है, बने बनाये कार्यों में रुकावट या विलम्ब कर सकता है।

मेष मेष राशि वालों की ढय्या भी 2 नवम्बर 2014 को आरम्भ हुई है यह आप के दरबार तथा कारोबार को प्रभावित कर सकती है, दरबार में अपने अफसर लोगों के साथ अनबन का योग जो आप के लिये परेशानी का कारण बनेगा, कारोबारी वर्ग को सन्तोषजनक लाभ न होने से चिन्ता।

संशोधन

जब किसी के माता अथवा पिता का देहान्त होता है यदि उस का लड़का घर पर नहीं हो कहीं बाहर नौकरी करता हो तो उसके माता अथवा पिता का दांह संस्कार कोई भी कर सकता है, उस अवसर पर लड़के के आने की कोई आवश्यकता नहीं है परन्तु अपने माता पिता के दसवें ग्यारहवें तथा बारहवें दिन पर लड़के का आना ज़रूरी है नवें दिन तक उसके आने की आवश्यकता नहीं है। इस संशोधन को कश्मीरी पण्डित सम्मेलन में 13 सितम्बर 2009 को सर्व सम्मति से पारित किया गया।

- सम्पादक

धर्म शास्त्र, कर्मकाण्ड के विषय में यदि कोई संशय हो तो 9419133233 पर सम्पर्क करें।

पृष्ठ 167 का शेष

सं0	गोत्र	ज़ात
122	ऋषिकन्य गार्ग्य	गोजा
123	देवभारद्वाज	माचा, गडरू
124	वसिष्ठ विश्वामित्र	त्रकरू
125	स्वामिन गौतम	तैमिनी
126	औपमन्यु कौशिक	सपरू
127	नन्द गौतम काश्यप	भटट
128	राज़ कौशिक	भटट
129	उपमन्यो लौगाक्षी	धोबी कारिहलू
130	गोश वाच्य उपमन्यु	पण्डिता
131	देवदत्त गौतम	
	कौशिक भारद्वाज	पण्डित
132	शालाक्यान	पटुवारी
133	रत्न क्वच	रैणा
134	राज पराशर	राजदान
135	कारशाण्डल्य	शिशु
136	देवकश्यप	चत्ता
137	रात्र विश्वामित्र वसिष्ठ	त्रकरू

सं0	गोत्र	ज़ात
138	दर शालक्य	दर
139	काल	मातू, बिन्दरू (मटू)
140	देवशांडल्य	जान, तिंगलू
141	स्वामिन वसिष्ठ	कोठेदार
142	दर कापिष्ठल मानव	भूतनाथ, ज्योतिषी
143	विष्णु आत्रेय	भान
144	विश्वा मित्र अगस्त्य	राज़दान
145	सामन्त	हखू
146	कौशिक	मान्तू
147	दत्त कण्ठ कौशिक	भटट, रैणा
148	कौशिक गार्ग्य	पण्डिता
149	वास गार्ग्य	पण्डिता
150	नावकुश	पाधे
151	भूत औपमन्य शालंकाय	गंजू
152	वार्षज्ञे	पण्डित
153	गौतम वार्षज्ञे	कोल, रैणा
154	स्वामिन वत्सल्य	गासी

सं०	गोत्र	ज़ात
155	वीर वस	सहानी
156	शाण्डल्य	चौपडा
157	केशव भारद्वाज	नजावन
158	शन शण्डल्य	राज़दान, बखशी
159	महन्त भारद्वाज	बखशी
160	कपिल कौशिक	हरकार
161	केशव	खेरा
162	देव कौकिल	किसरू
163	दत्त वैष्णव	रैणा
164	वार्षगणे	हांजूरा
165	स्वामिन वाच उपमन्यु लौगाक्ष	बूनी
166	कण्ठ धौमन्यु	लंगू
167	स्वामिन शाण्डल्य	दास
168	पत्त स्वामिन कौशिक	गारू
169	कार शाण्डल्य	चौधरी

गोत्र लिखाने के लिये सर्म्पक करें :

094191-33233

पं० प्रेमनाथ शास्त्री का

सोलहवां निर्वाण दिवस

(31 अगस्त 2015 को)

पं० प्रेम नाथ शास्त्री का सोलहवां निर्वाण दिवस भाद्र कृष्ण पक्ष द्वितीया सोमवार तदनुसार 31 अगस्त 2015 को तीर्थ राज्य मार्तण्ड में आयोजित किया जा रहा है। समस्त जनता जनार्दन से प्रार्थना है कि कार्यक्रम के अनुसार इस समारोह में सम्मिलित हो कर हमें उत्साहित करें।

कार्यक्रम

कलशस्थापन	30 अगस्त 2015, 9 बजे रात
पूर्णाहुति	31 अगस्त 2015, 1 बजे दिन
पिण्ड प्रवाह	1:30 बजे दिन हरिश्चन्द्र गाट बिजबिहारा
प्रसाद	2 बजे दिन

सिक्खों के गुरुपर्व

(नानकशाही कैलेण्डर के अनुसार)

2015-16 के लिए

श्री गुरु अंगददेव जी	18 अप्रैल
श्री गुरु अर्जुनदेव जी	2 मई
श्री गुरु अमरदास जी	23 मई
श्री गुरु हरगोविन्द जी	5 जुलाई
श्री गुरु हरकिशन जी	23 जुलाई
श्री गुरु रामदास जी	9 अक्टूबर
श्री गुरु नानकदेव जी	25 नवम्बर
श्री गुरु गोविन्द सिंह जी	16 जनवरी 2016
श्री गुरु हरिराय जी	31 जनवरी 2016

कुम्भ महापर्व - नासिक

सिंहे गुरुस्तथा भानुः चन्द्रः चन्द्रक्षयस्तथा
गोदावर्यां तदा कुम्भो जायतेऽ वनिमण्डले।।

इस वर्ष 13 सिप्तम्बर 2015 को सूर्य, चन्द्रमा तथा बृहस्पति तीनों सिंह राशि में इकट्ठे हो रहे हैं जिस कारण गोदावरी (नासिक) का कुम्भ महापर्व का योग बनता है।

निषेध समय 2015-16 के लिये

अधिक मास	16 जून से 16 जुलाई तक
शुक्र अस्त बृहस्पति अस्त	4 अगस्त से
स्यंध (सिंह में सूर्य)	17 सिप्तम्बर तक
श्राद्ध	28 सिप्तम्बर से 12 अक्टूबर तक
धनु में सूर्य (पौह)	16 दिसम्बर से 14 जनवरी 2016 तक
चैत्र कृष्ण पक्ष	24 मार्च से 7 अप्रैल तक

मांस खाना निषेध है (धर्म शास्त्र)

देव यज्ञो पितृश्राद्धे तथा मांगल्य कर्मणि
तस्यैव नरके वासो यो कुर्यात् जीवघातनम्।
अर्थातः देव यज्ञ पर पितृश्राद्ध (ग्यारहवां, बारहवां दिन) पर तथा किसी मंगल कर्म (जन्म दिन आदि पर) जो मांस का प्रयोग अथवा किसी प्रकार की हिसां करता है उसे नरक मिलता है।

मधुमांसे प्राश्य-आलभ्य वा शरीरं पुनर्व्रतम्-आलभेथाः
(उपनिषद्ध)
अर्थः जो ब्रह्मण अथवा ब्रह्मचारी मांस खाये अथवा मांस का स्पर्श करे उस को नया यज्ञोपवीत संस्कार करना चाहिये।

क्व क्व मांस क्वास्ति वै भक्तिः क्वमद्ये
क्व शिवार्चनम्, मद्यमासानु रक्तानां दूरे तिष्ठति शंकरः।
(उपनिषद्ध)
अर्थः कहां मांस खाना, कहां भकित (पूजा पाठ करना) कहां शिवपूजा कहां मांस और शराब का सेवन। मद्य मांस खाने वालों से शंकर दूर भागता है।

भगवान् व्यास कहते हैंः-
सुरां मत्स्यान् मघु-मांसम्-आसवं कृत्सरोदनम्
धूर्तिः प्रवर्तितं धर्मं नैतत् वेदेषु कल्पितम्।
अर्थः- शराब पीना, मछली खाना, मास सहित तेल वाला बता (तहर चरवन) खाना अथवा देवता को अर्पण करना, यदि कहीं ऐसा दर्ज है – तो जानना चाहिये यह धर्म ठगों ने चलाया है- वेदों में मांसखाना कहीं भी दर्ज नहीं है।

यदि चेत् खादको न स्यात् न तदा घातको भवेत्
घातकः खाद कार्याय तत् घातयतिवैनरः। (महाभारत)
अर्थः यदि मांस भक्षक न हो तो मारने वाला नहीं होगा, अतः जो मांस खाता है वह पशु हिंसा का प्रेरक है।

यत्र प्राणि-वधो धर्मः अधर्मः तत्र कीदृशः,
ब्रह्मणे यत्र मांसाशी चण्डालः तत्र कीदृशः।।
अर्थः जहां प्राणिहत्या धर्म माना जाता है अधर्म के विषय में वहां क्या कहा जाय। जहां ब्राह्मण ही मास खाता हो, वहां चण्डाल कैसा होगा।

यज्ञोपवीत तथा विवाह मुहूर्त

अप्रैल - मई 2016 के लिए

नोट : 24 अप्रैल 16 से 3 जुलाई 16 तक शुक्र अस्त।

साथ रटुन

(यज्ञोपवीत तथा विवाह के लिये साथ रटुन, वस्त्र, मसाला अग्निवत्र, लिवुन, घरनावय मंज लागन्य, मस मुचुरुन इत्यादि)

चैत्र शुक्ल पक्ष

8 अप्रैल प्रतिपदा शुक्रवार

11 अप्रैल पंचमी सोमवार

14 अप्रैल अष्टमी गुरुवार

21 अप्रैल चर्तुदशी गुरुवार

8-20 दिन से

22 अप्रैल पूर्णिमा शुक्रवार

यज्ञोपवीत मुर्हूत

(मेखलि साथ)

2016 के लिये

चैत्र शुक्ल पक्ष

11 अप्रैल पंचमी सोमवार

9-42 दिन से

11-57 दिन तक (मि

विवाह मुर्हूत

(खान्दर साथ)

2016 के लिये

चैत्र शुक्ल पक्ष

17 अप्रैल एकादशी रविवार

9-42 दिन से

11-57 दिन तक (मि

11-57 दिन से

2-21 दिन तक (क

18 अप्रैल द्वादशी सोमवार

1-22 रात से

3-01 रात तक (म

20 अप्रैल चतुर्दशी बुधवार

11-22 दिन से

1-45 दिन तक (क

11-12 रात से

1-14 रात तक (धं

21 अप्रैल चर्तुदशी गुरुवार

11-18 दिन से

1-41 दिन तक (क

11-8 रात से

1-10 रात तक (धं

22 अप्रैल पूर्णिमा शुक्रवार

11-14 दिन से

1-37 दिन तक (क

11-4 रात से

1-6 रात तक (धं

यज्ञोपवीत मुहूर्त राशि के अनुसार

मेष सिंह धन

11 अप्रैल (सू

वृष कन्या मकर

11 अप्रैल (गु

मिथुन तुला कुम्भ

11 अप्रैल (चं

ककर्ट वृश्चिक मीन

11 अपैल

विवाह मुहूर्त राशि के अनुसार

मेष सिंह धनु

17 अप्रैल

18 अप्रैल

20 अप्रैल

21 अप्रैल

22 अप्रैल

वृष कन्या मकर

वृष, कन्या तथा मकर राशि वालों के लिये अप्रैल में कोई मुर्हूत नही है।

मिथुन तुला कुम्भ

17 अप्रैल

18 अप्रैल

20 अप्रैल (चं

21 अप्रैल (चं

22 अप्रैल

ककर्ट वृश्चिक मीन

17 अप्रैल

18 अप्रैल

20 अप्रैल

21 अप्रैल (चं

22 अप्रैल (चं

पन्न दियुन

यदि पन्न देने में किसी प्रकार का विघ्न आयेगा तो आप आश्विन पूर्णिमा या कार्तिक पूर्णिमा को पन्न दे सकते है। उसमें वार इत्यादि देखने की ज़रूरत नहीं है।

धर्म शास्त्र

व्रतों की सूची 2072 के लिये

संकट चतुर्थी (चन्द्रोदय)

मास	तिथि
वैशाख (10-34)	8 अप्रैल
ज्येष्ट (10-19)	7 मई
आषाढ (9-59)	5 जून
अ0 आषाढ (10-13)	5 जुलाई
श्रावण (9-31)	3 अगस्त
भाद्र (8-50)	1 सितम्बर
आश्विन (8-55)	30 सितम्बर
कार्तिक (8-26)	30 अक्टूबर
मार्ग (8-59)	29 नवम्बर
पौष (8-39)	28 दिसम्बर
माघ (9-14)	27 जनवरी
फाल्गुन (9-49)	26 फरवरी
चैत्र (10-17)	27 मार्च

कुमार षष्टी

मास	तिथि	वार
चैत्र	25 मार्च	बुधवार
वैशाख	23 अप्रैल	गुरुवार
ज्येष्ट	23. मई	शनिवार
अ-आषाढ	22 जून	सोमवार
आषाढ	21 जुलाई	भौमवार
श्रावण	20 अगस्त	गुरुवार
भाद्र	19 सितम्बर	शनिवार
आश्विन	18 अक्टूबर	रविवार
कार्तिक	17 नवम्बर	भौमवार
मार्ग	16 दिसम्बर	बुधवार
पौष	15 जनवरी	शुक्रवार
माघ	13 फरवरी	शनिवार
फाल्गुन	13 मार्च	रविवार

अष्टमी व्रत

मास	तिथि	वार
चैत्र	27 मार्च	शुक्रवार
वैशाख	26 अप्रैल	रविवार
ज्येष्ट	26 मई	भौमवार
अ-आषाढ	25 जून	गुरुवार
आषाढ	24 जुलाई	शुक्रवार
श्रावण	23 अगस्त	रविवार
भाद्र	21 सिप्तम्बर	सोमवार
आश्विन	21 अक्टूबर	बुधवार
कार्तिक	19 नवम्बर	गुरुवार
मार्ग	19 दिसम्बर	शनिवार
पौष	17 जनवरी	रविवार
माघ	15 फरवरी	सोमवार
फाल्गुन	16 मार्च	बुधवार

पूर्णिमा व्रत

मास	तिथि	वार
चैत्र	4 अप्रैल	शनिवार
वैशाख	4 मई	सोमवार
ज्येष्ट	2 जून	भौमवार
अ-आषाढ	2 जुलाई	गुरुवार
आषाढ	31 जुलाई	शुक्रवार
श्रावण	29 अगस्त	शनिवार
भाद्र	28 सिप्तम्बर	सोमवार
आश्विन	27 अक्टूबर	भौमवार
कार्तिक	25 नवम्बर	बुधवार
मार्ग	25 दिसम्बर	शुक्रवार
पौष	23 जनवरी	शनिवार
माघ	22 फरवरी	सोमवार
फाल्गुन	23 मार्च	बुधवार

अमावसी व्रत

वैशाख	18 अप्रैल	शनिवार
ज्येष्ट	18 मई	सोमवार
आषाढ	16 जून	भौमवार
अ-आषाढ	16 जुलाई	गुरुवार
श्रावण	14 अगस्त	शुक्रवार
भाद्र	13 सितम्बर	रविवार
आश्विन	12 अक्टूबर	सोमवार
कार्तिक	11 नवम्बर	बुधवार
मार्ग	11 दिसम्बर	शुक्रवार
पौष	9 जनवरी	शनिवार
माघ	8 फरवरी	सोमवार
फाल्गुन	9 मार्च	बुधवार
चैत्र	7 अप्रैल	गुरुवार

संक्रान्ति व्रत

वैशाख	14 अप्रैल	भौमवार
ज्येष्ट	15 मई	शुक्रवार
आषाढ	15 जून	सोमवार
अ-आषाढ	17 जुलाई	शुक्रवार
श्रावण	17 अगस्त	भौमवार
भाद्र	17 सितम्बर	गुरुवार
आश्विन	18 अक्टूबर	रविवार
कार्तिक	17 नवम्बर	भौमवार
मार्ग	16 दिसम्बर	बुधवार
पौष	15 जनवरी	शुक्रवार
माघ	13 फरवरी	शनिवार
फाल्गुन	14 मार्च	सोमवार

एकादशी व्रत

चैत्र शुक्ल पक्ष	31 मार्च
वैशाख कृष्ण पक्ष	15 अप्रैल
वैशाख शुक्ल पक्ष	29 अप्रैल
ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष	14 मई
ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष	29 मई
आषाढ कृष्ण पक्ष	12 जून
अ-आषाढ शुक्ल पक्ष	28 जून
अ-आषाढ कृष्ण पक्ष	12 जुलाई
आषाढ शुक्ल पक्ष	27 जुलाई
श्रावण कृष्ण पक्ष	10 अगस्त
श्रावण शुक्ल पक्ष	26 अगस्त
भाद्र कृष्ण पक्ष	8 सितम्बर
भाद्र शुक्ल पक्ष	24 सितम्बर
आश्विन कृष्ण पक्ष	8 अक्टूबर
आश्विन शुक्ल पक्ष	24 अक्टूबर
कार्तिक कृष्ण पक्ष	7 नवम्बर
कार्तिक शुक्ल पक्ष	22 नवम्बर
मार्ग कृष्ण पक्ष	7 दिसम्बर
मार्ग शुक्ल पक्ष	21 दिसम्बर
पौष कृष्ण पक्ष	5 जनवरी
पौष शुक्ल पक्ष	20 जनवरी
माघ कृष्ण पक्ष	4 फरवरी
माघ शुक्ल पक्ष	18 फरवरी
फाल्गुन कृष्ण पक्ष	5 मार्च
फाल्गुन शुक्ल पक्ष	19 मार्च
चैत्र कृष्ण पक्ष	3 अप्रैल

गण्ड मूल नक्षत्रों का आरम्भ और समाप्ति काल

अश्विनी, आश्लेषा, मघा, ज्येष्ठा, मूला, रेवती नक्षत्र गण्डमूल कहलाते हैं गण्डमूल नक्षत्र पर उत्पन्न हुये बच्चों की शान्ति करानी चाहिये यदि जन्मकाल में शान्ति न करवाई गई तो बच्चा जिस नक्षत्र पर पैदा हुआ होगा उसी समय पर बच्चे की शान्ति करानी चाहिये जन्म होने के दिन से 27 दिनों के पश्चात् वही नक्षत्र आयेगा जिस नक्षत्र पर बच्चे ने जन्म लिया होगा।

घर पर बच्चों के साथ कश्मीरी भाषा में बात करें

गण्डान्त आरम्भ				गण्डान्त समाप्त				गण्डान्त आरम्भ				गण्डान्त समाप्त			
21	मार्च	12-54	रात	22	मार्च	11-52	दिन	8	अक्टूबर	6-46	प्रात:	8	अक्टूबर	6-4	शां
30	मार्च	4-47	रात	31	मार्च	6-24	शां	18	अक्टूबर	6-52	प्रात:	18	अक्टूबर	7-33	रात
9	अप्रैल	1-32	रात	10	अप्रैल	1-32	दिन	26	अक्टूबर	8-56	रात	27	अक्टूबर	7-30	प्रात:
18	अप्रैल	12-05	दिन	18	अप्रैल	10-22	रात	4	नवम्बर	1-25	दिन	4	नवम्बर	2-30	रात
27	अप्रैल	11-53	दिन	27	अप्रैल	1-15	रात	14	नवम्बर	12-28	दिन	14	नवम्बर	1-07	रात
7	मई	7-00	प्रात:	7	मई	7-09	शां	23	नवम्बर	6-50	प्रात:	23	नवम्बर	5-45	शां
15	मई	7-30	शां	16	मई	8-13	दिन	1	दिसम्बर	9-23	रात	2	दिसम्बर	10-32	दिन
24	मई	7-43	शां	25	मई	8-07	प्रात:	11	दिसम्बर	7-24	रात	12	दिसम्बर	7-30	प्रात:
3	जून	1-54	दिन	3	जून	1-54	रात	20	दिसम्बर	2-08	दिन	20	दिसम्बर	1-24	रात
11	जून	10-52	रात	12	जून	3-18	दिन	29	दिसम्बर	6-39	प्रात:	29	दिसम्बर	5-26	शां
20	जून	3-51	रात	21	जून	5-15	दिन	7	जनवरी	3-53	रात	8	जनवरी	3-57	दिन
30	जून	10-34	रात	1	जुलाई	10-09	दिन	16	जनवरी	7-31	रात	17	जनवरी	6-53	प्रात:
9	जुलाई	9-06	दिन	9	जुलाई	8-31	रात	25	जनवरी	3-30	दिन	25	जनवरी	4-02	रात
18	जुलाई	11-55	दिन	18	जुलाई	12-59	रात	4	फरवरी	1-07	दिन	4	फरवरी	1-42	रात
28	जुलाई	7-56	प्रात:	28	जुलाई	7-53	शां	12	फरवरी	11-56	रात	13	फरवरी	12-45	दिन
5	अगस्त	3-18	दिन	5	अगस्त	2-24	रात	21	फरवरी	10-56	रात	22	फरवरी	9-58	दिन
14	अगस्त	6-49	शां	15	अगस्त	6-04	प्रात:	2	मार्च	10-05	रात	3	मार्च	10-40	दिन
24	अगस्त	5-13	दिन	24	अगस्त	5-35	रात	11	मार्च	10-20	दिन	11	मार्च	9-00	रात
1	सितम्बर	11-16	रात	2	सितम्बर	10-15	दिन	19	मार्च	4-53	रात	20	मार्च	6-02	शां
10	सितम्बर	12-48	रात	11	सितम्बर	2-13	दिन	30	मार्च	5-30	प्रात:	30	मार्च	6-55	शां
20	सितम्बर	1-01	रात	21	सितम्बर	1-17	दिन	7	अप्रैल	9-09	रात	8	अप्रैल	7-36	प्रात:
29	सितम्बर	9-41	दिन	29	सितम्बर	8-15	रात								

कश्मीर के महात्माओं के श्राद्ध अथवा यज्ञ

नोट : नीचे लिखे गए श्राद्धों में 'दि' 'प्र' के आधार से एक दिन की तिथि आगे पीछे भी हो सकती है स्वयं ठीक कीजिए।

श्री चण्डी ग्राम महात्मा	चैत्र शुक्ल पक्ष सप्तमी	26 मार्च
स्वा भाई टोठ जी	चैत्र शुक्ल पक्ष दशमी	29 मार्च
पं मथुरादास (क्यलम)	चैत्र शुक्ल पक्ष एकादशी	30 मार्च
नन्दकीश्वर महाराज (पुरखू)	चैत्र शुक्ल पक्ष पूर्णिमा	4 अप्रैल
स्वा बोनकाक	वैशाख कृष्ण पक्ष चतुर्थी	8 अप्रैल
स्वा पृथ्वी नाथ पण्डित (दयाल)	वैशाख कृष्ण पक्ष चतुर्थी	8 अप्रैल
मंगल राज भैरव	वैशाख कृष्ण पक्ष पंचमी	9 अप्रैल
ऋीष पीर श्राद्ध	वैशाख कृष्ण पक्ष षष्ठी	10 अप्रैल
स्वा महादेव काक भान	वैशाख कृष्ण पक्ष अष्टमी	12 अप्रैल
श्री सूरदास निर्वाण दिवस	वैशाख कृष्ण पक्ष दशमी	14 अप्रैल
स्वा महेश्वरनाथ मल्ला	वैशाख कृष्ण पक्ष चतुर्दशी	17 अप्रैल
श्री शंकर साहिब	वैशाख शुक्ल पक्ष प्रति	19 अप्रैल
स्वा शम्भु नाथ	वैशाख शुक्ल पक्ष तृतीया	21 अप्रैल
योगीराज धर्मदत्त जी	वैशाख शुक्ल पक्ष-तृतीया	21 अप्रैल
स्वा मोती लाल जी	वैशाख शुक्ल पक्ष अष्टमी	26 अप्रैल
श्री सर्वानन्दजी गुसानी गुण्ड	वैशाख शुक्ल पक्ष एकादशी	29 अप्रैल
स्वा0 दीनानाथ कारिहामा	वैशाख शुक्ल पक्ष चतुर्दशी	3 मई
श्री काक जी	ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष द्वितीया	6 मई
बादशाह कलन्द्र	ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष चतुर्थी	8 मई
स्वा शंकर जू राज़दान	ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष नवमी	12 मई
स्वामी नाथ जी	ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष त्रयोदशी	16 मई
भगवान गोपी नाथ	ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष द्वितीया	20 मई
स्वा आनन्द गोयल गिरि	ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष त्रयोदशी	31 मई
श्री वामन जी	आषाढ कृष्ण पक्ष तृतीया	5 जून
स्वामी नन्दलाल जी	आषाढ कृष्ण पक्ष सप्तमी	9 जून
स्वामी किन टोठ (बडगाम)	आषाढ कृष्ण पक्ष सप्तमी	9 जून
श्री गोबिन्द कौल जलाली	आषाढ कृष्ण पक्ष सप्तमी	9 जून
श्री मोहन लाल ठुस्सु कोफूर	आषाढ कृष्ण पक्ष दशमी	11 जून
श्री चन्द्र काक बचरू	आषाढ शुक्ल पक्ष तृतीया	19 जुलाई
स्वा श्री विभीषण जी	आषाढ शुक्ल पक्ष षष्ठी	22 जुलाई
स्वा त्रिलोकी नाथ भान (दयाल)	आषाढ शुक्ल पक्ष षष्ठी	22 जुलाई
स्वामी आनन्द जी विलगाम	आषाढ शुक्ल पक्ष सप्तमी	23 जुलाई
श्री कण्ठ काक वांचू	आषाढ शुक्ल पक्ष दशमी	26 जुलाई
स्वा0 पुष्कर नाथ	आषाढ शुक्ल पक्ष द्वादशी	28 जुलाई
श्री अमर नाथ वैष्णवी (बव)	आषाढ शुक्ल पक्ष त्रयोदशी	29 जुलाई
श्रीमती राधा देवी (सागाम)	आषाढ शुक्ल पक्ष चतुर्दशी	30 जुलाई
स्वामी लाल जी	श्रावण कृष्ण पक्ष तृतीया	3 अगस्त

श्री नन्द काक शर्मा (वेरीनाग)	श्रावण कृष्ण पक्ष एकादशी	10 अगस्त
ग्रट बब दिवस	श्रावण कृष्ण पक्ष द्वादशी	11 अगस्त
स्वामी कशकाक (मनिगाम)	श्रावण शुक्ल पक्ष पंचमी	19 अगस्त
जानकीनाथ साहिब दर	श्रावण शुक्ल पक्ष नवमी	24 अगस्त
ज्यो0 श्रीकण्ठ शर्मा (बिज0)	श्रावण शुक्ल पक्ष द्वादशी	27 अगस्त
स्वामी गोविन्द कौल	श्रावण शुक्ल पक्ष चर्तुदशी	28 अगस्त
स्वामी गण काक	श्रावण शुक्ल पक्ष पुर्णिमा	29 अगस्त
पं0 प्रेमनाथ शास्त्री	भाद्र कृष्ण पक्ष द्वितीया	31 अगस्त
स्वा सर्वानन्द सहीपोरा	भाद्र कृष्ण पक्ष चतुदर्शी	12 सितम्बर
ज्यो0 प्रकाश काक	भाद्र कृष्ण पक्ष अमावसी	13 सितम्बर
स्वामी परमानन्द जी	भाद्र शुक्ल पक्ष चतुर्थी	17 सितम्बर
माता उमादेवी	भाद्र शुक्ल पक्ष अष्टमी	21 सितम्बर
स्वामी निरंजनाथ कौल	भाद्र शुक्ल पक्ष एकादशी	24 सितम्बर
स्वामी काशीनाथ बब	भाद्र शुक्ल पक्ष द्वादशी	25 सितम्बर
श्री मान भट्ट (फतेहपुरी)	भाद्र शुक्ल पक्ष त्रयोदशी	26 सितम्बर
ब्रह्मचारी श्री कण्ठ कौल (जलाली) (फतेहकदल श्रीनगर)	भाद्र शुक्ल पक्ष चतुदर्शी	27 सितम्बर
श्री शकर साहब	आश्विन कृष्ण पक्ष प्रति	28 सितम्बर
स्वामी लक्ष्मण जी	आश्विन कृष्ण पक्ष चतुर्थी	1 अक्टूबर
स्वामी क्राल बब	आश्विन कृष्ण पक्ष चर्तुदशी	11 अक्टूबर
स्वामी हरिकृष्ण	*आश्विन शुक्ल पक्ष द्वितीया*	*15 अक्टूबर*
स्वा द्वारिका नाथ पण्डित (हितकारी आश्रम नगरोटा)	आश्विन शुक्ल पक्ष नवमी	22 अक्टूबर
श्री शिव जी भागाती	आश्विन शुक्ल पक्ष द्वादशी	24 अक्टूबर
श्री नन्दलाल साहिब लाले बाग	आश्विन शुक्ल पक्ष त्रयोदशी	25 अक्टूबर
श्री परमहंस कृष्णानन्द संतोष	कार्तिक कृष्ण पक्ष द्वितीया	29 अक्टूबर
श्री सिद्ध बब	कार्तिक कृष्ण पक्ष द्वितीया	29 अक्टूबर
ज्योतिषी आफताभ शर्मा	कार्तिक कृष्ण पक्ष चतुर्थी	30 अक्टूबर
स्वा गाश कौल जलाली	कार्तिक कृष्ण पक्ष षष्ठी	1 नवम्बर
स्वा0 विदलाल (गुशी)	कार्तिक कृष्ण पक्ष षष्ठी	1 नवम्बर
श्री मधुसूदन राजदान	कार्तिक शुक्ल पक्ष षष्ठी	17 नवम्बर
श्री महादेव काक रत्नीपोरा	कार्तिक शुक्ल पक्ष अष्टमी	19 नवम्बर
स्वा रामानन्द जी महाराज	कार्तिक शुक्ल पक्ष दशामी	21 नवम्बर
स्वामी आत्माराम	कार्तिक शुक्ल पक्ष एकादशी	22 नवम्बर
स्वा राम धिरि महाराज	मार्ग कृष्ण पक्ष चतुर्थी	29 नवम्बर
स्वामी काशीनाथ हुगामा	मार्ग कृष्ण पक्ष पंचमी	30 नवम्बर
स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती	मार्ग कृष्ण पक्ष षष्ठी	1 दिसम्बर
स्वामी सर्वानन्द जी	मार्ग कृष्ण पक्ष त्रयोदशी	9 दिसम्बर
स्वा स्वयमानन्दजी (मुट्ठी)	मार्ग कृष्ण पक्ष त्रयोदशी	9 दिसम्बर
स्वामी जीवन साहब	मार्ग शुक्ल पक्ष द्वितीया	13 दिसम्बर
स्वा विद्याधर जी	मार्ग शुक्ल पक्ष तृतीया	14 दिसम्बर

स्वामी आफताम जू वंगू	मार्ग शुक्ल पक्ष पंचमी	.16 दिसम्बर
स्वामी कृष्ण जू राजदान	मार्ग शुक्ल पक्ष अष्टमी	19 दिसम्बर
स्वा भट मुत अम्बाला	मार्ग शुकल पक्ष नवमी	19 दिसम्बर
स्वा विद्याधर जी रत्नीपोरा	मार्ग शुक्ल पक्ष त्रयोदशी	23 दिसम्बर
स्वा तारा चन्द जी	पौष कृष्ण पक्ष तृतीया	28 दिसम्बर
स्वा रामदास वैराझी (वितस्ता)	पौष कृष्ण पक्ष पंचमी	30 दिसम्बर
श्री हीम राज बब जी ख्रिव/सुदमहादेव	पौष कृष्ण पक्ष षष्ठी	31 दिसम्बर
श्री रघुनाथ कुकिलू	पौष कृष्ण पक्ष नवमी	3 जनवरी
अभिनव गुप्त निर्वाण दिवस	पौष कृष्ण पक्ष दशमी	4 जनवरी
स्वा केशव नाथ कौल	पौष कृष्ण पक्ष दशमी	4 जनवरी
श्री अशोकानन्द	पौष कृष्ण पक्ष अमावसी	9 जनवरी
स्वामी शिव राम	पौष शुक्ल पक्ष प्रतिपदा	10 जनवरी
श्री राघवानन्द जी	पौष शुक्ल पक्ष तृतीया	12 जनवरी
माता कमलावती काचरू	पौष शुक्ल पक्ष नवमी	18 जनवरी
श्रीमती मथुरा देवी	पौष शुक्ल पक्ष चतुर्दशी	22 जनवरी
श्री आफताभ जी (भास्कर)	माघ कृष्ण पक्ष पंचमी	29 जनवरी
श्री काशी नाथ जी कौल	माघ कृष्ण पक्ष पंचमी	29 जनवरी
स्वा जानकी नाथ पण्डिता(द्रुगमुला)	माघ कृष्ण पक्ष षष्ठी	30 जनवरी
स्वा सत्यानन्द जी महंत	माघ कृष्ण पक्ष अष्टमी	1 फरवरी
स्वामी राम जी ब्रह्म0	माघ कृष्ण पक्ष चतुर्दशी	7 फरवरी
स्वा0 नन्द लाल जी	माघ शुकल पक्ष तृतीया	11 फरवरी
स्वा0 प्रयाग जी (त्रहगाँव)	माघ शुकल पक्ष चुतर्थी	12 फरवरी
श्री दीनानाथ जी भान	माघ शुकल पक्ष द्वादशी	19 फरवरी
स्वामी वामन जी महाराज	माघ शुकल पक्ष त्रयोदशी	20 फरवरी
स्वा0 जीवन साहब	फाल्गुन कृष्ण पक्ष द्वितीया	24 फरवरी
सन्त राम (सत्त बब) द्रुगमुला	फाल्गुन कृष्ण पक्ष द्वितीया	24 फरवरी
शारिका जी	फाल्गुन कृष्ण पक्ष तृतीया	25 फरवरी
स्वा राम कृष्णानन्द सरस्वती	फाल्गुन कृष्ण पक्ष सप्तमी	1 मार्च
स्वा श्यामलाल ओगरा	फाल्गुन कृष्ण पक्ष अष्टमी	2 मार्च
स्वा डा0 सूर्य कण्ठ जी	फाल्गुन कृष्ण पक्ष अष्टमी	2 मार्च
स्वा पुष्कर नाथ कौल (पौष मोत)	फाल्गुन कृष्ण पक्ष नवमी	3 मार्च
ब्रह्म महेश्वर नाथ दर	फाल्गुन शुक्ल पक्ष प्रतिपदा	9 मार्च
स्वामी महताब काक जी	फाल्गुन शुक्ल पक्ष द्वितीया	10 मार्च
स्वा0 रामजुव सफाया (तबरदार)	फाल्गुन शुक्ल पक्ष षष्ठी	14 मार्च
श्री मानकाक जी गौतमनाग	फाल्गुन शुक्ल पक्ष दशमी	18 मार्च
स्वा0 विदलाल मटटू (चन्द्रपुरा)	फाल्गुन शुक्ल पक्ष दशमी	18 मार्च
स्वा जगन्नाथ शाला	फाल्गुन शुक्ल पक्ष द्वादशी	20 मार्च
स्वा0 हरकाक	चैत्र कृष्ण पक्ष सप्तमी	31 मार्च
श्री किशकाक वडीपोरा	चैत्र कृष्ण पक्ष नवमी	2 अप्रैल
ब्रह्मचार्य अर्जुनदेव	चैत्र कृष्ण पक्ष दशमी	3 अप्रैल
श्री श्याम लाल वांचू (हाज़ीन)	चैत्र कृष्ण पक्ष चर्तुदशी	6 अप्रैल
श्री गाशकाक	चैत्र कृष्ण पक्ष अमावसी	7 अप्रैल

कश्मीर के महात्माओं की जयन्तियाँ

नोट : विजयेश्वर पंचांग में उन महानुभावों की जयन्तियाँ लिखी गई हैं जिन का निर्वाण हुआ है। - प्रबन्धक

नाम	तिथि	तारीख
श्री मोहन लाल टुस्सु (कोफूर)	चैत्र शुक्ल पक्ष प्रतिपदि	21 मार्च
स्वा केशवनाथ कौल	चैत्र शुक्ल पक्ष प्रतिपदि	21 मार्च
स्वा नन्दलाल (बडगाम)	चैत्र शुक्ल पक्ष प्रतिपदि	21 मार्च
श्री काशी नाथ जी कौल	चैत्र शुक्ल पक्ष पंचमी	24 मार्च
ज्यो श्री कण्ठ शर्मा (बिजबिहारा)	चैत्र शुक्ल पक्ष चतुर्दशी	3 अप्रैल
स्वा बादशाह कलन्दर	चैत्र शुक्ल पक्ष पूर्णिमा	4 अप्रैल
स्वा महादेव काक भान	वैशाख कृष्ण पक्ष सप्तमी	11 अप्रैल
स्वा जानकी नाथ साहिब दर	वैशाख कृष्ण पक्ष सप्तमी	11 अप्रैल
स्वा लक्ष्मण जी	वैशाख कृष्ण पक्ष द्वादशी	16 अप्रैल
जगद्गुरु शंकराचार्य	वैशाख शुक्ल पक्ष पंचमी	23 अप्रैल
स्वा दीनानाथ भान	वैशाख शुक्ल पक्ष एकादशी	29 अप्रैल
स्वा किनटोठ (यक्षकूर बड़गांव)	वैशाख शुक्ल पक्ष द्वादशी	30 अप्रैल
स्वा गोविन्द कौल जलाली	ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष पंचमी	9 मई
श्री काशी नाथ (बाबा)	ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष अष्टमी	11 मई
स्वा दीनानाथ कारिहामा	ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष नवमी	12 मई
श्री परमहंस कृष्णनन्द संतोष	ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष द्वादशी	15 मई
श्री नन्दकीश्वर महाराज	ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष अमावसी	18 मई
श्री मान भट्ट (मान) फतेहपुरी	ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष प्रतिपदा	19 मई
श्री रघुनाथ कोकिलू	ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष पंचमी	23 मई
श्री राम कृष्णनन्द सरस्वती	ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष अष्टमी	26 मई
श्री 100 रामानन्द जी	ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष अष्टमी	26 मई
श्री हेमराज ख्रिव/सुदमहादेव	ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष अष्टमी	26 मई
श्री सिद्ध बब	ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष नवमी	27 मई
स्वा राम जी धूपवन आश्रम	ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष दशमी	28 मई
रूप भवानी	ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष पूर्णिमा	2 जून
स्वा महादेव काका रत्नीपोरा	ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष पूर्णिमा	2 जून
स्वा राधे श्याम	आषाढ कृष्ण पक्ष प्रतिपदि	3 जून
स्वा भट्ट मोत अम्बाला	आषाढ कृष्ण पक्ष द्वितीय	4 जून
स्वा सत्यानन्द महंत	आषाढ कृष्ण पक्ष तृतीय	5 जून
स्वा श्यामलाल ओगरा	आषाढ कृष्ण पक्ष एकादशी	12 जून
स्वा स्वयमानन्द जी (मुट्ठी)	आषाढ शुक्ल पक्ष षष्ठी	22 जुलाई
भगवान गोपीनाथ जी	आषाढ शुक्ल पक्ष द्वादशी	28 जुलाई
स्वा विद्याधर जी रत्नीपोरा	आषाढ शुक्ल पक्ष त्रयोदशी	29 जुलाई
ज्योतिषी आफताब शर्मा	श्रावण शुक्ल पक्ष षष्ठी	21 अगस्त
स्वा आफताब जी (भास्कर)	श्रावण शुक्ल पक्ष द्वादशी	27 अगस्त
स्वा द्वारिका नाथ पण्डित (हितकारी आश्रम नगरोटा)	श्रावण शुकल पक्ष पूर्णिमा	29 अगस्त
स्वा काशी नाथ बब	भाद्र कृष्ण पक्ष अष्टमी	5 सितम्बर

श्री कृष्णजू राज़दान	भाद्र शुक्ल पक्ष चतुर्थी	17 सितम्बर
लल्लेश्वरी	भाद्र शुक्ल पक्ष अष्टमी	21 सितम्बर
स्वा गाश कौल जलाली	भाद्र शुक्ल पक्ष द्वादशी	25 सितम्बर
ब्रह्मचारी श्रीकण्ठ कौल(जलाली)	भाद्र शुक्ल पक्ष चतुर्दशी	27 सितम्बर
पं0 प्रेमनाथ शास्त्री	आश्विन कृष्ण पक्ष सप्तमी	4 अक्टूबर
श्री जगन्नाथ शाला	आश्विन कृष्ण पक्ष द्वादशी	9 अक्टूबर
स्वा आनन्द जी	आश्विन कृष्ण पक्ष द्वादशी	9 अक्टूबर
स्वा हरकाक	आश्विन कृष्ण पक्ष त्रयोदशी	10 अक्टूबर
स्वा त्रिलोकी नाथ भान (दयाल)	आश्विन शुक्ल पक्ष एकादशी	24 अक्टूबर
परमदयाल पृथ्वी नाथ पण्डित	कार्तिक कृष्ण पक्ष अष्टमी	3 नवम्बर
स्वा महादेव काक भान (तोफ)	कार्तिक कृष्ण पक्ष नवमी	5 नवम्बर
स्वा पुष्कर नाथ कौल	कार्तिक कृष्ण पक्ष द्वादशी	8 नवम्बर
स्वा जानकी नाथ पण्डिता (कुपवारा)	कार्तिक कृष्ण पक्ष त्रयोदशी	9 नवम्बर
श्री तारा चन्द जी	कार्तिक कृष्ण पक्ष अमावसी	11 नवम्बर
चित्रगुप्त जयन्ती	कार्तिक शुक्ल पक्ष द्वितीया	13 नवम्बर
स्वा महताब काक	कार्तिक शुक्ल पक्ष चतुर्थी	15 नवम्बर
स्वा हरि कृष्ण जी	कार्तिक शुक्ल पक्ष एकादशी	22 नवम्बर
श्रीमती कमलाजी काचरू	कार्तिक शुक्ल पक्ष द्वादशी	23 नवम्बर
स्वा पुष्करनाथ जी	कार्तिक शुक्ल पक्ष द्वादशी	23 नवम्बर
चन्डीगाम महात्मा	कार्तिक शुक्ल पक्ष पूर्णिमा	25 नवम्बर
स्वा आशुतोष राज़दान (महात्मा)	मार्ग कृष्ण पक्ष दशमी	6 दिसम्बर
शारिका जी	मार्ग शुक्ल पक्ष द्वितीया	13 दिसम्बर

स्वा जीवन साहिब रैणावारी	मार्ग शुक्ल पक्ष द्वितीया	13 दिसम्बर
श्री श्याम लाल वांचू (हज़ीन)	मार्ग शुक्ल पक्ष द्वितीया	13 दिसम्बर
मस्त बब	मार्ग शुक्ल पक्ष अष्टमी	19 दिसम्बर
शारदा देवी	पौष कृष्ण पक्ष सप्तमी	1 जनवरी
श्री नन्दलाल साहिब लाले बाग	पौष कृष्ण पक्ष दशमी	4 जनवरी
स्वा राम जी	पौष कृष्ण पक्ष द्वादशी	7 जनवरी
श्री मिरज़ा काक जी	पौष शुक्ल पक्ष प्रतिपदा	10 जनवरी
स्वा बोनकाक	पौष शुक्ल पक्ष दशमी	19 जनवरी
ब्र मट्टेश्वर नाथ दर	माघ कृष्ण पक्ष प्रतिपदा	24 जनवरी
स्वा कशकाक (मनिगाम)	माघ शुक्ल पक्ष प्रतिपदा	9 फरवरी
स्वा निरञ्जन नाथ कौल	माघ शुक्ल पक्ष अष्टमी	15 फरवरी
स्वा आफताम जू वंगू	माघ शुक्ल पक्ष दशमी	17 फरवरी
श्री बिदलाल गुशी	फाल्गुन कृष्ण पक्ष चतुर्थी	27 फरवरी
श्री महेश्वर नाथ मल्ला	फाल्गुन कृष्ण पक्ष चतुर्दशी	8 मार्च
स्वा जगदानन्द जी ब्रह्मचारी	फाल्गुन शुक्ल पक्ष तृतीया	11 मार्च
श्री शंकरनाथ राजदान वनपुह	फाल्गुन शुक्ल पक्ष पंचमी	13 मार्च
स्वा रामजु सफाया (तबरदार)	फाल्गुन शुक्ल पक्ष षष्ठी	14 मार्च
स्वा शम्भु नाथ	फाल्गुन शुक्ल पक्ष सप्तमी	15 मार्च
स्वा नन्दलाल जी ब्रह्म0	फाल्गुन शुक्ल पक्ष अष्टमी	16 मार्च
स्वा गोविन्द कौल	फाल्गुन शुक्ल पक्ष त्रयोदशी	21 मार्च
श्री क्राल बब	फाल्गुन शुक्ल पक्ष पूर्णिमा	23 मार्च
स्वा विभीषण जी	चैत्र कृष्ण पक्ष तृतीया	26 मार्च
स्वा सर्वानन्द दर (सहीपोरा)	चैत्र कृष्ण पक्ष चतुर्थी	27 मार्च
स्वा शिव जी भागाती	चैत्र कृष्ण पक्ष सप्तमी	31 मार्च

महत्त्वपूर्ण यात्राएं

यात्रा	तिथि	दिनांक
हारी पर्वत श्रीनगर, देवी आंगन-पलोडा-डोक	चैत्र शुक्ल पक्ष तृतीया	22 मार्च
उमा भगवती यात्रा, भ्रारि आगन	चैत्र शुक्ल पक्ष अष्टमी	27 मार्च
चक्रीश्वर यात्रा हारी पर्वत श्रीनगंर, पलोडा-डोक जम्मू शिवा भगवती यात्रा, अकिन गाम	चैत्र शुक्ल पक्ष नवमी	28 मार्च
यात्रा रुद्रकोर दहाम, देसा डोडा	वैशाख शुक्ल पक्ष तृतीया	21 अप्रैल
कमला यात्रा त्राल	वैशाख शुक्ल पक्ष पंचमी	23 अप्रैल
डुमटबल यात्रा	वैशाख शुक्ल पक्ष एकादशी	29 अप्रैल
गणपतयार यात्रा	वैशाख शुक्ल पक्ष चर्तुदशी	3 मई
त्रिसन्ध्या यात्रा आरम्भ	ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष प्रतिपदा	5 मई
ज्येष्ठा देवी यात्रा	ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष पंचमी	9 मई
नन्दकीश्वर यात्रा, सीर जागीर, आकलपुर, जम्मू	ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष अमावसी	18 मई
क्षीरभवानी यात्रा, तुलमुल, कश्मीर खनबरिन्य यात्रा देवसर	ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष अष्टमी	26 मई
मंज गाम यात्रा मंजगाम लकुटी पुरा यात्रा हरिश्वर यात्रा, खुनमुह	ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष अष्टमी	26 मई
यात्रा चामुण्डा देवी, सर्वाधार, डोडा	ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष अष्टमी	26 मई
श्रीमती हुद्धामाता यात्रा	आषाढ शुक्ल पक्ष अष्टमी	24 जुलाई
प्यठ दरबार यात्रा (दछिन) किशतवाड	आषाढ शुक्ल पक्ष अष्टमी	24 जुलाई
हारी पर्वत श्रीनगर, देवी आंगन, पलोडा डोक	आषाढ शुक्ल पक्ष नवमी	25 जुलाई
लोक भवन यात्रा	आषाढ शुक्ल पक्ष द्वादशी	28 जुलाई
माता भुवनेश्वरी, चन्दपोरा कश्मीर	आषाढ शुक्ल पक्ष त्रयोदशी	29 जुलाई
ख्रिव यात्रा	आषाढ शुक्ल पक्ष चतुर्दशी	30 जुलाई
यात्रा महारानी रुद्रगंगा, देसा डोडा	आषाढ शुक्ल पक्ष पूर्णिमा	31 जुलाई
पांजथ यात्रा	श्रावण शुक्ल पक्ष पंचमी	20 अगस्त
शोपियान यात्रा	श्रावण शुक्ल पक्ष द्वादशी	27 अगस्त
श्री अमर नाथ यात्रा, थजीवारा, बिजबिहारा ध्यानेश्वर यात्रा बांढ़ीपोरा	श्रावण शुक्ल पक्ष पूर्णिमा	29 अगस्त
नबदल यात्रा	भाद्र कृष्ण पक्ष चतुर्थी	2 सिप्तम्बर
पवन सन्ध्या यात्रा वेरीनाग	भाद्र कृष्ण पक्ष अमावसी	13 सिप्तम्बर
शारदा पीठ यात्रा	भाद्र शुक्ल पक्ष अष्टमी	21 सिप्तम्बर

यात्रा	तिथि	दिनांक
उमानगरी यात्रा साधु गंगा शारदा बल गुशी यात्रा कश्मीर हर मुकुट गंगा यात्रा	भाद्र शुक्ल पक्ष अष्टमी	21 सिप्तम्बर
गौतम नाग यात्रा कश्मीर	भाद्र शुक्ल पक्ष एकादशी	24 सिप्तम्बर
व्यथवतुर यात्रा कश्मीर	भाद्र शुक्ल पक्ष त्रयोदशी	26 सिप्तम्बर
पाप हरण नाग अनन्तनाग यात्रा ऐशमुकाम यात्रा कारकूट नाग यात्रा	भाद्र शुक्ल पक्ष चतुर्दशी	27 सिप्तम्बर
विजयेश्वर यात्रा (बिजबिहारा कश्मीर) सोमयार यात्रा श्रीनगर	आश्विन कृष्ण पक्ष अमावसी	12 अक्टूबर
भद्रकाली यात्रा	आश्विन शुक्ल पक्ष नवमी	22 अक्टूबर
यात्रा रुद्रगंगा चन्द्रभागा		
त्रिवेणी घाट डोडा	पौष शुक्ल पक्ष चर्तुदशी	22 जनवरी
मार्तण्ड तीर्थ यात्रा	माघ शुक्ल पक्ष सप्तमी	14 फरवरी
चक्रीश्वर यात्रा श्रीनगर	फाल्गुन कृष्ण पक्ष अष्टमी	2 मार्च
देवी आंगन पलोडा डोक		
विचार नाग यात्रा	चैत्र कृष्ण पक्ष अमावसी	7 अप्रैल
वर नाग यात्रा, जैनपुरा शोपियान		

पंचक आरम्भ से			पंचक समाप्त तक		
18 मार्च	6-58	प्रात:	22 मार्च	6-26	प्रात:
14 अप्रैल	3-52	दिन	18 अप्रैल	5-22	शां
11 मई	10-18	रात	15 मई	2-40	रात
7 जून	3-40	रात	12 जून	9-39	दिन
5 जुलाई	10-00	दिन	9 जुलाई	3-06	दिन
1 अगस्त	6-29	शां	5 अगस्त	8-56	रात
28 अगस्त	4-51	रात	1 सिप्तम्बर	4-48	रात
25 सितम्बर	3-35	दिन	29 सिप्तम्बर	2-59	दिन
22 अक्टूबर	12-49	रात	26 अक्टूबर	2-12	रात
19 नवम्बर	7-34	प्रात:	23 नवम्बर	12-17	दिन
16 दिसम्बर	12-54	दिन	20 दिसम्बर	7-44	शां
12 जनवरी	7-17	शां	16 जनवरी	1-12	रात
8 फरवरी	4-11	रात	13 फरवरी	7-12	प्रात:
7 मार्च	9-06	रात	11 मार्च	3-41	दिन
3 अप्रैल	1-15	रात	7 मार्च	2-21	रात

महत्त्वपूर्ण यज्ञ तथा दिवस

यज्ञ शिव मन्दिर पुरखू फेज 2	चैत्र शुक्ल पक्ष तृतीया	22 मार्च
यज्ञ शारदा भवन, पौनी चक (यक्षकूट,बडगाम)	चैत्र शुक्ल पक्ष नवमी	28 मार्च
शैलपुत्री जयन्ती यज्ञ, गोकुल धाम, अंम्बिका विहार	चैत्र शुक्ल पक्ष नवमी	28 मार्च
स्वा कुमारजी क्राल बब आश्रम गड्डी	चैत्र शुक्ल पक्ष द्वादशी	1 अप्रैल
स्व पुष्कर आश्रम नजबगढ	चैत्र शुक्ल पक्ष पूर्णिमा	4 अप्रैल
यज्ञ बुलबुल लंकर	वैशाख कृष्ण पक्ष दशमी	14 अप्रैल
यज्ञ गणेश अस्थापन (फिडारपोरा सोपोर)	वैशाख शुक्ल पक्ष चतुदर्शी	3 मई
यज्ञ ज्येष्ठादेवी जीठयार, कश्मीर	ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष पंचमी	9 मई
यज्ञ मंजगाम (कुलगाम)	ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष अष्टमी	26 मई
यज्ञ मोहनबब आश्रम जिब, उधमपुर	आषाढ कृष्ण पक्ष तृतीया	5 जून
भग गोपी नाथ जी महोत्सव	अ-आषाढ कृष्ण पक्ष	3 जुलाई
यज्ञ लोक भवन (अनन्तनाग)	आषाढ शुक्ल पक्ष द्वादशी	28 जुलाई
यज्ञ पोषबब आश्रम (गंग्याल)	आषाढ शुक्ल पक्ष पूर्णिमा	31 जुलाई
छड्डी स्नान मातण्डं तीर्थ (मटन)	आषाढ शुक्ल पक्ष पूर्णिमा	31 जुलाई
यज्ञ नागडंडी आश्रम अनन्तनाग	श्रावण शुक्ल पक्ष पंचमी	20 अगस्त
महाराज्ञा भगवती यज्ञ रायथन बडगाम	श्रावण शुक्ल पक्ष अष्टमी	23 अगस्त
यज्ञ द्वारिका हितकारी आश्रम	श्रावण शुक्ल पक्ष पूर्णिमा	29 अगस्त
गणेश अस्थापन दिवस जीठयार, कश्मीर	भाद्र शुक्ल पक्ष चर्तुथी	17 सिप्तम्बर
यज्ञ आदर्श नगर, बनतालाब, जम्मू	भाद्र शुक्ल पक्ष अष्टमी	21 सिप्तम्बर
शारदा भवन पौनी चक	भाद्र शुक्ल पक्ष अष्टमी	21 सिप्तम्बर
यज्ञ मोहनबब आश्रम जिब, उधमपुर	भाद्र शुक्ल पक्ष पूर्णिमा	28 सिप्तम्बर
पुखरीबल यज्ञ	भाद्र शुक्ल पक्ष पूर्णिमा	28 सिप्तम्बर
यज्ञ डोक वज़ीर नगरोटा	आश्विन शुक्ल पक्ष नवमी	22 अक्टूबर
यज्ञ गोकल धाम, अम्बिका विहार	आश्विन शुक्ल पक्ष नवमी	22 अक्टूबर
अमृतेश्वर महादेव मन्दिर सरस्वती विहार बोहढ़ी	आश्विन शुक्ल पक्ष त्रयोदशी	25 अक्टूबर
स्वामी पुष्कर आश्रम चिनोर	कार्तिक शुक्ल पक्ष द्वादशी	23 नवम्बर
यज्ञ स्वा मोहन बब आश्रम, मिश्रीवाला	कार्तिक शुक्ल पक्ष पूर्णिमा	25 नवम्बर
यज्ञ काश्मीर भवन त्रिकूटा नगर जम्मू	कार्तिक शुक्ल पक्ष पूर्णिमा	25 नवम्बर
चण्डीगाम (कुपवारा) उधमपुर	कार्तिक शुक्ल पक्ष पूर्णिमा	25 नवम्बर
श्री सिद्ध गणेश आश्रम रामकृष्ण विहार (उधयवाला)	कार्तिक शुक्ल पक्ष पूर्णिमा	25 नवम्बर
यज्ञ कुमार जी आश्रम मुट्ठी	मार्ग शुक्ल पक्ष एकादशी	21 दिसम्बर
यज्ञ कुमार जी आश्रम मुट्ठी	माघ शुक्ल पक्ष पूर्णिमा	22 फरवरी
यज्ञ गोकुलधाम, अम्बिका विहार	माघ शुक्ल पक्ष पूर्णिमा	22 फरवरी

हमारे पर्व और त्यौहार 2072 के लिये

थालस बुथ वुछुन	21 मार्च	ज्येष्ठाष्टमी	26 मई	श्रावण पूर्णिमा	29 अगस्त
नवरेह	21 मार्च	निर्जला एकादशी	29 मई	चन्दन षष्ठी	3 सिप्तम्बर
जंगत्रय	22 मार्च	रूप भवानी जयन्ती	2 जून	श्रीकृष्ण जन्माष्टमी	5 सिप्तम्बर
दुर्गाष्टमी	27 मार्च	वहरात	17 जुलाई	कुशामावसी	13 सिप्तम्बर
रामनवमी	28 मार्च	हार सप्तमी	23 जुलाई	हरितालिका तृतीया	16 सिप्तम्बर
उमा जयन्ती	28 मार्च	हार अष्टमी	24 जुलाई	विनायक चतुर्थी	17 सिप्तम्बर
शिवा भगवती जयन्ती	28 मार्च	हार नवमी	25 जुलाई	हरुद	17 सिप्तम्बर
शैलपुत्री जय0	28 मार्च	शारिका जयन्ती	25 जुलाई	वराह पंचमी	18 सिप्तम्बर
ऋषि पीरश्राद्ध	9 अप्रैल	देवशयनी एकादशी	27 जुलाई	कश्मीरी पण्डितों का बलिदान दिवस	19 सिप्तम्बर
बेताल षष्ठी	10 अप्रैल	हार द्वादशी	28 जुलाई	शारदाष्टमी, गंगाष्टमी	21 सिप्तम्बर
बैशाखी	14 अप्रैल	ज्वाला चतुर्दशी	30 जुलाई	लल्लेश्वरी जयन्ती	21 सिप्तम्बर
परशुराम जयन्ती	20 अप्रैल	गुरु पूर्णिमा, व्यास पूजा	31 जुलाई	वितस्ता त्रयोदशी	26 सिप्तम्बर
अक्षया तृतीया	21 अप्रैल	शीतला सप्तमी	6 अगस्त	अनन्त चतुर्दशी	27 सिप्तम्बर
नारद एकादशी	29 अप्रैल	कमला एकादशी	10 अगस्त	पितृपक्षारम्भ	28 सिप्तम्बर
शारदा एकादशी	29 अप्रैल	नाग पंचमी	19 अगस्त	साहिब सप्तमी	4 अक्टूबर
गणेश चतुर्दशी	3 मई	श्रावण द्वादशी	27 अगस्त	महालक्ष्मी अष्टमी	5 अक्टूबर
ज्येष्ठा देवी यात्रा	9 मई	रक्षा बन्धन	29 अगस्त		

पितृामावसी	12 अक्टूबर
नवरात्रारम्भ	13 अक्टूबर
दुर्गाष्टमी	21 अक्टूबर
महानवमी	22 अक्टूबर
सरस्वती विसर्जन	22 अक्टूबर
विजया दशमी	22 अक्टूबर
करवा चौथ	30 अक्टूबर
दीपावली	11 नवम्बर
भाई दूज	13 नवम्बर
गोपालाष्टमी	19 नवम्बर
महाकाल भैरवाष्टमी	3 दिसम्बर
गीता जयन्ती	21 दिसम्बर
श्री दत्तात्रेय जयन्ती	25 दिसम्बर
मातृका पूजा	26 दिसम्बर
मुंजहर तहर	26 दिसम्बर
महाकाली जयन्ती	2 जनवरी
आनन्देश्वर भैरव जयन्ती	4 जनवरी
क्ष्यचरि अमावसी	9 जनवरी
शिशर संक्रान्ति	15 जनवरी
कश्मीरी पण्डितों का निर्वासण दिसव	19 जनवरी
साहिब सप्तमी	31 जनवरी
शिव चतुर्दशी	7 फरवरी
गौरी तृतीया	11 फरवरी
त्रिपुरा चर्तुथी	12 फरवरी
बसन्त पंचमी	12 फरवरी
सूर्य सप्तमी	14 फरवरी
भीष्माष्टमी	15 फरवरी
भीमसेन एकादशी	18 फरवरी
यक्षणी चतुर्दशी	21 फरवरी
माघ पूर्णिमा	22 फरवरी
काव पूर्णिमा	22 फरवरी
हुरि अकदोह	23 फरवरी
होराष्टमी	2 मार्च
शिव रात्रि (हेरथ)	6 मार्च
शिवचर्तुदशी	7 मार्च
डून्यमांवसी	9 मार्च
थाल भरुण	13 मार्च
सौन्थ	14 मार्च
तैलाष्टमी	16 मार्च
होली	23 मार्च
थाल भरुण	7 अप्रैल
श्री भट्ट दिवस	7 अप्रैल
विचार नाग यात्रा (कश्मीर)	7 अप्रैल

शारदा पढ़िये और बच्चों को पढ़ाये



ग्रहण विवरण 2015-16 के लिये



इस वर्ष चार ग्रहण होंगे जिन में दो सूर्य ग्रहण तथा दो चन्द्र ग्रहण होंगे। भारत में दो चन्द्र ग्रहण तथा एक सूर्य ग्रहण दिखाई देगा।

खग्रास चन्द्र ग्रहण

4 अप्रैल 2015 शनिवार को दिन के 3 बजे 45 मिन्ट से आरम्भ हो कर शां के 7 बजे 15 मिन्ट पर समाप्त होगा। यह ग्रहण भारत में समाप्ति काल पर ही दिखाई देगा। प्रत्येक नगर के चन्द्रोदय के पश्चात् कुछ मिन्टों तक ही ग्रहण दिखाई देगा जम्मू में केवल 24 मिन्टों तक दिखाई देगा क्योकि जम्मू का चन्द्रोदय 6 बजे 51 मिन्ट है। भारत के अतिरिक्त यह ग्रहण अमरीका, अन्टार्किटका, आस्ट्रेलिया में दिखाई देगा।

इस ग्रहण का सूतक 4 अप्रैल 2015 को प्रातः सूर्योदय से ही आरम्भ हो जायेगा। यह ग्रहण हस्त नक्षत्र तथा कन्या राशि पर घटित हो रहा है इस कारण कन्या राशि वालों तथा हस्त नक्षत्र वालों के लिये अशुभ फलकारक होगा।

खग्रास सूर्य ग्रहण

13 सितम्बर 2015 रविवार को दिन के 10 बजे 12 मिन्ट से आरम्भ होकर 2 बजे 36 मिन्ट पर समाप्त होगा। यह ग्रहण भारत में दिखाई नहीं देगा। इस कारण व्रत इत्यादि रखने की जरूरत नहीं है। यह ग्रहण ज़िम्बाबवे, मामीबिया, अफ्रीका तथा दक्षिणी हिन्द महासागर में दिखाई देगा।

खग्रास चन्द्र ग्रहण

28 सितम्बर 2015 सोमवार को प्रातः 6 बजे 37 मिन्ट पर आरम्भ होकर 9 बजे 57 मि पर समाप्त होगा। यह ग्रहण भारत में गुजरात के कुछ नगरों में केवल 4, 5 मिन्टों तक दिखाई देगा। इस के अतिरिक्त यह पाकिस्तान, अफगानिस्तान, अमरीका, यूरोप, इंग्लैण्ड, ईरान, इराक

इत्यादि देशों में दिखाई देगा। जहां पर यह ग्रहण दिखाई नहीं देगा वहा पर व्रत इत्यादि रखने की जरूरत नहीं है।

खग्रास सूर्य ग्रहण

9 मार्च 2016 बुधवार को प्रातः 4 बजे 49 मिन्ट से आरम्भ होकर 10 बजे 5 मिन्ट पर समाप्त होगा। यह ग्रहण भारत के उत्तर पश्चिमी भागों पंजाब, जम्मू कश्मीर, राजस्थान, गुजरात तथा महाराष्ट्र में दिखाई नहीं देगा। शेष भारत में यह दिखाई देगा, भारत के अतिरिक्त पूर्वी एशिया, जापान, सिंगापुर, आस्ट्रेलिया, थाईलेंण्ड इत्यादि नगरों में दिखाई देगा।

इस ग्रंहण का सूत्तक 8 मार्च को शां के 4 बजे 49 मिन्ट से आरम्भ होगा। यह ग्रहण पूर्वाभाद्र पदा नक्षत्र तथा कुम्भ राशि पर घटित हुआ है इस कारण कुम्भ राशि वालों तथा पूर्वाभाद्रपदा नक्षत्र वालों के लिये अशुभ फलदायक है।

महाचण्डी यज्ञ

स्वामी स्वयमानन्द आश्रम मुट्ठी जम्मू में

(20 सिप्तम्बर 2015 से 22 सिप्तम्बर 2015 तक)

जगत् कल्याण के लिये महाचण्डी यज्ञ भाद्र शुक्ल पक्ष सप्तमी रविवार से भाद्र शुक्ल पक्ष नवमी मंगलवार तक स्वामी स्वयमानन्द आश्रम मुट्ठी में आयोजित किया जा रहा है समस्त जनता से प्रार्थना है कि कार्यक्रम के अनुसार इस महायज्ञ में सपरिवार सम्मिलित होकर पुण्य के भागी बने।

कार्यक्रम

पुष्पार्चन (दुर्गा सप्तशती)	20 सितम्बर 9 बजे प्रातः
कलशस्थापन	20 सितम्बर 9 बजे रात
यज्ञारम्भ	21 सितम्बर 9 बजे प्रातः
पूर्णाहुति	22 सितम्बर 1 बजे दिन
प्रसाद वितरण	22 सितम्बर 1:30 बजे दिन

मूल मन्त्र :

खड्ग-शूल-गदादीनि यानि चास्त्राणि तेऽम्बिके।
करपल्लव सङ्गीनि तैरस्मान् रक्ष सर्वतः।।

अर्थः हे मां अम्बिके! आप के कर पल्लवों में शोभा पाने वाले खड्ग, शूल और गदा आदि जो जो अस्त्र हैं उन सब के द्वारा आप सब ओर से हम लोगों की रक्षा करें।

ज्योतिष की दृष्टि में 2072 -5091

सांवत्सरी पद्धति के अनुसार

वर्ष का राजा शुक्र, कश्मीरी पद्धति से	वर्ष का राजा शनि, भारतीय पद्धति से	वर्ष का मन्त्री भौम	धान्य का स्वामी बुध
अजनास का स्वामी शुक्र	मेघ का स्वामी चन्द्रमा	रस का स्वामी सूर्य	धातुओं के स्वामी शुक्र
फलों के स्वामी चन्द्रमा	धन का स्वामी बृहस्पति	रक्षा मन्त्री चन्द्रमा	बसन्त का वाहन सूकर
सम्वत्सर का नाम कीलक	वर्ष का वाहन हाथी	वर्षा भगवती ब्राह्मणी	
आषाढ नवमी 25 जुलाई शनिवार को	आद्रा नक्षत्र में सूर्य का प्रवेश 22 जून सोमवार, 4:43 दिन		

सम्वत्सर का नाम कीलक

तोय पूर्णो भवेत् मेघो वर्षते च धरातले
उपद्रवस्तु राज्ञां वै कीलके सर्वदा प्रिये।।

कीलक सम्वत्सर का स्वामी विष्णु, इस में वर्षा की अधिकता, अन्नादि का भाव महंगा, तथा प्रजा में अस्थिरता की भावना।

वर्ष का राजा शुक्र (कश्मीर पद्धति से)

पृथिवी बहुत सस्य से पूर्ण, वर्षा की अधिकता, फलों की पैदावार सन्तोषजनक, राज सुख का योग।

वर्ष का राजा शनि (भारतीय पद्धति से)

वर्षा की कमी, प्रजा रोगों से पीडित होवें, राजाओं का युद्ध, चोरों से भय, प्रजा क्षुधा से पीडित होवें।

वर्ष का मन्त्री भौम

भौम होने से प्रजा को चोर, डाकू, रोग आदि से पीडा उत्पन्न होगी, गौवों में दूध की कमी, ब्राह्मण अपना कर्म न करें।

धान्य का स्वामी बुध

बुध होने से पृथिवी सस्य से परिपूर्ण हो, रसवस्तु सब महंगे भाव विकें, राजा लोग सर्वदा नीति से युक्त रहें।

अजनास के स्वामी शुक्र

शुक्र होने से समयानुकूल वर्षा, गेहूं, धान इत्यादि की उपज सन्तोषजनक रहेगी, फल फूलों की उपज भी आशा से अधिक रहेगी।

मेघ के स्वामी चन्द्रमा

चन्द्रमा होने से वर्षा की अधिकता, शासक वर्ग आनन्द से परिपूर्ण होवे तथा प्रजा भी सुखी रहे।

रस का स्वामी सूर्य

सूर्य होने से वर्षा की कमी, वस्त्र, तेल तथा घी की प्रवृति प्रजा में बडेगी, शासक वर्ग सुखी रहे।

धातुओं के स्वामी शुक्र

शुक्र होने से कपूर, अगरबती, चन्दन, सुवर्ण, मीती, वस्त्रादि वस्तुओं का भाव तेज रहेगा।

रक्षा मन्त्री चन्द्रमा

चन्द्रमा होने से प्रजा को शासक वर्ग से सुख की प्राप्ति।

फलों के स्वामी चन्द्रमा

चन्द्रमा होने से सम्पूर्ण वृक्ष फलों से युक्त होंगे, ब्राह्मणादि सब पूजा पाठ की ओर लगेगें तथा राजा लोग नीति पूर्वक शासन करेंगे।

धन के स्वामी बृहस्पति

बृहस्पति होने से व्यापारी लोग आशा से अधिक लाभ में रहेंगे, प्रजा विविध प्रकार के द्रव्यों से युक्त होवें।

वर्ष का वाहन हाथी

हाथी होने से सुभिक्ष, प्रजा को सुख, समयानुकूल वर्षा तथा प्रजा सुखी।

वर्ष का वाहन घोडा

घोडा होने से भूमिकंप, राजाओं में विग्रह वर्षा की कमी, अन्न का भाव महंगा इत्यादि।

आद्रा नक्षत्र में सूर्य का

होने से प्रजा में धन की वृद्धि होंगी, चारों ओर सुमिक्ष होंगे।

अधिक मास फल : दो आषाढ होने से धान्य की वृद्धि, अधिक वर्षा होने के कारण पशुओं में रोग, शासक वर्ग सुखी होंगे।

वसन्त का वाहन सूकर (सुअर) होने के कारण कहीं वर्षा की कमी, कहीं पर वर्षा की अधिकता के कारण बाढ भूस्खलन, फसलों में हानि एवं प्राकृतिक प्रकोपों से धन, जन की हानि का योग।

भारत

वर्ष कुण्डली (68वां)

सिं बु, क, मि, कं, सू, गु, वृ, रा, तु, शु, मे, भौ, श, चं, वृं, मी, मुं, धं, म, कुं, के

वर्ष कुण्डली (69वां)

तु, कं, सिं चं गु बु, सू, वृं, श, धं, रा, क भौ शु, मि, के, म, मुं, वृ, कुं, मी, मे

इस वर्ष ग्रह परिषद् के दस पदों में से सात पद शुभ ग्रहों ने तथा तीन पद क्रूर ग्रहों ने अपने अधिकार में रखें हैं विशेष पदों राजा, मन्त्री तथा रस पर क्रूर ग्रहों ने अपना अधिकार जमाया है जिस के फलस्वरूप देश का राजनीतिक तथा साभाजिक वातावरण चारों ओर अस्तव्यस्त रहेगा चारों ओर अनिश्चितता, अशान्त वातावरण, उपद्रव, काला बाज़ारी,

का दृश्य देखने में आयेगा। प्रजा में मंहगाई के कारण शासक वर्ग के विरुद्ध नफरत की भावना बडेगी। कई देशों में टकराव का माहोल देखने में आयेगा। आपसी झगडे, साम्प्रदायिक फसाद, हिंसा, प्राकृतिक दुरघटनायें, अग्निकाण्ड इत्यादि का योग। समयानुकूल वर्षा न होने के कारण फसलों में हानी तथा महंगाई का जोर रहेगा, रसदार फलों में रस की कमी रहेगी।

वर्ष के प्रारम्भिक महीनों में सामाजिक तथा राजनीतिक वातावरण अत्यन्त कटुस्थिति के साथ साथ तनावपूर्ण एवं अनिश्चितता से परिपूर्ण रहेगा, विपक्षी दल सत्तारूढ पर हावी होने की पूरी कोशिश करेगा जो सत्तारुढ के कार्यक्रम में बाधा डाल सकता है। शासक वर्ग नई नई योजनाओं को लाघू करने में किसी प्रकार की कसर नही रखेगा।

मुन्था का पांचवे भाव में होना फलित ज्योतिष के अनुसार शुभ माना जाता है परन्तु मुन्था पर सूर्य, भौम शुक्र एवं शनि की दृष्टि होने से शासक वर्ग के लिये यह वर्ष अग्नि परीक्षा का वर्ष होगा। इस अशुभ योग से भ्रष्टाचार तथा महंगाई में बहुत तेज़ी होगी जो शासक वर्ग के लिये चिन्ता का कारण बनेगा तथा शासक वर्ग की छवि पर भुरा प्रभाव पडेगा। देश के कई प्रदेशों में हिंसक घटनायें, प्रकृतिक उपद्रव, आतंकवाद का दबदबा घटित होगा जिस के कारण प्रजा में खोफ तथा अशान्ति का वातावरण रहेगा, पडोसी देशों के साथ व्यापारिक सम्बन्ध बढने पर भी सीमाओं पर तनाव का माहोल देखने में आयेगा, शासक वर्ग के लिये भौगोलिक तथा आतंकवाद सम्बन्धित कुछ जटिल समस्याये हल करना प्रतिष्ठा का विषय बनेगा परन्तु शासक वर्ग अपनी कूटनीति के कारण कुछ हद तक इन समस्याओं में सफल रहेगा।

शासक वर्ग भारत को विकास पथ पर आगे लेने में सफलता प्राप्त करेगा, भारत विशेष क्षेत्रों तकनीकि शिक्षा कम्पयूर्टज़, इंजीनिरयरिंग, दूरसंचार, विज्ञान क्षेत्र, तथा अन्तराष्ट्रीय व्यापार क्षेत्रों में आशा से अधिक प्रगति करेगा तथा विश्वव के बडे बडे देशों के साथ राजनैतिक एवं व्यापारिक सम्बन्धों में वृद्धि होगी।

जम्मू कश्मीर

जम्मू कश्मीर की राशि तुला है। तुला राशि साढसत्ती की चपेट में है तथा वर्ष के आरम्भ पर तुला राशि में भौम तथा शनि का एक साथ बैठना शासक वर्ग के लिये खतरे की घण्टी है ग्रहों की स्थिति को देखते हुये विपक्षी दल शासक वर्ग पर हावी होने की बहुत कोशिश करेगा जिस में वह कुछ हद तक सफल भी होगा परन्तु विपक्ष अपने बलबूते पर सरकार बनाने में सफल नही होगा जिस कारण गठबधन सरकार ही अस्तित्व में आयेगी। शासक वर्ग राज्य में पर्यटन, रेलवे, यातायात, स्वास्थ्य, शिक्षा तथा नई नई योजनाओं को अमली रूप देने में किसी प्रकार की कसर नहीं रखेगी। यहां की अर्थ व्यवस्था को सुदृढ करने के लिये बडी बडी योजनाओं का शुभारम्भ भी होगा, आन्तकवादी तत्व यहां के वातावरण को अशान्त करने में किसी प्रकार की कसर छोडेंगे नहीं वे अपने आतंकवादी गतिविधि को चालू रखेंगे जो शासक वर्ग के कार्यक्रम में बाधा डाल सकता है।

"तत्वं चात्रेश्वरो वेति नाहं वेद्मि कदाचन"

अर्थ : सच्चाई क्या हैं ? यह तो सर्व शक्तिमान प्रभु ही जानता है मैं कभी भी जानता नहीं हूँ।

संपादक

चैत्र शुक्ल पक्ष
वि 2072-ई 2015



मीन में सूर्य, भौम, केतु। मेष में शुक्र। कर्कट में बृहस्पति। कन्या में राहु। वृश्चिक में शनि। कुम्भ में बुध।

दिन मान	चैत्र	मार्च	वार	नक्षत्र		बजे	मि	तिथि		बजे	मि	वसन्त ऋतु उत्तरायण, ग्रहसंचार बजे मिन्टों में	सूर्य उदय	सूर्य अस्त
30 1	8	21	शनि	उभा	दि	9	1	प्रति	दि	11	3	(रे प्र 6-29) 12-54 रात से गण्डान्त, **नवरात्रारम्भ, नवरेह,** (A)	6/39	6/37
7	9	22	रवि	अश्वि	प्र	4	22	द्विती	दि	8	15	त्र्यहः (तृ प्र 5-26)6-26 प्रातः मेष में चन्द्र और पंचक समाप्त (B)	38	38
13	10	23	सोम	भरण	प्र	2	51	चतु	प्र	3	11	10-46 रात मेष में भौम, चरः।	36	38
16	11	24	भौम	कृति	प्र	2	00	पंच	प्र	1	39	8-34 प्रातः वृष में चन्द्र, मुसलम्।	35	39
22	12	25	बुध	रोहि	प्र	1	56	षष्ठी	प्र	12	52	कुमार षष्ठी, शूलम्।	34	40
28	13	26	गुरु	मृग	प्र	2	38	सप्त	प्र	12	54	2-11 दिन मिथुन में चन्द्र, मृत्युः।	33	41
33	14	27	शुक्र	आर्द्र	प्र	4	4	अष्ट	प्र	1	41	1-34 रात मीन में बुध, **दुर्गाष्टमी**, काम्यः।	32	41
37	15	28	शनि	पुर्न	प्र	6	8	नव	प्र	3	9	11-34 रात कर्कट में चन्द्र, **रामनवमी, नवदुर्गा विर्सजन,** (C)	30	42
43	16	29	रवि	तिष्य	दिन रात			दश	प्र	5	9	श्रीवत्सः।	28	42
48	17	30	सोम	तिष्य	दि	8	44	एका	दिन रात			दिन अधिक, 4-47 रात से गण्डान्त, प्रजापत्यः।	28	43
52	18	31	भौम	आश्ले	दि	11	39	एका	दि	7	33	11-39दिन सिंह में चन्द्र,6-24शां तक गण्डान्त,कामदा एकादशी (D)	25	44
58	19	अप्रैल	बुध	मघा	दि	2	45	द्वाद	दि	10	8	स्वा0 कुमार जी जयन्ती, गड्डी, जम्मू, चरः।	24	45
31 3	20	2	गुरु	पूफा	दि	5	51	त्रयो	दि	12	46	12-36 रात कन्या में चन्द्र, मुसलम्।	23	45
10	21	3	शुक्र	उफा	प्र	8	50	चर्तु	दि	3	17	शूलम्।	21	46
13	22	4	शनि	हस्त	प्र	11	34	पूर्णि	दि	5	33	**हनुमान जयन्ती**, चन्द्र ग्रहण पृष्ठ 276, मृत्युः।	19	47

नवरेह 21 मार्च

तृतीया का जन्मदिन 22 मार्च

(A) **थालस बुथ वुछुन** धौम्यः। (B) 11-52 दिन तक गण्डान्त, **जंग त्रय**, यज्ञ शिव मंदिर पुरखू फेज 2 जम्मू, आनन्दः। (C) उमाजयन्ती, चक्रेश्वर यात्रा, छत्रम्। (D) आनन्दः।

मध्याह्न : प्रति से तृती पहले दिन, चतु से एका अपने दिन, द्वाद का पहले दिन, त्रयो से पूर्णि अपने दिन।

श्राद्ध : प्रति से तृती पहले दिन, चतु से एका अपने दिन, द्वाद से पूर्णि पहले दिन।

एकादशी का जन्मदिन 31 मार्च को

वैशाख कृष्ण पक्ष
वि 2072-ई 2015



मीन में सूर्य, बुध, केतु। मेष में भौम, शुक्र। कर्कट में बृहस्पति। कन्या में राहु। वृश्चिक में शनि।

दिन	मान	चैत्र	अप्रैल	वार	नक्षत्र		बजे	मि	तिथि		बजे	मि	वसन्त ऋतु, उत्तरायण, ग्रह संचार बजे मिन्टों में	सूर्य उदय	सूर्य अस्त
31	18	23	5	रवि	चित्र	प्र	2	00	प्रति	प्र	7	34	12-50 दिन तुला में चन्द्र, काम्यः।	6/18	6/48
	24	24	6	सोम	स्वा	प्र	4	4	द्विती	प्र	9	10	7-43 शां वृष में शुक्र, छत्रम्।	17	49
	31	25	7	भौम	विशा	प्र	5	41	तृती	प्र	10	20	11-19 रात वृश्चिक में चन्द्र, श्रीवत्सः।	16	50
	33	26	8	बुध	अनू	दिन रात			चतु	प्र	11	1	संकट निवारण चतुर्थी, सौम्यः।	15	51
	38	27	9	गुरु	अनू	दि	6	50	पंच	प्र	11	11	1-32 रात से गण्डान्त, श्री पंचमी, **ऋषिपीर श्राद्ध**, आनन्दः।	14	52
	45	28	10	शुक्र	ज्येष्ठ	दि	7	29	षष्ठी	प्र	10	49	7-29 प्रातः धनु में चन्द्र और मूल आरम्भ, 1-32 दिन तक गण्डान्त(A)	12	52
	48	29	11	शनि	मूला	दि	7	35	सप्त	प्र	9	53	मुसलम्।	11	53
	53	30	12	रवि	पूषा	दि	7	9	अष्ट	प्र	8	26	(उषा प्र 6-12) 12-58 दिन मकर में चन्द्र, 8-39 दिन मेष में (B)	10	54
	58	31	13	सोम	श्रव	प्र	4	45	नव	दि	6	27	मासान्त, सिद्धः।	8	54
32	3	वैशा	14	भौम	धनि	प्र	2	54	दश	दि	4	2	3-52 दिन कुम्भ में चन्द्र और पंचक आरम्भ, 1-45 दिन मेष में (C)	7	55
	7	2	15	बुध	शत	प्र	12	42	एका	दि	1	13	वरूथिनी एकादशी, मानसम्।	6	56
	13	3	16	गुरु	पूभा	प्र	10	18	द्वाद	दि	10	8	4-55 दिन मीन में चन्द्र, **श्री स्वा लक्ष्मण जी जयन्ती**, निशात (D)	4	56
	18	4	17	शुक्र	उभा	प्र	7	48	त्रयो	दि	6	53	त्र्यहः (चर्तु प्र 3-36) ध्वजः।	3	57
	21	5	18	शनि	रेव	दि	5	22	अमा	प्र	12	26	5-22 शां मेष में चन्द्र और पंचक समाप्त, 12-5 दिन से 10-22 (E)	2	58

(A) वैताल षष्ठी, चरः। (B) बुध, शूलम्। (C) सूर्य, मुर्हूत 30 समुद्रीय, **वैशाखी**, संक्रान्ति व्रत, बुलबुल लंकर यज्ञ, उन्मूलम्। (D) कश्मीर, जम्मू, दिल्ली, मुद्गरम्। (E) रात तक गण्डान्त, प्रजापत्यः।

मध्याह्न : प्रति से एका तक अपने दिन, द्वाद से चर्तुद पहले दिन, अमा का अपने दिन।

श्राद्ध : प्रति से नवमी तक अपने दिन, दश से चर्तुद पहले दिन, अमा का अपने दिन।

चतुर्दशी का जन्मदिन 17 अप्रैल

वैशाख शुक्ल पक्ष
वि 2072-ई 2015



मेष में सूर्य, भौम, बुध। वृष में शुक्र। ककर्ट में बृहस्पति। कन्या में राहु। वृश्चिक में शनि। मीन में केतु।

दिन	मान	वैश	अप्रैल	वार	नक्षत्र		बजे	मि	तिथि		बजे	मि	बसन्त ऋतु, उत्तरायण ग्रहसंचार बजे मिन्टो में	सूर्य उदय	सूर्य अस्त
32	26	6	19	रवि	अश्वि	दि	3	8	प्रति	प्र	9	32	आनन्दः।	6/2	6/58
	31	7	20	सोम	भरण	दि	1	16	द्विती	प्र	7	2	6-53 शां वृष में चन्द्र, **श्री परशुराम जयन्ती**, चरः।	0	59
	37	8	21	भौम	कृति	दि	11	56	तृती	दि	5	5	**अक्षया तृतीया**, मुसलम्।	0	7/0
	41	9	22	बुध	रोहि	दि	11	14	चतु	दि	3	48	11-9 रात मिथुन में चन्द्र, शूलम्।	5/58	0
	46	10	23	गुरु	मृग	दि	11	16	पंच	दि	3	17	**जगद्गुरु शंकराचार्य जयन्ती, कुमार षष्ठी**, मृत्युः।	57	1
	51	11	24	शुक्र	आर्द्र	दि	12	4	षष्ठी	दि	3	34	काम्यः।	55	2
	53	12	25	शनि	पुर्न	दि	1	38	सप्त	दि	4	37	7-11 प्रातः कर्कट में चन्द्र, छत्रम्।	54	2
	58	13	26	रवि	तिष्य	दि	3	52	अष्ट	दि	6	20	श्रीवत्सः।	53	3
33	3	14	27	सोम	आश्ले	दि	6	36	नव	प्र	8	34	6-36 शां सिंह में चन्द्र, 12-4 दिन वृष में बुध, 11-53 दिन से (A)	52	4
	8	15	28	भौम	मघा	प्र	9	39	दश	प्र	11	6	कालदण्डः।	51	5
	11	16	29	बुध	पूफा	प्र	12	46	एका	प्र	1	41	**नारद एकादशी, शारदा एकादशी**, डुमटबल यात्रा, स्थिरः।	50	6
	16	17	30	गुरु	उफा	प्र	3	45	द्वाद	प्र	4	8	7-32 प्रातः कन्या में चन्द्र, मातंगः।	49	7
	21	18	मई	शुक्र	हस्त	**दिन रात**			त्रयो	**दिन रात**			दिन अधिक, अमृतम्।	48	8
	26	19	2	शनि	हस्त	दि	6	26	त्रयो	दि	6	16	7-38 शां तुला में चन्द्र, 8-33 रात मिथुन में शुक्र, मृत्युः।	47	8
	28	20	3	रवि	चित्र	दि	8	43	चर्तु	दि	7	59	11-52 रात वृष में भौम, **गणेश चर्तुदशी**, गणपतयार यात्रा, काम्यः	46	9
	33	21	4	सोम	स्वा	दि	10	31	पूर्णि	दि	9	11	नारद जयन्ती, छत्रम्।	45	9

(A) 1-15 रात तक गण्डान्त, सौम्यः।

मध्याह्न : प्रति से त्रयो तक अपने दिन, चर्तुद पूर्णि पहले दिन।

श्राद्ध : प्रति से तृती अपने दिन, चतु से अष्ट पहले दिन, नव से त्रयो अपने दिन, चर्तद पूर्णि पहले दिन।

त्रयोदशी का जन्मदिन 2 मई को

ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष
वि 2072-ई 2015



मेष में सूर्य। वृष में भौम, बुध। मिथुन में शुक्र। कर्कट में बृहस्पति। कन्या में राहु। वृश्चिक में शनि। मीन में केतु।

दिन	मान	वैश	मई	वार	नक्षत्र		बजे	मि	तिथि		बजे	मि	वसन्त ऋतु, उत्तरायण ग्रहसंचार बजे मिन्टों में	सूर्य उदय	सूर्य अस्त
33	38	22	5	भौम	विशा	दि	11	50	प्रति	दि	9	53	श्रीवत्सः।	5/44	7/10
	43	23	6	बुध	अनूरा	दि	12	40	द्विती	दि	10	6	श्री काक जी यज्ञ, नगरोटा, जम्मू, सौम्यः।	43	11
	45	24	7	गुरु	ज्येष्ठ	दि	1	3	तृती	दि	9	51	1:3 दिन धनु में चन्द्र और मूल आरम्भ, संकट निवारण चतुर्थी, (A)	43	11
	48	25	8	शुक्र	मूला	दि	1	2	चतु	दि	9	11	स्थिरः।	42	12
	54	26	9	शनि	पूषा	दि	12	31	पंच	दि	8	8	6:30 शां मकर में चन्द्र ज्येष्ठा देवी यज्ञ जीठयार, श्रीनगर, मातंगः।	41	13
	56	27	10	रवि	उषा	दि	11	56	षष्ठी	दि	6	43	त्र्यहः (सप्त प्र 5:3) अमृतम्।	41	14
34	1	28	11	सोम	श्रव	दि	10	55	अष्ट	प्र	3	4	10:18 रात कुम्भ में चन्द्र और पंचक आरम्भ, सिद्धः।	40	15
	5	29	12	भौम	धनि	दि	9	37	नव	प्र	12	50	उन्मूलम्।	39	15
	8	30	13	बुध	शत	दि	8	6	दशा	प्र	10	24	12:50 रात मीन में चन्द्र, मानसम्।	39	16
	11	31	14	गुरु	पूभा	दि	6	23	एका	प्र	7	49	(उभा प्र 4:33) मासान्त, मुद्गरम्।	38	17
	16	ज्ये0	15	शुक्र	रेव	प्र	2	40	द्वाद	दि	5	9	2:40 रात मेष में चन्द्र और पंचक समाप्त, 10:36 दिन वृष (B)	37	18
	20	2	16	शनि	अश्वि	प्र	12	5	त्रयो	दि	2	30	8:13 दिन तक गण्डान्त, सौम्यः।	36	18
	21	3	17	रवि	भरण	प्र	11	13	चर्तु	दि	11	59	कालदण्डः।	36	19
	26	4	18	सोम	कृति	प्र	9	54	अमा	दि	9	42	सोमामावसी 4:52 प्रातः वृष में चन्द्र श्री नन्दकीश्वर यात्रा, (C)	35	20

(A) 7 बजे प्रातः से 7:9 शां तक गण्डान्त,कालदण्डः। (B) में सूर्य, मुर्हूत 30 पहाडी, ग्रीष्म ऋतु,7:30 शां से गण्डान्त, संक्रान्ति व्रत श्रीवत्सः।

मध्याह्न : प्रति से सप्त पहले दिन, अष्ट से त्रयो अपने दिन, चर्तु अमा पहले दिन।

(C) सीर जागीर, अकलपुर जम्मू, स्थिरः।

श्राद्ध : प्रति से सप्त पहले दिन, अष्ट से द्वाद अपने दिन, त्रयो से अमा पहले दिन।

सप्तमी का जन्मदिन 10 मई को

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष
वि 2072-ई 2015



वृष में सूर्य, भौम, बुध। मिथुन में शुक्र। कर्कट में बृहस्पति। कन्या में राहु। वृश्चिक में शनि। मीन में केतु।

दिन	मान	ज्ये0	मई	वार	नक्षत्र		बजे	मि	तिथि		बजे	मि	ग्रीष्म ऋतु - उत्तरायण - ग्रहसंचार बजे मिन्टों में	सूर्य उदय	सूर्य अस्त
34	30	5	19	भौम	रोहि	प्र	9	2	प्रति	दि	7	49	मातंगः।	5/35	7/21
	33	6	20	बुध	मृग	प्र	8	45	द्विती	दि	6	25	8:49 दिन मिथुन में चन्द्र, **भग गोपीनाथ यज्ञ**, अमृतम्।	34	21
	35	7	21	गुरु	आर्द्र	प्र	9	7	तृती	दि	5	39	काण्डः।	33	22
	38	8	22	शुक्र	पुर्न	प्र	10	13	चतु	दि	5	36	3:53 दिन कर्कट में चन्द्र, अलापकः।	32	23
	42	9	23	शनि	तिष्य	प्र	12	2	पंच	दि	6	16	कुमार षष्ठी, मैत्रम्।	31	24
	43	10	24	रवि	आश्ले	प्र	2	27	षष्ठी	दि	7	40	2:27 रात सिंह में चन्द्र, 7:43 शां से गण्डान्त, वज्रम्।	30	25
	47	11	25	सोम	मघा	प्र	5	18	सप्त	दि	9	39	8:7 दिन तक गण्डान्त, ध्वांक्षः।	30	25
	51	12	26	भौम	पूफा	दिन रात			अष्ट	दि	12	2	**ज्येष्ठाष्टमी क्षीर भवानी यात्रा**, मंजगाम टिकर, रवयार मट्टन (A)	30	25
	52	13	27	बुध	पूफा	दि	8	23	नव	दि	2	34	3:10 दिन कन्या में चन्द्र, स्थिरः।	29	26
	55	14	28	गुरु	उफा	दि	11	25	दशा	दि	5	00	मातंगः।	29	26
	56	15	29	शुक्र	हस्त	दि	2	11	एका	दि	7	7	3:24 रात तुला में चन्द्र, **निर्जला एकादशी**, अमृतम्।	29	27
35	0	16	30	शनि	चित्र	दि	4	29	द्वाद	प्र	8	43	8:55 रात कर्कट में शुक्र, काण्डः।	29	28
	2	17	31	रवि	स्वाति	दि	6	13	त्रयो	प्र	9	42	अलापकः।	28	28
	3	18	जून	सोम	विशा	दि	7	20	चर्तु	प्र	10	3	1:6 दिन वृश्चिक में चन्द्र, मैत्रम्।	28	29
	7	19	2	भौम	अनूरा	दि	7	50	पूर्ण	प्र	9	48	**माता रूपभवानी जयन्ती**, वज्रम्।	28	29

(A) कश्मीर, जगती, जानीपुर जम्मू, धौम्यः।

मध्याह्न : प्रति से सप्त पहले दिन, अष्ट से पूर्णि अपने दिन।

श्राद्ध : प्रति से एका पहले दिन, द्वाद से पूर्णि अपने दिन।

आषाढ कृष्ण पक्ष
वि 2072-ई 2015



वृष में सूर्य, भौम, बुध। कर्कट में बृहस्पति, शुक्र। कन्या में राहु। वृश्चिक में शनि। मीन में केतु।

दिन मान	ज्ये	जून	वार	नक्षत्र		बजे	मि	तिथि		बजे	मि	ग्रीष्म ऋतु - उत्तरायण - ग्रह संचार बजे मिन्टों में	सूर्य उदय	सूर्य अस्त
35 7	20	3	बुध	ज्येष्ठ	प्र	7	49	प्रति	प्र	9	1	7:49 शां धनु में चन्द्र और मूल आरम्भ, 1:54 दिन से (A)	5/28	7/30
10	21	4	गुरु	मूला	दि	7	21	द्विती	प्र	7	48	धौम्यः।	27	30
10	22	5	शुक्र	पूषा	दि	6	33	तृती	दि	6	14	12:19 रात मकर में चन्द्र, **संकट निवारण चतुर्थी**, प्रवर्धः।	27	31
13	23	6	शनि	उषा	दि	5	30	चतु	दि	4	25	क्षयः।	27	31
15	24	7	रवि	श्रव	दि	4	18	पंच	दि	2	27	3:40 रात कुम्भ में चन्द्र और पंचक आरम्भ, मुसलम्।	27	32
17	25	8	सोम	धनि	दि	3	1	षष्ठी	दि	12	23	शूलम्।	27	32
17	26	9	भौम	शत	दि	1	40	सप्त	दि	10	15	मृत्युः।	27	33
20	27	10	बुध	पूभा	दि	12	19	अष्ट	दि	8	7	6:39 प्रात मीन में चन्द्र, काम्यः।	27	33
20	28	11	गुरु	उभा	दि	10	58	नव	दि	5	58	त्र्यहः (दश प्र 3:52) 10:52 रात से गण्डान्त, छत्रम्।	27	34
22	29	12	शुक्र	रेव	दि	9	39	एका	प्र	1	49	9:39 दिन मेष में चन्द्र और पंचक समाप्त, 3:18 दिन तक (B)	26	34
22	30	13	शनि	अश्वि	दि	8	25	द्वाद	प्र	11	53	सौम्यः।	26	34
22	31	14	रवि	भर	दि	7	19	त्रयो	प्र	10	9	1:4 दिन वृष में चन्द्र, मासान्त, कालदण्डः।	26	35
25	आष	15	सोम	कृति	दि	6	25	चुर्त	प्र	8	40	5:10 दिन मिथुन में सूर्य,मुर्हूत 30 समुद्रीय, **संक्रान्ति व्रत**, स्थिरः।	26	35
25	2	16	भौम	रोहि	दि	5	50	अमा	दि	7	34	5:42 दिन मिथुन में चन्द्र, 7:34 शां **अधिक मासारम्भः**, मातंगः।	27	36

(A) 1:54 रात तक गण्डान्त, ध्वांक्षः। (B) गण्डान्त, श्रीवत्सः।

मध्याह्न : प्रति से षष्ठी तक अपने दिन, सप्त से दशा पहल दिन, एका से अमा तक अपने दिन।

श्राद्ध : प्रति से दशा पहले दिन, एका से अमा अपने दिन।

दशमी का जन्मदिन 11 जून को

अधि.आषाढ शुक्ल पक्ष
वि 2072-ई 2015



मिथुन में सूर्य, भौम। कर्कट में बृहस्पति, शुक्र। कन्या में राहु। वृश्चिक में शनि। मीन में केतु। वृष में बुध।

दिन	मान	आष	जून	वार	नक्षत्र		बजे	मि	तिथि		बजे	मि	ग्रीष्म ऋतु, उत्तरायण/दक्षिणायन - ग्रहसंचार बजे मिन्टो में	सूर्य उदय	सूर्य अस्त
35	25	3	17	बुध	मृग	दि	5	40	प्रति	दि	6	शां57	अमृतम्।	5/27	7/38
	26	4	18	गुरु	आर्द्र	दि	6	00	द्विती	दि	6	54	12:39 रात कर्कट में चन्द्र, काण्डः।	27	36
	25	5	19	शुक्र	पुन	दि	6	56	तृती	दि	7	28	अलापकः।	27	36
	25	6	20	शनि	तिष्य	दि	8	30	चतु	प्र	8	41	3:51 रात से गण्डान्त, मैत्रम्।	27	36
	27	7	21	रवि	आश्ले	दि	10	40	पंच	प्र	10	30	10:40 दिन सिंह में चन्द्र, 5:15 शां तक गण्डान्त, दक्षिणायन, वज्रम्।	28	37
	27	8	22	सोम	मघा	दि	1	20	षष्ठी	प्र	12	45	4:43 दिन आर्द्रा में सूर्य, कुमार षष्ठी, ध्वांक्षः।	28	37
	26	9	23	भौम	पूफा	दि	4	20	सप्त	प्र	3	16	11:7 रात कन्या में चन्द्र, धौम्यः।	28	37
	25	10	24	बुध	उफा	दि	7	26	अष्ट	दिन रात			दिन अधिक, प्रवर्धः।	29	37
	23	11	25	गुरु	हस्त	प्र	10	22	अष्ट	दि	5	45	अष्टमी व्रत, क्षयः।	29	37
	23	12	26	शुक्र	चित्र	प्र	12	53	नव	दि	7	59	11:42 दिन तुला में चन्द्र, गजः।	29	38
	22	13	27	शनि	स्वाति	प्र	2	48	दशा	दि	9	41	सिद्धः।	30	38
	22	14	28	रवि	विशा	प्र	4	1	एका	दि	10	44	9:47 रात वृश्चिक में चन्द्र, उन्मूलम्।	30	38
	21	15	29	सोम	अनू	प्र	4	30	द्वाद	दि	11	2	मानसम्।	31	38
	20	16	30	भौम	ज्येष्ठ	प्र	4	17	त्रयो	दि	10	36	4:17 रात धनु में चन्द्र और मूल आरम्भ 10:34 रात से गण्डान्त,(A)	31	38
	20	17	जुल	बुध	मूला	प्र	3	30	चर्तु	दि	9	29	10:9 दिन तक गण्डान्त, ध्वजः।	31	38
	18	18	2	गुरु	पूषा	प्र	2	14	पूर्णि	दि	7	49	प्राजापत्यः।	32	38

(A) मुद्गरम्।

मध्याह्न : प्रति से अष्ट अपने दिन, नव से पूर्णि तक पहले दिन।

अधि.आषाढ कृष्ण पक्ष
वि 2072-ई 2015



मिथुन में सूर्य, भौम। ककर्ट में बृहस्पति, शुक्र। कन्या में राहु। वृश्चिक में शनि। मीन में केतु। वृष में बुध।

दिन	मान	आष	जुल	वार	नक्षत्र		बजे	मि	तिथि		बजे	मि	ग्रीष्म ऋतु - दक्षिणायन - ग्रह संचार बजे मिन्टों में	सूर्य उदय	सूर्य अस्त
35	17	19	3	शुक्र	उषा	प्र	12	39	प्रति	दि	5	42	त्र्यहः (द्विती प्र 3:17) भग गोपीनाथ जी महोत्सव, 7:52 (A)	5/32	7/38
	16	20	4	शनि	श्रव	प्र	10	54	तृती	प्र	12	43	स्थिरः।	32	38
	15	21	5	रवि	धनि	प्र	9	6	चतु	प्र	10	7	10 बजे दिन कुम्भ में चन्द्र, प्रचंक आरम्भ, 12:13 दिन मिथुन (B)	32	38
	13	22	6	सोम	शत	दि	7	21	पंच	दि	7	34	अमृतम्।	33	38
	12	23	7	भौम	पूभा	दि	5	44	षष्ठी	दि	5	9	12:7 दिन मीन में चन्द्र, काण्डः।	34	38
	11	24	8	बुध	उभा	दि	4	19	सप्त	दि	2	55	अलापकः।	34	37
	7	25	9	गुरु	रेव	दि	3	6	अष्ट	दि	12	54	3:6 दिन मेष में चन्द्र, पंचक समाप्त, 9:6 दिन से 8:31 रात (C)	35	37
	6	26	10	शुक्र	अश्वि	दि	2	8	नव	दि	11	8	वज्रम्।	36	37
	5	27	11	शनि	भरण	दि	1	25	दश	दि	9	37	7:17 शां वृष में चन्द्र, ध्वांक्षः।	36	37
	3	28	12	रवि	कृति	दि	12	59	एका	दि	8	22	धौम्यः।	37	36
4	58	29	13	सोम	रोहि	दि	12	51	द्वाद	दि	7	26	12:55 रात मिथुन में चन्द्र, प्रवर्धः।	37	36
	57	30	14	भौम	मृग	दि	1	5	त्रयो	दि	6	50	6:25 प्रातः सिंह में बृहस्पति, क्षयः।	38	36
	53	31	15	बुध	आर्द्र	दि	1	42	चुर्त	दि	6	38	मासान्त।	38	36
	52	श्रा0	16	गुरु	पुर्न	दि	2	48	अमा	दि	6	53	8:29 दिन कर्कट में चन्द्र, 4:1 रात कर्कट में सूर्य, मुहूर्त 30 (D)	39	35

(A) प्रातः मकर में चन्द्र, आनन्दः। (B) में बुध, 9-51 दिन सिंह में शुक्र, संकट निवारण चतुर्थी, मातंगः। (C) तक गण्डान्त, मैत्रम्। (D) दरियाई, 6-53 प्रातः अधिक मासनिर्गम, वर्षा ऋतु, सिद्धः।

मध्याह्न : प्रति तथा द्विती का पहले दिन, तृती से अष्ट अपने दिन, नव से अमा पहले दिन।

आषाढ शुक्ल पक्ष
वि 2072-ई 2015



कर्कट में सूर्य। सिंह में बृहस्पति, शुक्र। कन्या में राहु। वृश्चिक में शनि। मीन में केतु। मिथुन में भौम, बुध।

दिन	मान	श्रा	जुल	वार	नक्षत्र		बजे	मि	तिथि		बजे	मि	वर्षा ऋतु - दक्षिणायन - ग्रह संचार बजे मिन्टों में	सूर्य उदय	सूर्य अस्त
34	51	2	17	शुक्र	तिष्य	दि	4	24	प्रति	दि	7	39	**संक्रान्ति व्रत, वहरात**, उन्मूलम्।	5/39	7/35
	46	3	18	शनि	आश्ले	दि	6	30	द्विती	दि	8	57	6:30शां सिंह में चन्द्र,11:55 दिन से 12:59रात तक गण्डान्त, (A)	39	35
	45	4	19	रवि	मघा	प्र	9	5	तृती	दि	10	45	मुद्गरम्।	40	35
	41	5	20	सोम	पूफा	प्र	12	2	चतु	दि	12	59	11:1 रात कर्कट में बुध, ध्वजः।	40	35
	38	6	21	भौम	उफा	प्र	3	10	पंच	दि	3	30	6:48 प्रातः कन्या में चन्द्र, कुमार षष्ठी, प्रजापत्यः।	41	34
	35	7	22	बुध	हस्त		दिन	रात	षष्ठी	दि	6	5	आनन्दः।	42	34
	33	8	23	गुरु	हस्त	दि	6	16	सप्त	प्र	8	30	7:43 शां तुला में चन्द्र, हार सप्तमी, क्षयः।	42	33
	30	9	24	शुक्र	चित्र	दि	9	5	अष्ट	प्र	10	29	हार अष्टमी, गजः।	43	32
	26	10	25	शनि	स्वा	दि	11	23	नव	प्र	11	50	**हार नवमी, शारिका जयन्ती**, हारी पवर्त यात्रा, पलोडा जम्मू,(B)	44	32
	23	11	26	रवि	विशा	दि	1	00	दश	प्र	12	24	6:40 प्रातः वृश्चिक में चन्द्र, उन्मूलम्।	45	31
	20	12	27	सोम	अनूरा	दि	1	50	एका	प्र	12	10	**देवशयनी एकादशी, हरिस्वाप**, मानसम्।	45	30
	16	13	28	भौम	ज्येष्ठ	दि	1	51	द्वाद	प्र	11	7	1:51 दिन धनु में चन्द्र और मूल आरम्भ, **भग गोपी नाथ जयन्ती**, (C)	45	28
	11	14	29	बुध	मूला	दि	1	7	त्रयो	प्र	9	21	ध्वजः।	46	28
	8	15	30	गुरु	पूषा	दि	11	45	चर्तु	दि	7	00	5:19दिन मकर में चन्द्र, 2:19रात कर्कट में भौम **ज्वाला चर्तुदशी**, (D)	47	27
	5	16	31	शुक्र	उषा	दि	9	52	पूर्णि	दि	4	12	**गुरु पूर्णिमा, व्यास पूजा,श्री छड्डी स्नान, मार्तण्ड तीर्थ यात्रा**,कश्मीर,आनन्दः।	47	[illegible]

श्राद्ध ... अकिनगाम, मानसम्। (B) जया देवी जयन्ती, बिजबिहारा, सिद्धः। (C)7:56 दिन से 7:53 शां तक गण्डान्त, **लोक**... मुद्गरम्। (D) खिव यात्र...

... से पूर्णि अपने दिन।

... अपने दिन, पूर्ण का पहले दिन।

अ...

श्रावण कृष्ण पक्ष
वि 2072-ई 2015



कर्कट में सूय, भौम, बुध। सिंह में बृहस्पति, शुक्र। कन्या में राहु। वृश्चिक में शनि। मीन में केतु।

दिन	मान	श्रा	अग	वार	नक्षत्र		बजे	मि	तिथि		बजे	मि	वर्षा ऋतु - दक्षिणायन - ग्रह संचार बजे मिन्टों में	सूर्य उदय	सूर्य अस्त
34	1	17	1	शनि	श्रव	दि	7	40	प्रति	दि	1	7	(धनि प्र 5:17) 6:29 शां कुम्भ में चन्द्र, पंचक आरम्भ, स्थिरः।	5/48	7/25
33	56	18	2	रवि	शत	प्र	2	54	द्विती	दि	9	54	क्षयः।	49	25
	52	19	3	सोम	पूभा	प्र	12	38	तृती	दि	6	43	त्र्यहः(चतु प्र3:40) 7:11शां मीन में चन्द्र,संकट निवारण चतुर्थी,गजः।	49	24
	51	20	4	भौम	उभा	प्र	10	37	पंच	प्र	12	53	6:15 शां सिंह में बुध, सिद्धः।	50	23
	46	21	5	बुध	रेव	प्र	8	56	षष्ठी	प्र	10	26	8:56 रात मेष में चन्द्र, पंचक समाप्त, 3:18 दिन से 2:24 रात(A)	51	22
	42	22	6	गुरु	अश्वि	प्र	7	39	सप्त	प्र	8	23	शीतला सप्तमी, मानसम्।	51	21
	38	23	7	शुक्र	भर	दि	6	48	अष्ट	दि	6	47	12:40 रात वृष में चन्द्र, मुद्गरम्।	52	20
	33	24	8	शनि	कृति	दि	6	25	नव	दि	5	39	ध्वजः।	53	19
	30	25	9	रवि	रोहि	दि	6	29	दश	दि	4	58	प्राजापत्यः।	53	18
	26	26	10	सोम	मृग	दि	7	00	एका	दि	4	45	6:41 प्रातः मिथुन में चन्द्र, कमला एकादशी, आनन्दः।	54	17
	21	27	11	भौम	आर्द्र	प्र	7	58	द्वाद	दि	4	59	चरः।	55	16
	17	28	12	बुध	पुर्न	प्र	9	22	त्रयो	दि	5	40	2:59 दिन कर्कट में चन्द्र, मुसलम्।	55	15
	13	29	13	गुरु	तिष्य	प्र	11	12	चर्तु	दि	6	48	5:19 शां कर्कट में वक्री शुक्र, शूलम्।	56	14
	8	30	14	शुक्र	आश्ले	प्र	1	27	अमा	प्र	8	23	1:27 रात सिंह में चन्द्र, 6:49 शां से गण्डान्त, मृत्युः।	57	13

(A) तक गण्डान्त, उन्मूलम्।

मध्याह्न : प्रति का अपने दिन, द्विती से चतु पहले दिन, पंच से अमा तक अपने दिन।

श्राद्ध : प्रति से चतु पहले दिन, पंच से अष्ट अपने दिन, नवमी से चर्तु पहले दिन, अमा का अपने दिन।

चतुर्थी का जन्मदिन 3 अगस्त को

श्रावण शुक्ल पक्ष
वि 2072-ई 2015



कर्कट में सूर्य, भौम, शुक्र। सिंह में बुध, गुरु। कन्या में राहु। वृश्चिक में शनि। मीन में केतु।

दिन	मान	श्राव	अग	वार	नक्षत्र		बजे	मि	तिथि		बजे	मि	वर्षा ऋतु - दक्षिणायन - ग्रह संचार बजे मिन्टों में	सूर्य उदय	सूर्य अस्त
33	5	31	15	शनि	मघा	प्र	4	5	प्रति	प्र	10	21	6:4 प्रात: तक गण्डान्त, काम्य:। **रक्षा बन्धन 29 अगस्त**	5/58	7/12
	1	32	16	रवि	पूफा	दिन रात			द्विती	प्र	12	40	मासान्त, छत्रम्।	58	11
32	56	भाद्र	17	सोम	पूफा	दि	7	2	तृती	प्र	3	14	1:48 दिन कन्या में चन्द्र, 12:23 दिन सिंह में सूर्य मुर्हूत 45 (A)	59	10
	52	2	18	भौम	उफा	दि	10	10	चतु	प्र	5	52	प्राजापत्य:।	6/0	9
	48	3	19	बुध	हस्त	दि	1	21	पंच	दिन रात			दिन अधिक, 2:54 रात तुला में चन्द्र, आनन्द:।	0	8
	42	4	20	गुरु	चित्र	दि	4	23	पंच	दि	8	26	नाग पंचमी, कुमार षष्ठी, चर:।	1	7
	37	5	21	शुक्र	स्वाति	दि	7	3	षष्ठी	दि	10	40	**ज्योतिषी आफताब शर्मा की 128वीं जयन्ती**, बिजबिहारा, मुसलम्।	2	6
	33	6	22	शनि	विशा	प्र	9	10	सप्त	दि	12	23	2:42 दिन वृश्चिक में चन्द्र, शूलम्।	2	4
	28	7	23	रवि	अनूरा	प्र	10	35	अष्ट	दि	1	6	8:37 दिन कन्या में बुध, मृत्यु:।	3	3
	25	8	24	सोम	ज्येष्ठ	प्र	11	11	नव	दि	1	40	11:11 रात धनु में चन्द्र, मूल आरम्भ, 5:13 दिन से 5:35 रात (B)	4	2
	18	9	25	भौम	मूला	प्र	10	58	दश	दि	1	4	छत्रम्।	4	1
	13	10	26	बुध	पूषा	प्र	9	58	एका	दि	11	40	2:37 रात मकर में चन्द्र, श्रीवत्स:।	5	0
	10	11	27	गुरु	उषा	प्र	8	18	द्वाद	दि	9	31	श्रावण द्वादशी, **कपाल मोचन यात्रा** शोपियान, सौम्य:।	6	6/58
	6	12	28	शुक्र	श्रव	दि	6	6	त्रयो	दि	6	47	त्र्यह: (चर्तु प्र3:35)4:51रात कुम्भ में चन्द्र, पंचक आरम्भ, धौम्य:।	6	57
	1	13	29	शनि	धनि	दि	3	31	पूर्णि	प्र	12	4	**श्री अमरनाथ यात्रा**, थजीवार यात्रा, वमू यात्रा, वेरीनाग, (C)	7	56

(A) किनारी संक्रान्ति व्रत, ध्वज:। (B) तक गण्डान्त, काम्य:। (C) चन्द्रास्वामिन यात्रा, रवयार मट्टन, प्रवर्ध:। **पंचमी का जन्मदिन 20 अगस्त**

मध्याह्न : प्रति से पंच अपने दिन, षष्ठी का पहले दिन, सप्त से दश अपने दिन, एका से चर्तु पहले दिन, पूर्णि अपने दिन।

मध्य... : प्रति से पंच अपने दिन, षष्ठी से चर्तु पहले दिन, पूर्णि अपने दिन।

चर्तुदशी का जन्मदिन 28 अगस्त

श्राद्ध [illegible]

भाद्र कृष्ण पक्ष वि 2072-ई 2015



सिंह में सूर्य, बृहस्पति। कन्या में बुध, राहु। वृश्चिक में शनि। मीन में केतु। कर्कट में भौम, शुक्र।

दिन	मान	भाद्र	अग	वार	नक्षत्र		बजे	मि	तिथि		बजे	मि	वर्षा ऋतु - दक्षिणायन - ग्रह संचार बजे मिन्टों में	सूर्य उदय	सूर्य अस्त
31	55	14	30	रवि	शत	दि	12	44	प्रति	प्र	8	26	4:37 रात मीन में चन्द्र, क्षयः।	6/7	6/55
	51	15	31	सोम	पूभा	दि	9	55	द्विती	दि	4	49	**प्र0 प्रेमनाथ शास्त्री का 16वां निर्वाण दिवस,** ाजः।	8	53
	46	16	सप्त	भौम	उभा	दि	7	13	तृती	दि	1	23	(रेव प्र4:48)4:48 रात मेष में चन्द्र,पंचक समाप्त,11:16 रात से (A)	9	52
	40	17	2	बुध	अश्वि	प्र	2	48	चतु	दि	10	16	10:15 दिन तक गण्डान्त, नवदल यात्रा, त्राल, मृत्युः।	9	51
	36	18	3	गुरु	भरण	प्र	1	18	पंच	दि	7	36	त्र्यहः (षष्ठी प्र 5:27) चन्द्र षष्ठी (10:21) काम्यः।	10	50
	31	19	4	शुक्र	कृति	प्र	12	25	सप्त	प्र	3	55	7:1 प्रातः वृष में चन्द्र, छत्रम्। **जन्माष्टमी 5 सप्तम्बर**	11	48
	27	20	5	शनि	रोहि	प्र	12	9	अष्ट	प्र	3	1	**जन्माष्टमी** (11:54) श्रीवत्सः।	11	47
	21	21	6	रवि	मृग	प्र	12	31	नव	प्र	2	47	12:15 दिन मिथुन में चन्द्र, सौम्यः।	12	46
	17	22	7	सोम	आर्द्र	प्र	1	31	दश	प्र	3	10	कालदण्डः।	13	44
	13	23	8	भौम	पुर्न	प्र	3	4	एका	प्र	4	7	8:37 रात कर्कट में चन्द्र, स्थिरः।	13	43
	6	24	9	बुध	तिष्य	प्र	5	6	द्वाद	प्र	5	35	मातंगः।	14	42
	2	25	10	गुरु	आश्ले	दिन रात			त्रयो	दिन रात			दिन अधिक, 12:48 रात से गण्डान्त, अमृतम्।	15	40
30	58	26	11	शुक्र	आश्ले	दि	7	33	त्रयो	दि	7	28	7:33 प्रातः सिंह में चन्द्र, 2:13 दिन तक गण्डान्त, मृत्युः।	15	39
	51	27	12	शनि	मघा	दि	10	19	चर्तु	दि	9	42	काम्यः।	16	38
	47	28	13	रवि	पूफा	दि	1	20	अमा	दि	12	10	8:7 रात कन्या में चन्द्र, कुशमावसी, सूर्य ग्रहण पृ0276(B)	16	36

(A) गण्डान्त, संकट निवार्ण चतुर्थी, सिद्धः।(B) **पवन संध्या यात्रा,** छत्रम्। **षष्ठी का जन्मदिन 3 सप्तम्बर**

मध्याह्न : प्रति से तृती अपने दिन, चतु से षष्ठी पहले दिन, सप्त से त्रयो अपने दिन, चर्तु का पहले दिन, अमा का अपने दिन।

श्राद्ध : प्रति का अपने दिन, द्विती से षष्ठी पहले दिन, सप्त से त्रयो अपने दिन, चर्तु, अमा का पहले दिन। **त्रयोदशी का जन्मदिन 11 सप्तम्बर**

भाद्र शुक्ल पक्ष
वि 2072-ई 2015



सिंह मे सूर्य, बृहस्पति। कन्या में बुध, राहु। वृश्चिक में शनि। मीन में केतु। कर्कट में भौम, शुक्र।

दिन	मान	भाद्र	सप्त	वार	नक्षत्र		बजे	मि	तिथि		बजे	मि	वर्षा ऋतु/शरद ऋतु-दक्षिणायन - ग्रह संचार बजे मिन्टों में	सूर्य उदय	सूर्य अस्त
30	43	29	14	सोम	उफा	दि	4	28	प्रति	दि	2	48	श्रीवत्सः।	6/17	6/35
	36	30	15	भौम	हस्त	प्र	7	38	द्विती	दि	5	27	9:28 रात सिंह में भौम, सौम्यः।	18	33
	32	31	16	बुध	चित्र	प्र	10	42	तृती	प्र	8	1	9:11 दिन तुला में चन्द्र, हरितालिका तृतीया, मासान्त, कालदण्डः।	19	32
	28	असो	17	गुरु	स्वाति	प्र	1	31	चतु	प्र	10	20	12:18 दिन कन्या में सूर्य मुर्हूत 15 दरियाई, हरुद्ध, शरद ऋतु, (A)	19	31
	22	2	18	शुक्र	विशा	प्र	3	56	पंच	प्र	12	15	9:23 रात वृश्चिक में चन्द्र, वराह पंचमी, मातंगः।	20	29
	18	3	19	शनि	अनूरा	प्र	5	49	षष्ठी	प्र	1	39	कुमार षष्ठी, अमृतम्।	20	28
	13	4	20	रवि	ज्येष्ठा	दिन रात			सप्त	प्र	2	23	1:1 रात से गण्डान्त, काण्डः।	21	27
	7	5	21	सोम	ज्येष्ठा	दि	7	3	अष्ट	प्र	2	22	7:3 प्रातः धनु में चन्द्र, मूल आरम्भ, 1:17 दिन तक गण्डान्त (B)	22	26
	3	6	22	भौम	मूला	दि	7	33	नव	प्र	1	35	छत्रम्।	22	24
29	56	7	23	बुध	पूषा	दि	7	18	दश	प्र	12	3	उषा (प्र 6-18) 1:7 दिन मकर में चन्द्र, श्रीवत्सः।	23	23
	52	8	24	गुरु	श्रव	प्र	4	38	एका	प्र	9	49	गौतम एकादशी गौतम नाग यात्रा, ध्वजः।	23	21
	48	9	25	शुक्र	धनि	प्र	2	25	द्वाद	प्र	7	00	3:35 दिन कुम्भ में चन्द्र, पंचक आरम्भ, प्राजापत्यः।	24	20
	41	10	26	शनि	शत	प्र	11	47	त्रयो	दि	3	42	व्यथ त्रयोदशी, वितस्ता तीर्थ यात्रा, वेरी नाग, आनन्दः।	25	19
	37	11	27	रवि	पूभा	प्र	8	53	चर्तु	दि	12	6	3:37 दिन मीन में चन्द्र, अनन्त चर्तुदशी, अनन्तनाग यात्रा, पापहरण (C)	25	17
	33	12	28	सोम	उभा	दि	5	54	पूर्णि	दि	8	20	त्र्यहः (प्रति प्र 4:34) पितृपक्षारम्भ, पूर्णिमा-अकदोह का श्राद्ध, (D)	26	16

(A) विनायक चतुर्थी संक्रान्ति व्रत स्थिरः।(B) गंगाष्टमी, शारदाष्टमी, लल्लेश्वरी जयन्ती, यज्ञ स्वयमानन्द आश्रम, मुट्ठी, यज्ञ आर्दश नगर जम्मू, काम्यः।

मध्याह्न श्राद्ध : प्रति से चर्तुदशी तक अपने दिन, पूर्णिमा का पहले दिन।
: प्रति, द्विती का पहले दिन, तृती से त्रयो अपने दिन, चर्तुद, पूर्णि पहले दिन।

(C) नाग यात्रा, चरः।(D) चन्द्र ग्रहण पृ0 276, मुसलम्।

आश्विन कृष्ण पक्ष
वि 2072-ई 2015



कन्या में सूर्य, बुध, राहु। वृश्चिक में शनि। मीन में केतु। कर्कट में शुक्र, सिंह में भौम, बृहस्पति।

दिन	मान	असो	सप्त	वार	नक्षत्र		बजे	मि	तिथि		बजे	मि	शरद ऋतु - दक्षिणायन - ग्रह संचार बजे मिन्टों में	सूर्य उदय	सूर्य अस्त
29	26	13	29	भौम	रेव	दि	2	59	द्विती	प्र	12	58	द्वितीय का श्राद्ध 2:59 दिन मेष में चन्द्र, पंचक समाप्त, (A)	6/27	6/15
	22	14	30	बुध	अश्वि	दि	12	20	तृती	प्र	9	42	तृतीया का श्राद्ध 4:13 रात सिंह में शुक्र, मृत्युः।	27	13
	18	15	अक्टू	गुरु	भरण	दि	10	7	चतु	प्र	6	55	चोरम का श्राद्ध 3:38 दिन वृष में चन्द्र, संकट निवारण चतुर्थी, काम्यः	28	12
	11	16	2	शुक्र	कृति	दि	8	26	पंच	दि	4	45	पचंम तथा षष्ठी का श्राद्ध छत्रम्।	29	11
	7	17	3	शनि	रोहि	दि	7	26	षष्ठी	दि	3	18	सप्तमी का श्राद्ध 7:13 शां मिथुन में चन्द्र,साहिब सप्तमी,श्रीवत्सः।	29	9
	3	18	4	रवि	मृग	दि	7	12	सप्त	दि	2	38	अष्टमी का श्राद्ध, पं0 प्रेमनाथ शास्त्री की 95वीं जयन्ती, सौम्यः।	30	8
28	58	19	5	सोम	आर्द्र	दि	7	44	अष्ट	दि	2	45	नवमी का श्राद्ध, 2:37 रात कर्कट में चन्द्र, महालक्ष्मी अष्टमी,(B)	31	7
	52	20	6	भौम	पूर्न	दि	9	00	नव	दि	3	37	दशमी का श्राद्ध, स्थिरः।	32	6
	48	21	7	बुध	तिष्य	दि	10	57	दश	दि	5	9	मातंगः।	32	4
	43	22	8	गुरु	आश्ले	दि	1	26	एका	प्र	7	13	एकादशी का श्राद्ध, 1:26 दिन सिंह में चन्द्र, 6:46 प्रातः से (C)	33	3
	36	23	9	शुक्र	मघा	दि	4	18	द्वाद	प्र	9	38	द्वादशी का श्राद्ध, काण्डः।	34	2
	32	24	10	शनि	पूफा	प्र	7	23	त्रयो	प्र	12	16	त्रयोदशी का श्राद्ध, 2:10 रात कन्या में चन्द्र, अलापकः।	34	0
	28	25	11	रवि	उफा	प्र	10	33	चर्तु	प्र	2	58	चर्तुदशी का श्राद्ध, मैत्रम्।	35	5/59
	23	26	12	सोम	हस्त	प्र	1	40	अमा	प्र	5	35	अमावसी का श्राद्ध, पित्रामावसी, सोमामावसी, विजयेश्वर यात्रा, वज्रम्।	36	58

(A)9:41 दिन से 8:15 शां तक गण्डान्त, शूलम्। (B) कालदण्डः। (C) 6:4 शां तक गण्डान्त, अमृतम्।

मध्याह्न : प्रति का पहले दिन, द्विती से अमा तक अपने दिन।

प्रतिपदा का जन्मदिन 28 सप्त को

आश्विन शुक्ल पक्ष
वि 2072-ई 2015



कन्या में सूर्य, बुध, राहु। वृश्चिक में शनि। मीन में केतु। सिंह में भौम, बृहस्पति, शुक्र।

दिन	मान	असो	अक्टू	वार	नक्षत्र		बजे	मि	तिथि		बजे	मि	शरद ऋतु - दक्षिणायन - ग्रह संचार बजे मिन्टों में	सूर्य उदय	सूर्य अस्त
28	16	27	13	भौम	चित्र	प्र	4	37	प्रति	दिन रात			दिन अधिक 3:10 दिन तुला में चन्द्र, **शरद नवरात्रारम्भ** ध्वांक्षः।	6/37	5/57
	12	28	14	बुध	स्वाति	दिन रात			प्रति	दि	8	1	धौम्यः।	37	56
	8	29	15	गुरु	स्वाति	दि	7	20	द्विती	दि	10	11	3:9 रात वृश्चिक में चन्द्र, स्थिरः।	38	54
	3	30	16	शुक्र	विशा	दि	9	42	तृती	दि	12	00	मासान्त, मातंगः।	39	53
27	58	कत	17	शनि	अनूरा	दि	11	41	चतु	दि	1	24	12:15 रात तुला में सूर्य, मुर्हूत 15 समुद्रीय, अमृतम्।	40	52
	55	2	18	रवि	ज्येष्ठ	दि	1	12	पंच	दि	2	18	1:12 दिन धनु में चन्द्र, मूल आरम्भ,6:52 प्रातः से 7:33 शां तक (A)	40	51
	48	3	19	सोम	मूला	दि	2	10	षष्ठी	दि	2	38	अलापकः।	40	50
	43	4	20	भौम	पूषा	दि	2	33	सप्त	दि	2	22	8:33 रात मकर में चन्द्र, मैत्रम्।	42	49
	38	5	21	बुध	उषा	दि	2	19	अष्ट	दि	1	29	**दुर्गाष्टमी**, वज्रम्।	43	47
	35	6	22	गुरु	श्रव	दि	1	28	नव	दि	11	58	12:49 रात कुम्भ में चन्द्र, पंचक आरम्भ, **भद्रकाली जयन्ती**, (B)	43	46
	31	7	23	शुक्र	धनि	दि	12	1	दश	दि	9	51	प्राजापत्यः।	44	45
	26	8	24	शनि	शत	दि	10	4	एका	दि	7	12	**त्र्यहः** (द्वा प्र 4:7) 2:19 रात मीन में चन्द्र, आनन्दः।	45	44
	21	9	25	रवि	पूभा	दि	7	41	त्रयो	प्र	12	43	(उभा प्र 5:1) चरः।	46	43
	16	10	26	सोम	रेव	प्र	2	12	चर्तु	प्र	9	9	2:12 रात मेष में चन्द्र,पंचक समाप्त,8:56 रात से गण्डान्त,मातंगः।	47	42
	12	11	27	भौम	अश्वि	प्र	11	24	पूर्णि	दि	5	34	7:30 प्रातः तक गण्डान्त, अमृतम्।	47	41

(A) गण्डान्त, संक्रान्ति व्रत, कुमार षष्ठी, काण्डः। (B) महानवमी, विजयादशमी, ध्वजः।

प्रतिपदा का जन्मदिन 14 अक्टूबर

मध्याह्न : प्रति का अपने दिन, द्विती का पहले दिन, तृती से अष्ट अपने दिन, दश, एका, द्वाद पहले दिन, त्रयो से पूर्णि अपने दिन।

श्राद्ध : प्रति का अपने दिन, द्विती से द्वादशी पहले दिन, त्रयो से पूर्णि अपने दिन।

द्वादशी का जन्मदिन 24 अक्टूबर

कार्तिक कृष्ण पक्ष
वि 2072-ई 2015



तुला में सूर्य। वृश्चिक में शनि। मीन में केतु। सिंह में भौम, बृहस्पति, शुक्र। कन्या में बुध, राहु।

दिन	मान	क्त	अक्टू	वार	नक्षत्र		बजे	मि	तिथि		बजे	मि	शरद ऋतु - दक्षिणायन - ग्रह संचार बजे मिन्टों में	सूर्य उदय	सूर्य अस्त
27	8	12	28	बुध	भरण	प्र	8	49	प्रति	दि	2	8	1:13 रात वृष में चन्द्र, काण्डः।	6/48	5/40
	3	13	29	गुरु	कृति	प्र	6	36	द्विती	दि	11	1	11:43 रात तुला में बुध, अलापकः।	49	39
26	58	14	30	शुक्र	रो॥हे	दि	4	56	तृती	दि	8	24	त्र्यहः (चतु प्र 6:25) 4:20 रात मिथुन में चन्द्र, ज्यो0 आफताब (A)	50	38
	53	15	31	शनि	मृग	दि	3	57	पंच	प्र	5	12	वज्रम्।	51	37
	48	16	नव	रवि	आर्द्र	दि	3	45	षष्ठी	प्र	4	50	ध्वांक्षः।	52	36
	43	17	2	सोम	पुर्न	दि	4	24	सप्त	प्र	5	20	10:9 दिन कर्कट में चन्द्र, धौम्यः।	52	35
	40	18	3	भौम	तिष्य	प्र	5	52	अष्ट	प्र	6	38	7:29 प्रातः कन्या में शुक्र, 8:6 दिन कन्या में भौम, प्रवर्धः।	53	34
	36	19	4	बुध	आश्ले	प्र	8	2	नव	दिन रात			दिन अधिक, 8:2 रात से सिंह में चन्द्र, 1:25 दिन से 2:30 (B)	54	34
	33	20	5	गुरु	मघा	प्र	10	46	नव	दि	8	36	गजः।	55	33
	28	21	6	शुक्र	पूफा	प्र	1	51	दश	दि	11	4	सिद्धः।	56	32
	23	22	7	शनि	उफा	प्र	5	2	एका	दि	1	46	8:38 दिन से कन्या में चन्द्र, रमा एकादशी, उन्मूलम्।	57	31
	18	23	8	रवि	हस्त	दिन रात			द्वाद	दि	4	31	मानसम्।	58	30
	16	24	9	सोम	हस्त	दि	8	9	त्रयो	प्र	7	6	9:37 रात तुला में चन्द्र, वज्रम्।	59	30
	11	25	10	भौम	चित्र	दि	11	1	चर्तु	प्र	9	22	ध्वांक्षः।	59	29
	7	26	11	बुध	स्वाति	दि	1	33	अमा	प्र	11	16	दीपावली अन्नकूट, गोवर्धन पूजा, धौम्यः।	7/0	28

दीपावली 11 नवम्बर

(A) शर्मा का 48वाँ निर्वाण दिवस, करवा चौथ,(8:26)संकट निवारण चतुर्थी, मैत्रम्।(B) रात तक गण्डान्त,क्षयः चर्तुर्थी का जन्मदिन 30 अक्टूबर

मध्याह्न : प्रति का अपने दिन, द्विती से से चतु पहले दिन, पंच से नव अपने दिन, दश का पहले दिन, एका से अमा अपने दिन।

श्राद्ध : प्रति से चतु पहले दिन, पंच से नव अपने दिन, दश से द्वाद पहले दिन, त्रया से अमा अपने दिन।

नवमी का जन्म दिन 5 नवम्बर

कार्तिक शुक्ल पक्ष
वि 2072-ई 2015



तुला में सूर्य, बुध। वृश्चिक में शनि। मीन में केतु। सिंह में बृहस्पति। कन्या में भौम, शुक्र, राहु।

दिन	मान	क्त	नव	वार	नक्षत्र		बजे	मि	तिथि		बजे	मि	शरद ऋतु/हेमन्त ऋतु-दक्षिणायन - ग्रह संचार बजे मिन्टों में	सूर्य उदय	सूर्य अस्त
26	3	27	12	गुरु	विशा	दि	3	41	प्रति	प्र	12	45	9:12 दिन वृश्चिक में चन्द्र, प्रवर्धः।	7/1	5/28
	1	28	13	शुक्र	अनू	दि	5	25	द्विती	प्र	1	47	भाई दूज, क्षयः।	2	27
25	56	29	14	शनि	ज्येष्ठ	प्र	6	44	तृती	प्र	2	24	6:44 शां धनु में चन्द्र, मूल आरम्भ, 12:28 दिन से 1:7 रात (A)	3	26
	53	30	15	रवि	मूला	प्र	7	38	चतु	प्र	2	35	मासान्त, सिद्धः।	4	26
	48	मग	16	सोम	पूषा	प्र	8	8	पंच	प्र	2	22	2:11 रात मकर में चन्द्र, 12:2 रात वृश्चिक में सूर्य, मुर्हूत 45 (B)	5	25
	46	2	17	भौम	उषा	प्र	8	13	षष्ठी	प्र	1	43	7:29 प्रातः वृश्चिक में बुध, **कुमार षष्ठी, संक्रान्ति व्रत**, मानसम्।	6	25
	41	3	18	बुध	श्रव	प्र	7	53	सप्त	प्र	12	39	छत्रम्।	7	24
	38	4	19	गुरु	धनि	प्र	7	8	अष्ट	प्र	11	8	7:34 प्रातः कुम्भ में चन्द्र, पंचक आरम्भ, **गोपालाष्टमी**, श्रीवत्सः।	8	24
	33	5	20	शुक्र	शत	प्र	5	57	नव	प्र	9	12	सौम्यः।	8	23
	31	6	21	शनि	पूभा	दि	4	23	दश	प्र	6	52	10:48 दिन मीन में चन्द्र, कालदण्डः।	9	23
	27	7	22	रवि	उभा	दि	2	28	एका	दि	4	12	**हरिबोधिनी एकादशी, शिवस्वाप**, स्थिरः।	10	22
	26	8	23	सोम	रेव	दि	12	17	द्वाद	दि	1	17	12:17 दिन मेष में चन्द्र, पंचक समाप्त, 6:50 प्रातः से (C)	11	22
	23	9	24	भौम	अश्वि	दि	9	57	त्रयो	दि	10	13	**त्र्यहः** (चर्तु प्र7:9) अमृतम्।	12	22
	18	10	25	बुध	भरण	दि	7	37	पूर्णि	प्र	4	13	(कृति प्र 5:26) 1:3 दिन वृष में चन्द्र, **कार्तिक पूर्णिमा**, काण्डः।	13	21

(A) तक गण्डान्त, गजः। (B) पहाडी, हेमन्त ऋतु, उन्मूलम्। (C) 5:45 शां तक गण्डान्त मातंगः।

मध्याह्न : प्रति से द्वाद तक अपने दिन, त्रयो, चर्तुद पहले दिन, पूर्णि का अपने दिन।

श्राद्ध : प्रति से एका तक अपने दिन, द्वाद से चर्तुद पहले दिन, पूर्णि का अपने दिन।

चर्तुदशी का जन्मदिन 24 नवम्बर

मार्ग कृष्ण पक्ष
वि 2072-ई 2015



वृश्चिक में सूर्य, बुध, शनि। मीन में केतु। सिंह में बृहस्पति। कन्या में भौम, शुक्र, राहु।

दिन	मान	मग	नव	वार	नक्षत्र		बजे	मि	तिथि		बजे	मि	हेमन्त ऋतु - दक्षिणायन - ग्रह संचार बजे मिन्टों में	सूर्य उदय	सूर्य अस्त
25	16	11	26	गुरु	रोहि	प्र	3	35	प्रति	प्र	1	37	उन्मूलम।	7/14	5/21
	13	12	27	शुक्र	मृग	प्र	2	13	द्विती	प्र	11	30	2:49 दिन से मिथुन में चन्द्र, मानसम्।	15	21
	11	13	28	शनि	आर्द्र	प्र	1	29	तृती	प्र	10	00	मुद्गरम्।	15	21
	8	14	29	रवि	पुर्न	प्र	1	31	चतु	प्र	9	17	7:26 रात कर्कट में चन्द्र, **संकट निवारण चतुर्थी**, ध्वजः।	16	21
	5	15	30	सोम	तिष्य	प्र	2	22	पंच	प्र	9	23	7:46 प्रातः तुला में शुक्र, प्राजापत्यः।	17	20
	3	16	दिस	भौम	आश्ले	प्र	4	1	षष्ठी	प्र	10	21	4:1 रात सिंह में चन्द्र, 9:23 रात से गण्डान्त, आनन्दः।	18	20
	1	17	2	बुध	मघा	प्र	6	22	सप्त	प्र	12	4	10:32 दिन तक गण्डान्त, चरः।	19	20
24	58	18	3	गुरु	पूफा	दिन	रात		अष्ट	प्र	2	23	**महाकाल भैरवाष्टमी**, मुसलम्।	20	20
	56	19	4	शुक्र	पूफा	दि	9	13	नव	प्र	5	3	4 बजे दिन कन्या में चन्द्र, सिद्धः।	21	20
	53	20	5	शनि	उफा	दि	12	21	दशा	दिन	रात		दिन अधिक, उन्मूलम्।	21	20
	52	21	6	रवि	हस्त	दि	3	30	दशा	दि	7	48	12:1 दिन धनु में बुध, मानसम्।	22	20
	51	22	7	सोम	चित्र	प्र	6	24	एका	दि	10	22	5 बजे प्रातः तुला में चन्द्र, **उत्पन्ना एकादशी**, मुद्गरम्।	23	20
	48	23	8	भौम	स्वाति	प्र	8	25	द्वाद	दि	12	34	ध्वजः।	24	20
	46	24	9	बुध	विशा	प्र	10	55	त्रयो	दि	2	16	4:28 दिन वृश्चिक में चन्द्र, प्राजापत्यः।	25	20
	47	25	10	गुरु	अनू	प्र	12	23	चर्तु	दि	3	24	आनन्दः।	25	21
	46	26	11	शुक्र	ज्येष्ठ	प्र	1	20	अमा	दि	3	59	1:20 रात धनु में चन्द्र, मूल आरम्भ, 7:24 शां से गण्डान्त, चरः।	26	21

मध्याह्न : प्रति से दश तक अपने दिन, एका का पहले दिन, द्वाद से अमा अपने दिन।

श्राद्ध : प्रति से दशा अपने दिन, एका से अमा पहले दिन।

दशमी का जन्मदिन, 6 दिसम्बर को

मार्ग शुक्ल पक्ष
वि 2072-ई 2015



वृश्चिक मे सूर्य, शनि। धनु में बुध। मीन में केतु। सिंह में बृहस्पति। कन्या में भौम, राहु। तुला में शुक्र।

दिन	मान	मग	दिस	वार	नक्षत्र		बजे	मि	तिथि		बजे	मि	हेमन्त ऋतु -दक्षिणायन/उत्तरायण - ग्रह संचार बजे मिन्टों में	सूर्य उदय	सूर्य अस्त
24	43	27	12	शनि	मूला	प्र	1	49	प्रति	दि	4	3	7:30 प्रातः तक गण्डान्त, मुसलम्।	7/27	5/21
	42	28	13	रवि	पूषा	प्र	1	56	द्विती	दि	3	43	शूलम्।	28	21
	43	29	14	सोम	उषा	प्र	1	43	तृती	दि	3	00	7:54 प्रातः मकर में चन्द्र, मृत्युः।	28	22
	41	30	15	भौम	श्रव	प्र	1	14	चतु	दि	2	00	मासान्त, अलापकः।	29	22
	40	पौष	16	बुध	धनि	प्र	12	32	पंच	दि	12	46	12:54 दिन कुम्भ में चन्द्र, पंचक आरम्भ, 2:41 दिन धनु में सूर्य (A)	30	23
	41	2	17	गुरु	शत	प्र	11	37	षष्ठी	दि	11	18	वज्रम्।	30	23
	40	3	18	शुक्र	पूभा	प्र	10	30	सप्त	दि	9	38	4:48 दिन मीन में चन्द्र, ध्वांक्षः।	31	23
	38	4	19	शनि	उभा	प्र	9	12	अष्ट	दि	7	46	त्र्यहः (नव 5:43) धौम्यः।	31	24
	38	5	20	रवि	रेव	प्र	7	44	दश	प्र	3	30	7:44 रात मेष में चन्द्र, पंचक समाप्त, 2:8 दिन से 1:24 रात (B)	32	24
	37	6	21	सोम	अश्वि	प्र	6	8	एका	प्र	1	11	**मोक्षदा एकादशी, गीता जयन्ती, उत्तरायण**, क्षयः।	32	24
	38	7	22	भौम	भरण	दि	4	29	द्वाद	प्र	10	50	10:4 रात वृष में चन्द्र, गजः।	32	24
	37	8	23	बुध	कृति	दि	2	51	त्रयो	प्र	8	32	सिद्धः।	34	25
	40	9	24	गुरु	रोहि	दि	1	23	चर्तु	प्र	6	27	12:45 रात मिथुन में चन्द्र, 5:56 प्रातः तुला में भौम, उन्मूलम्।	34	26
	38	10	25	शुक्र	मृग	दि	12	23	पूर्णि	दि	4	41	3:14 दिन वृश्चिक में शुक्र, **दत्तात्रेय जयन्ती**, मानसम्।	35	26

(A) मुहूर्त 30 समुद्रीय, **कुमार षष्ठी, संक्रान्ति व्रत**, मैत्रम्। (B) तक गण्डान्त, प्रवर्धः।

मध्याह्न : प्रति से पंच तक अपने दिन, षष्ठी से नवमी पहले दिन, दश से पूर्णि अपने दिन।

श्राद्ध : प्रति से नवमी पहले दिन, दशमी से पूर्णि अपने दिन।

नवमी का जन्मदिन 19 दिसम्बर को

पौष कृष्ण पक्ष

वि 2072-ई 2015-16



धनु में सूर्य, बुध। मीन में केतु। सिंह में बृहस्पति। कन्या में राहु। तुला में भौम। वृश्चिक में शुक्र, शनि।

दिन मान		पौष	दिस	वार	नक्षत्र		बजे	मि	तिथि		बजे	मि	हेमन्त ऋतु - उतरायण - ग्रह संचार बजे मिन्टों में	सूर्य उदय	सूर्य अस्त
24	40	11	26	शनि	आर्द्र	दि	11	29	प्रति	दि	3	23	11:51 रात मकर में बुध **मुजंहर तहर,** मातृका पूजा, मुद्गरम्:।	7/35	5/27
	41	12	27	रवि	पुर्न	दि	11	18	द्विती	दि	2	41	5:17 प्रातः कर्कट में चन्द्र, ध्वजः।	36	27
	40	13	28	सोम	तिष्य	दि	11	48	तृती	दि	2	42	संकट निवारण चतुर्थी, प्राजापत्यः।	36	27
	42	14	29	भौम	आश्ले	दि	1	2	चतु	दि	3	28	1:1 दिन सिंह में चन्द्र,6:39 प्रातः से 5:26शां तक गण्डान्त, आनन्दः।	36	29
	45	15	30	बुध	मघा	दि	2	57	पंच	दि	4	58	चरः।	37	30
	46	16	31	गुरु	पूफा	दि	5	29	षष्ठी	प्र	7	5	12:12 रात कन्या में चन्द्र, मुसलम्।	37	31
	45	17	जन	शुक्र	उफा	प्र	8	26	सप्त	प्र	9	38	शूलम्, 2016	37	29
	47	18	2	शनि	हस्त	प्र	11	34	अष्ट	प्र	12	21	महाकाली जयन्ती, मृत्युः।	37	30
	50	19	3	रवि	चित्र	प्र	2	35	नव	प्र	2	58	1:6 दिन तुला में चन्द्र, काम्यः।	37	31
	50	20	4	सोम	स्वा	प्र	5	16	दश	प्र	5	12	**स्वा नन्द बब साहिब जयन्ती, लाले बाग जम्मू,** छत्रम्।	37	32
	51	21	5	भौम	विशा	प्र	7	25	एका	प्र	6	53	12:56 रात वृश्चिक में चन्द्र, श्रीवत्सः।	38	32
	52	22	6	बुध	अनू		दिन	रात	द्वाद		दिन	रात	दिन अधिक, सौम्यः।	38	33
	55	23	7	गुरु	अनू	दि	8	56	द्वाद	दि	7	54	3:53 रात से गण्डान्त, **स्वा रामजी जयन्ती,** आनन्दः।	38	34
	57	24	8	शुक्र	ज्येष्ठ	दि	9	46	त्रयो	दि	8	13	9:46दिन धनु में चन्द्र, मूल आरम्भ,3:57 दिन तक गण्डान्त, चरः।	38	36
	57	25	9	शनि	मूला	दि	10	00	चर्तु	दि	7	53	त्र्यहः (अमा प्र7:00) **यक्षामावसी,** मुसलम्।	39	37

मध्याह्न : प्रति से द्वाद तक अपने दिन, त्रयो से अमा तक पहले दिन।

श्राद्ध : प्रति से पंच पहले दिन, षष्ठी से द्वाद अपने दिन, त्रयो से अमा पहले दिन।

द्वादशी का जन्मदिन 7 जनवरी को
अमावसी का जन्मदिन 9 जनवरी को

पौष शुक्ल पक्ष
वि 2072-ई 2016



धनु में सूर्य। मकर में बुध। मीन में केतु। सिंह में बृहस्पति। कन्या में राहु। तुला में भौम। वृश्चिक में शुक्र, शनि।

दिन	मान	पौष	जन	वार	नक्षत्र		बजे	मि	तिथि		बजे	मि	हेमन्त ऋतु/शिशर - उत्तरायण - ग्रह संचार बजे मिन्टों में	सूर्य उदय	सूर्य अस्त
25	0	26	10	रवि	पूषा	दि	9	41	प्रति	प्र	5	39	3:32 दिन मकर में चन्द्र, **श्री मिरज़काक जयन्ती,** नगरोटा, शूलम्।	7/39	5/38
	3	27	11	सोम	उषा	दि	8	56	द्विती	प्र	3	59	मृत्यु:।	39	39
	7	28	12	भौम	श्रव	दि	7	54	तृती	प्र	2	5	(धनि प्र6:39) 7:17शां से कुम्भ में चन्द्र, पंचक आरम्भ, अलापक:।	38	39
	10	29	13	बुध	शत	प्र	5	18	चतु	प्र	12	4	मासान्त, मानसम्।	38	40
	11	माघ	14	गुरु	पूभा	प्र	3	54	पंच	प्र	10	00	10:15 रात मीन में चन्द्र, 1:25 रात मकर में सूर्य, मुहूर्त 30 (A)	38	42
	15	2	15	शुक्र	उभा	प्र	2	32	षष्ठी	प्र	7	57	कुमार षष्ठी, **शिशर संक्रान्ति व्रत**, ध्वज:।	38	42
	17	3	16	शनि	रेव	प्र	1	2	सप्त	प्र	5	55	1:12 रात मेष में चन्द्र, पंचक समाप्त,7:31 रात से गण्डान्त, प्राजापत्य:।	37	43
	21	4	17	रवि	अश्वि	प्र	11	57	अष्ट	दि	3	57	6:53 प्रात: तक गण्डान्त, आनन्द:।	37	43
	22	5	18	सोम	भरण	प्र	10	47	नव	दि	2	5	4:30 रात वृष में चन्द्र, चर:।	37	44
	25	6	19	भौम	कृति	प्र	9	45	दश	दि	12	19	6:20 प्रात: धनु में शुक्र, मुसलम्।	36	45
	28	7	20	बुध	रोहि	प्र	8	53	एका	दि	10	43	**पुत्रदा एकादशी**, शूलम्।	36	46
	32	8	21	गुरु	मृग	प्र	8	16	द्वाद	दि	9	19	8:33 दिन मिथुन में चन्द्र, मृत्यु:।	36	47
	35	9	22	शुक्र	आर्द्र	प्र	7	59	त्रयो	दि	8	13	त्र्यह: (चर्तुद प्र 7:30) काम्य:।	35	48
	38	10	23	शनि	पुर्न	प्र	8	6	पूर्णि	प्र	7	15	2:2 दिन कर्कट में चन्द्र, छत्रम्।	35	49

(A) किनारी 3 बजे दिन धनु में वक्री बुध, **शिशर ऋतु**, मुद्गरम्।

मध्याह्न : प्रति से दश तक अपने दिन, एका से चर्तुद पहले दिन, पूर्णि का अपने दिन।

श्राद्ध : प्रति से अष्ट अपने दिन, नव से चर्तुद पहले दिन, पूर्णिमा का अपने दिन।

चर्तुदशी का जन्मदिन 22 जनवरी

माघ कृष्ण पक्ष
वि 2072-ई 2016



मकर में सूर्य। मीन में केतु। सिंह में बृहस्पति। कन्या में राहु। तुला में भौम। वृश्चिक में शनि। धनु में बुध, शुक्र।

दिन	मान	माघ	जन	वार	नक्षत्र		बजे	मि	तिथि		बजे	मि	शिशर ऋतु - उत्तरायण - ग्रह संचार बजे मिन्टों में	सूर्य उदय	सूर्य अस्त
25	42	11	24	रवि	तिष्य	प्र	8	43	प्रति	प्र	7	32	श्रीवत्सः।	7/35	5/50
	45	12	25	सोम	आश्ले	प्र	9	53	द्विती		दिन	रात	दिन अधिक, 9:53 रात सिंह में चन्द्र, 3:30 दिन से 4:2 रात (A)	35	51
	50	13	26	भौम	मघा	प्र	11	38	द्विती	दि	8	25	कालदण्डः।	34	52
	53	14	27	बुध	पूफा	प्र	1	57	तृती	दि	9	55	संकट निवारण चतुर्थी, स्थिरः।	33	53
	57	15	28	गुरु	उफा	प्र	4	42	चतु	दि	11	57	8:36 दिन से कन्या में चन्द्र, मातंगः।	32	54
26	1	16	29	शुक्र	हस्त		दिन	रात	पंच	दि	2	24	1:24 रात सिंह में राहु, अमृतम्।	32	55
	6	17	30	शनि	हस्त	दि	7	44	षष्ठी	दि	5	4	9:18 रात तुला में चन्द्र, मृत्युः।	31	56
	10	18	31	रवि	चित्र	दि	10	50	सप्त	प्र	7	43	**साहिब सप्तमी**, काम्यः।	31	57
	13	19	फर	सोम	स्वाति	दि	1	45	अष्ट	प्र	10	5	छत्रम्।	30	57
	18	20	2	भौम	विशा	दि	4	15	नव	प्र	11	56	9:40 दिन वृश्चिक में चन्द्र, श्रीवत्सः।	29	58
	22	21	3	बुध	अनू	प्र	6	8	दश	प्र	1	6	सौम्यः।	29	58
	23	22	4	गुरु	ज्येष्ठ	प्र	7	17	एका	प्र	1	30	7:17 शां से धनु में चन्द्र, मूल आरम्भ, 1:7 दिन से 1:42 रात (B)	28	59
	28	23	5	शुक्र	मूला	प्र	7	42	द्वाद	प्र	1	7	स्थिरः।	28	6/0
	33	24	6	शनि	पूषा	प्र	7	24	त्रयो	प्र	12	2	1:13 रात मकर में चन्द्र, मातंगः।	27	2
	37	25	7	रवि	उषा	प्र	6	28	चर्तु	प्र	10	20	**शिवचर्तुदशी, स्वा राम जी निर्वाण दिवस,** अमृतम्।	26	3
	41	26	8	सोम	श्रव	दि	5	2	अमा	प्र	8	8	4:11 रात कुम्भ में चन्द्र, पंचक आरम्भ,3:5रात मकर में बुध, (C)	25	4

शिव चतुर्दशी व्रत 6, 7, 8 फरवरी

(A) तक गण्डान्त, सौम्यः।(B) तक गण्डान्त, षट्तिला एकादशी, कालदण्डः। (C)सोमामावसी, सिद्धः।

मध्याह्न : प्रति, द्विती का अपने दिन, तृती, चतु, पहले दिन, पंच से अमा अपने दिन।

श्राद्ध : प्रति, द्विती का अपने दिन, तृती से षष्ठी पहले दिन, सप्त से अमा अपने दिन।

द्वितीया का जन्मदिन 26 जनवरी

माघ शुक्ल पक्ष
वि 2072-ई 2016



मकर में सूर्य, बुध। कुम्भ में केतु। सिंह में बृहस्पति, राहु। तुला में भौम। वृश्चिक में शनि। धनु में शुक्र।

दिन	मान	माघ	फर	वार	नक्षत्र		बजे	मि	तिथि		बजे	मि	शिशर ऋतु - उत्तरायण - ग्रह संचार बजे मिन्टों में	सूर्य उदय	सूर्य अस्त
26	46	27	9	भौम	धनि	दि	3	15	प्रति	दि	5	36	उन्मूलम्।	7/24	6/5
	51	28	10	बुध	शत	दि	1	14	द्विती	दि	2	51	मानसम्।	23	6
	56	29	11	गुरु	पूभा	दि	11	9	तृती	दि	12	2	5:40 प्रातः मीन में चन्द्र, **गौरी तृतीया,** मुद्गरम्।	23	7
27	1	30	12	शुक्र	उभा	दि	9	6	चतु	दि	9	16	त्र्यहः (पंच प्र 6:39) (रेव प्र 7:12) 2:49 दिन मकर में शुक्र, (A)	22	7
	6	फा	13	शनि	अश्वि	प्र	5	32	षष्ठी	प्र	4	16	7:12 प्रातः मेष में चन्द्र, पंचक समाप्त, 2:24 दिन कुम्भ में सूर्य, (B)	21	8
	11	2	14	रवि	भरण	प्र	4	10	सप्त	प्र	2	11	**सूर्य सप्तमी, मार्तण्ड तीर्थ यात्रा,** कालदण्डः।	20	9
	13	3	15	सोम	कृति	प्र	3	8	अष्ट	प्र	12	26	9:2 दिन वृष में चन्द्र **भीष्माष्टमी, यज्ञ स्व0 लाल जी** भगवती नगर, (C)	19	9
	18	4	16	भौम	रोहि	प्र	2	29	नव	प्र	11	4	मातंगः।	18	10
	23	5	17	बुध	मृग	प्र	2	13	दश	प्र	10	6	2:18 दिन मिथुन में चन्द्र, अमृतम्।	17	11
	28	6	18	गुरु	आर्द्र	प्र	2	23	एका	प्र	9	33	**भीम सेन एकादशी,** काण्डः।	16	12
	33	7	19	शुक्र	पुर्न	प्र	2	58	द्वाद	प्र	9	26	8:46 रात कर्कट में चन्द्र, अलापकः।	15	13
	38	8	20	शनि	तिष्या	प्र	3	59	त्रयो	प्र	9	46	4:40 दिन वृश्चिक में भौम, मैत्रम्।	14	14
	43	9	21	रवि	आश्ले	प्र	5	27	चर्तु	प्र	10	33	10:56 रात से गण्डान्त, **यक्ष चतुर्दशी,** वज्रम्।	13	15
	46	10	22	सोम	मघा		दिन	रात	पूर्णि	प्र	11	49	5:27 प्रातः सिंह में चन्द्र, 9:58 दिन तक गण्डान्त, **काव पूर्णिमा,** (D)	12	16

(A) 1:56 रात से गण्डान्त, **त्रिपुरा चर्तुथी, बसन्त पंचमी,** मासान्त, ध्वजः।(B)मुर्हूत 30 दरियाई, 12-45 दिन तक गण्डान्त, कुमार षष्ठी, **संक्रान्ति व्रत,** सौम्यः। (C) जम्मू, स्थिरः।(D) **माघ पूर्णिमा,** ध्वांक्षः।

मध्याह्न : प्रति से तृती अपने दिन, चतु, पंच पहले दिन, षष्ठी से पूर्णि अपने दिन।

श्राद्ध : प्रति से पंच पहले दिन, षष्ठी से पूर्णि अपने दिन।

पंचमी का जन्मदिन 12 फरवरी को

फाल्गुन कृष्ण पक्ष
वि 2072-ई 2016



कुम्भ में सूर्य, केतु। सिंह में बृहस्पति, राहु। वृश्चिक में भौम, शनि। मकर में बुध, शुक्र।

दिन	मान	फा	फर	वार	नक्षत्र		बजे	मि	तिथि		बजे	मि	शिशर ऋतु - उत्तरायण - ग्रह संचार बजे मिन्टों में	सूर्य उदय	सूर्य अस्त
27	51	11	23	भौम	मघा	दि	7	21	प्रति	प्र	1	31	**हुरिं अकदोह, स्वा जीवन साहिब यज्ञ,** लुदव कश्मीर, कालदण्डः।	7/11	6/17
	56	12	24	बुध	पूफा	दि	9	41	द्विती	प्र	3	38	4:20 दिन कन्या में चन्द्र, स्थिरः।	10	17
28	1	13	25	गुरु	उफा	दि	12	23	तृती	प्र	6	4	मातंगः।	9	18
	7	14	26	शुक्र	हस्त	दि	3	21	चतु		**दिन**	**रात**	दिन अधिक, **संकट निवारण चतुर्थी,** अमृतम्।	7	19
	13	15	27	शनि	चित्र	प्र	6	27	चतु	दि	8	42	4:53 प्रातः तुला में चन्द्र, काण्डः।	6	20
	16	16	28	रवि	स्वाति	प्र	9	29	पंच	दि	11	20	अलापकः।	5	20
	21	17	29	सोम	विशा	प्र	12	16	षष्ठी	दि	1	47	5:37 शां वृश्चिक में चन्द्र, मैत्रम्।	4	21
	26	18	मार्च	भौम	अनू	प्र	2	36	सप्त	दि	3	51	12:10 रात कुम्भ में बुध, वज्रम्।	3	22
	31	19	2	बुध	ज्येष्ठ	प्र	4	19	अष्ट	दि	5	19	4:19 रात धनु में चन्द्र, मूल आरम्भ, 10:5 रात से गण्डान्त, (A)	2	23
	37	20	3	गुरु	मूला	प्र	5	19	नव	दि	6	4	10:40 दिन तक गण्डान्त, धौम्यः।	0	25
	41	21	4	शुक्र	पूषा	प्र	5	31	दश	दि	6	1	प्रवर्धः।	6/58	26
	46	22	5	शनि	उषा	प्र	4	57	एका	दि	5	11	11:27 दिन मकर में चन्द्र, **विजया एकादशी,** क्षयः।	57	27
	51	23	6	रवि	श्रव	प्र	3	42	द्वाद	दि	3	35	**शिवरात्रि(हेरथ),** मुसलम्।	55	28
	57	24	7	सोम	धनि	प्र	1	51	त्रयो	दि	1	20	2:50 दिन तक कुम्भ में चन्द्र, पंचक आरम्भ, 9:6 रात कुम्भ में शुक्र,(B)	54	29
29	1	25	8	भौम	शत	प्र	11	35	चर्तु	दि	10	33	मृत्युः।	53	30
	6	26	9	बुध	पूभा	प्र	9	1	अमा	दि	7	24	**त्र्यहः** (प्रति प्र 4:00) 3:40 दिन मीन में चन्द्र, **डूनि अमावसी**, (C)	52	31

शिवरात्रि 6 मार्च

(A) होराष्टमी, चक्रीश्वर यात्रा, श्रीनगर, पलोडा, जम्मू, ध्वांक्षः।**(B) शिवचर्तुदशी,** शूलम्। **(C) वटुक परमोजुन,** सूर्य ग्रहण पृ0 276, काम्यः।

मध्याह्न : प्रति से चर्तु अपने दिन, चर्तु, पंच पहले दिन, षष्ठी से त्रयो अपने दिन, चर्तुद अमा पहले दिन।

श्राद्ध : प्रति से चर्तु अपने दिन, पंच से अमा पहले दिन।

चतुर्थी का जन्मदिन 27 फरवरी

फाल्गुन शुक्ल पक्ष
वि 2072-ई 2016



कुम्भ में सूर्य, बुध, शुक्र, केतु। सिंह में बृहस्पति, राहु। वृश्चिक में भौम, शनि।

दिन	मान	फा	मार्च	वार	नक्षत्र		बजे	मि	तिथि		बजे	मि	शिशर ऋतु/बसन्त ऋतु-उत्तरायण-ग्रह संचार बजे मिन्टों में	सूर्य उदय	सूर्य अस्त
29	11	27	10	गुरु	उभा	दि	6	20	द्विती	प्र	12	33	छत्रम्।	6/50	6/32
	17	28	11	शुक्र	रेव	दि	3	41	तृती	प्र	9	11	3:41 दिन मेष में चन्द्र, पंचक समाप्त, 10:20 दिन से 9 बजे (A)	49	32
	23	29	12	शनि	अश्वि	दि	1	14	चतु	दि	6	2	सौम्यः।	48	33
	26	30	13	रवि	भर	दि	11	6	पंच	दि	3	15	4:38 दिन वृष में चन्द्र, **थाल भरुण**,कुमार षष्ठी,मासान्त कालदण्डः।	47	33
	32	चैत्र	14	सोम	कृति	दि	9	26	षष्ठी	दि	12	57	11:16 दिन मीन में सूर्य, मुर्हूत 45 समुद्रीय, बसन्त ऋतु, **सोन्थ**, (B)	45	33
	38	2	15	भौम	रोहि	दि	8	18	सप्त	दि	11	11	7:57 शां मिथुन में चन्द्र, मातंगः।	44	34
	41	3	16	बुध	मृग	दि	7	46	अष्ट	दि	10	2	**तैलाष्टमी**, अमृतम्ः।	43	34
	46	4	17	गुरु	आर्द्र	दि	7	51	नव	दि	9	31	2:19 रात कर्कट में चन्द्र, काण्डः।	42	35
	52	5	18	शुक्र	पुर्न	दि	8	32	दश	दि	9	38	4:36 रात मीन में बुध, अलापकः।	41	36
	58	6	19	शनि	तिष्य	दि	9	48	एका	दि	10	19	4:53 रात से गण्डान्त, मैत्रम्।	40	36
	58	7	20	रवि	आश्ले	दि	11	34	द्वाद	दि	11	31	11:34 दिन सिंह में चन्द्र, 6:2 शां तक गण्डान्त, वज्रम्।	40	36
30	1	8	21	सोम	मघा	दि	1	45	त्रयो	दि	1	11	ध्वांक्षः।	39	37
	7	9	22	भौम	पूफा	दि	4	18	चर्तु	दि	3	12	10:59 रात कन्या में चन्द्र, धौम्यः।	38	38
	13	10	23	बुध	उफा	प्र	7	6	पूर्णि	दि	5	30	**होलिका दहन होली**, प्रवर्धः।	36	38

होली 23 मार्च

थाल भंरुण 13 मार्च

(A) रात तक गण्डान्त, श्रीवत्सः। (B) **संक्रान्ति व्रत**, स्थिरः।

मध्याह्न : प्रति का पहले दिन, द्विती से षष्ठी तक अपने दिन, सप्त से द्वाद तक पहले दिन, त्रयो से पूर्णि अपने दिन।

श्राद्ध : प्रति का पहले दिन, द्विती से चतु अपने दिन, पंच से पूर्णिमा पहले दिन।

प्रतिपदा का जन्मदिन 9 मार्च

चैत्र कृष्ण पक्ष
वि 2072-ई 2016



मीन में सूर्य, बुध। सिंह में बृहस्पति, राहु। वृश्चिक में भौम, शनि। कुम्भ में शुक्र, केतु।

दिन	मान	चैत्र	मार्च	वार	नक्षत्र		बजे	मि	तिथि		बजे	मि	बसन्त ऋतु - उत्तरायण - ग्रह संचार बजे मिन्टों में	सूर्य उदय	सूर्य अस्त
30	16	11	24	गुरु	हस्त	प्र	10	5	प्रति	प्र	7	59	क्षयः।	$^{6}/_{35}$	$^{6}/_{39}$
	22	12	25	शुक्र	चित्र	प्र	1	9	द्विती	प्र	10	34	11:37 दिन तुला में चन्द्र, गजः। **थाल भरुण**	34	40
	28	13	26	शनि	स्वाति	प्र	4	11	तृती	प्र	1	8	सिद्धः। **7 अप्रैल**	33	41
	33	14	27	रवि	विशा	दिन रात			चतु	प्र	3	33	12:23 रात वृश्चिक में चन्द्र, संकट निवारण चतुर्थी, उन्मूलम्।	32	41
	37	15	28	सोम	विशा	दि	7	4	पंच	प्र	5	40	मैत्रम्।	30	42
	43	16	29	भौम	अनू	दि	9	40	षष्ठी	दिन रात			दिन अधिक, वज्रम्।	28	42
	48	17	30	बुध	ज्येष्ठ	दि	11	48	षष्ठी	दि	7	21	11:48 दिन से धनु में चन्द्र, मूल आरम्भ, 5:30 प्रातः से (A)	28	43
	52	18	31	गुरु	मूला	दि	1	22	सप्त	दि	8	28	3:23 रात मीन में शुक्र, धौम्यः।	25	44
	58	19	अप्रै	शुक्र	पूषा	दि	2	16	अष्ट	दि	8	53	8:23 रात मकर में चन्द्र, प्रवर्धः।	24	45
31	3	20	2	शनि	उषा	दि	2	25	नव	दि	8	33	3:44 रात मेष में बुध, क्षयः।	23	45
	10	21	3	रवि	श्रव	दि	1	49	दशा	दि	7	27	**त्र्यहः** (एका प्र5:37)1:15 रात कुम्भ में चन्द्र,पंचक आरम्भ, मुसलम्।	21	46
	13	22	4	सोम	धनि	दि	12	30	द्वाद	प्र	3	7	शूलम्।	19	47
	18	23	5	भौम	शत	दि	10	34	त्रयो	प्र	12	3	2:46 रात मीन में चन्द्र, मृत्युः।	18	48
	25	24	6	बुध	पूभा	दि	8	7	चर्तु	प्र	8	36	(उभा प्र 5:19) काम्यः।	17	49
	31	25	7	गुरु	रेव	प्र	2	21	अमा	दि	4	53	2:21 रात मेष में चन्द्र, पंचक समाप्त, **थाल भरुण**, 9:9 रात से (B)	16	50

(A) 6:55 शां तक गण्डान्त, ध्वांक्षः। (B) गण्डान्त, चैत्रामावसी, विचार नाग यात्रा, श्री भटट् दिवस, मैत्रम्।

मध्याह्न : प्रति से षष्ठी तक अपने दिन, सप्त से एका तक पहले दिन, द्वाद से अमा तक अपने दिन।

श्राद्ध : प्रति से षष्ठी तक अपने दिन, सप्त से एका तक पहले दिन, द्वाद से अमा तक अपने दिन।

षष्ठी का जन्मदिन 30 मार्च को
एकादशी का जन्मदिन 3 अप्रैल को

मुहूर्त प्रकरण सप्तर्षि सं 5091 विक्रमी 2072 ईस्वी 2015-16 के लिये

साथ रटुन

(यज्ञोपवीत तथा विवाह के लिये साथ रटुन, वस्त्र, मसाला अग्निवत्र, लिवुन, घरनावय मंज लागन्य, मस मुचुरुन इत्यादि)

चैत्र शुक्ल पक्ष

25 मार्च षष्ठी बुधवार

26 मार्च सप्तमी गुरुवार

29 मार्च दशमी रविवार

30 मार्च एकादशी सोमवार

8-44 दिन तक

3 अप्रैल चतुर्दशी शुक्रवार

8-50 रात से

वैशाख कृष्ण पक्ष

5 अप्रैल प्रतिपदा रविवार

6 अप्रैल द्वितीया सोमवार

9 अप्रैल पंचमी गुरुवार

10 अप्रैल षष्ठी शुक्रवार

7-29 प्रातः तक

वैशाख शुक्ल पक्ष

19 अप्रैल प्रतिपदा रविवार

3-8 दिन तक

22 अप्रैल चुतर्थी बुधवार

3-48 दिन तक

23 अप्रैल पंचमी गुरुवार

11-16 दिन तक

24 अप्रैल षष्ठी शुक्रवार

12-4 दिन से

26 अप्रैल अष्टमी रविवार

3-52 दिन तक

1 मई त्रयोदशी शुक्रवार

3 मई चतुर्दशी रविवार

7-59 प्रातः से

4 मई पूर्णिमा सोमवार

ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष

6 मई द्वितीया बुधवार

7 मई तृतीया गुरुवार

9-51 दिन तक

11 मई अष्टमी सोमवार

10-55 दिन तक

18 मई अमावसी सोमवार

9-54 रात से

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष

20 मई द्वितीया बुधवार

22 मई चतुर्थी शुक्रवार

5-36 शां से

28 मई दशमी गुरुवार

11-25 दिन से

29 मई एकादशी शुक्रवार

31 मई त्रयोदशी रविवार

1 जून चतुर्दशी सोमवार

10-3 रात से

आषाढ कृष्ण पक्ष

3 जून प्रतिपदा बुधवार

7 जून पंचमी रविवार

4-18 दिन तक

12 जून एकादशी शुक्रवार

9-39 दिन से

आषाढ शुक्ल पक्ष

22 जुलाई षष्ठी बुधवार

23 जुलाई सप्तमी गुरुवार

24 जुलाई अष्टमी शुक्रवार

26 जुलाई दशमी रविवार

27 जुलाई एकादशी सोम

31 जुलाई पूर्णिमा शुक्रवार

9-52 दिन से

भाद्र शुक्ल पक्ष

18 सप्त पंचमी शुक्रवार

20 सप्त सप्तमी रविवार

21 सप्त अष्टमी सोमवार

7-3 प्रातः तक

24 सप्त एकादशी गुरुवार

आश्विन शुक्ल पक्ष

14 अक्टू प्रतिपदा बुधवार

15 अक्टू द्वितीया गुरुवार

22 अक्टू नवमी गुरुवार

11-58 दिन से

कार्तिक कृष्ण पक्ष

29 अक्टू द्वितीया गुरुवार

6-36 शां से

30 अक्टू तृतीया शुक्रवार

8-24 दिन तक

1 नवम्बर षष्ठी रविवार

3-45 दिन से

2 नवम्बर सप्तमी सोमवार

8 नवम्बर द्वादशी रविवार

9 नवम्बर त्रयोदशी सोम

कार्तिक शुक्ल पक्ष

12 नवम्बर प्रतिपदा गुरुवार

13 नवम्बर द्वितीया शुक्रवार

18 नवम्बर सप्तमी बुधवार

23 नवम्बर द्वादशी सोमवार

12-17 दिन से

मार्ग कृष्ण पक्ष

26 नवम्बर प्रतिपदा गुरुवार

27 नवम्बर द्वितीया शुक्रवार

29 नवम्बर चतुर्थी रविवार

9-17 रात से

30 नवम्बर पंचमी सोमवार

6 दिस दशमी रविवार

7 दिस एकादशी सोमवार

9 दिस त्रयोदशी बुधवार

2-16 दिन तक

11 दिस अमावसी शुक्रवार

3-59 दिन से

पौष शुक्ल पक्ष

17 जनवरी अष्टमी रविवार

3-57 दिन तक

20 जनवरी एकादशी बुध

21 जनवरी द्वादशी गुरुवार

माघ कृष्ण पक्ष

24 जनवरी प्रतिपदा रविवार

29 जनवरी पंचमी शुक्रवार

31 जनवरी सप्तमी रविवार

1 फरवरी अष्टमी सोमवार

3 फरवरी दशमी बुधवार

4 फरवरी एकादशी गुरु

माघ शुक्ल पक्ष

17 फरवरी दशमी बुधवार

19 फरवरी द्वादशी शुक्रवार

फाल्गुन कृष्ण पक्ष

25 फरवरी तृतीया गुरुवार

12-23 दिन से

यज्ञोपवीत मुहूर्त

(मेखलि साथ) 2015-16 के लिये

28 फरवरी पंचमी रविवार
29 फरवरी षष्ठी सोमवार
2 मार्च अष्टमी बुधवार
5-19 दिन तक
6 मार्च द्वादशी रविवार

फाल्गुन शुक्ल पक्ष

11 मार्च तृतीया शुक्रवार
3-41 दिन से
16 मार्च अष्टमी बुधवार
7-46 प्रातः तक
17 मार्च नवमी गुरुवार
9-31 दिन से
18 मार्च दशमी शुक्रवार
23 मार्च पूर्णिमा बुधवार
7-6 शां से

चैत्र शुक्ल पक्ष

25 मार्च षष्ठी बुधवार
10-49 दिन से
1-4 दिन तक (मि
26 मार्च सप्तमी गुरुवार
10-45 दिन से
1-00 दिन तक (मि
29 मार्च दशमी रविवार
10-33 दिन से
12-48 दिन तक (मि

वैशाख कृष्ण पक्ष

6 अप्रैल द्वितीया सोमवार
10-2 दिन से
12-17 दिन तक (मि
9 अप्रैल पंचमी गुरुवार
9-50 दिन से
12-5 दिन तक (मि

वैशाख शुक्ल पक्ष

24 अप्रैल षष्ठी शुक्रवार
1-29 दिन से
2-15 दिन तक (सिं
30 अप्रैल द्वादशी गुरुवार
8-27 दिन से
10-42 दिन तक (मि

ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष

6 मई द्वितीया बुधवार
12-40 दिन से
2-00 दिन तक (सिं
7 मई तृतीया गुरुवार
7-59 प्रातः से
10-15 दिन तक (मि

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष

20 मई द्वितीया बुधवार
7-8 प्रातः से
8-49 दिन तक (मि
22 मई चतुर्थी शुक्रवार
11-35 दिन से
1-57 दिन तक (सिं
28 मई दशमी गुरुवार
6-37 प्रातः से
8-52 दिन तक (मि
11-16 दिन से
1-37 दिन तक (सिं

31 मई त्रयोदशी रविवार
6-25 प्रातः से
8-40 दिन तक (मि
11-4 दिन से
1-26 दिन तक (सिं

आषाढ कृष्ण पक्ष

7 जून पंचमी रविवार
5-57 प्रातः से
8-13 दिन तक (मि
10-36 दिन से
12-58 दिन तक (सिं

भाद्र शुक्ल पक्ष

20 सप्त सप्तमी रविवार
8-26 दिन से
10-49 दिन तक (तु
23 सप्त दशमी बुधवार
8-14 दिन से
10-37 दिन तक (तु
24 सप्त एकादशी गुरुवार
8-10 दिन से
10-33 दिन तक (तु
25 सप्त द्वादशी शुक्रवार
8-6 दिन से
10-29 दिन तक (तु

आश्विन शुक्ल पक्ष

14 अक्टू प्रतिपदा बुधवार
11-35 दिन से
1-38 दिन तक (धं
22 अक्टू नवमी गुरुवार
11-58 दिन से
1-6 दिन तक (धं
23 अक्टू दशमी शुक्रवार
11-00 दिन से
1-2 दिन तक (धं
25 अक्टू त्रयोदशी रविवार
10-52 दिन से
12-55 दिन तक (धं

कार्तिक शुक्ल पक्ष

18 नवम्बर सप्तमी बुधवार
9-18 दिन से
11-20 दिन तक (धं
23 नवम्बर द्वादशी सोमवार
12-17 दिन से
12-39 दिन तक (मं
12-39 दिन से
2-5 दिन तक (कुं

मार्ग कृष्ण पक्ष

27 नवम्बर द्वितीय शुक्रवार
8-42 दिन से
10-45 दिन तक (धं
10-45 दिन से
12-24 दिन तक (म
30 नवम्बर पंचमी सोमवार
8-31 दिन से
10-33 दिन तक (धं
10-33 दिन से
12-2 दिन तक (म

मार्ग शुक्ल पक्ष

14 दिस तृतीया सोमवार
7-35 प्रातः से
9-38 दिन तक (धं

पौष शुक्ल पक्ष

20 जनवरी एकादशी बुधवार
8-51 दिन से
10-16 दिन तक (कुं

माघ कृष्ण पक्ष

29 जनवरी पंचमी शुक्रवार

विवाह मुहूर्त

(खान्दर साथ) 2015-16 के लिये

8-16 दिन से

9-41 दिन तक (कुं

माघ शुक्ल पक्ष

10 फरवरी द्वितीया बुधवार

8-54 दिन से

10-13 दिन तक (मी

11 फरवरी तृतीया गुरुवार

11-41 दिन से

12-2 दिन तक (वृ

17 फरवरी दशमी शुक्रवार

8-26 दिन से

9-46 दिन तक (मी

19 फरवरी द्वादशी शुक्रवार

8-18 दिन से

9-38 दिन तक (मी

फाल्गुन कृष्ण पक्ष

25 फरवरी तृतीया गुरुवार

12-23 दिन से

12-39 दिन तक (वृ

12-39 दिन से

2-49 दिन तक (मि

फाल्गुन शुक्ल पक्ष

10 मार्च द्वितीया गुरुवार

9-54 दिन से

11-48 दिन तक (वृ

17 मार्च नवमी गुरुवार

9-31 दिन से

11-20 दिन तक (वृ

वैशाख कृष्ण पक्ष

17 अप्रैल त्रयोदशी शुक्रवार

11-23 रात से

1-26 रात तक (धं

वैशाख शुक्ल पक्ष

22 अप्रैल चतुर्थी बुधवार

8-58 दिन से

11-14 दिन तक (मि

11-14 दिन से

1-37 दिन तक (क

11-4 रात से

1-6 रात तक (धं

27 अप्रैल नवमी सोमवार

10-44 रात से

12-46 रात तक (धं

29 अप्रैल एकादशी बुधवार

12-46 रात से

2-17 रात तक (म

30 अप्रैल द्वादशी गुरुवार

10-42 दिन से

1-6 दिन तक (क

10-32 रात से

12-35 रात तक (धं

2 मई त्रयोदशी शनिवार

10-34 दिन से

12-58 दिन तक (क

10-24 रात से

12-27 रात तक (धं

3 मई चतुर्दशी रविवार

10-30 दिन से

12-54 दिन तक (क

12-23 रात से

2-02 रात तक (म

4 मई पूर्णिमा सोमवार

8-11 दिन से

10-26 दिन तक (मि

ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष

7 मई तृतीया गुरुवार
1-3 दिन से
3-00 दिन तक (सिं
12-7 रात से
1-46 रात तक (म
8 मई चतुर्थी शुक्रवार
10-11 दिन से
12-34 दिन तक (क
12-34 दिन से
1-2 दिन तक (सिं
9 मई पंचमी शनिवार
12-39 दिन से
2-52 दिन तक (सिं
10-57 रात से
11-59 रात तक (धं
11-59 रात से
1-38 रात तक (मं
11 मई अष्टमी सोमवार
12-23 दिन से
2-44 दिन तक (सिं
9-49 रात से
11-51 रात तक (धं
11-51 रात से
1-34 रात तक (म
16 मई त्रयोदशी शनिवार
9-39 दिन से
12-3 दिन तक (क
12-3 दिन से
2-25 दिन तक (सिं
9-25 रात से
11-28 रात तक (धं
11-28 रात से
12-51 रात तक (म

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष

20 मई द्वितीया बुधवार
9-24 दिन से
11-47 दिन तक (क
11-47 दिन से
2-9 दिन तक (सिं
24 मई षष्ठी रविवार
2-27 रात से
3-4 रात तक (मी
25 मई सप्तमी सोमवार
9-4 दिन से
11-28 दिन तक (क
10-56 रात से
12-35 रात तक (म
27 मई नवमी बुधवार
8-56 दिन से
11-20 दिन तक (क
10-48 रात से
12-27 रात तक (म
28 मई दशमी गुरुवार
8-52 दिन से
11-16 दिन तक (क
29 मई एकादशी शुक्रवार
10-41 रात से
12-19 रात तक (म
30 मई द्वादशी शनिवार
11-8 दिन से
1-30 दिन तक (सिं
10-37 रात से
12-16 रात तक (मं
31 मई त्रयोदशी रविवार
8-40 दिन से
11-4 दिन तक (क
11-4 दिन से
1-26 दिन तक (सिं

आषाढ कृष्ण पक्ष

3 जून प्रतिपदा बुधवार
10-21 रात से
12-00 रात तक (म
12-00 रात से
1-25 रात तक (कुं

4 जून द्वितीया गुरुवार
10-48 दिन से
1-10 दिन तक (सिं

5 जून तृतीया शुक्रवार
10-13 रात से
11-52 रात तक (म
11-52 रात से
1-17 रात तक (कुं

6 जून चतुर्थी शनिवार
10-40 दिन से
1-2 दिन तक (सिं
11-48 रात से
1-13 रात तक (कुं

7 जून पंचमी रविवार
10-36 दिन से
12-58 दिन तक (सिं
11-44 रात से
1-9 रात तक (कुं

8 जून षष्ठी सोमवार
10-32 दिन से
12-54 दिन तक (सिं

11 जून नवमी गुरुवार
10-58 दिन से
12-42 दिन तक (सिं
9-49 रात से
11-28 रात तक (म
11-28 रात से
12-54 रात तक (कुं

12 जून एकादशी शुक्रवार
10-17 दिन से
12-38 दिन तक (सिं
9-46 रात से
11-24 रात तक (म
11-24 रात से
12-50 रात तक (कुं

आषाढ शुक्ल पक्ष

18 जुलाई द्वितीया शनिवार
11-47 रात से
1-19 रात तक (मे

19 जुलाई तृतीया रविवार
12-33 दिन से
2-57 दिन तक (तु

22 जुलाई षष्ठी बुधवार
12-22 दिन से
2-45 दिन तक (तु
11-32 रात से
1-3 रात तक (मे

23 जुलाई सप्तमी गुरुवार
12-18 दिन से
2-41 दिन तक (तु
11-28 रात से
12-59 रात तक (मे

24 जुलाई अष्टमी शुक्रवार
7-32 प्रातः से
9-53 दिन तक (सिं
11-24 रात से
12-55 रात तक (मे

25 जुलाई नवमी शनिवार
7-28 प्रातः से
9-49 दित तक (सिं

30 जुलाई चर्तुदशी गुरुवार
11-50 दिन से
2-14 दिन तक (तु

11-00 रात से
12-32 रात तक (मे
31 जुलाई पूर्णिमा शुक्रवार
11-46 दिन से
2-10 दिन तक (तु
10-56 रात से
12-28 रात तक (मे

श्रावण कृष्ण पक्ष

1 अगस्त प्रतिपदा शनिवार
11-42 दिन से
2-6 दिन तक (तु
10-52 रात से
12-24 रात तक (मे

भाद्र शुक्ल पक्ष

21 सप्त अष्टमी सोमवार
8-22 दिन से
10-45 दिन तक (तु
10-56 रात से
1-12 रात तक (मि
23 सप्त दशमी बुधवार
8-14 दिन से
10-37 दिन तक (तु
1-7 दिन से
3-00 दिन तक (धं
10-49 रात से
1-4 रात तक (मि
25 सप्त द्वादशी शुक्रवार
8-6 दिन से
10-29 दिन तक (तु
12-50 दिन से
2-53 दिन तक (धं
10-41 रात से
12-56 रात तक (मि

आश्विन शुक्ल पक्ष

14 अक्टू प्रतिपदा बुधवार
11-35 दिन से
1-38 दिन तक (धं
11-41 रात से
2-5 रात तक (क
19 अक्टू षष्ठी सोमवार
1-18 दिन से
2-10 दिन तक (म
21 अक्टू अष्टमी बुधवार
11-8 दिन से
1-10 दिन तक (धं
11-14 रात से
1-38 रात तक (क
22 अक्टू नवमी गुरुवार
11-4 दिन से
1-6 दिन तक (धं
11-10 रात से
1-34 रात तक (क
23 अक्टू दशमी शुक्रवार
11-00 दिन से
12-1 दिन तक (धं
25 अक्टू त्रयोदशी रविवार
10-52 दिन से
12-55 दिन तक (धं
10-58 रात से
1-22 रात तक (क

कार्तिक कृष्ण पक्ष

29 अक्टू द्वितीया गुरुवार
10-42 रात से
1-6 रात तक (क
30 अक्टू तृतीया शुक्रवार
10-32 दिन से
12-35 दिन तक (धं
10-38 रात से
1-2 रात तक (क

31 अक्टू पंचमी शनिवार
10-29 दिन से
12-31 दिन तक (धं
4 नवम्बर नवमी बुधवार
10-19 रात से
12-42 रात तक (क
5 नवम्बर दशमी गुरुवार
12-11 दिन से
1-50 दिन तक (म
7-59 रात से
10-15 रात तक (मि
10-15 रात से
10-46 रात तक (क
8 नवम्बर द्वादशी रविवार
11-59 दिन से
1-38 दिन तक (म
10-3 रात से
12-27 रात तक (क
9 नवम्बर त्रयोदशी सोम
11-56 दिन से
1-34 दिन तक (म
9-59 रात से
12-23 रात तक (क

कार्तिक शुक्ल पक्ष

14 नवम्बर तृतीया शनिवार
9-39 रात से
12-3 रात तक (क
18 नवम्बर सप्तमी बुधवार
9-18 दिन से
11-20 दिन तक (धं
12-59 दिन से
2-24 दिन तक (कुं
9-24 रात से
11-47 रात तक (क
19 नवम्बर अष्टमी गुरुवार
9-14 दिन से
11-16 दिन तक (धं
11-16 दिन से
12-55 दिन तक (म
23 नवम्बर द्वादशी सोमवार
12-39 दिन से
2-5 दिन तक (कुं
9-4 रात से
11-28 रात तक (क

मार्ग कृष्ण पक्ष

26 नवम्बर प्रतिपदा गुरुवार
10-49 दिन से
12-28 दिन तक (म
12-28 दिन से
1-53 दिन तक (कुं
8-52 रात से
11-16 रात तक (क
11-16 रात से
1-38 रात तक (सिं
27 नवम्बर द्वितीया शुक्रवार
10-45 दिन से
12-24 दिन तक (म
12-24 दिन से
1-49 दिन तक (कुं
8-48 रात से
11-12 रात तक (क
2 दिस सप्तमी बुधवार
10-25 दिन से
12-4 दिन तक (म
8-29 रात से
10-52 रात तक (क
6 दिस दशमी रविवार
10-37 रात से
12-58 रात तक (सिं

7 दिस एकादशी सोमवार
11-44 दिन से
1-9 दिन तक (कुं
10-33 रात से
12-54 रात तक (सिं
11 दिस अमावसी शुक्रवार
2-59 रात से
5-23 रात तक (तु

मार्ग शुक्ल पक्ष

12 दिस प्रतिपदा शनिवार
11-28 दिन से
12-46 दिन तक (कुं
10-9 रात से
12-31 रात तक (सिं
13 दिस द्वितीया रविवार
2-51 रात से
5-15 रात तक (तु
14 दिस तृतीया सोमवार
11-17 दिन से
12-42 दिन तक (कुं
10-5 रात से
12-27 रात तक (सिं

पौष शुक्ल पक्ष

17 जनवरी अष्टमी रविवार
9-3 दिन से
10-28 दिन तक (कुं
7-51 शां से
10-13 रात तक (सिं
20 जनवरी एकादशी बुधवार
8-51 दिन से
10-16 दिन तक (कुं
7-40 रात से
8-53 रात तक (सिं
29 जनवरी पंचमी शुक्रवार
8-16 दिन से
9-41 दिन तक (कुं
7-4 शां से
9-26 रात तक (सिं
30 जनवरी षष्ठी शनिवार
9-37 दिन से
10-57 दिन तक (मी
9-22 रात से
11-42 रात तक (कं
31 जनवरी सप्तमी रविवार
9-33 दिन से
10-53 दिन तक (मी
9-18 रात से
11-39 रात तक (कं
1 फरवरी अष्टमी सोमवार
9-29 दिन से
10-39 दिन तक (मी
3 फरवरी दशमी बुधवार
9-21 दिन से
10-41 दिन तक (मी
4 फरवरी एकादशी गुरु
9-2 रात से
11-23 रात तक (कं
5 फरवरी द्वादशी शुक्रवार
9-13 दिन से
10-33 दिन तक (मी
6 फरवरी त्रयोदशी शनि
8-54 रात से
11-15 रात तक (कं
7 फरवरी चतुर्दशी रविवार
9-6 दिन से
10-25 दिन तक (मी
8-51 रात से
11-11 रात तक (कं

माघ शुक्ल पक्ष

11 फरवरी तृतीया गुरुवार

1-34 दिन से
3-49 दिन तक (मि
8-35 रात से
10-55 रात तक (कं

17 फरवरी दशमी बुधवार

8-26 दिन से
9-46 दिन तक (मी
1-10 दिन से
2-18 दिन तक (मि
8-11 रात से
10-32 रात तक (कं

22 फरवरी पूर्णिमा सोमवार

9-26 दिन से
10-57 दिन तक (मे
12-51 दिन से
2-6 दिन तक (मि
10-16 रात से
12-39 रात तक (तु

फाल्गुन कृष्ण पक्ष

25 फरवरी तृतीया गुरुवार

12-39 दिन से
2-54 दिन तक (मि
10-00 रात से
12-24 रात तक (तु

26 फरवरी चतुर्थी शुक्रवार

12-35 दिन से
2-50 दिन तक (मि
9-56 रात से
12-20 रात तक (तु

27 फरवरी चतुर्थी शनिवार

12-31 दिन से
2-46 दिन तक (मि

3 मार्च नवमी गुरुवार

12-15 दिन से
2-31 दिन तक (मि
9-37 रात से
12-00 रात तक (तु

5 मार्च एकादशी शनिवार

8-43 दिन से
10-14 दिन तक (मे
12-7 दिन से
2-23 दिन तक (मि
9-29 रात से
11-52 रात तक (तु

6 मार्च द्वादशी रविवार

8-39 दिन से
10-10 दिन तक (मे
12-4 दिन से
2-19 दिन तक (मि
9-25 रात से
11-52 रात तक (तु

7 मार्च त्रयोदशी सोमवार

12-00 दिन से
2-15 दिन तक (मि
9-21 रात से
11-44 रात तक (तु

फाल्गुन शुक्ल पक्ष

10 मार्च द्वितीया गुरुवार

11-48 दिन से
2-3 दिन तक (मि

11 मार्च तृतीया शुक्रवार

3-41 दिन से
4-23 दिन तक (क
9-5 रात से
11-29 रात तक (तु

12 मार्च चतुर्थी शनिवार

11-40 दिन से

1-14 दिन तक (मि

प्रवेश मुहूर्त

(नविस मकानस या फलैटस अच़नुक साथ)

वैशाख शुक्ल पक्ष

23 अप्रैल पंचमी गुरुवार

7-1 प्रातः से

8-54 दिन तक (वृ

30 अप्रैल द्वादशी गुरुवार

6-33 प्रातः से

8-27 दिन तक (वृ

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष

20 मई द्वितीया बुधवार

9-24 दिन से

11-47 दिन तक (क

23 मई पंचमी शनिवार

9-12 दिन से

11-35 दिन तक (क

30 मई द्वादशी शनिवार

8-44 दिन से

11-8 दिन तक (क

भाद्र शुक्ल पक्ष

23 सप्त दशमी बुधवार

1-7 दिन से

3-00 दिन तक (धं

4-39 दिन से

6-4 दिन तक (कुं

25 सप्त द्वादशी शुक्रवार

12-50 दिन से

2-53 दिन तक (धं

5-47 दिन से

6-20 शां तक (मी

आश्विन शुक्ल पक्ष

14 अक्टू प्रतिपदा बुधवार

11-35 दिन से

1-38 दिन तक (धं

3-17 दिन से

4-41 दिन तक (कुं

22 अक्टू नवमी गुरुवार

2-45 दिन से

4-10 दिन तक (कुं

4-10 दिन से

5-30 दिन तक (मी

23 अक्टू दशमी शुक्रवार

11-00 दिन से

12-1 दिन तक (धं

कार्तिक कृष्ण पक्ष

31 अक्टू पंचमी शनिवार

10-29 दिन से

12-31 दिन तक (धं

2-10 दिन से

3-35 दिन तक (कुं

3-35 दिन से

4-54 दिन तक (मी

मार्ग कृष्ण पक्ष

27 नवम्बर द्वितीया शुक्रवार

8-42 दिन से

10-45 दिन तक (धं

12-24 दिन से

1-49 दिन तक (कुं

1-49 दिन से

3-6 दिन तक (मी

30 नवम्बर पंचमी सोमवार

8-31 दिन से

10-33 दिन तक (धं

12-12 दिन से
1-37 दिन तक (कुं
1-37 दिन से
2-56 दिन तक (मी

मार्ग शुक्ल पक्ष

14 दिस तृतीया सोमवार
7-54 प्रात: से
9-38 दिन तक (धं
11-17 दिन से
12-42 दिन तक (कुं
12-42 दिन से
2-1 दिन तक (मी
3-33 दिन से
5-26 दिन तक (वृ

पौष शुक्ल पक्ष

20 जनवरी एकादशी बुध
8-51 दिन से
10-16 दिन तक (कुं
10-16 दिन से
11-36 दिन तक (मी
1-7 दिन से
3-1 दिन तक (वृ

माघ कृष्ण पक्ष

29 जनवरी पंचमी शुक्रवार
8-16 दिन से
9-41 दिन तक (कुं
9-41 दिन से
11-00 दिन तक (मी
12-32 दिन से
1-25 दिन तक (वृ

माघ शुक्ल पक्ष

10 फरवरी द्वितीया बुधवार
8-54 दिन से
10-13 दिन तक (मी
17 फरवरी दशमी बुधवार
8-26 दिन से
9-46 दिन तक (मी
1-10 दिन से
3-26 दिन तक (मि

फाल्गुन कृष्ण पक्ष

25 फरवरी तृतीया गुरुवार
11-39 दिन से
2-54 दिन तक (मि
27 फरवरी चतुर्थी शनिवार
8-42 दिन से
9-6 दिन तक (मी
12-31 दिन से
2-46 दिन तक (मि

फाल्गुन शुक्ल पक्ष

10 मार्च द्वितीया गुरुवार
11-48 दिन से
2-3 दिन तक (मि

शंकु प्रतिष्ठा
बुनियाद-मकान (कॅन-ह्युन)

वैशाख शुक्ल पक्ष

23 अप्रैल पंचमी गुरुवार
7-1 प्रात: से
8-54 दिन तक (वृ
25 अप्रैल सप्तमी शनिवार
1-38 दिन से
3-47 दिन तक (सिं

ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष

6 मई द्वितीया बुधवार
6-10 प्रात: से

8-3 दिन तक (वृ

8-3 दिन से

10-19 दिन तक (मि

9 मई पंचीम शनिवार

12-30 दिन से

2-52 दिन तक (सिं

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष

20 मई द्वितीया बुधवार

7-8 दिन से

9-24 दिन तक (मि

23 मई पंचमी शनिवार

7-00 प्रातः से

9-16 दिन तक (मि

कार्तिक कृष्ण पक्ष

2 नवम्बर सप्तमी सोमवार

4-24 दिन से

4-47 दिन तक (मी

कार्तिक शुक्ल पक्ष

12 नवम्बर प्रतिपदा गुरुवार

3-41 दिन से

4-7 दिन तक (मी

13 नवम्बर द्वितीया शुक्रवार

2-44 दिन से

4-3 दिन तक (मी

18 नवम्बर सप्तमी बुधवार

2-24 दिन से

3-44 दिन तक (मी

मार्ग कृष्ण पक्ष

26 नवम्बर सप्तमी बुधवार

1-53 दिन से

3-12 दिन तक (मी

27 नवम्बर द्वितीय शुक्रवार

1-49 दिन से

3-8 दिन तक (मी

30 नवम्बर पंचमी सोमवार

1-37 दिन से

2-56 दिन तक (मी

मार्ग शुक्ल पक्ष

14 दिस तृतीया सोमवार

12-42 दिन से

2-1 दिन तक (मी

माघ कृष्ण पक्ष

28 जनवरी चतुर्थी गुरुवार

12-36 दिन से

2-29 दिन तक (वृ

2-29 दिन से

4-44 दिन तक (मि

29 जनवरी पंचमी शुक्रवार

9-41 दिन से

11-00 दिन तक (मी

12-32 दिन से

2-25 दिन तक (वृ

2-25 दिन से

4-41 दिन तक (मि

30 जनवरी षष्ठी शनिवार

9-37 दिनसे

10-57 दिन तक (मी

12-28 दिन से

2-21 दिन तक (वृ

2-21 दिन से

4-37 दिन तक (मि

माघ शुक्ल पक्ष

10 फरवरी द्वितीया बुधवार

7-29 प्रातः से

8-54 दिन तक (कुं

8-54 दिन से

10-13 दिन तक (मी

11-45 दिन से
1-14 दिन तक (वृ
11 फरवरी तृतीया गुरुवार
11-45 दिन से
12-2 दिन तक (वृ

फाल्गुन कृष्ण पक्ष

24 फरवरी द्वितीया बुधवार
12-43 दिन से
2-58 दिन तक (मि
25 फरवरी तृतीया गुरुवार
7-55 प्रातः से
9-14 दिन तक (मी

12-39 दिन से
2-54 दिन तक (मि
27 फरवरी चतुर्थी शनिवार
8-42 दिन से
9-6 दिन तक (मी
12-31 दिन से
2-46 दिन तक (मि
7 मार्च त्रयोदशी सोमवार
7-15 प्रातः से
8-35 दिन तक (मी
10-6 दिन से
12-00 दिन तक (वृ
12-00 दिन से
1-20 दिन तक (मि

फाल्गुन शुक्ल पक्ष

10 मार्च द्वितीया गुरुवार
11-48 दिन से
2-3 दिन तक (मि
11 मार्च तृतीया शुक्रवार
11-44 दिन से
1-59 दिन तक (मि

चूढा कर्म मुहूर्त (ज़रकासय साथ)

चैत्र शुक्ल पक्ष

26 मार्च सप्तमी गुरुवार
10-45 दिन से
1-00 दिन तक (मि

वैशाख कृष्ण पक्ष

6 अप्रैल द्वितीया सोमवार
8-8 दिन से
10-2 दिन तक (वृ
10-2 दिन से
12-17 दिन तक (मि
9 अप्रैल पंचमी गुरुवार
7-56 प्रातः से
9-50 दिन तक (वृ
9-50 दिन से
12-5 दिन तक (मि

वैशाख शुक्ल पक्ष

23 अप्रैल पंचमी गुरुवार
7-1 प्रातः से
8-54 दिन तक (वृ

ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष

6 मई द्वितीया बुधवार
12-40 दिन से
3-4 दिन तक (सिं
7 मई तृतीया गुरुवार
7-59 प्रातः से
9-51 दिन तक (मि

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष

20 मई द्वितीया बुधवार
9-24 दिन से
11-47 दिन तक (क

11-47 दिन से
2-9 दिन तक (सिं

22 मई चतुर्थी शुक्रवार
5-36 दिन से
6-45 शां तक (तु

27 मई नवमी बुधवार
4-2 दिन से
6-25 शां तक (तु

28 मई दशमी गुरुवार
6-37 प्रातः से
8-52 दिन तक (मि
8-52 दिन से
11-16 दिन तक (क

29 मई एकादशी शुक्रवार
3-54 दिन से
6-17 शां तक (तु

भाद्र शुक्ल पक्ष

23 सप्त दशमी बुधवार
8-14 दिन से
10-37 दिन तक (तु

24 सप्त एकादशी गुरुवार
8-10 दिन से
10-33 दिन तक (तु

आश्विन शुक्ल पक्ष

14 अक्टू प्रतिपदा बुधवार
11-35 दिन से
1-38 दिन तक (धं

22 अक्टू नवमी गुरुवार
11-58 दिन से
1-6 दिन तक (धं
2-45 दिन से
4-10 दिन तक (कुं

23 अक्टू दशमी शुक्रवार
11-00 दिन से
1-2 दिन तक (धं

कार्तिक शुक्ल पक्ष

18 नवम्बर सप्तमी बुधवार
9-18 दिन से
11-20 दिन तक (धं
11-20 दिन से
12-59 दिन तक (म

23 नवम्बर द्वादशी सोमवार
2-5 दिन से
3-24 दिन तक (मी

मार्ग कृष्ण पक्ष

27 नवम्बर द्वितीया शुक्रवार
8-42 दिन से
10-45 दिन तक (धं
10-45 दिन से
12-24 दिन तक (म
1-49 दिन से
3-8 दिन तक (मी

30 नवम्बर पंचमी सोमवार
8-31 दिन से
10-33 दिन तक (धं
10-33 दिन से
12-12 दिन तक (म

मार्ग शुक्ल पक्ष

14 दिस तृतीया सोमवार
7-35 प्रातः से
9-38 दिन तक (धं
11-17 दिन से
12-42 दिन तक (कुं

पौष शुक्ल पक्ष

20 जनवरी एकादशी बुध
8-51 दिन से
10-16 दिन तक (कुं

10-16 दिन से
10-43 दिन तक (मी

माघ कृष्ण पक्ष

29 जनवरी पंचमी शुक्रवार
8-16 दिन से
9-41 दिन तक (कुं
9-41 दिन से
11-00 दिन तक (मी
11-00 दिन से
12-32 दिन तक (मे

माघ शुक्ल पक्ष

10 फरवरी द्वितीया बुधवार
8-54 दिन से
10-13 दिन तक (मी
10-13 दिन से
11-45 दिन तक (मे
11-45 दिन से
1-14 दिन तक (वृ

11 फरवरी तृतीया गुरुवार
11-9 दिन से
12-2 दिन तक (वृ

17 फरवरी दशमी बुधवार
8-26 दिन से
9-46 दिन तक (मी
9-46 दिन से
11-17 दिन तक (मे

फाल्गुन कृष्ण पक्ष

25 फरवरी तृतीया गुरुवार
12-23 दिन से
12-39 दिन तक (वृ
2-54 दिन से
5-18 दिन तक (क

फाल्गुन शुक्ल पक्ष

10 मार्च द्वितीया गुरुवार
8-23 दिन से
9-54 दिन तक (मे
9-54 दिन से
11-48 दिन तक (वृ

17 मार्च नवमी गुरुवार
9-31 दिन से
11-20 दिन तक (वृ

वाग्दान मुहूर्त (गण्डन साथ)

चैत्र शुक्ल पक्ष

25 मार्च षष्ठी बुधवार
26 मार्च सप्तमी गुरुवार
1 अप्रैल द्वादशी बुधवार
2 अप्रैल त्रयोदशी गुरुवार
12-46 दिन तक
3 अप्रैल चर्तुदशी शुक्रवार
3-17 दिन से

वैशाख कृष्ण पक्ष

6 अप्रैल द्वितीया सोमवार
10 अप्रैल षष्ठी शुक्रवार
16 अप्रैल द्वादशी गुरुवार

वैशाख शुक्ल पक्ष

20 अप्रैल द्वितीया सोमवार
1-16 दिन से
22 अप्रैल चतुर्थी बुधवार
3-48 दिन से
23 अप्रैल पंचमी गुरुवार
11-16 दिन तक
29 अप्रैल एकादशी बुधवार
30 अप्रैल द्वादशी गुरुवार
1 मई त्रयोदशी शुक्रवार

3 मई चर्तुदशी रविवार
8-43 दिन से
4 मई पूर्णिमा सोमवार
10-31 दिन तक

ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष

6 मई द्वितीया बुधवार
12-40 दिन तक
8 मई चतुर्थी शुक्रवार
9-11 दिन से
13 मई दशमी बुधवार
8-6 दिन से
18 मई अमावसी सोमवार
9-42 दिन से

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष

20 मई द्वितीया बुधवार
25 मई सप्तमी सोमवार
9-39 दिन तक
27 मई नवमी बुधवार
2-34 दिन से
28 मई दशमी गुरुवार
29 मई एकादशी शुक्रवार
2-11 दिन तक
31 मई त्रयोदशी रविवार

आषाढ कृष्ण पक्ष

4 जून द्वितीया गुरुवार
5 जून तृतीया शुक्रवार
7 जून पंचमी रविवार
8 जून षष्ठी सोमवार
11 जून नवमी गुरुवार
12 जून एकादशी शुक्रवार
9-39 दिन तक

आषाढ शुक्ल पक्ष

19 जुलाई तृतीया रविवार
10-45 दिन तक
20 जुलाई चतुर्थी सोमवार
12-59 दिन से
26 जुलाई दशमी रविवार
1-00 दिन से
27 जुलाई एकादशी सोम
29 जुलाई त्रयोदशी बुधवार
31 जुलाई पूर्णिमा शुक्रवार

श्रावण कृष्ण पक्ष

3 अगस्त तृतीया सोमवार
6-43 प्रातः तक

भाद्र शुक्ल पक्ष

23 सप्त दशमी बुधवार
24 सप्त एकादशी गुरुवार
25 सप्त द्वादशी शुक्रवार
27 सप्त चतुर्दशी रविवार
12-6 दिन से

आश्विन शुक्ल पक्ष

14 अक्टू प्रतिपदा बुधवार
19 अक्टू षष्ठी सोमवार
22 अक्टू नवमी गुरुवार
11-58 दिन से
23 अक्टू दशमी शुक्रवार
12-1 दिन तक
25 अक्टू त्रयोदशी रविवार

कार्तिक कृष्ण पक्ष

29 अक्टू द्वितीया गुरुवार
30 अक्टू तृतीया शुक्रवार
5 नवम्बर नवमी गुरुवार
8-36 दिन से

6 नवम्बर दशमी शुक्रवार

8 नवम्बर द्वादशी रविवार

कार्तिक शुक्ल पक्ष

12 नवम्बर प्रतिपदा गुरुवार

3-41 दिन से

13 नवम्बर द्वितीया शुक्रवार

18 नवम्बर सप्तमी बुधवार

22 नवम्बर एकादशी रवि

23 नवम्बर द्वादशी सोमवार

12-17 दिन तक

25 नवम्बर पूर्णिमा बुधवार

मार्ग कृष्ण पक्ष

26 नवम्बर प्रतिपदा गुरु

27 नवम्बर द्वितीया शुक्रवार

2 दिस सप्तमी बुधवार

6 दिस दशमी रविवार

3-30 दिन तक

मार्ग शुक्ल पक्ष

13 दिस द्वितीया रविवार

14 दिस तृतीया सोमवार

3-00 दिन तक

पौष शुक्ल पक्ष

20 जनवरी एकादशी बुध

21 जनवरी द्वादशी गुरुवार

माघ कृष्ण पक्ष

27 जनवरी तृतीया बुधवार

9-55 दिन तक

28 जनवरी चतुर्थी गुरुवार

11-57 दिन तक

29 जनवरी पंचमी शुक्रवार

31 जनवरी सप्तमी रविवार

10-50 दिन से

3 फरवरी दशमी बुधवार

5 फरवरी द्वादशी शुक्रवार

माघ शुक्ल पक्ष

10 फरवरी द्वितीया बुधवार

1-14 दिन से

11 फरवरी तृतीया गुरुवार

12-2 दिन तक

17 फरवरी दशमी बुधवार

22 फरवरी पूर्णिमा सोमवार

फाल्गुन कृष्ण पक्ष

24 फरवरी द्वितीया बुधवार

25 फरवरी तृतीया गुरुवार

28 फरवरी पंचमी रविवार

4 मार्च दशमी शुक्रवार

6 मार्च द्वादशी रविवार

7 मार्च त्रयोदशी सोमवार

1-20 दिन तक

फाल्गुन शुक्ल पक्ष

10 मार्च द्वितीया गुरुवार

11 मार्च तृतीया शुक्रवार

3-41 दिन तक

20 मार्च द्वादशी रविवार

11-34 दिन से

21 मार्च त्रयोदशी सोमवार

1-11 दिन तक

23 मार्च पूर्णिमा बुधवार

जातकर्म मुहूर्त
(काहनेथर)

चैत्र शुक्ल पक्ष

25 मार्च षष्ठी बुधवार

26 मार्च सप्तमी गुरुवार

29 मार्च दशमी रविवार

30 मार्च एकादशी सोमवार

वैशाख कृष्ण पक्ष

6 अप्रैल द्वितीया सोमवार

वैशाख शुक्ल पक्ष

22 अप्रैल चतुर्थी बुधवार

3-48 दिन से

23 अप्रैल पंचमी गुरुवार

11-16 दिन तक

24 अप्रैल षष्ठी शुक्रवार

12-4 दिन से

30 अप्रैल द्वादशी गुरुवार

1 मई त्रयोदशी शुक्रवार

ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष

6 मई द्वितीया बुधवार

12-40 दिन तक

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष

20 मई द्वितीया बुधवार

22 मई चतुर्थी शुक्रवार

27 मई नवमी बुधवार

2-34 दिन से

28 मई दशमी गुरुवार

29 मई एकादशी शुक्रवार

31 मई त्रयोदशी रविवार

आषाढ कृष्ण पक्ष

7 जून पंचमी रविवार

2-27 दिन तक

आषाढ शुक्ल पक्ष

22 जुलाई षष्ठी बुधवार

23 जुलाई सप्तमी गुरुवार

26 जुलाई दशमी रविवार

1-00 दिन से

27 जुलाई एकादशी सोम

1-50 दिन तक

श्रावण कृष्ण पक्ष

2 अगस्त द्वितीया रविवार

भाद्र शुक्ल पक्ष

23 सप्त दशमी बुधवार

24 सप्त एकादशी गुरुवार

25 सप्त द्वादशी शुक्रवार

आश्विन शुक्ल पक्ष

14 अक्टू प्रतिपदा बुधवार

22 अक्टू नवमी गुरुवार

11-58 दिन से

23 अक्टू दशमी शुक्रवार

25 अक्टू त्रयोदशी रविवार

कार्तिक शुक्ल पक्ष

13 नवम्बर द्वितीया शुक्रवार

18 नवम्बर सप्तमी बुधवार

22 नवम्बर एकादशी रवि

23 नवम्बर द्वादशी सोम

12-17 दिन तक

मार्ग कृष्ण पक्ष

27 नवम्बर द्वितीया शुक्रवार

30 नवम्बर पंचमी सोमवार

मार्ग शुक्ल पक्ष

14 दिस तृतीया सोमवार

3 बजे दिन तक

पौष शुक्ल पक्ष

20 जनवरी एकादशी बुध

21 जनवरी द्वादशी गुरुवार

माघ कृष्ण पक्ष

28 जनवरी चतुर्थी गुरुवार

11-57 दिन से

29 जनवरी पंचमी शुक्रवार

2-24 दिन तक

माघ शुक्ल पक्ष

10 फरवरी द्वितीया बुधवार

1-14 दिन से

17 फरवरी दशमी बुधवार

19 फरवरी द्वादशी शुक्रवार

फाल्गुन कृष्ण पक्ष

24 फरवरी द्वितीया बुधवार

9-41 दिन से

25 फरवरी तृतीया गुरुवार

28 फरवरी पंचमी रविवार

11-20 दिन तक

फाल्गुन शुक्ल पक्ष

10 मार्च द्वितीया गुरुवार

11 मार्च तृतीया शुक्रवार

3-41 दिन तक

विद्यारम्भ मुहूर्त
(पढाई आरम्भ करने या स्कूल भेजने का मुहूर्त) स्कूल गछनुक साथ

चैत्र शुक्ल पक्ष

26 मार्च सप्तमी गुरुवार

29 मार्च दशमी रविवार

वैशाख कृष्ण पक्ष

9 अप्रैल पंचमी गुरुवार

6-50 प्रातः तक

वैशाख शुक्ल पक्ष

22 अप्रैल चतुर्थी बुधवार

3-48 दिन से

23 अप्रैल पंचमी गुरुवार

24 अप्रैल षष्ठी शुक्रवार

3-34 दिन तक

29 अप्रैल एकादशी बुधवार

ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष

6 मई द्वितीया बुधवार

12-40 दिन तक

8 मई चतुर्थी शुक्रवार

9-11 दिन से

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष

20 मई द्वितीया बुधवार

21 मई तृतीया गुरुवार

22 मई चतुर्थी शुक्रवार

24 मई षष्ठी रविवार

7-40 प्रातः तक

28 मई दशमी गुरुवार

11-25 दिन से

29 मई एकादशी शुक्रवार

आषाढ कृष्ण पक्ष

4 जून द्वितीया गुरुवार

5 जून तृतीया शुक्रवार

7 जून पंचमी रविवार

2-27 दिन तक

भाद्र शुक्ल पक्ष

23 सप्त दशमी बुधवार

7-16 प्रातः तक

24 सप्त एकादशी गुरुवार

25 सप्त द्वादशी शुक्रवार

आश्विन शुक्ल पक्ष

14 अक्टू प्रतिपदा बुधवार

8-1 दिन से

15 अक्टू द्वितीया गुरुवार

7-20 प्रातः तक

22 अक्टू नवमी गुरुवार

11-58 दिन से

23 अक्टू दशमी शुक्रवार

कार्तिक शुक्ल पक्ष

13 नवम्बर द्वितीया शुक्रवार

18 नवम्बर सप्तमी बुधवार

मार्ग कृष्ण पक्ष

27 नवम्बर द्वितीया शुक्रवार

मार्ग शुक्ल पक्ष

13 दिस द्वितीया रविवार

पौष शुक्ल पक्ष

21 जनवरी द्वादशी गुरुवार

9-19 दिन तक

माघ कृष्ण पक्ष

27 जनवरी तृतीया बुधवार

9-55 दिन तक

29 जनवरी पंचमी शुक्रवार

2-24 दिन तक

माघ शुक्ल पक्ष

10 फरवरी द्वितीया बुधवार

12-2 दिन तक

17 फरवरी दशमी बुधवार

18 फरवरी एकादशी गुरु

19 फरवरी द्वादशी शुक्र

फाल्गुन कृष्ण पक्ष

24 फरवरी द्वितीया बुधवार

9-41 दिन तक

25 फरवरी तृतीया गुरुवार

12-23 दिन से

फाल्गुन शुक्ल पक्ष

11 मार्च तृतीया शुक्रवार

3-41 दिन से

17 मार्च नवमी गुरुवार

9-31 दिन से

18 मार्च दशमी शुक्रवार

दधि मुहूर्त

लड़की को दूध देने का मुर्हूत (दुध साथ)

चैत्र शुक्ल पक्ष

26 मार्च सप्तमी गुरुवार

वैशाख कृष्ण पक्ष

9 अप्रैल पंचमी गुरुवार

6-50 प्रातः तक

वैशाख शुक्ल पक्ष

23 अप्रैल पंचमी गुरुवार

11-16 दिन तक

ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष

5 मई प्रतिपदा भौमवार

11-50 दिन से

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष

28 मई दशमी गुरुवार

11-25 दिन से

2 जून पूर्णिमा भौमवार

आषाढ कृष्ण पक्ष

4 जून द्वितीया गुरुवार

7-21 दिन तक

7 जून पंचमी रविवार

2-27 दिन तक

दिवचक्षीर मुर्हूत

आषाढ़ शुक्ल पक्ष

23 जुलाई सप्तमी गुरुवार

6-16 प्रातः तक

26 जुलाई दशमी रविवार

1 बजे दिन से

भाद्र शुक्ल पक्ष

15 सप्त द्वितीया भौमवार

24 सप्त एकादशी गुरुवार

आश्विन शुक्ल पक्ष

22 अक्टू नवमी गुरुवार

1-28 दिन तक

कार्तिक शुक्ल पक्ष

12 नवम्बर प्रतिपदा गुरुवार

3-41 दिन से

पौष शुक्ल पक्ष

21 जनवरी द्वादशी गुरुवार

9-19 दिन से

माघ कृष्ण पक्ष

24 जनवरी प्रतिपदा रविवार

फाल्गुन कृष्ण पक्ष

25 फरवरी तृतीया गुरुवार

12-23 दिन से

फाल्गुन शुक्ल पक्ष

15 मार्च सप्त भौमवार

11-11 दिन तक

17 मार्च नवमी गुरुवार

9-31 दिन से

वैशाख कृष्ण पक्ष

5 अप्रैल प्रतिपदा रविवार

6 अप्रैल द्वितीया सोमवार

9 अप्रैल पंचमी गुरुवार

6-50 प्रातः तक

वैशाख शुक्ल पक्ष

19 अप्रैल प्रतिपदा रविवार

3-8 दिन तक

1 मई त्रयोदशी शुक्रवार

3 मई चर्तुदशी रविवार

4 मई पूर्णिमा सोमवार

9-11 दिन तक

ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष

6 मई द्वितीया बुधवार

12-40 दिन तक

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष

28 मई दशमी गुरुवार

11-25 दिन से

29 मई एकादशी शुक्रवार

31 मई त्रयोदशी रविवार

आषाढ कृष्ण पक्ष

7 जून पंचमी रविवार

4-18 दिन से

आषाढ शुक्ल पक्ष

22 जुलाई षष्ठी बुधवार

23 जुलाई सप्तमी गुरुवार

24 जुलाई अष्टमी शुक्रवार

26 जुलाई दशमी रविवार

27 जुलाई एकादशी सोम

1-50 दिन तक

भाद्र शुक्ल पक्ष

25 सप्त द्वादशी शुक्रवार

आश्विन शुक्ल पक्ष

14 अक्टू प्रतिपदा बुधवार

15 अक्टू द्वितीया गुरुवार

22 अक्टू नवमी गुरुवार

1-28 दिन से

23 अक्टू दशमी शुक्रवार

12-1 दिन तक

कार्तिक शुक्ल पक्ष

12 नवम्बर प्रतिपदा गुरुवार

13 नवम्बर द्वितीया शुक्रवार

19 नवम्बर अष्टमी गुरुवार

22 नवम्बर एकादशी रवि

2-28 दिन से

23 नवम्बर द्वादशी सोमवार

12-17 दिन तक

पौष शुक्ल पक्ष

17 जनवरी अष्टमी रविवार

3-57 दिन तक

माघ कृष्ण पक्ष

29 जनवरी पंचमी शुक्रवार

2-24 दिन तक

फाल्गुन कृष्ण पक्ष

25 फरवरी तृतीया गुरुवार

12-23 दिन से

फाल्गुन शुक्ल पक्ष

11 मार्च तृतीया शुक्रवार

नया मकान, फलैट या भूमि खरीदने का मुर्हूत

वैशाख कृष्ण पक्ष

9 अप्रैल पंचमी गुरुवार

6-50 प्रातः तक

वैशाख शुक्ल पक्ष

22 अप्रैल चतुर्थी बुधवार

3-48 दिन से

23 अप्रैल पंचमी गुरुवार

11-16 दिन तक

24 अप्रैल षष्ठी शुक्रवार

3-34 दिन तक

29 अप्रैल एकादशी बुधवार

ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष

6 मई द्वितीया बुधवार

10-6 दिन तक

8 मई चतुर्थी शुक्रवार

9-11 दिन से

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष

20 मई द्वितीया बुधवार

6-25 प्रातः तक

22 मई चतुर्थी शुक्रवार

आषाढ कृष्ण पक्ष

4 जून द्वितीया गुरुवार

भाद्र शुक्ल पक्ष

18 सप्त पंचमी शुक्रवार

23 सप्त दशमी बुधवार

7-18 प्रातः तक

आश्विन शुक्ल पक्ष

14 अक्टू प्रतिपदा बुधवार

8-1 दिन से

नया दुकान खोलने या नया काम आरम्भ करने का मुर्हूत

15 अक्टूबर द्वितीया गुरु
7-20 प्रातः तक

कार्तिक शुक्ल पक्ष

13 नवम्बर द्वितीया शुक्रवार

मार्ग कृष्ण पक्ष

27 नवम्बर द्वितीया शुक्रवार

माघ शुक्ल पक्ष

17 फरवरी दशमी बुधवार

फाल्गुन कृष्ण पक्ष

24 फरवरी द्वितीया बुधवार
9-41 दिन तक

फाल्गुन शुक्ल पक्ष

17 मार्च नवमी गुरुवार
9-31 दिन से
18 मार्च दशमी शुक्रवार
8-32 दिन तक

चैत्र शुक्ल पक्ष

25 मार्च षष्ठी बुधवार
26 मार्च सप्तमी गुरुवार

वैशाख कृष्ण पक्ष

9 अप्रैल पंचमी गुरुवार
6-50 प्रातः तक
10 अप्रैल षष्ठी शुक्रवार
7-29 प्रातः से

वैशाख शुक्ल पक्ष

22 अप्रैल चतुर्थी बुधवार
3-48 दिन से
23 अप्रैल पंचमी गुरुवार
11-16 दिन तक
30 अप्रैल द्वादशी गुरुवार
1 मई त्रयोदशी शुक्रवार

ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष

6 मई द्वितीया बुधवार
12-40 दिन तक
8 मई चतुर्थी शुक्रवार
9-11 दिन से

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष

20 मई द्वितीया बुधवार
27 मई नवमी बुधवार
2-34 दिन से
28 मई दशमी गुरुवार
29 मई एकादशी शुक्रवार
7-7 शां से

आषाढ कृष्ण पक्ष

4 जून द्वितीया गुरुवार

आषाढ शुक्ल पक्ष

22 जुलाई षष्ठी बुधवार
23 जुलाई सप्तमी गुरुवार
29 जुलाई त्रयोदशी बुधवार
1-7 दिन तक

भाद्र शुक्ल पक्ष

23 सप्त दशमी बुधवार

आश्विन शुक्ल पक्ष

19 अक्टू षष्ठी सोमवार
2-10 दिन तक

कार्तिक कृष्ण पक्ष

30 अक्टू तृतीया शुक्रवार

8-24 दिन तक

2 नवम्बर सप्तमी सोमवार

4-24 दिन तक

9 नवम्बर त्रयोदशी सोम

कार्तिक शुक्ल पक्ष

13 नवम्बर द्वितीया शुक्रवार

5-25 दिन तक

मार्ग कृष्ण पक्ष

27 नवम्बर द्वितीया शुक्रवार

30 नवम्बर पंचमी सोमवार

7 दिस एकादशी सोमवार

10-22 दिन से

मार्ग शुक्ल पक्ष

14 दिस तृतीया सोमवार

3 बजे दिन तक

पौष शुक्ल पक्ष

20 जनवरी एकादशी बुध

10-43 दिन से

21 जनवरी द्वादशी गुरुवार

माघ कृष्ण पक्ष

28 जनवरी चतुर्थी गुरुवार

11-57 दिन से

29 जनवरी पंचमी शुक्रवार

3 फरवरी दशमी बुधवार

5 फरवरी द्वादशी शुक्रवार

माघ शुक्ल पक्ष

17 फरवरी दशमी बुधवार

फाल्गुन कृष्ण पक्ष

24 फरवरी द्वितीया बुधवार

9-41 दिन से

25 फरवरी तृतीया गुरुवार

3 मार्च नवमी गुरुवार

6-4 शां से

फाल्गुन शुक्ल पक्ष

11 मार्च तृतीया शुक्रवार

3-41 दिन से

18 मार्च दशमी शुक्रवार

9-38 दिन तक

शिशर मुहूर्त

शिशुर लागनुक साथ

मार्ग कृष्ण पक्ष

26 नवम्बर प्रतिपदा गुरुवार

6 दिस दशमी रविवार

9 दिस त्रयोदशी बुधवार

2-16 दिन तक

मार्ग शुक्ल पक्ष

20 दिस दशमी रविवार

23 दिस त्रयोदशी बुधवार

2-51 दिन से

पौष कृष्ण पक्ष

27 दिस द्वितीया रविवार

31 दिस षष्ठी गुरुवार

5-29 शां से

1 जनवरी सप्तमी शुक्र

6 जनवरी द्वादशी बुधवार

7 जनवरी द्वादशी गुरुवार

8-56 दिन से

पौष शुक्ल पक्ष

10 जनवरी प्रतिपदा रवि

9-41 दिन से

पन्न मुहूर्त
(पन्न दिनुक साथ)

भाद्र शुक्ल पक्ष

17 सप्त चतुर्थी गुरुवार

18 सप्त पंचमी शुक्रवार

19 सप्त षष्ठी शनिवार

25 सप्त द्वादशी शुक्रवार

27 सप्त चर्तुदशी रविवार

दीपदान मुर्हूत
(तील द्युनुक साथ)

कार्तिक कृष्ण पक्ष

28 अक्टू प्रतिपदा बुधवार

2-8 दिन से

30 अक्टू तृतीया शुक्रवार

8-24 दिन तक

कार्तिक शुक्ल पक्ष

13 नवम्बर द्वितीय शुक्रवार

23 नवम्बर द्वादशी सोमवार

12-17 दिन से

25 नवम्बर पूर्णिमा बुधवार

7-37 प्रात: तक

माघ कृष्ण पक्ष

25 जनवरी द्वितीया सोमवार

27 जनवरी तृतीया बुधवार

9-55 दिन तक

29 जनवरी पंचमी शुक्रवार

2-24 दिन तक

माघ शुक्ल पक्ष

17 फरवरी दशमी बुधवार

22 फरवरी पूर्णिमा सोमवार

फाल्गुन कृष्ण पक्ष

24 फरवरी द्वितीया बुधवार

9-41 दिन तक

25 फरवरी तृतीया गुरुवार

12-23 दिन से

फाल्गुन शुक्ल पक्ष

11 मार्च तृतीया शुक्रवार

3-41 दिन. से

18 मार्च दशमी शुक्रवार

8-32 दिन से

21 मार्च त्रयोदशी सोमवार

1-11 दिन तक

अन्न प्राशन मुर्हूत

चैत्र शुक्ल पक्ष

26 मार्च सप्तमी गुरुवार

वैशाख कृष्ण पक्ष

6 अप्रैल द्वितीया सोमवार

9 अप्रैल पंचमी गुरुवार

6-50 शां तक

वैशाख शुक्ल पक्ष

23 अप्रैल पंचमी गुरुवार

11-16 दिन तक

ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष

6 मई द्वितीया बुधवार

12-40 दिन तक

13 मई दशमी बुधवार

8-6 प्रात: तक

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष

20 मई द्वितीया बुधवार

22 मई चतुर्थी शुक्रवार

5-36 शां से

27 मई नवमी बुधवार

2-34 दिन से

28 मई दशमी गुरुवार

5 बजे शां तक

आषाढ कृष्ण पक्ष

8 जून षष्ठी सोमवार

12-23 दिन से

11 जून नवमी गुरुवार

आषाढ शुक्ल पक्ष

22 जुलाई षष्ठी बुधवार

6-5 शां से

23 जुलाई सप्तमी गुरुवार

भाद्र शुक्ल पक्ष

23 सप्त दशमी बुधवार

7-18 प्रातः से

आश्विन शुक्ल पक्ष

14 अक्टू प्रतिपदा बुधवार

8-1 दिन से

15 अक्टू द्वितीया गुरुवार

7-20 प्रातः तक

22 अक्टू नवमी गुरुवार

11-58 दिन से

23 अक्टू दशमी शुक्रवार

9-51 दिन तक

कार्तिक कृष्ण पक्ष

30 अक्टू तृतीया शुक्रवार

8-24 दिन तक

2 नवम्बर सप्तमी सोमवार

कार्तिक शुक्ल पक्ष

13 नवम्बर द्वितीया शुक्रवार

5-25 शां तक

18 नवम्बर सप्तमी बुधवार

मार्ग कृष्ण पक्ष

27 नवम्बर द्वितीया शुक्रवार

30 नवम्बर पंचमी सोमवार

मार्ग शुक्ल पक्ष

14 दिस तृतीया सोमवार

3 बजे दिन तक

माघ कृष्ण पक्ष

28 जनवरी चतुर्थी गुरुवार

11-57 दिन तक

29 जनवरी पंचमी शुक्रवार

2-24 दिन तक

3 फरवरी दशमी बुधवार

माघ शुक्ल पक्ष

10 फरवरी द्वितीया बुधवार

18 फरवरी दशमी बुधवार

फाल्गुन कृष्ण पक्ष

24 फरवरी द्वितीया बुधवार

9-41 दिन से

25 फरवरी तृतीया गुरुवार

फाल्गुन शुक्ल पक्ष

10 मार्च द्वितीया गुरुवार

11 मार्च तृतीया शुक्रवार

18 मार्च दशमी शुक्रवार

9-38 दिन तक

स्लैब या छत्त
(सीमेन्ट स्लैब डालने का मुहूर्त)

चैत्र शुक्ल पक्ष

27 मार्च अष्टमी शुक्रवार
29 मार्च दशमी रविवार
30 मार्च एकादशी सोमवार
8-44 दिन तक

वैशाख कृष्ण पक्ष

12 अप्रैल अष्टमी रविवार
7-9 प्रातः से

वैशाख शुक्ल पक्ष

23 अप्रैल पंचमी गुरुवार
11-16 दिन से
24 अप्रैल षष्ठी शुक्रवार
26 अप्रैल अष्टमी रविवार
3-52 दिन तक
30 अप्रैल द्वादशी गुरुवार

ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष

11 मई अष्टमी सोमवार
10-55 दिन तक

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष

21 मई तृतीया गुरुवार
5-39 दिन तक
22 मई चतुर्थी शुक्रवार
5-36 दिन से
27 मई नवमी बुधवार
2-34 दिन से
29 मई एकादशी शुक्रवार
11-25 दिन तक

आषाढ कृष्ण पक्ष

7 जून पंचमी रविवार
4-18 दिन तक

भाद्र शुक्ल पक्ष

14 सप्त प्रतिपदा सोमवार
2-48 दिन से
23 सप्त दशमी बुधवार
24 सप्त एकादशी गुरुवार

आश्विन शुक्ल पक्ष

21 अक्टू अष्टमी बुधवार
1-29 दिन तक
22 अक्टू नवमी गुरुवार
11-58 दिन से

कार्तिक कृष्ण पक्ष

1 नवम्बर षष्ठी रविवार
2 नवम्बर सप्तमी सोमवार

कार्तिक शुक्ल पक्ष

18 नवम्बर सप्तमी बुधवार

मार्ग कृष्ण पक्ष

30 नवम्बर पंचमी सोमवार

मार्ग शुक्ल पक्ष

14 दिस तृतीया सोमवार
3 बजे दिन से

पौष शुक्ल पक्ष

22 जनवरी त्रयोदशी शुक्र
8-13 दिन तक

माघ कृष्ण पक्ष

28 जनवरी चतुर्थी गुरुवार
11-57 दिन से

माघ शुक्ल पक्ष

18 फरवरी एकादशी गुरु
19 फरवरी द्वादशी शुक्रवार

वाहन खरीदने का मुर्हूत

साईकल, स्कूटर, गाड़ी इत्यादि लाने का मुर्हूत

फाल्गुन कृष्ण पक्ष

24 फरवरी द्वितीया बुधवार

9-41 दिन से

25 फरवरी तृतीया गुरुवार

12-23 दिन तक

6 मार्च द्वादशी रविवार

फाल्गुन शुक्ल पक्ष

16 मार्च अष्टमी बुधवार

10-2 दिन तक

17 मार्च नवमी गुरुवार

9-31 दिन से

18 मार्च दशमी शुक्रवार

चैत्र शुक्ल पक्ष

26 मार्च सप्तमी गुरुवार

30 मार्च एकादशी सोमवार

8-44 दिन तक

1 अप्रैल द्वादशी बुधवार

2-45 दिन से

2 अप्रैल त्रयोदशी गुरुवार

12-46 दिन तक

वैशाख कृष्ण पक्ष

6 अप्रैल द्वितीया सोमवार

9 अप्रैल पंचमी गुरुवार

6-50 प्रातः तक

वैशाख शुक्ल पक्ष

22 अप्रैल चतुर्थी बुधवार

3-48 दिन से

23 अप्रैल पंचमी गुरुवार

11-16 दिन तक

24 अप्रैल षष्ठी शुक्रवार

12-4 दिन से

29 अप्रैल एकादशी बुधवार

30 अप्रैल द्वादशी गुरुवार

1 मई त्रयोदशी शुक्रवार

4 मई पूर्णिमा सोमवार

9-11 दिन तक

ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष

6 मई द्वितीया बुधवार

12-40 दिन तक

8 मई चतुर्थी शुक्रवार

1-2 दिन से

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष

20 मई द्वितीया बुधवार

22 मई चतुर्थी शुक्रवार

5-36 शां से

27 मई नवमी बुधवार

2-34 दिन से

28 मई दशमी गुरुवार

29 मई एकादशी शुक्रवार

आषाढ कृष्ण पक्ष

5 जून तृतीया शुक्रवार

आषाढ शुक्ल पक्ष

20 जुलाई चतुर्थी सोमवार

12-59 दिन से

22 जुलाई षष्ठी बुधवार

23 जुलाई सप्तमी गुरुवार

27 जुलाई एकादशी सोम

1-50 दिन तक

29 जुलाई त्रयोदशी बुधवार

1-7 दिन से

31 जुलाई पूर्णिमा शुक्रवार

9-52 दिन तक

भाद्र शुक्ल पक्ष

23 सप्त दशमी बुधवार

आश्विन शुक्ल पक्ष

14 अक्टू प्रतिपदा बुधवार

15 अक्टू द्वितीया गुरुवार

7-20 प्रातः तक

19 अक्टू षष्ठी सोमवार

2-10 दिन से

कार्तिक शुक्ल पक्ष

13 नवम्बर द्वितीया शुक्रवार

5-25 शां तक

मार्ग कृष्ण पक्ष

27 नवम्बर द्वितीया शुक्रवार

30 नवम्बर पंचमी सोमवार

मार्ग शुक्ल पक्ष

14 दिस तृतीया सोमवार

3 बजे दिन तक

पौष शुक्ल पक्ष

21 जनवरी द्वादशी गुरुवार

माघ कृष्ण पक्ष

27 जनवरी तृतीया बुधवार

9-55 दिन तक

28 जनवरी चतुर्थी गुरुवार

11-57 दिन तक

29 जनवरी पंचमी शुक्रवार

माघ शुक्ल पक्ष

17 फरवरी दशमी बुधवार

19 फरवरी द्वादशी शुक्रवार

फाल्गुन कृष्ण पक्ष

24 फरवरी द्वितीया बुधवार

25 फरवरी तृतीया गुरुवार

फाल्गुन शुक्ल पक्ष

11 मार्च तृतीया शुक्रवार

3-41 दिन से

17 मार्च नवमी गुरुवार

9-31 दिन से

18 मार्च दशमी शुक्रवार

23 मार्च पूर्णिमा बुधवार

5-30 शां तक

नया चुल्हा या गैस जलाने का मुर्हूत

नोव गैस ज़ालनुक साथ

चैत्र शुक्ल पक्ष

26 मार्च सप्तमी गुरुवार

30 मार्च एकादशी सोमवार

8-44 प्रातः तक

1 अप्रैल द्वादशी बुधवार

2-45 दिन से

2 अप्रैल त्रयोदशी गुरुवार

5-51 दिन तक

वैशाख कृष्ण पक्ष

6 अप्रैल द्वितीया सोमवार

9 अप्रैल पंचमी गुरुवार

10 अप्रैल षष्ठी शुक्रवार

वैशाख शुक्ल पक्ष

22 अप्रैल चतुर्थी बुधवार

3-48 दिन तक

23 अप्रैल पंचमी गुरुवार

11-16 दिन तक

24 अप्रैल षष्ठी शुक्रवार

12-4 दिन से

29 अप्रैल एकादशी बुधवार

1 मई त्रयोदशी शुक्रवार

ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष

6 मई द्वितीया बुधवार

7 मई तृतीया गुरुवार

9-51 दिन तक

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष

20 मई द्वितीया बुधवार

22 मई चतुर्थी शुक्रवार

5-36 शां से

28 मई दशमी गुरुवार

11-25 दिन से

29 मई एकादशी शुक्रवार

2-11 दिन तक

आषाढ कृष्ण पक्ष

12 जून एकादशी शुक्रवार

9-39 दिन से

आषाढ शुक्ल पक्ष

20 जुलाई चतुर्थी सोमवार

12-59 दिन से

22 जुलाई षष्ठी बुधवार

23 जुलाई सप्तमी गुरुवार

6-16 प्रातः तक

27 जुलाई एकादशी सोम

भाद्र शुक्ल पक्ष

18 सप्त पंचमी शुक्रवार

23 सप्त दशमी बुधवार

24 सप्त एकादशी गुरुवार

आश्विन शुक्ल पक्ष

14 अक्टू प्रतिपदा बुधवार

8-1 दिन से

15 अक्टू द्वितीया गुरुवार

22 अक्टू नवमी गुरुवार

11-58 दिन से

कार्तिक कृष्ण पक्ष

2 नवम्बर सप्तमी सोमवार

6 नवम्बर दशमी शुक्रवार

9 नवम्बर त्रयोदशी सोम

कार्तिक शुक्ल पक्ष

13 नवम्बर द्वितीया शुक्रवार

18 नवम्बर सप्तमी बुधवार

23 नवम्बर द्वादशी सोमवार

12-17 दिन से

मार्ग कृष्ण पक्ष

27 नवम्बर द्वितीया शुक्रवार

30 नवम्बर पंचमी सोमवार

9 दिस त्रयोदशी बुधवार

2-16 दिन तक

मार्ग शुक्ल पक्ष

14 दिस तृतीया सोमवार

3 बजे दिन तक

पौष शुक्ल पक्ष

21 जनवरी द्वादशी गुरुवार

माघ कृष्ण पक्ष

27 जनवरी तृतीया बुधवार

9-55 दिन तक

29 जनवरी पंचमी शुक्रवार

3 फरवरी दशमी बुधवार

4 फरवरी एकादशी गुरु

माघ शुक्ल पक्ष

17 फरवरी दशमी बुधवार

19 फरवरी द्वादशी शुक्रवार

फाल्गुन कृष्ण पक्ष

24 फरवरी द्वितीया बुधवार

9-41 दिन तक

25 फरवरी तृतीया गुरुवार

12-23 दिन से

29 फरवरी षष्ठी सोमवार

फाल्गुन शुक्ल पक्ष

11 मार्च तृतीया शुक्रवार

3-41 दिन से

17 मार्च नवमी गुरुवार

9-31 दिन से

18 मार्च दशमी शुक्रवार

कर्ण छेदन मुहूर्त

(कन्नु च्वम्बनुक साथ)

चैत्र शुक्ल पक्ष

26 मार्च सप्तमी गुरुवार

30 मार्च एकादशी सोमवार

वैशाख कृष्ण पक्ष

9 अप्रैल पंचमी गुरुवार

6-50 प्रातः तक

वैशाख शुक्ल पक्ष

23 अप्रैल पंचमी गुरुवार

24 अप्रैल षष्ठी शुक्रवार

12-4 दिन से

1 मई त्रयोदशी शुक्रवार

ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष

6 मई द्वितीया बुधवार

12-40 दिन तक

11 मई अष्टमी सोमवार

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष

20 मई द्वितीया बुधवार

22 मई चतुर्थी शुक्रवार

5-36 शां से

28 मई दशमी गुरुवार

11-25 दिन से

29 मई एकादशी शुक्रवार

आषाढ कृष्ण पक्ष

8 जून षष्ठी सोमवार

3-1 दिन तक

11 जून नवमी गुरुवार

10-58 दिन से

12 जून एकादशी शुक्रवार

आषाढ शुक्ल पक्ष

22 जुलाई षष्ठी बुधवार

23 जुलाई सप्तमी गुरुवार

24 जुलाई अष्टमी शुक्रवार

9-5 दिन तक

27 जुलाई एकादशी सोम

1-50 दिन तक

31 जुलाई पूर्णिमा शुक्रवार

भाद्र शुक्ल पक्ष

24 सप्त एकादशी गुरुवार

25 सप्त द्वादशी शुक्रवार

28 सप्त पूर्णिमा सोमवार

5-54 शां से

आश्विन शुक्ल पक्ष

22 अक्टू नवमी गुरुवार

23 अक्टू दशमी शुक्रवार

कार्तिक कृष्ण पक्ष

2 नवम्बर सप्तमी सोमवार

9 नवम्बर त्रयोदशी सोम

कार्तिक शुक्ल पक्ष

12 नवम्बर प्रतिपदा गुरुवार

3-41 दिन से

13 नवम्बर द्वितीया शुक्रवार

5-25 दिन तक

18 नवम्बर सप्तमी बुधवार

19 नवम्बर अष्टमी गुरुवार

23 नवम्बर द्वादशी सोमवार

मार्ग कृष्ण पक्ष

27 नवम्बर द्वितीया शुक्रवार

30 नवम्बर पंचमी सोमवार

7 दिस एकादशी सोमवार

पौष शुक्ल पक्ष

11 जनवरी द्वितीया सोमवार

8-56 दिन तक

21 जनवरी द्वादशी गुरुवार

माघ कृष्ण पक्ष

29 जनवरी पंचमी शुक्रवार

3 फरवरी दशमी बुधवार

माघ शुक्ल पक्ष

17 फरवरी दशमी बुधवार

19 फरवरी द्वादशी शुक्रवार

फाल्गुन कृष्ण पक्ष

25 फरवरी तृतीया गुरुवार

12-23 दिन से

7 मार्च त्रयोदशी सोमवार

1-20 दिन तक

फाल्गुन शुक्ल पक्ष

10 मार्च द्वितीया गुरुवार

6-20 शां से

11 मार्च तृतीया शुक्रवार

16 मार्च अष्टमी बुधवार

7-46 प्रातः तक

17 मार्च नवमी गुरुवार

9-31 दिन से

18 मार्च दशमी शुक्रवार

वस्त्र धारण मुर्हूत (स्त्री पुरुष के लिये)

चैत्र शुक्ल पक्ष

25 मार्च षष्ठी बुधवार

29 मार्च दशमी रविवार

वैशाख कृष्ण पक्ष

5 अप्रैल प्रतिपदा रविवार

9 अप्रैल पंचमी गुरुवार

6-50 प्रातः तक

12 अप्रैल अष्टमी रविवार

17 अप्रैल त्रयोदशी शुक्र

6-53 प्रातः तक

वैशाख शुक्ल पक्ष

19 अप्रैल प्रतिपदा रविवार

3-8 दिन तक

24 अप्रैल षष्ठी शुक्रवार

12-4 दिन से

26 मई अष्टमी रविवार

3-52 दिन तक

30 अप्रैल द्वादशी गुरुवार

1 मई त्रयोदशी शुक्रवार

3 मई चतुदर्शी रविवार

ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष

6 मई द्वितीया बुधवार

12-40 दिन तक

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष

22 मई चतुर्थी शुक्रवार
27 मई नवमी बुधवार
2-34 दिन से
28 मई दशमी गुरुवार
29 मई एकादशी शुक्रवार
31 मई त्रयोदशी रविवार

आषाढ कृष्ण पक्ष

11 जून नवमी गुरुवार
12 जून एकादशी शुक्रवार

अ0 आषाढ शुक्ल पक्ष

18 जून द्वितीया गुरुवार
19 जून तृतीया शुक्रवार
24 जून अष्टमी बुधवार
25 जून अष्टमी गुरुवार
5-45 प्रातः तक
26 जून नवमी शुक्रवार
28 जून एकादशी रविवार

अ0 आषाढ कृष्ण पक्ष

3 जुलाई प्रतिपदा शुक्रवार
8 जुलाई सप्तमी बुधवार
9 जुलाई अष्टमी गुरुवार
12-54 दिन तक
10 जुलाई नवमी शुक्रवार
11-8 दिन से
12 जुलाई एकादशी रवि
12-59 दिन से

आषाढ शुक्ल पक्ष

20 जुलाई चतुर्थी सोमवार
12-59 दिन से
22 जुलाई षष्ठी बुधवार
23 जुलाई सप्तमी गुरुवार
27 जुलाई एकादशी सोम
1-50 दिन तक
30 जुलाई चतुर्दशी गुरुवार
7 बजे शां से
31 जुलाई पूर्णिमा शुक्रवार
9-52 दिन तक

श्रावण कृष्ण पक्ष

5 अगस्त षष्ठी बुधवार
6 अगस्त सप्तमी गुरुवार
9 अगस्त दशमी रविवार
12 अगस्त त्रयोदशी बुध
5-40 दिन तक

श्रावण शुक्ल पक्ष

19 अगस्त पंचमी बुधवार
20 अगस्त पंचमी गुरुवार
21 अगस्त षष्ठी शुक्रवार
23 अगस्त अष्टमी रविवार
1-26 दिन तक
27 अगस्त द्वादशी गुरुवार

भाद्र कृष्ण पक्ष

2 सप्त चतुर्थी बुधवार
10-16 दिन से
9 सप्त द्वादशी बुधवार

भाद्र शुक्ल पक्ष

18 सप्त पंचमी शुक्रवार
23 सप्त दशमी बुधवार
25 सप्त द्वादशी शुक्रवार

आश्विन कृष्ण पक्ष

30 सप्त तृतीया बुधवार
12-20 दिन तक
2 अक्टू पंचमी शुक्रवार
8-26 दिन तक

7 अक्टू दशमी बुधवार

10-57 दिन तक

आश्विन शुक्ल पक्ष

14 अक्टू प्रतिपदा बुधवार

15 अक्टू द्वितीया गुरुवार

21 अक्टू अष्टमी बुधवार

1-29 दिन तक

22 अक्टू नवमी गुरुवार

1-28 दिन तक

23 अक्टू दशमी शुक्रवार

12 बजे दिन तक

25 अक्टू त्रयोदशी रविवार

कार्तिक कृष्ण पक्ष

30 अक्टू तृतीया शुक्रवार

8-24 दिन तक

1 नवम्बर षष्ठी रविवार

3-45 दिन से

8 नवम्बर द्वादशी रविवार

कार्तिक शुक्ल पक्ष

12 नवम्बर प्रतिपदा गुरुवार

3-41 दिन से

13 नवम्बर द्वितीया शुक्रवार

5-25 दिन से

19 नवम्बर अष्टमी गुरुवार

22 नवम्बर एकादशी रवि

मार्ग कृष्ण पक्ष

26 नवम्बर प्रतिपदा गुरुवार

6 दिस दशमी रविवार

9 दिस त्रयोदशी बुधवार

2-18 दिन तक

मार्ग शुक्ल पक्ष

20 दिस दशमी रविवार

23 दिस त्रयोदशी बुधवार

2-51 दिन से

पौष कृष्ण पक्ष

27 दिस द्वितीया रविवार

31 दिस षष्ठी गुरुवार

5-29 दिन से

1 जनवरी सप्तमी शुक्रवार

6 जनवरी द्वादशी बुधवार

7 जनवरी द्वादशी गुरुवार

8-56 दिन तक

पौष शुक्ल पक्ष

10 जनवरी प्रतिपदा रवि

9-45 दिन से

17 जनवरी अष्टमी रविवार

3-57 दिन तक

20 जनवरी एकादशी बुध

माघ कृष्ण पक्ष

24 जनवरी प्रतिपदा रवि

28 जनवरी चतुर्थी गुरुवार

11-57 दिन से

29 जनवरी पंचमी शुक्रवार

31 जनवरी सप्तमी रविवार

3 फरवरी दशमी बुधवार

माघ शुक्ल पक्ष

19 फरवरी द्वादशी शुक्रवार

फाल्गुन कृष्ण पक्ष

24 फरवरी द्वितीया बुधवार

9-41 दिन से

25 फरवरी तृतीया गुरुवार

28 फरवरी पंचमी रविवार

फाल्गुन शुक्ल पक्ष

10 मार्च द्वितीया गुरुवार

11 मार्च तृतीया शुक्रवार

17 मार्च नवमी गुरुवार

9-31 दिन से

18 मार्च दशमी शुक्रवार

23 मार्च पूर्णिमा बुधवार

चैत्र कृष्ण पक्ष

24 मार्च प्रतिपदा गुरुवार

25 मार्च द्वितीया शुक्रवार

7 अप्रैल अमावसी गुरुवार

4-53 दिन से

सर्वार्थ सिद्धि योग

(किसी खास परिस्थिति वश कोई कार्य मुहूर्त पर कर सकना सम्भव न होने पर सवार्थ सिद्धि योग मुहूर्त का आश्रय लेना चाहिये।)

24 मार्च

25 मार्च

29 मार्च

30 मार्च

8-44 दिन तक

31 मार्च

11-39 दिन तक

8 अप्रैल

9 अप्रैल

6-50 दिन तक

12 अप्रैल

7-9 दिन से

13 अप्रैल

19 अप्रैल

3-8 दिन तक

21 अप्रैल

11-56 दिन से

22 अप्रैल

11-14 दिन तक

24 अप्रैल

12-4 दिन से

26 अप्रैल

3-52 दिन तक

6 मई

12-40 दिन तक

10 मई

11-56 दिन तक

11 मई

10-55 दिन तक

15 मई

22 मई

1 जून

7-20 शां से

6 जून

5-30 दिन तक

11 जून

12 जून

10-58 दिन से

15 जून

6-25 प्रात: से

16 जून

5-50 दिन तक

18 जून

6-00 प्रात: से

19 जून

24 जून

7-26 शां से

27 जून

29 जून

4 जुलाई

7 जुलाई

5-44 दिन से

9 जुलाई

10 जुलाई

2-8 दिन तक

13 जुलाई
16 जुलाई
22 जुलाई
25 जुलाई
11-23 दिन तक
27 जुलाई
1-50 दिन तक
31 जुलाई
9-52 दिन से
1 अगस्त
7-40 प्रातः तक
4 अगस्त
6 अगस्त
8 अगस्त
6-25 शां से

10 अगस्त
7 बजे शां तक
13 अगस्त
19 अगस्त
1-21 दिन तक
28 अगस्त
6-6 शां तक
1 सप्त
7-13 प्रातः तक
5 सप्त
13 सप्त
1-20 दिन से
29 सप्त
2-59 दिन से
3 अक्टू

7 अक्टू
10-57 दिन से
9 अक्टू
4-18 दिन से
11 अक्टू
18 अक्टू
1-12 दिन से
25 अक्टू
7-41 प्रातः से
27 अक्टू
2 नवम्बर
4-24 दिन से
4 नवम्बर
6 नवम्बर
8 नवम्बर

12 नवम्बर
3-41 दिन से
15 नवम्बर
22 नवम्बर
2-28 दिन तक
24 नवम्बर
9-57 दिन तक
30 नवम्बर
1 दिस
4 दिस
6 दिस
3-30 दिन तक
10 दिस
22 दिस
23 दिस

27 दिस
11-18 दिन से
28 दिस
11-48 दिन तक
29 दिस
1-2 दिन तक
6 जनवरी
7 जनवरी
8-56 दिन तक
10 जनवरी
9-41 दिन से
11 जनवरी
8-56 दिन से
17 जनवरी
19 जनवरी

20 जनवरी
24 जनवरी
3 फरवरी
7 फरवरी
8 फरवरी
5-2 दिन तक
12 फरवरी
9-6 दिन से
19 फरवरी
10 मार्च
6-20 शां तक
11 मार्च
14 मार्च
17 मार्च
7-51 प्रात: से

18 मार्च
8-32 दिन तक
26 मार्च
28 मार्च
7-4 प्रात: से
2 अप्रैल
2-25 दिन से
7 अप्रैल

यात्रा मुर्हूत

(यात्रा मुहूर्तों में केवल तिथि, वार तथा नक्षत्र को प्रधानता दी गई है।)

21 मार्च पूर्व विना
25 मार्च उत्तर विना
26 मार्च पूर्व पश्चिम
28 मार्च पूर्व विना
29 मार्च पूर्व उत्तर
30 मार्च पूर्व विना
8-44 दिन तक
1 अप्रैल उत्तर विना
2-45 दिन से
2 अप्रैल पूर्व पश्चिम
3 अप्रैल पश्चिम विना
4 अप्रैल पूर्व विना
8 अप्रैल उत्तर विना
9 अप्रैल पूर्व पश्चिम

10 अप्रैल पश्चिम विना
11 अप्रैल पूर्व विना
12 अप्रैल पूर्व उत्तर
15 अप्रैल पूर्व पश्चिम
16 अप्रैल पूर्व पश्चिम
17 अप्रैल पूर्व उत्तर
18 अप्रैल पूर्व पश्चिम
19 अप्रैल पूर्व उत्तर
3-8 दिन तक
21 अप्रैल पूर्व दक्षिण
11-56 दिन से
22 अप्रैल उत्तर विना
23 अप्रैल पूर्व पश्चिम
11-16 दिन तक

24 अप्रैल पश्चिम विना
12-4 दिन से
25 अप्रैल पूर्व विना
26 अप्रैल पूर्व उत्तर
3-52 दिन तक
29 अप्रैल उत्तर विना
30 अप्रैल पूर्व पश्चिम
1 मई पश्चिम विना
2 मई पूर्व विना
6-26 प्रात: तक
5 मई पूर्व दक्षिण
11-50 दिन से
6 मई उत्तर विना
7 मई पूर्व पश्चिम

8 मई पश्चिम विना
9 मई पूर्व विना
11 मई पूर्व विना
12 मई पूर्व यात्रा
13 मई पूर्व पश्चिम
16 मई पूर्व विना
19 मई पूर्व दक्षिण
20 मई उत्तर विना
22 मई पश्चिम विना
23 मई पूर्व विना
26 मई पूर्व दक्षिणं
27 मई उत्तर विना
28 मई पूर्व पश्चिम
29 मई पश्चिम विना

2-11 दिन तक
1 जून पूर्व विना
7-20 शां से
2 जून पूर्व दक्षिण
3 जून पश्चिम विना
4 जून पूर्व पश्चिम
5 जून पश्चिम विना
6 जून पूर्व विना
7 जून पूर्व उत्तर
8 जून पश्चिम उत्तर
9 जून पूर्व यात्रा
10 जून पूर्व पश्चिम
11 जून पूर्व पश्चिम
12 जून पश्चिम विना

13 जून पूर्व विना
8-25 दिन तक
16 जून पूर्व दक्षिण
17 जून उत्तर विना
5-40 दिन तक
18 जून पूर्व पश्चिम
6 बजे प्रातः से
19 जून पश्चिम विना
20 जून पूर्व विना
8-30 दिन तक
23 जून पूर्व दक्षिण
24 जून उत्तर विना
25 जून पूर्व पश्चिम
29 जून पूर्व विना

30 जून पूर्व दक्षिण
1 जुलाई उत्तर विना
2 जुलाई पूर्व पश्चिम
3 जुलाई पश्चिम विना
4 जुलाई पूर्व विना
5 जुलाई पूर्व उत्तर
6 जुलाई पश्चिम उत्तर
7 जुलाई पूर्व यात्रा
8 जुलाई पूर्व पश्चिम
9 जुलाई पूर्व पश्चिम
10 जुलाई पश्चिम विना
2-8 दिन तक
12 जुलाई पूर्व उत्तर
12-59 दिन से

13 जुलाई पूर्व विना
14 जुलाई पूर्व दक्षिण
1-5 दिन तक
20 जुलाई पूर्व यात्रा
21 जुलाई पूर्व दक्षिण
22 जुलाई उत्तर विना
23 जुलाई पूर्व पश्चिम
6-16 प्रातः तक
26 जुलाई पूर्व उत्तर
1 बजे दिन से
27 जुलाई पूर्व विना
28 जुलाई पूर्व दक्षिण
29 जुलाई उत्तर विना
30 जुलाई पूर्व पश्चिम

31 जुलाई पश्चिम विना
1 अगस्त पश्चिम उत्तर
2 अगस्त पूर्व उत्तर
3 अगस्त पश्चिम उत्तर
4 अगस्त पूर्व यात्रा
5 अगस्त पूर्व पश्चिम
6 अगस्त पूर्व पश्चिम
8 अगस्त पूर्व विना
6-25 शां से
9 अगस्त पूर्व विना
6-29 शां तक
12 अगस्त उत्तर विना
13 अगस्त पूर्व पश्चिम
18 अगस्त पूर्व दक्षिण

19 अगस्त उत्तर विना
1-21 दिन तक
23 अगस्त पूर्व उत्तर
24 अगस्त पूर्व विना
25 अगस्त पूर्व दक्षिण
26 अगस्त उत्तर विना
27 अगस्त पूर्व पश्चिम
28 अगस्त पश्चिम विना
29 अगस्त पश्चिम उत्तर
30 अगस्त पूर्व उत्तर
31 अगस्त पश्चिम उत्तर
1 सप्त पूर्व यात्रा
2 सप्त उत्तर विना
5 सप्त पूर्व विना

6 सप्त पूर्व उत्तर
8 सप्त पूर्व दक्षिण
9 सप्त उत्तर विना
12 सप्त पूर्व विना
10-19 से
13 सप्त पूर्व उत्तर
14 सप्त पूर्व विना
15 सप्त पूर्व दक्षिण
19 सप्त पूर्व विना
20 सप्त पूर्व उत्तर
21 सप्त पूर्व विना
22 सप्त पूर्व दक्षिण
23 सप्त उत्तर विना
24 सप्त पूर्व पश्चिम

25 सप्त पूर्व उत्तर
26 सप्त पूर्व विना
27 सप्त पूर्व उत्तर
28 सप्त पूर्व विना
29 सप्त पूर्व यात्रा
30 सप्त उत्तर विना
12-20 दिन तक
2 अक्टू पश्चिम विना
8-26 दिन से
3 अक्टू पूर्व विना
4 अक्टू पूर्व उत्तर
7-12 प्रातः तक
5 अक्टू पूर्व विना
7-44 प्रातः से

6 अक्टू पूर्व दक्षिण
7 अक्टू उत्तर विना
10-57 दिन तक
9 अक्टू पश्चिम विना
4-18 दिन से
10 अक्टू पूर्व विना
11 अक्टू पूर्व उत्तर
12 अक्टू पूर्व विना
19 अक्टू पूर्व विना
20 अक्टू पूर्व दक्षिण
21 अक्टू उत्तर विना
22 अक्टू पूर्व पश्चिम
23 अक्टू पूर्व उत्तर
25 अक्टू पूर्व उत्तर

26 अक्टू पश्चिम उत्तर
27 अक्टू पूर्व दक्षिण
30 अक्टू पश्चिम विना
31 अक्टू पूर्व विना
1 नवम्बर पूर्व उत्तर
3-45 दिन से
2 नवम्बर पूर्व विना
3 नवम्बर पूर्व दक्षिण
6 नवम्बर पश्चिम विना
7 नवम्बर पूर्व विना
8 नवम्बर पूर्व उत्तर
9 नवम्बर पूर्व उत्तर
8-9 दिन तक
12 नवम्बर पूर्व पश्चिम

3-41 दिन से
13 नवम्बर पश्चिम विना
14 नवम्बर पूर्व विना
18 नवम्बर उत्तर विना
19 नवम्बर पूर्व पश्चिम
20 नवम्बर पूर्व उत्तर
21 नवम्बर पश्चिम उत्तर
22 नवम्बर पूर्व उत्तर
23 नवम्बर पूर्व विना
26 नवम्बर पूर्व पश्चिम
27 नवम्बर पश्चिम विना
29 नवम्बर पूर्व उत्तर
30 नवम्बर पूर्व विना
3 दिस पूर्व पश्चिम

4 दिस पश्चिम विना
5 दिस पूर्व विना
6 दिस पूर्व उत्तर
3-30 दिन तक
10 दिस पूर्व पश्चिम
11 दिस पश्चिम विना
12 दिस पूर्व विना
13 दिस पूर्व उत्तर
14 दिस पूर्व विना
17 दिस पूर्व पश्चिम
18 दिस पश्चिम विना
19 दिस पश्चिम उत्तर
21 दिस पूर्व विना
23 दिस उत्तर विना
2-51 दिन से

24 दिस पूर्व पश्चिम
25 दिस पश्चिम विना
12-13 दिन तक
26 दिस पूर्व विना
11-29 दिन से
27 दिस पूर्व उत्तर
28 दिस पूर्व विना
30 दिस उत्तर विना
2-57 दिन से
31 दिस पूर्व पश्चिम
1 जनवरी पश्चिम विना
2 जनवरी पूर्व विना
6 जनवरी उत्तर विना
7 जनवरी पूर्व पश्चिम

8 जनवरी पश्चिम विना
10 जनवरी पूर्व उत्तर
11 जनवरी पूर्व विना
12 जनवरी पूर्व यात्रा
16 जनवरी पश्चिम उत्तर
17 जनवरी पूर्व उत्तर
20 जनवरी उत्तर विना
21 जनवरी पूर्व पश्चिम
23 जनवरी पूर्व विना
24 जनवरी पूर्व उत्तर
27 जनवरी उत्तर विना
28 जनवरी पूर्व पश्चिम
29 जनवरी पश्चिम विना

30 जनवरी पूर्व विना
7-44 प्रातः तक
2 फरवरी पूर्व दक्षिण
4-15 दिन से
3 फरवरी उत्तर विना
4 फरवरी पूर्व पश्चिम
5 फरवरी पश्चिम विना
6 फरवरी पूर्व विना
7 फरवरी पूर्व उत्तर
8 फरवरी पूर्व विना
9 फरवरी पूर्व यात्रा
10 फरवरी पूर्व पश्चिम
11 फरवरी पूर्व पश्चिम
16 फरवरी पूर्व दक्षिण

17 फरवरी उत्तर विना
19 फरवरी पश्चिम विना
20 फरवरी पूर्व विना
23 फरवरी पूर्व दक्षिण
7-21 प्रातः से
24 फरवरी उत्तर विना
25 फरवरी पूर्व पश्चिम
26 फरवरी पश्चिम विना
3-21 दिन तक
1 मार्च पूर्व दक्षिण
2 मार्च उत्तर विना
3 मार्च पूर्व पश्चिम
4 मार्च पश्चिम विना
5 मार्च पूर्व विना

6 मार्च पूर्व उत्तर
7 मार्च पश्चिम उत्तर
8 मार्च पूर्व यात्रा
9 मार्च पूर्व पश्चिम
10 मार्च पूर्व पश्चिम
11 मार्च पूर्व उत्तर
12 मार्च पूर्व विना
1-14 दिन तक
15 मार्च पूर्व दक्षिण
16 मार्च उत्तर विना
7-46 प्रातः तक
17 मार्च पूर्व पश्चिम
18 मार्च पूर्व विना
7-51 प्रातः से

21 मार्च पूर्व विना
1-45 दिन से
22 मार्च पूर्व दक्षिण
23 मार्च उत्तर विना
24 मार्च पूर्व पश्चिम
28 मार्च पूर्व विना
7-4 प्रातः से
29 मार्च पूर्व दक्षिण
31 मार्च पूर्व पश्चिम
1 अप्रैल पश्चिम विना
2 अप्रैल पूर्व विना
4 अप्रैल पश्चिम उत्तर
5 अप्रैल पूर्व यात्रा
6 अप्रैल उत्तर विना
7 अप्रैल पूर्व पश्चिम

नये प्रकाशन

24 Sanskars of Kashmiri Pandits in English
(Rs. 200)

शारदा अक्षर ज्ञान भाग 2
(रु 100)

Vijayashwer Punchang in English
(Rs. 100)

राशि के अनुसार यज्ञोपवीत, विवाह शंकु प्रतिष्ठा तथा प्रवेश मुहूर्त 2015-16 के लिये

यज्ञोपवीत मुहूर्त

मेष सिंह धनु

तिथि	
24 अप्रैल	गु
20 मई	गुं
22 मई	गु
28 मई	गु
31 मई	गु
7 जून	गु
20 सप्त	चं
23 सप्त	
24 सप्त	
25 सप्त	
14 अक्टू	
22 अक्टू	
23 अक्टू	
25 अक्टू	चं
18 नवम्बर	सू
23 नवम्बर	सू
27 नवम्बर	सू
14 दिस	सू
20 जनवरी	
29 जनवरी	
10 फरवरी	
11 फरवरी	चं
17 फरवरी	
19 फरवरी	
25 फरवरी	
10 मार्च	चं
17 मार्च	

वृष कन्या मकर

तिथि	
25 मार्च	
26 मार्च	
29 मार्च	
6 अप्रैल	
9 अप्रैल	
24 अप्रैल	सू
30 अप्रैल	सू
6 मई	सू
7 मई	सू
20 मई	
22 मई	
28 मई	
31 मई	
7 जून	
20 सप्त	गु
24 सप्त	गु
25 सप्त	गु
14 अक्टू	गु
22 अक्टू	गु
23 अक्टू	गु
25 अक्टू	गु
18 नवम्बर	गु
27 नवम्बर	गु
30 नवम्बर	गु
24 दिसम्बर	गु
20 जनवरी	गु
29 जनवरी	गु
10 फरवरी	गु
11 फरवरी	गु
17 फरवरी	गु
19 फरवरी	गु
25 फरवरी	गु
10 मार्च	गु
17 मार्च	गु

मिथुन तुला कुम्भ

तिथि	
25 मार्च	चं
26 मार्च	
29 मार्च	
6 अप्रैल	
9 अप्रैल	

24 अप्रैल	
30 अप्रैल	चं
6 मई	
7 मई	
20 मई	
22 मई	
28 मई	चं
31 मई	
20 सप्त	
23 सप्त	
24 सप्त	चं
25 सप्त	चं
14 अक्टू	सू
22 अक्टू	सू

23 अक्टू	
25 अक्टू	
18 नवम्बर	चं
23 नवम्बर	
27 नवम्बर	चं
30 नवम्बर	
14 दिसम्बर	चं
10 फरवरी	सू
11 फरवरी	सू
17 फरवरी	चं
19 फरवरी	
25 फरवरी	चं
10 मार्च	
17 मार्च	

कर्कट वृश्चिक मीन

25 मार्च	
26 मार्च	
28 मार्च	चं
6 अप्रैल	चं
9 अप्रैल	
24 अप्रैल	चं
30 अप्रैल	
6 मई	
7 मई	
20 मई	
22 मई	चं
28 मई	
31 मई	चं
7 जून	
20 सप्त	
23 सप्त	
24 सप्त	
25 सप्त	
14 अक्टू	चं
22 अक्टू	सू
25 अक्टू	सू
18 नवम्बर	
23 नवम्बर	
27 नवम्बर	
30 नवम्बर	
14 दिसम्बर	
20 जनवरी	
29 जनवरी	
10 फरवरी	
11 फरवरी	
17 फरवरी	सू
25 फरवरी	सू
10 मार्च	सू
17 मार्च	चं

विवाह मुर्हूत
राशि के अनुसार

मेष सिंह धनु

22 अप्रैल	गु
27 अप्रैल	गु
29 अप्रैल	गु
30 अप्रैल	गु
2 मई	गु
3 मई	गु
4 मई	गु
7 मई	गु
8 मई	गु
9 मई	गु

11 मई	गु	8 जून	गु	14 अक्टू		18 नवम्बर	सू	29 जनवरी		27 फरवरी	
16 मई	गु	12 जून	गु	19 अक्टू		19 नवम्बर	सू	30 जनवरी		3 मार्च	
20 मई	गु	18 जुलाई	सू	21 अक्टू		23 नवम्बर	सू	31 जनवरी		5 मार्च	
25 मई	गु	19 जुलाई	सू	22 अक्टू		26 नवम्बर	सू	1 फरवरी		6 मार्च	
27 मई	गु	22 जुलाई	सू	23 अक्टू		27 नवम्बर	सू	3 फरवरी	चं	7 मार्च	
28 मई	गु	23 जुलाई	सू	25 अक्टू	चं	2 दिसम्बर	सू	4 फरवरी		10 मार्च	चं
29 मई	गु	24 जुलाई	सू	29 अक्टू		6 दिसम्बर	सू	5 फरवरी		11 मार्च	
30 मई	गु	25 जुलाई	सू	30 अक्टू		7 दिसम्बर	सू	6 फरवरी		12 मार्च	
31 मई	गु	30 जुलाई	सू	31 अक्टू		11 दिसम्बर	सू	7 फरवरी			
3 जून	गु	31 जुलाई	सू	4 नवम्बर		12 दिसम्बर	सू	11 फरवरी	चं	**वृष कन्या मकर**	
4 जून	गु	1 अगस्त	सू	5 नवम्बर		13 दिसम्बर	सू	17 फरवरी			
5 जून	गु	21 सप्त		8 नवम्बर		14 दिसम्बर	सू	22 फरवरी		17 अप्रैल	सू
6 जून	गु	23 सप्त		9 नवम्बर		17 जनवरी		25 फरवरी		22 अप्रैल	सू
7 जून	गु	25 सप्त		14 नवम्बर		20 जनवरी		26 फरवरी		30 अप्रैल	सू

2 मई	सू	3 जून	चं	1 अगस्त	गु	26 नवम्बर	गु	25 फरवरी	गु	30 अप्रैल	चं
3 मई	सू	4 जून	चं	23 सप्त	गु	27 नवम्बर	गु	26 फरवरी	गु	2 मई	
4 मई	सू	5 जून		25 सप्त	गु	6 दिसम्बर	गु	27 फरवरी	गु	3 मई	(चं)
9 मई	सू	6 जून		14 अक्टू	गु	7 दिसम्बर	गु	5 मार्च	गु	4 मई	(चं)
11 मई	सू	7 जून		21 अक्टू	गु	14 दिसम्बर	गु	6 मार्च	गु	7 मई	
16 मई	चं	8 जून		22 अक्टू	गु	20 जनवरी	गु	7 मार्च	गु	8 मई	
20 मई		11 जून		23 अक्टू	गु	29 जनवरी	गु	10 मार्च	गु	9 मई	चं
24 मई		12 जून	चं	25 अक्टू	गु	30 जनवरी	गु			11 मई	चं
25 मई		22 जुलाई	गु	29 अक्टू	गु	31 जनवरी	गु	**मिथुन तुला**		16 मई	सू
27 मई	चं	23 जुलाई	गु	30 अक्टू	गु	1 फरवरी	गु	**कुम्भ**		20 मई	सू
28 मई		24 जुलाई	गु	8 नवम्बर	गु	3 फरवरी	गु	17 अप्रैल		24 मई	सू
29 मई		25 जुलाई	गु	9 नवम्बर	गु	7 फरवरी	गु	22 अप्रैल	चं	25 मई	सू
30 मई		30 जुलाई	गु	18 नवम्बर	गु	11 फरवरी	गु	27 अप्रैल		26 मई	सू
31 मई		31 जुलाई	गु	19 नवम्बर	गु	17 फरवरी	गु	29 अप्रैल		29 मई	सू

30 मई	सू
31 मई	सू
3 जून	सू
4 जून	सू
7 जून	सू
8 जून	सू
11 जून	सू
12 जून	सू
18 जुलाई	
19 जुलाई	
22 जुलाई	चं
23 जुलाई	चं
24 जुलाई	
25 जुलाई	

30 जुलाई	
31 जुलाई	चं
1 अगस्त	चं
21 सप्त	सू
25 सप्त	सू
14 अक्टू	सू
19 अक्टू	
21 अक्टू	चं
22 अक्टू	चं
23 अक्टू	
25 अक्टू	
29 अक्टू	चं
31 अक्टू	
4 नवम्बर	

5 नवम्बर	
8 नवम्बर	चं
9 नवम्बर	चं
14 नवम्बर	
18 नवम्बर	
19 नवम्बर	
23 नवम्बर	
26 नवम्बर	चं
27 नवम्बर	
2 दिसम्बर	
6 दिसम्बर	चं
7 दिसम्बर	
11 दिसम्बर	
12 दिसम्बर	

13 दिसम्बर	चं
14 दिसम्बर	च
17 जनवरी	सू
31 जनवरी	सू
1 फरवरी	सू
3 फरवरी	सू
4 फरवरी	सू
6 फरवरी	सू
11 फरवरी	सू
17 फरवरी	चं
22 फरवरी	
25 फरवरी	चं
26 फरवरी	चं
27 फरवरी	

3 मार्च	
5 मार्च	चं
6 मार्च	चं
7 मार्च	चं
10 मार्च	
11 मार्च	
12 मार्च	

कर्कट वृश्चिक मीन

17 अप्रैल	
22 अप्रैल	चं
27 अप्रैल	
29 अप्रैल	

30 अप्रैल	
2 मई	चं
3 मई	चं
4 मई	चं
7 मई	
8 मई	
9 मई	
11 मई	चं
16 मई	
20 मई	चं
24 मई	
25 मई	
27 मई	
28 मई	

तिथि	
29 मई	
30 मई	चं
31 मई	चं
3 जून	
4 जून	
5 जून	
6 जून	
7 जून	
8 जून	चं
11 जून	
12 जून	
18 जुलाई	
19 जुलाई	
22 जुलाई	
23 जुलाई	
24 जुलाई	
25 जुलाई	
30 जुलाई	
31 जुलाई	
1 अगस्त	चं
21 सप्त	
23 सप्त	
25 सप्त	चं
14 अक्टू	चं
19 अक्टू	सू
21 अक्टू	सू
22 अक्टू	सू
25 अक्टू	सू
29 अक्टू	सू
30 अक्टू	सू
4 नवम्बर	सू
5 नवम्बर	सू
8 नवम्बर	सू
9 नवम्बर	सू
14 नवम्बर	सू
18 नवम्बर	
19 नवम्बर	चं
23 नवम्बर	
26 नवम्बर	
27 नवम्बर	चं
2 दिसम्बर	
6 दिसम्बर	
7 दिसम्बर	चं
11 दिसम्बर	
12 दिसम्बर	
13 दिसम्बर	
14 दिसम्बर	
17 जनवरी	
20 जनवरी	
29 जनवरी	
30 जनवरी	
31 जनवरी	चं
1 फरवरी	चं
3 फरवरी	
4 फरवरी	
5 फरवरी	
6 फरवरी	
7 फरवरी	
11 फरवरी	
17 फरवरी	सू
22 फरवरी	सू
25 फरवरी	सू
26 फरवरी	सू
3 मार्च	सू
5 मार्च	सू
6 मार्च	सू
7 मार्च	सू
10 मार्च	सू
11 मार्च	सू
12 मार्च	सू

प्रवेश मुर्हूत
राशि के अनुसार
(मकानस अचनुक साथ)

मेष सिंह धनु

23 अप्रैल

30 अप्रैल

20 मई

30 मई

23 सप्त

25 सप्त

28 जनवरी
29 जनवरी
30 जनवरी
10 फरवरी
24 फरवरी
25 फरवरी
27 फरवरी
7 मार्च
11 मार्च

शंकु प्रतिष्ठा मुर्हूत
बुनियाद-मकान
(कन्न दिनुक साथ)

मेष सिंह धनु

23 अप्रैल
9 मई
20 मई
18 नवम्बर
26 नवम्बर
27 नवम्बर
14 दिसम्बर

ककर्ट वृश्चिक मीन

30 अप्रैल
23 मई
23 सप्त
25 सप्त
22 अक्टू
27 नवम्बर
30 नवम्बर
14 दिसम्बर
20 जनवरी
29 जनवरी
10 फरवरी
17 फरवरी

10 फरवरी
17 फरवरी

मिथुन तुला कुम्भ

23 अप्रैल
20 मई
23 मई
30 मई
14 अक्टू
23 अक्टू
31 अक्टू
30 नवम्बर
10 फरवरी
17 फरवरी

20 मई
23 मई
30 मई
23 सप्त
25 सप्त
14 अक्टू
22 अक्टू
23 अक्टू
31 अक्टू
27 नवम्बर
30 नवम्बर
14 दिसम्बर
20 जनवरी
29 जनवरी

14 अक्टू
22 अक्टू
23 अक्टू
31 अक्टू
27 नवम्बर
14 दिसम्बर
20 जनवरी
29 जनवरी
10 फरवरी
17 फरवरी

वृष कन्या मकर

23 अप्रैल
30 अप्रैल

वृष कन्या मकर

23 अप्रैल
25 अप्रैल
6 मई
20 मई
23 मई
2 नवम्बर
12 नवम्बर
13 नवम्बर
18 नवम्बर
26 नवम्बर
27 नवम्बर
30 नवम्बर
28 जनवरी
29 जनवरी
30 जनवरी
10 फरवरी
11 फरवरी
25 फरवरी
27 फरवरी
7 मार्च
10 मार्च
11 मार्च

मिथुन तुला कुम्भ

23 अप्रैल
25 अप्रैल
6 मई
9 मई
23 मई
2 नवम्बर
12 नवम्बर
13 नवम्बर
30 नवम्बर
10 फरवरी
11 फरवरी
24 फरवरी
27 फरवरी
10 मार्च
11 मार्च

ककर्ट वृश्चिक मीन

25 अप्रैल
6 मई
9 मई
20 मई
23 मई
2 नवम्बर
12 नवम्बर
13 नवम्बर
18 नवम्बर
25 फरवरी
26 फरवरी
3 मार्च
5 मार्च
10 मार्च
11 मार्च
12 मार्च

देवगौण के लिये किसी मुहूर्त या वार देखने की ज़रूरत नही है

अपने बच्चों का यज्ञोपवीत संस्कार 16 वर्ष की आयु तक करना चाहिए।

नवग्रहपीडाहरस्तोत्रम्

सूर्य

ग्रहाणाम्-आदिर्-आदित्यो-लोकरक्षण-कारकः
विषमस्थान-सम्भूतां-पीडां-हरतु-मे रविः||1||

चन्द्र

रोहिणीशः सुधामूर्तिः सुधागात्रः सुधाशनः
विषम-स्थान सम्भूतां पीडां हरतु में विधुः||2||

भौम

भूमिपुत्रो महातेजो जगतां भयकृत्सदा
वृष्टिकृद्-वृष्टि७हर्ता च पीडां हरतु में कुजः||3||

बुध

उत्पातरूपो जगतां चन्द्र पुत्रो महाद्युतिः
सूर्यप्रिय करो विद्वान्, पीडां हरतु में बुधः||4||

बृहस्पति

देवमन्त्री विशालाक्षः सदा लोकहिते रतः
अनेक शिष्यसम्पूर्णः पीडां हरतु में गुरुः।।5।।

शुक्र

दैत्यमन्त्री गुरुस्तेषां प्राणदश्च महामतिः
प्रभुस्तारा ग्रहाणां च पीडां हरतु में भृगुः।।6।।

शनि

सूर्यपुत्रो दीर्घदेहो विशालाक्षः शिवप्रियः
मन्दाचारः प्रसन्नात्मा पीडां हरतु में शनिः।।7।।

राहु

महाशिरो महावक्त्रो दीर्घदंष्ट्रो महाबलः
अतनुश्चोर्ध्वकेशश्च पीडां हरतु में शिखी।।8।।

केतु

अनेक-रूप-वर्णश्च शतशोथ सहस्त्रशः
उत्पादरूपो जगतां पीडां हरतु मे तमः।।9।।

अंन्तिम संस्कार विधि

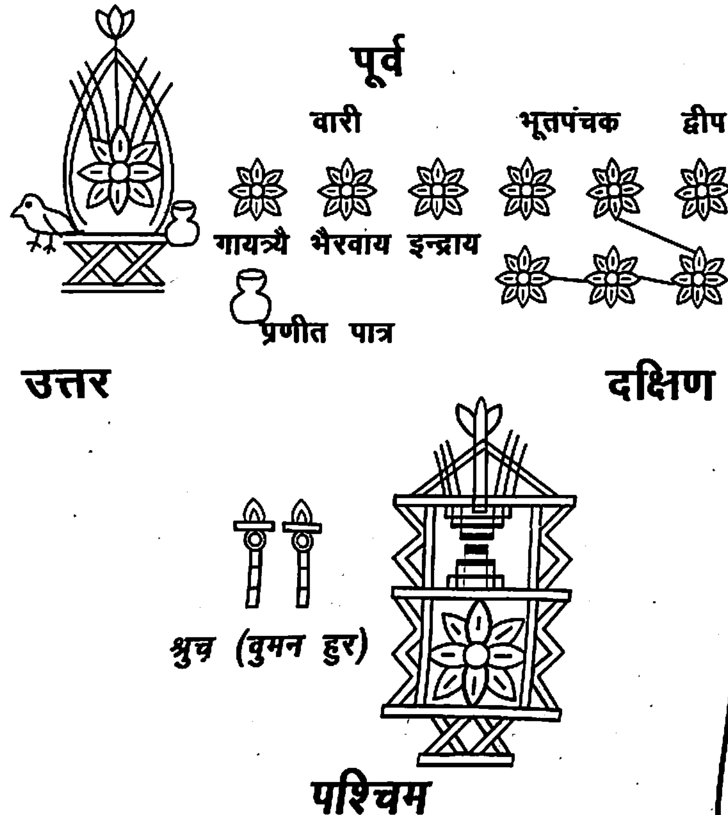
यह संस्कारों की कतार में 24वां तथा मनुष्य जीवन का अन्तिम संस्कार है। गीता में लिखा है :-

जातस्य हि ध्रुवं मृत्यु
र्ध्रुवं जन्म मृतस्य च।
तस्मात्-अपरि-हार्येऽर्थे
न त्वं शोचितुम्-अर्हसि।।

अर्थात् : जन्म लेने वाले की निश्चय से मृत्यु और मरने वाले की निश्चय से जन्म होता है उदय होने वाले सूर्य का अस्त होना निश्चित है जन्म के साथ मृत्यु जुड़ी हुई है, मनुष्य मरने के लिये ही जन्म लेता है युग बदले अनेकों परिवर्तन हुये और संसार में नि्त्य परिवर्तन होते रहे हैं और होते रहेंगे परन्तु यह नियम न बदला न बदलेगा कि जन्म के पश्चात् मृत्यु और मृत्यु के पश्चात् जन्म होता है दिन और रात की भान्ति जन्म और मृत्यु का चक्र चलता है। कौन कैसे और क्यों जन्म लेता और मरता है यह एक रहस्य है परन्तु इतना जानना जरूरी है कि मृत्यु अटल है उसके लिये शोक करना निष्फल है।

एक हिन्दू के लिये जैसे जातकर्म, नामकर्ण, चूडाकर्म आदि संस्कार वेद विधि अनुसार किये जाते हैं ऐसे ही अन्तिम संस्कार भी यज्ञ के रूप में किया जाता है। इस यज्ञ में पूर्णाहुति के रूप में पंच भौतिक शरीर को पुर्ण किया जाता है यह अन्तिम संस्कार रूपी यज्ञ किस का कहां और कब होगा किसी को मालूम नहीं है।

अन्तेष्टि कलश का चित्र



अन्तिम संस्कार की सामग्री

सफेद लट्ठा लगभग 10 मीटर, सुई धागा, छटांग भर रुई, पुलहोर (न मिलने पर) ऊन अथवा सूत का मोज़ा, शहद 1 तोला, केसर रती भर, घी आधा किलो (असली) धूप, अखरोट 15, यज्ञोपवीत 1, चोंग छोटे 10 न मिलने पर (डोने), दूध दही पाव-पाव भर, जव का आटा आधा किलो, जव दाना आधा किलो, वारी बड़ी 1 अदद्, ब्रिय मेव शीरीन् आदि लगभग 1 किलो, सिन्दूर 1 तोला, नारीवन 5 बन्दी, दर्भ के विष्टर 2 अद्द, पवित्र 2 अद्द, लकड़ी लगभग 10 मन 4 (सौ किलो)।

कनटोपे पर उल्टा गायत्री मन्त्र लिखें

ॐ त्-या दचो प्रनः योयोधिहिमधी स्यवदे गौंभ ण्यं रेर्वतुवि त्सर्त स्वः वर्भु भू ॐ।

अन्त्यदान विधि

मनुष्य के मरणसमुख होने पर अन्त्यदान करना आवश्यक है, अन्त्यदान के लिये यथाशक्ति चालव वस्त्र धन आदि एकत्रित करके अन्त्यदान करने वाले मरणो - न्मुख मनुष्य के दायें हाथ में तिल पानी देकर पढें -

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धि पुष्टिवर्धनम् उर्वारुकम्-इव बन्धानात्- मृत्योर्मुखीय मामृतात् ॐ इत्येकाक्षर ब्रह्म व्याहरन्-माम्-अनुस्मरन् य: प्रयाति त्यजन् देहं, स याति परमां गतिम्।। तत् सत् ब्रह्म अद्यतावत् तिथौ अद्य

महीना पक्ष वार का नाम लेकर पढें

आत्मनो वाङ्मन: कायोपार्जित पाप निवारणार्थं विष्णु प्रीत्यर्थं-अन्नं फलं दक्षिणां वस्त्रादि ददानि ददानि ददानि

पढ़कर सभी एकत्र किये वस्त्रों पर छींटे देकर-किसी दरिद्र नारायण को श्रद्धा से दीजिये।

अन्तिम संस्कार के विषय में कुछ जानकारी

गुरुजी न मिलने पर आप यह संस्कार खुद भी कर सकते हैं। जब भी आप समझेंगे कि मनुष्य के प्राण कण्ठ पर आये हैं तो मनुष्य को चारपाई अथवा बिस्तरे से उठाकर पृथ्वी पर उतारें, पृथ्वी लेपन कर के दर्भ अथवा घास बिछाकर थोड़ा सा तिल फैंके तथा मृतक को दक्षिण की ओर सिर रख कर उस पर रखें। सिर के नज़दीक ही जलता हुआ दीपक

(चोंग) उत्तर की ओर मुंह करके रखें। जब तक क्रिया कर्म का कार्य आरम्भ नहीं होगा तब तक गीता पाठ अवश्य करते रहें या गीता का कैस्ट चलाये। किचन को साफ करके एक पाव जव के आटे के चुचवरू (रोटी) पाव भर आलू चूर्मा तथा एक किलो चावल का बत्ता बनाये। अपने बेड़े (आगन) में किसी जगह लेपन करें तथा अन्दर मृतक के सरहाने जलाया हुआ द्वीप लेपन की हुई जगह पर रखें, धूप जला कर रखें तथा चित्र में बनाये हुये ब्रह्म कलश, भूत पंचक के चित्र जव के आटे से बनाये ब्रह्म कलश के अषृदल पर एक द्वीप में पानी, अखरोट तथा दो दर्भ के तिनके रखें, कलश के नैऋति कोण के पास एक टाकू में दर्भ के दो तिनके, जल, डाल कर रखें। इस पात्र को प्रणीत पात्र कहते हैं गायत्री अष्टदल तथा अस्त्र अष्टदल पर एक एक दीप रखे दीप में पानी तथा अखरोट रखे भैरव पर वारी रखे। भूतपंचकों पर पांचदीप, पानी, दर्भ के दो दों तिनके डाल कर रखें, जव आटे के तीन पिंड बना कर किसी टाकू में रखे, किसी मिट्टी के बर्तन में थोड़ी सी लकड़ियां जल कर रखें। अब ब्रह्म कलश के सामने बैठ कर जलते हुये दीप-धूप को नमस्कार करते हुये पढ़ें।

ॐ कारो यस्य मूलं, क्रम-पद-जठरं, छन्द विस्तीर्ण- शाखा, ऋक्-पत्रं, साम- पुष्पं, यजुर्-उचित फलं, स्यात्- अथर्वा- प्रतिष्ठा यज्ञ-छाया, सुश्वेतैर्- द्विजगण- मधुपैर् - गीयते-यस्य नित्यं, शक्तिः सन्ध्या, त्रिकालं दुरित-भय-हरः, पातु नो वेद वृक्षः।

भद्रं पश्येम, प्रचरेम, भद्रं, भद्रं वदेम, श्रृणु याम भद्रं, तन्नो मित्रो वरुणो मां हन्ताम्-आदितिः सिन्धुः पृथिवी उत-द्यौः। ॐ तत्-विष्णोः परमं पदं, सदा पश्यन्ति सूर्यः दिवीव-चक्षुर-आततम्, तत्-विप्रासो विपन्यवो जागृवांसः समिन्धते विष्णो-र्यत्-परमं पदम्।

गायत्री मन्त्र तीन बार पढ़े:

ॐ भूर्भुवः स्वः तत् सवितुर्-वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।

भूत पंचकों के कलश को केवल अर्घ चढ़ाते हुये पढें,

द्रष्ट्रे नमः, उपद्रष्ट्रे नमः, अनु-द्रष्ट्रे नमः ख्यात्रेनमः, उपख्यात्रे नमः। जाताय नमः, जनिष्य-मानाय नमः, भूताय नमः, भविष्यते नमः, चक्षुषे नमः, श्रोत्राय नमः, मनसे नमः, वाचे नमः, ब्रह्मणे नमः, भ्रान्ताय नमः, तपसे नमः।

प्रणीतपात्र (जो ब्रह्मकलश के दायें तरफ रखा है।) में केसर का तिलक और (आगे लिखे तीन मन्त्रों से तीन फूल डालते हुए पढ़े :

(1) संव्वः सृजामि हृदयं संसृष्टं मनो अस्तु वः (2) संय्या वः, प्रियास्तन्वः, संप्रिया, हृदयानि वः (3) आत्मा वो अस्तु संप्रियः, संप्रियास्तन्वो मम।

कलश के पूर्व के तरफ अर्घ सहित तिलक फैंकते हुये पढ़ें:

ये देवाः पुरः सदोग्नि नेत्रा, रक्षोहणस्ते-नः पान्तु, तेनोऽवन्तु तेभ्यः स्वाहा।

उत्तर की ओर अर्घतिलक फैंकते हुये पढ़ें :

ये देवा उत्तरात् सदो मित्रा-वरुण-नेत्रा, रक्षोहणस्ते नः पान्तु, ते नो वन्तु, तेभ्यः स्वाहा।

ऊपर की ओर अर्घ फैंकते हुये पढ़े :

ये देवा उपरिषदः सोमनेत्रा अव-स्वदन्तो रक्षोहणस्ते नः पान्तु ते नो वन्तु तेभ्यः स्वाहा।

अपने आप को तिलक लगायें।

कलश को दो दर्भकाण्ड डालते हुये पढ़ें :

ध्रुवा-द्यौर्-ध्रुवा-पृथिवी, ध्रुवासः पर्वता इमे। ध्रुवं विश्वम्-इदं जगत् ध्रुवो राजा- विशाम्-असि।

कलश को तिलक लगाते हुये पढ़ें :

अग्निम्-ईडे, पुरोहितं यज्ञस्य देवम् ऋत्विजम्। होतारं रत्न-धातमम्।

यजमान अपने हृदय को जल से छिड़कते हुये पढ़ें-

तीर्थे स्नेयं तीर्थम्-एव, समानानां भवति मानः, शंस्योर्-अररुषो धूर्तिः प्राणङ्- मर्त्यस्य रक्षाणो ब्रह्मणस्पते।

अनामिका ऊँगली पर पवित्र धारण करते हुये पढ़ें :

वसोः पवित्रम्-असि शतधारं वसूनां पवित्रम्-असि, सहस्र-धारम् अयक्ष्मा वः प्रजया संसृजामि रायस्पोषेण बहुला भवन्तीः।

अपने आप को तिलक लगाते हुये पढ़ें

परमामने पुरुषोत्तमाय पञ्चभूतात्मकाय विश्वात्मने मन्त्रनाथाय आत्मने नारायणाय आधारशक्त्यै समालभनं गन्धो नमः अर्घो नमः पुष्पं नमः।

दीपक को तिलक अर्घ पुष्प चढ़ाते हुये पढ़ें :

स्वप्राकशो महादीपः सर्वतस्तिमिरा-पहः। प्रसीद मम गोविन्द दीपोयं परिकल्पितः।

धूप को तिलक आदि चढ़ाते हुये पढ़ें :

वनस्पति रसो दिव्यो गन्धाढ्यो गन्धवत्तमः। आधारः सर्वदेवानां धूपोयं परिकल्पितः।

सूर्य भगवान् को तिलक आदि लगाते हुये पढ़े -

नमो धर्म निधानाय नमः स्वकृत-साक्षिणे, नमः प्रत्यक्षदेवाय भास्कराय नमो नमः, समालभनं, गन्धो नमः अर्घोनमः पुष्पं नमः।

अब यज्ञोपवीत बाँया रखकर सारी क्रिया करें। किसी पात्र में अर्घ सहित जल दायें हाथ के ऊपर से डालते हुये पढ़ें

यत्रास्ति माता न पिता, न बन्धु, भ्रातापि नो-यत्र सुहृत्-जनश्च। न ज्ञायते यत्रदिनं न रात्रिस्तत्रा-त्म दीपं शरणं प्रपद्ये, आत्मने नारायणाय आधारशक्त्यै दीप धूप संकल्पात् सिद्धिर्-अस्तु, दीपो नमः धूपो नमः तत्-सत्-ब्रह्म-अद्य- तावत्, तिथौ-अद्य।

मृतक का नाम लेकर :-

अमुक गोत्रोत्पन्नः अन्त्यक्रिया निमित्तं एष

ते दीप, एष ते धूपः।

टाकू में तिलक जल आदि डालते हुये पढ़ें -

पाद्यार्थम्-उदकं नमः, शन्नो देवीर्- अभीष्टये आपो भवन्तु पीतये शंयोर्- अभिस्त्रवन्तु नः, भगवन्तः पाद्यम्-पाद्यम्।

टाकू में रखे हुये विष्टर या दर्भ के दो तिनकों से कलश को छिड़कते हुये पढ़ें :-

महागणपत्यादिभ्यः कलशमण्डल- देवताभ्यः अस्त्राय गायत्र्यै भैरवाय; महादंष्ट्राय, करालाय, मदोत्कटाय, श्मशानाधिपतये भैरवाय वटुकादिभ्यः पाद्यं नमः।

पाद्य शेष निर्माल्य में छोड़ कर फिर से टाकू में नया जल अर्घ्य के लिये डालते हुये पढ़ें :-

शन्नो देवीर् अभीष्टये आपो भवन्तु पीतये शंयोर् अभिस्त्रवन्तुनः, भगवन्तः अर्घ्यम् अर्घ्यम्। कलशमण्डल देवता, अस्त्र, गायत्रि, भैरव, महादंष्ट्र, कराल, मदोत्कट, श्मशानाधिपते, भैरव, वटुका-दयः इदं वो अर्घ्य नमः, तिलकं नमः, अर्घो नमः, पुष्पं नमः वासो नमः। आचमनीयं नमः।

खोसू (कटोरी) से तपर्ण करते हुए पढ़ें :-

ॐ तत् सत् ब्रह्म अद्यतावत् तिथौ अद्य मास तिथि वार का नाम लेकर ***(पितुः अथवा मातुः)*** (जिसका देहान्त हुआ हो) ***अन्त्य क्रिया निमित्तं तिलाम्भसा स्वर्ग प्राप्तिर् अस्तु, परा तृप्तिर् अस्तु एताः कलश देवताः श्मशान भैरवाः प्रीयन्ता प्रीताः सन्तु।***

अन्त में सब कलशों को फूल चढ़ाते हुये पढ़े :-

ॐ तत् विष्णो: परम पदं सदा पश्यन्ति सूर्य: दिवीव चक्षुर आततम् तत् विप्रासो विपन्यवो जागृवांस: समिन्धिते विष्णो र्यत् परम पदम्।

टाकू में जो लकडी जल रही है उस में तिल तथा चावल के दाने डालते हुये पढ़ें :-

पात्रं तिलाऽक्षतै र्मिश्रं, कुसुमोदक विष्टरै: अग्ने श्चै शान दिक् भागे प्रणीतम् अभिधीयते। प्रणीतं नै ऋंते स्थाप्यं स विष्णु नात्र संश्य:।

अग्नि के सामने, आप अपने दायें तरफ एक चोंग रखिये, इस चोंग में जल विष्टर तिल डाल के रखें, यह "प्रणीत पात्र" कहलाता है, इस में तीन फूल डालते हुये पढ़ें :-

सं व: सृजामि हृदयं संसृष्टं मनो अस्तु व:, संसृष्टास्तन्वा सन्तु व:, संसृष्ट: प्राणो अस्तु व:, संय्या व:, प्रियास्तन्व:, संप्रिया हृदयानि व:, आत्मा वो अस्तु संप्रिय:, संप्रियास्तन्वो मम।।

प्रणीतपात्र में से नव बार जल से अग्नि को छिड़कते हुये पढ़ें:-

ऋतन्त्वा सत्येन अग्निं परिसमूहामि (1) सत्यं त्वर्तेन परिसमूहामि (2) ऋत सत्याभ्याँत्वा परिसमूहामि (3) ऋतं त्वा सत्येन पर्युक्षामि (4) सत्यं त्वर्तेन पर्युक्षामि (5) ऋत सत्याभ्यांत्वा पर्युक्षामि (6) ऋतंत्वा सत्येन परिषिञ्चामि (7) सत्यं त्वर्तेन परिषिञ्चामि (8) ऋत सत्याभ्यां त्वा परिषिञ्चामि (9)

ज्वाला लिंग के ऊपर रखे हुय नारकतरू के पूर्व की ओर पाँच दर्भ के तिनके, दक्षिण कीं ओर तीन, उत्तर

की ओर तीन, पश्चिम की ओर पाँच तिनके फैंक कर अपने बायें तरफ एक टाकू में एक चुचवरू उसके ऊपर थोडा सा जव रखें फिर स्रुच यानि दो मुख वाले लकड़ी के वुमुनहुर के ऊपर विष्टर रखें और हाथ में उठा कर पढ़ें:- ***मातु:*** अथवा ***पितु: अन्त्य क्रिया निमित्तं,*** स्रुच दर्भ के विष्टर सहित उल्टा चुचवरू पर डाल कर पढ़ें - ***अग्नये वायवे सूर्याय ब्रह्मणे प्रजापतये कूष्मर्षेभ्य जुष्टं निर्वपामि।***

स्रुच (दूसरे वुमुन हुरु) से घी की आहुतियाँ अग्नि में डालते हुए चुचवरू के टुकड़े बनाकर उसी के साथ डालते हुए पढ़ें-

(1) आयुष्य: प्राणं सन्तनु स्वाहा (2) प्राणात् व्यानं सन्तनु स्वाहा (3) व्यानात् अपानं सन्तनु स्वाहा (4) अपानात् चक्षु: सन्तनु स्वाहा (5) चक्षुष: श्रोत्रं सन्तनु स्वाहा (6) श्रोत्रात् वाचं सन्तनु स्वाहा (7) वाच: आत्मानं सन्तनु स्वाहा (8) आत्मान: पृथिवीं सन्तनु स्वाहा (9) पृथिव्या अन्तरिक्षं सन्तनु स्वाहा (10) अन्तरिक्षात् दिवं सन्तुनु स्वाहा (11) दिव: स्व: सन्तनु स्वाहा।

ऋतुतिथ्यादिभ्य: देवताभ्य: स्वाहा, ब्रह्मणे स्वाहा, अभिजिते स्वाहा -

चुचवरू के छोटे छोटे टुकड़े भी घी के साथ आहुति के साथ डालते जायें -

वामे गायत्र्यै स्वाहा, मध्ये भैरवाय स्वाहा, दक्षिणे अस्त्राय स्वाहा, भूतपंचकेभ्य: स्वाहा, ॐ भूर्लोकाय स्वाहा, ॐ भुवोलोकाय स्वाहा, ॐ स्वर्लोकाय स्वाहा, ॐ भूर्भुव: स्व-र्लोकाय स्वाहा।

(आज्य पात्र का घी आदि सभी अग्नि में फैंके) अखरोट जो घी पात्र में होगा वह पूर्णहति का मंत्र पढ़ते हुये स्रुच से अग्नि में डालिये पूर्णाहुति डालते हुये पढ़ें -

आश्रावितं अत्याश्रावितं वषट्कृतं अवषट् कृतम् अननूक्तं अत्यनूक्तं च। यज्ञे तिरिक्तं कर्मणो यत् च हीनम् अग्नि स्तानि प्रविदन् एतु कल्पयन् स्वाहा (नोट) अग्नि का अछिद्र मत कीजिये - जब कि यही अग्नि आप ने शमशन में भी साथ लेना है।

कलशपूजा तथा अग्नि पूजा समाप्त करके वुज़ में लेपन करवा कर मृतक को लायें, पहने हुये कपडे उतारिये पुरुष हो या स्त्री स्नानपट लगाइये, गर्म पानी से स्नान कीजिये, गुह्यस्थान आदि को मिट्टी तथा पानी से साफ कीज़िये, स्नान करके कर्ता आँगन के पूजा स्थान से अस्त्रकलश, भैरवकलश, गायत्री क़लश के चोंगू और बारी का जल लाकर गर्म पानी के स्नान के पानी से मिलाये उस जल में दूध, दही, घी सर्षप, तिल डालें, शव को बिठा कर रखिये, लिखित 16 ऋचाओं से आहिस्ता आहिस्ता बाल्टी में से कर्ता पानी डालता जाये -

(1) ॐ सहस्र शीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात् स भूमिं विष्वतो वृत्वा ऽत्यतिष्ठत् दशांगुलम्॥ (2) पुरुष एवेदं सर्वं, यत् भूतं यत् च भव्यम्। उतामृत त्वस्ये शानो यत् अन्नेनाति रोहति। (3) एतावानस्य महिमातो, ज्यायान् च पुरुषः। पादोस्य विश्वा त्रिपाद् अस्या मृतं दिवि॥ (4) त्रिपाद् ऊधर्व उदैत् पुरुषः, पादो स्येहा भवत् पुनः। ततो विश्वं व्याक्रामत् सशना नशने अभिः॥ (5) तस्मात्

विराड् अजायत, विराजो अधि पुरुषः। सजातो अत्यरिच्यत, पश्चात भूमिम् अथो पुरः॥ (6) यत्-पुरुषेण हविषा देवा यज्ञम्-अतन्वत। वसन्तो अस्यासीद्-आज्यं ग्रीष्मं-इध्मः शरत् हविः॥ (7) तं यज्ञं बर्हिषि प्रोक्षन् पुरुषं जातम् अग्रतः। तेन देवा अयजन्त साध्या ऋषयश्च ये॥ (8) तस्मात यज्ञात् सर्वहुतः, संभृतं पृषत् आज्यम्। पशून तान् चक्रे, वायव्यान्-आरण्यान्-ग्राम्यान् च ये॥ (9) तस्मात् यज्ञात् सर्वहुतः, ऋचः सामानि जज्ञिरे। छन्दांसि जज्ञिरे तस्मात् यजु-स्तस्मात्-अजायत॥ (10) तस्मात् अश्वा अजायन्त, ये के चोभयादतः। गावो ह जज्ञिरे, तस्मात् तस्मात् जाता अजावयः॥ (11) यत् पुरुषं व्यदधुः कतिधा-व्यकल्पयन्। मुखं किम्-अस्य, कौ बाहू, का ऊरू पादा उच्यते॥ (12) ब्राह्मणोस्य मुखम्-आसीत् राजन्यः कृतः। ऊरू तदस्य यत्-वैश्यः, पदभ्यां शूद्रो अजायत॥ (13) चन्द्रमः मनसो जातः, चक्षोः सूर्यो अजायत। मुखात् इन्द्रश्चाग्निश्च, प्राणात् वायुर्-अजायत॥ (14) नाभ्या आसीत् अन्तरिक्षं, शीर्ष्णो द्यौः समवर्तत। पदभ्यां भूमि र्दिशः श्रोत्रात् तथा लोकान् अकल्पय न्॥ (15) सप्तास्या सन् परिधयः त्रिसप्त समिधः कृताः। देवा यत् यज्ञम् तन्वाना आबन्धन् पुरुषं पशुम्॥ (16) यज्ञेन यज्ञम् अयजन्त देवा स्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन् ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः।

मृतक को स्नान करने वाले सामूहिक रूप से उच्चारण करते रहें :-

ॐ श्रीमत् नारायण नारायण नारायण* अथवा *क्षन्तव्यो मेपराध: शिव शिव शिव भो। श्री महादेव शम्भो।

मृतक, पुरुष हो या स्त्री नया स्नानपट बाँधिये, पुरुष को पावों से नया यज्ञोपवीत डालकर बायें बाजू में रखिये, पुराना यज्ञोपवीत सिर से निकाले, नव द्वारों (नाक के दो नथने दो कान, दो आँखें, दो गुह्यस्थान और मुख को छोटे छोटे धूप के गोलों से बन्द करके, अनामिका ऊँगली में पवित्र डाले सिन्दूर का तिलक और नारीवन बांधिये, यदि मृतक महिला हो तो नारीवन भी बायें कान में फंसा के रखें, मृतक के मुँह में एक सिक्का डालिये, लट्ठे तथा राम राम पट्ट आदि से मृतक के शरीर को ओढ कर सिर पर लट्ठे का कनटोपा जिस पर केसर से उल्टा गायत्री मन्त्र लिखा हो यानि मृतक का सिर जिस कपड़े से ढाँपा जाये उस पर उल्टा गायत्री मन्त्र अवश्य लिखें, मृतक के पाँवों के तलों को थोडा सा शहद मले तथा घास का पुलहोर पाँवों में डालें पुलहोर में थोड़ी सी रुई भी रखिये (पुलहोर न मिलने पर ऊन या सूत का मोजा डालें) क्रिया करने वाला (यानि कर्ता) बाहिर पूजा स्थल पर निकल कर, चुचवरू के शेष बचे टुकड़े नदुर चूर्मा अथवा आलू चुर्मा भूत पंचकों के चोंग में डालें, अर्थी (यानि विमान) जो नजार ने पहले ही बना कर रखा होगा अथवा पहले का बना बनाया ही प्रयोग में लाना हो उसको अच्छी प्रकार से धोकर उस पर दर्भ बिछा कर उस पर तिल छिड़कें शव को अर्थी पर रखिये, ऊपर सफेद चादर अथवा शाल आदि डालना हो डालिये, अर्थी को फूल की मालाओं से सजाये अर्थी को आंगन में निकाल कर शव का सिर दक्षिण की तरफ होना चाहिये, अर्थी के ऊपर फूल मेवा आदि फैंकिये, अब अर्थी के

लिये रत्नदीप धूप कर्पूर जलायें सभी खडें होकर सामूहिक रूप से आरती करें-

जय नारायण जय पुरुषोत्तम, जय वामन कंसारे
उद्धर मामसुरेश विनाशन् पतितोहं संसारे
घोरं हर मम नकरिपो! केश्व कल्मष भारम्
मां अनुकम्पय दीनं अनाथं,कुरुभव सागर पारम्।।
जय जय देव,जया सुर सूदन,जय केशव, जय विष्णो
जय लक्ष्मी मुख कमल मधुव्रत,
जय दश कन्धर जिष्णो।
घोरं हर मम नरकरिपो ! केशव ----
यद्यपि सकलं अहं कलयामि हरे,
नहि किमपि-सत्वम्
तदपि न मुञ्चति मामिदं अच्युत
पुत्र कलत्र ममत्वं

घोरं हर मम नरकरिपो ! केशव ----
पुनर्अपि जननं पुनर्अपि मरणं,
पुनर्अपि गर्भनिवासम्
सोढुम अलं पुनर् अस्मिन् माधव
माम् उद्धर निजदासम्।
घोरं हर मम नरकरिपो ! केशव ----
त्वं जननी जनकः प्रभुर् अच्युत त्वं सुहृत् कुलमित्रम्
त्वं शरणं शरणागत वत्सल, त्वं भव जलधि वहित्रम्।
घोरं हर मम नरकरिपो ! केशव ----
जनक सुतापति चरण परायण शंकर मुनिवर गीतं
धारय मनसि कृष्ण पुरुषोत्तम,
वारय संसृति भीतिम्
घोरं हर मम नरकरिपो ! केशव ----

समयानुसार "जय जगदीश" भी पढ़े (शंख बजाये) अब खड़े होकर क्रिया करने वाला पढ़े -

तत् सत् ब्रह्म अद्य तावत् मास पक्ष तिथि वार तथा नाम गोत्र सहित लेकर ***पितु:*** अथवा ***मातु: स्वर्ग प्राप्त्यर्थं धूपं रत्नदीपं कर्पूरं अर्पयामि नम:***

(नोट:- यहाँ ब्रह्मकलश का अच्छिद्र न करें) जबकि कलश का चोंग आदि आप ने श्मशान पर भी लेना है। कलश के पास तीन जव के आटे के पिंडों में से एक पिंड हाथ में उठा कर पढें

तत् सत् ब्रह्म वार तिथि

मृतक का नाम गोत्र सहित पढ़कर अर्थी पर शव के सिर के तरफ रखते हुये पढ़ें - पिता अथवा माता ***अन्त्य क्रिया निमित्तं एष ते बोध: पिण्ड: प्रेत: तृप्यतु।***

अब सारी सामग्री कलश का चोंग अखरोट सहित, अस्त्र कलश चोंग, **'गायत्री कलश'** अखरोट सहित **'भैरव कलश की बारी'** सब सामग्री इकटठी करके किसी टोकरी में उठा कर श्मशान पर ले जाइये कलश आदि जो आंगन में डाला है अर्थी निकलने के पश्चात् सब समेट कर निर्माल्य में डालें, पृथ्वी का लेपन कीजिये चोंग भी श्मशान पर साथ लीजिये, वुज़ में भी एक चोंग जला कर रखें उसके ऊपर कोई टोकरी आदि रखें श्मशान से वापस आने पर उस को बुजाये, क्रिया करने वाला सबसे पहले शव के विमान को अपने दाहिने कन्धे से उठाये उसके पश्चात् दूसरे लोग विमान को उठा कर श्मशान की ओर चलें, चलते चलते रास्ते में सभी साथी सामूहिक रूप से उच्चारण करें -

क्षन्तव्यो मेपराधः शिव शिव शिव भो! श्री महादेव शम्भो।

श्मशान पर पहुँचने से पहले आधे रास्ते में अर्थी को नीचे करके शव का सिर दक्षिण की ओर रख कर मृतक को सूर्य दर्शन करवा कर जव का दूसरा पिण्ड हाथ में लेकर पढ़ें -

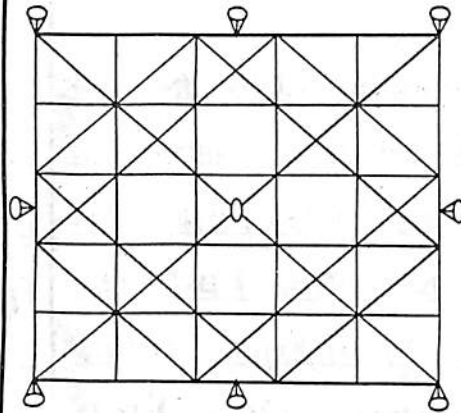
तत् सत् ब्रह्म अद्य तावत् तिथौ अद्य मासस्य पक्षस्य तिथौ वासरे पिता अथवा जो कोई भी हो ***अन्त्य क्रिया निमित्तं एष ते मकरध्वजः पिण्डः प्रेतः तृप्यतु,***

फिर से अर्थी उठा कर श्मशान पर पहुँच कर अर्थी को नीचे रखकर जव का तीसरा पिण्ड रखते हुये पढ़ें

तत् सत् ब्रह्म पितः अन्त्य क्रिया निमित्तं एष ते यम दूतपिण्डः प्रेतः तृप्यतु।

श्मशान भूमि की क्रिया

चितावास चित्र



ब्रह्मकलश



चित्र के अनुसार ब्रह्मकलश ज्वालालिंग चितावास का नकशा जव के आटे से बनाये, घर से ब्रह्मकलश का अखरोट सहित जो चोंग लाया है उसमें पानी विष्टर डालकर ब्रह्मकलश के अष्टदल पर रखें -

कलश पूजा घर में हम कर चुके हैं यहाँ धूप दीप जला कर चोंग को थोड़ा सा तिलक आदि लगा कर हाथ में फूल उठा कर कलश पर डालें।

प्राणायाम करके अग्नि को प्रणीत पात्र के जल से नव बार छिड़कते हुये पढें

ऋतन्त्वा सत्येन परिसमूहामि, सत्यं त्वर्तेन परसिमूहामि ऋत सत्या भ्यान्तवा परिसमूहामि। ऋतन्त्वा सत्येन पर्युक्षामि सत्यं त्वर्तेन पर्युक्षामि, ऋतसत्याभ्यान्त्वा पर्युक्षामि, ऋतन्त्वा सत्येन परिषञ्चामि सत्यंत्वर्तेन परिषिञ्चामि। ऋत सत्याभ्यां त्वा परिसिञ्चामि।

वुमुनहुरु से अग्नि में एक एक मन्त्र से आहुति डालें

आयुष: प्राणं सन्तनु स्वाहा, प्राणात् व्यानं सन्तनु स्वाहा, व्यानानात् अपानं सन्तुन स्वाहा, अपानात् चक्षु: सन्तनु स्वाहा, चक्षुष: श्रोत्रं सन्तनु स्वाहा, श्रोत्रात् वाचं सन्तनु स्वाहा, वाच आत्मानं सन्तनु स्वाहा, आत्मान: पृथिवीं सन्तनु स्वाहा, पृथिव्या अन्तरिक्षं सन्तनु स्वाहा, अन्तरिक्षात् दिवं सन्तनु स्वाहा, दिव: स्व: सन्तनु स्वाहा। त्वं सोमा सि सत्पति, त्वं राजोतवृत्रहा त्वं भद्रो असि क्रतु: स्वाहा।

ऋतु तिथ्यादि दे दें (अन्यथा पढ़े- ***ऋतु तिथ्यादिभ्य: देवताभ्य: स्वाहा ब्रह्मणेस्वाहा अभिजिते स्वाहा***)

चुचवरू के छोटे टुकड़े भी घी के आहुति के साथ डालते जायें सभी जनता जो मृतक के साथ आई हो यजमान (क्रिया करने वाले) के पास आकर पंक्तिबद्ध रूप में बैठें जनता अलग अलग टोलियों

में बाते न करें बल्कि यदि आप मृतक के अन्तरात्मा की शान्ति के इच्छुक हैं तो निम्न वेदमन्त्रों से आहुति डालते समय श्रद्धा से सामूहिक रूप में "स्वाहा" का उच्चारण करें। यह आहति स्त्रुव (एक मुख वाले) वमुन हुर से (कर्ता) यजमान ही डालें -

(1) ॐ आयुर्यज्ञेन कल्पतां स्वाहा

(2) ॐ प्राणो यज्ञेन कल्पतां स्वाहा

(3) ॐ अपानो यज्ञेन कल्पतां स्वाहा

(4) ॐ ब्यानो यज्ञेन कल्पतां स्वाहा

(5) ॐ उदानो यज्ञेन कल्पतां स्वाहा

पात्र का घी आदि सभी अग्नि में डाले। जब मृतक के शरीर को पूर्णाहुति के लिये चित्तावासकलश पर तिलक, फूल, अर्घा, लकडी की छोटी छोटी 9 खूँटियाँ जव का आटा, बत्ता का पात्र, लेपन के पास लाकर रखें, अब पहले चित्तावास की पूजा करनी है, चित्तावास के चित्र में लिखी रेखायें जव के आटे से बनाये। इस को माया जाल भी कहते हैं, इन रेखाओं के अनुसार खूँटियाँ अपने स्थान पर दबायें (यह माया जाल धागे से भी बनाया जाता है)

टाकू में जल तथा विष्टर (दर्भ के दो तिनके) डालकर तीन फूल डालते हुये पढ़े -

संवः सृजामि हृदयं संसृष्टं मनो अस्तु वः (1) संसृष्टा, तन्वः सन्तु वः, संसृष्टः प्राणो अस्तु वः (2) संयावः प्रिया स्तन्वः, संप्रिया हृदयानि वः, आत्मा वो अस्तु संप्रियः संप्रियास्तन्वो मम (3) दर्भ के दो तिनके हाथ में पकडकर तीन बार गायत्री मन्त्र पढें-

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितु र्वरेण्यं, भर्गो

देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचादयात्। फिर से पढें - ***तत् सत् ब्रह्म अद्य तावत् तिथौ अद्य मासस्य पक्षस्य तिथौ - वारान्वितायां ईशाने गगनयुतस्य ईशानस्य आग्नेये सुकेतु युतस्य रुद्रस्य, नैऋते सजलयुतस्य विष्णोः, वायवे वायु युतस्य,*** ईशानी कोण से डालते हुये पढें-
चित्तावास देवतानां इदं-आसनं नमः, पाद्यं नमः, अर्घ्यं नमः, गन्धो नमः। अर्घो नमः पुष्पं नमः, वासो नमः। अपोशानं नमः, आचमनीयं नमः।

इसी चित्तावास कलश के ऊपर लकडी की चित्ता तैयार करके मृतक को, उस पर रखें, सिर दक्षिण की ओर मुँह पूर्व की ओर रखें। लकड़ी के छोटे छोटे टुकड़ों के सिरों पर रुई लगा कर घी में डुबो कर रखें, उनको उल्मुक कहते है, क्रिया करने वाले को चाहिये एक उल्मुक को टाकू या कतरु में से जलाकर जलते हुये उल्मुक से मृतक के सिर के तरफ से जलाना आरम्भ करें फिर आरम्भ करें फिर दूसरे साथी उल्मकों से चित्ता को हर तरफ से जलायें, अब घी का पात्र उमनहुर घी में डाला हुआ अखरोट आदि डालते हुये पढें।

आकूत्यै त्वास्वाहा ईशाने, कामायै त्वा स्वाहा इति वायवे, समृद्धयै त्वा स्वाहा इति नैऋते-

चित्ता के तीन प्रदक्षिणा करके सभी उल्मक चित्ता के पूर्व दक्षिण कोण में फैंके, सभी कर्ता तथा अन्यान्य साथी हाथ में यव तथा कुछ फूल उठा कर खडे रहें और यह पूर्णाहुति का मन्त्र पढ़ें

आश्रावितं अत्याश्रावितं वषटकृतम् अवषट्

कृतम् अननूक्तं अत्यनूक्तं च, यज्ञेतिरिक्तं कर्मणो यत् च हीनम् अग्निस्तानि प्रविदन् एतु कल्पयन् स्वाहा।

फिर से यव आदि की आहुति उठाकर कर्ता पढे

अस्मत् त्वम् अभिजातासि, त्वत् अहं जायते पुनः

मृतक का नाम लेकर

आसौ पिता अथवा माता स्वर्गाय लोकाय स्वाहा

(आहुति डालिये) अब अन्त में मृतक के सिर के नीचे जलता हुआ दीपक तथा आग का टोकू रखिये, जब चित्ता अच्छी प्रकार से प्रज्जवलित हो जाये, मृतक का शरीर जब लगभग जल चुका हो - तो कुल्हाड़ी मृतक के सिर के तरफ जीमन में कुछ दबा कर रखें फिर कर्ता को चाहिये अस्त्र कलश की वारी को उठा कर उस में नया जल डालिये, चित्ता के तीन प्रदक्षिण करते हुये वारी का जल आहिस्ता आहिस्ता फैंकते हुये आखरी तीसरे प्रदक्षिण के अन्त में कुलहाड़ी या पत्थर पर वारी तोड़ दीजिए उपस्थान करते हुये पढें

नमो महिम्ने उत चक्षुषे महतां पिता उरु तत् गृणीमः हुतो याहि पथिभि देवयानैर् औषधीषु प्रतिष्ठा शरीरैः

कर्ता दर्भ के दो तिनके हाथ में लेकर पढे -,

पितुः अथवा मातुः अन्त्य क्रिया निमित्तं चित्तावास देवतानां पूजनम् अछिद्रम् अछिद्रम् अस्तु। ॐ शान्तिः शान्तिः

सभी श्मशान पर आई हुई जनता चित्ता की ओर हाथ जोड़ के रहें सभी सामुहिक रूप में पढे

ॐ यो रुद्रो अग्नौ य अप्सु य औषधीषुयो वनस्पतिषु यो रुद्रो विश्वा भुवना विवेश तस्मै रुद्राय नमो अस्तुदेवाः।।

सभी परिजनों का जहाँ पानी सुलभ हो नहा कर मुख शोद्धन आदि करके बायाँ यज्ञोपवीत रख कर थोडा सा तिल हाथ में लेकर तर्पण करना चाहिये तर्पण करते हुये पढे -

ॐ तत् सत् ब्रह्म मास पक्ष तिथि वार का नाम लेकर ***पितुः अथवा मातुः अन्त्य क्रिया निमित्तं एतत् तिलोदकम् एतत् ते उदक तर्पणम्।***

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः।

संशोधन

जब किसी के माता अथवा पिता का देहान्त होता है यदि उस का लड़का घर पर नहीं हो कहीं बाहर नौकरी करता हो तो उसके माता अथवा पिता का दाह संस्कार कोई भी कर सकता है, उस अवसर पर लड़के के आने की कोई आवश्यकता नहीं है परन्तु अपने माता पिता के दसवें ग्यारहवें तथा बारहवें दिन पर लड़के का आना ज़रूरी है नवें दिन तक उसके आने की आवश्यकता नहीं है। इस संशोधन को कश्मीरी पण्डित सम्मेलन में 13 सितम्बर 2009 को सर्व सम्मति से पारित किया गया।

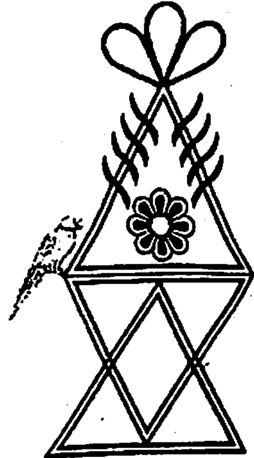
\- सम्पादक

धर्म शास्त्र, कर्मकाण्ड के विषय में यदि कोई संशय हो तो 9419133233 पर सम्पर्क करें।

कलश

कलश दो प्रकार के हैं: ब्रह्म कलश और इन्द्र कलश, ब्रह्म कलश का प्रयोग शिवरात्रि, श्राद्ध इत्यादि पर्व पर किया जाता है या जहां पर नव ग्रहों का प्रयोग न हो। यज्ञोपवीत, विवाह, देवगौण, जातकर्म तथा यज्ञ पर इन्द्रकलश का प्रयोग किया जाता है। कलश चूने से बनाने का विधान है। यहां पर मैं जनता की सुविधा के लिये इन कलशों को चित्रित करता हूँ।

ब्रह्म कलश





क्षेत्र पाल



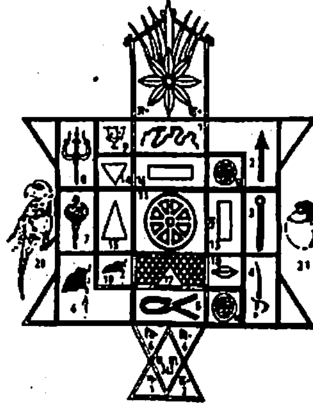
दीप

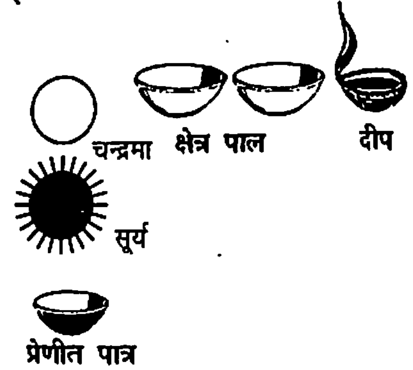


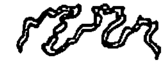


प्रेणीत पात्र

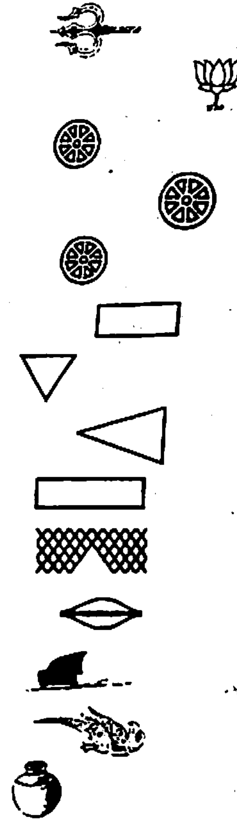
इन्द्र कलश



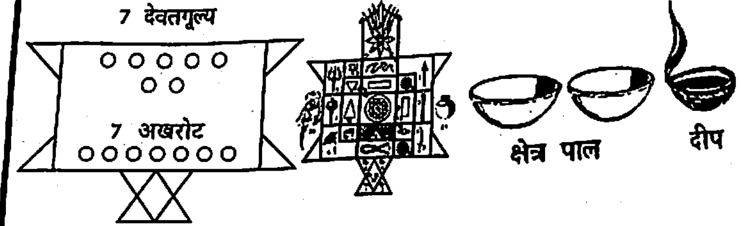


1. इन्द्राय वज्र हस्ताय 
2. अग्नये शक्ति हस्ताय 
3. यमाय दण्ड हस्ताय 
4. नैऋतिये खडगहस्ताय 
5. वरुणाय पाश हस्ताय 
6. वायवे ध्वज हस्ताय 
7. कुवेराय गदा हस्ताय 

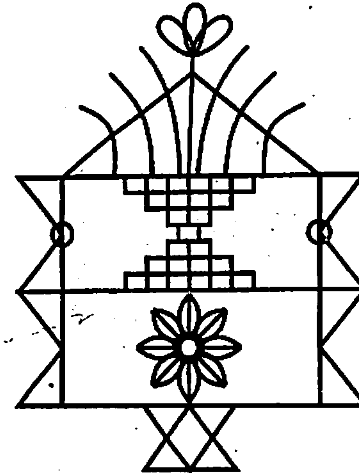
8. ईशानाय त्रिशूल हस्ताय
9. ब्राह्मणे पद्म हस्ताय
10. विष्णवे चक्र हस्ताय
11. अगन्यादित्याभ्यां
12. वरण चन्द्रमुभ्यां
13. कुमार भौमाभ्यां
14. विष्णु बुधाभ्यां
15. इन्द्रा बृहस्पतिभ्यां
16. सरस्वति शुक्राभ्यां
17. प्रजापति शनिश्चराभ्यां
18. गणपति राहुभ्यां
19. रुद्र केतुभ्यां
20. ब्रह्म द्रुवाभ्यां
21. अनन्त अगस्ताभ्यां



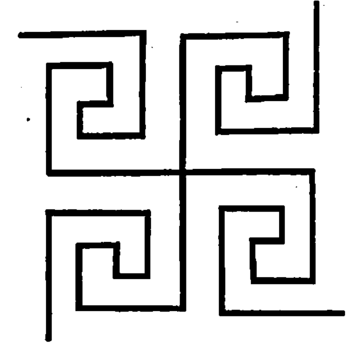
देव गौण



अग्नि कुण्ड के मध्य में



देव गौण पर चौकी के नीचे वाला चित्र



धर्मशास्त्र

धार्मिक रीति रिवाज संस्कृति के ही अंग माने जाते हैं, परन्तु जब वे रीति रिवाज धर्मशास्त्र के आधार पर हों। कहीं-कहीं धर्मशास्त्रों में मतभेद पाया जाता है, ऐसी दशा में देशाचार की भी प्रामाण्यता होती है। इन बातों को ध्यान में रखकर ही धर्मशास्त्र की चन्द बातें समय-समय पर काम आने वाली निम्नलिखित हैं।

सगोत्र

जिन का आपस में एक ही गोत्र हो सगोत्री कहलाते हैं। सगोत्रियों का आपस में विवाह करना निषेध है, मातृपक्ष से चार पीढ़ी तक पितृपक्ष से पांच पीढ़ी तक विवाह नही कर सकते हैं।

दत्तक (मंगत् लाना)

अपने खानदान से दत्तक लाना धर्मशास्त्र के अनुसार उत्तम माना जाता है, दूसरे वंश का भी दत्तक लाया जा सकता है, साला (पत्नी का भाई) दत्तक लाना धर्मशास्त्र से निषेध है। परन्तु साले का लडका तथा लडकी का लडका दत्तक ला सकते हैं।

अशौच

दो प्रकार का होता है, जन्म का अशौच जिसे सूतक कहते हैं यह अशौच ग्यारह दिन तक रहता है और दूसरा मरने का अशौच, जिस को मृतक अशौच कहते हैं, यह अशौच दस दिन तक रहता है, बिना विवाह के कन्या का पिता के घर में मृत्यु हो तो तीन दिन का अशौच होता है विवाहित लड़की को 10 दिन के अन्दर जिस दिन भी माता-पिता के

मृत्यु का सन्देश मिले तो उस दिन से लड़की को तीन दिन का अशौच होता है।

1 मरने के अशौच के दिनों में यदि दूसरा मरने का अशौच आये या जन्म के अशौच पर फिर से जन्म का अशौच आये तो पहले अशौच की समाप्ति पर ही दूसरे अशौच की समाप्ति हो जाती है।

2 जन्म के अशौच पर यदि मरने का अशौच आये तो मरने के अशौच पर ही अशौच की समाप्ति होती है।

3 यदि दसवें दिन पर दूसरा अशौच पड़े चाहे वह मरने का अशौच हो या जन्म का अशौच हो तो दो दिन अशौच और बढ़ जाता है यदि ग्यारहवें दिन दूसरा अशौच चाहे वह मरने का अशौच हो या जन्म का अशौच हो तो तीन दिन और अशौच बढ़ाना चाहिये।

4 माता के मरने पर यदि अशौच के दिनों में पिता का देहान्त हो जाये तो पिता के अशौच की समाप्ति पर ही शुद्धि होती है। यदि पिता ही पहले मरे और अशौच के दिनों में ही माता का देहान्त हो जाये तो पिता के अशौच में दो दिन की वृद्धि करनी चाहिये।

5 मृतक के दस दिनों के अन्दर यदि जन्म या मरने का दूसरा अशौच आये तो भी दसवां तथा ग्यारहवां दिन निश्चित दिन पर अवश्य करें और 12वां दिन बाद में करना चाहिये।

6 देवगौण होने के पश्चात् यदि विवाह अथवा यज्ञोपवती पर मृत्यु या जन्म का अशौच पड़े तो अशौच का कोई दोष नही होता है। देवगौण सात (7) दिनों तक रहता है।

7 **अशौच का प्रभाव :** अशौच हमारे नित्य कार्य पर किसी प्रकार का प्रभाव नहीं डालता है जैसे तिलक लगाना मन्दिर जाना, पितरों को तर्पण करना, नित्य नहाना, कपडे बदलना इत्यादि परन्तु अशौच में हम कोई नया कार्य आरम्भ नही कर सकते हैं।

यदि किसी शुभ कार्य, विवाह, यंज्ञोपवीत इत्यादि के पूर्व या शुभकार्य के दिनों में ही किसी प्रकार का अशौच पडे चाहे वह मरने का अशौच हो या जनने का अशौच हो, से किसी प्रकार का दोष शुभकार्य पर नहीं होता है। धर्मशास्त्र में लिखा है :

बहु कालिक संकल्पो गृहीतश्च पुरा यदि
सूतके मृतके चैव व्रतं तन्नैव दुष्यति।।

छलुन

दसवें दिन तक छलुन आवश्यक है, यदि लड़की दसवें दिन तक छलुन का कार्य न करें तो उस को ग्याहरवें, बाहरवें दिन के क्रियाकर्म में सम्मिलित होने का अधिकार नहीं है, छलुन के लिये शुभवार होनी चाहिये, यह बात याद रखिये हिन्दू संस्कृति के अनुसार एक सूर्योदय से दूसरे सूर्योदय तक वार होती है छलुन के समय शुभवार होनी चाहिये, शुभवार है सोमवार, बुधवार, शुक्रवार और बृहस्पतिवार पंचक छलुन के लिये निषेध है।

अस्थि संचय

अस्थियां मृत्यु के पश्चात् दस दिन के अन्दर ही गंगा में प्रवाहित करें यदि ऐसा न कर सके तो एक वर्ष

के अन्दर किसी भी दिन प्रवाहित करें। यदि बच्चा मरा हुआ उत्पन्न हो अथवा उत्पन्न होते ही मरे उस बच्चे को लट्ठे में लपेट कर पृथ्वी को अर्पण करें, घर से गोद में उठाकर गड्ढा खोदने तथा पृथ्वी में अर्पण करने के समय तक लगातार "ॐ नमः शिवाय" मन्त्र का बार-बार उच्चारण करें, दाँत निकलने तक जिस बच्चे का मृत्यु हो जाये उसका दाह संस्कार न करें अपितु उस को भी पृथ्वी अर्पण करें, दान्त निकलने के पश्चात् जो बच्चा मरे उस का दाह संस्कार करें।

बिना यज्ञोपवीत लड़के की मृत्यु हो तो क्या करें?

यज्ञोपवीत संस्कार के बिना कोई भी लड़का किसी भी आयु का हो उस की मृत्यु होने पर दाह संस्कार के पश्चात् दसवां दिन अवश्य करें, 11वां और बारहवां दिन न करें, उस बालक के निमित आने वाले किसी शुभवार पर बालकों को भी पूड़ी भोजनादि से तृप्त करें, उस मृतक बालक को जिन वस्तुओं पाठ्य पुस्कतों की ओर प्रवृति हो किसी निर्धन-विद्यार्थी को ऐसी वस्तुयें पुस्तकें वस्त्रादि दानरूप में दीजिये, या कोई आर्थिक सहायता कीजिये ताकि उसकी पढ़ाई आगे चल सके। "**श्रद्धया देयम्-अश्रद्धया-देयम्**" देना ही शान्ति का मार्ग है।

श्राद्ध

श्राद्ध की जो तिथि हो, पंचांग में उस मास की वह तिथि देखें, यदि उस तिथि के साथ "दि" का चिह्न हो तो श्राद्ध एक दिन पहले होता है, यदि "प्र" की निशानी हो तो श्राद्ध अपने ही दिन होगा, जब

प्र के बाद दि आये तो श्राद्ध अपने दिन ही होता है। जब तिथि का क्षये होगा तो दोनो तिथियों का श्राद्ध एक ही दिन आता है जब तिथियां दो होजाति हैं तो श्राद्ध पहली तिथि को होता है। दिवा-प्रविष्ठ के आधार से पंचांग में, "**श्राद्ध और मध्याह्न**" दर्ज है वहीं से देखिये। श्राद्ध के दिन अधिक भोजन न खायें, दिन को न सोये, ब्रह्मचर्य का पालन करें, दूसरे घर में खाना न खाइये, शराब अथवा किसी मादक द्रव्य का प्रयोग न कीजिये।

मसिक श्राद्ध (मासवार)

मासवार की जो तिथि हो उस तिथि का मध्याह्न देखना आवश्यक है मध्याह्न श्राद्ध किस दिन का कब होगा विजेयश्वर पंचांग में दर्ज है यदि श्राद्ध करने में आप असमर्थ है तो विधि अनुसार संकल्प करें। श्राद्ध संकल्प विधि पंचांग में दर्ज है। तथा अपने गुरुदेव को भोजन दक्षिणा से तृप्त करें।

षठ् मासिक श्राद्ध (षडमोस)

मृतक के श्राद्ध की जो तिथि हो, मध्याह्न के आधार से उस तिथि का श्राद्ध कब होगा उससे एक दिन पहले षठ्-मासिक श्राद्ध (षडमोस) करें और निश्चित मध्याह्न के दिन मासवार करें। जब किसी के षडमोस (षठ्-मासिक-श्राद्ध) में किसी प्रकार का विघ्न पड़े तो षडमोस वार्षिक श्राद्ध (वहरवार) तक किसी भी निश्चित मासवार तिथि पर किया जा सकता है।

वार्षिक श्राद्ध (वहरव्र)

मासवार की जो तिथि हो उस तिथि को मध्याह्न के आधार से एक दिन पहले मासवार करें और निश्चित

मध्याह्न के दिन वार्षिक श्राद्ध (वहरवार) करें। जब किसी के वार्षिक श्राद्ध (वहरव्र) में किसी प्रकार का विध्न आ पडे अर्थात् वह निश्चित तिथि पर वार्षिक श्राद्ध कर न सके तो वार्षिक श्राद्ध पितृपक्ष में निश्चित तिथि पर कर सकता है अथवा अगले वर्ष में जब वार्षिक श्राद्ध होगा तो उसी दिन वहरव्र भी कर सकता है।

जब किसी अविवाहित लड़की की मृत्यु हो तो क्या करें।

अविवाहित लड़की के मृत्यु पर तीन दिन का अशौच होता है उस की आत्मा को शान्ति दिलाने के लिये इन तीन दिनों तक आपके घर में भगवत् गीता अथवा राम गीता की गूंज रहनी चाहिये, तीसरे दिन इस के निमित गरीब बच्चों में पुस्तकें अथवा किसी अनाथालय में दान के रूप में कुछ दे सकते हैं, उस का दसवां दिन इत्यादि नहीं होता है।

श्राद्ध करने न करने के सम्बन्ध में

विवाह यज्ञोपवीत आदि संस्कार के पश्चात् छः मास तक श्राद्ध न करें, परन्तु इस बात को भूलिये मत, वह धर्माशास्त्र की आज्ञा माता पिता के श्राद्ध पर लागू नहीं है, बल्कि माता पिता का श्राद्ध अवश्य करना चाहिये, यदि किसी पित्तर का श्राद्ध करना हो परन्तु तिथि मास का ज्ञान न हो तो ऐसी स्थिति में मार्ग कृष्ण पक्ष अमावसी के दिन श्राद्ध करें, यदि श्राद्ध करने में आप असमर्थ है तो विध्यनुसार संकल्प करें, किसी योग्य पात्र को भेजन दक्षिणा आदि से तृप्त करें और स्वयं व्रतधारी रहिये, एक समय शुद्ध भोजन खाइयें, श्राद्ध के दिन मांस का प्रयोग न करें,

भगवान् व्यास का कहना है **"देवयज्ञे पितृश्राद्धे तथा मांगल्य कर्मणे, तस्यैव नरके वासो यो कुर्यात् जीवघातनम्"** जो गृहस्थी पितृ श्राद्ध विवाहादि मंगल कर्म में जन्मोत्सव आदि में मांस का प्रयोग करता है, वह नर्क में जाता है।

ज्येष्ठ महीना

यदि कन्या और वर दोनों ही ज्येष्ठ अर्थात् प्रथम गर्भ के हूँ तो उन का विवाह ज्येष्ठ मास में नहीं करना चाहिये परन्तु दोनों में से यदि केवल एक ही ज्येष्ठ हो तो ज्येष्ठ मास में विवाह कर सकते हैं, यदि ज्येष्ठ मास में विवाह करना जरूरी हो तो ज्येष्ठ महीना में जब तक सूर्य कृतिका नक्षत्र में रहेगा कृतिका नक्षत्र में सूर्य कब तक रहेगा ? (विजयेश्वर पंचांग में देखिये) तब तक विवाह करने में कोई दोष नहीं है। यज्ञोपवीत संस्कार के लिये ज्येष्ठ महीना तथा ज्येष्ठ लड़का होना निषेध नहीं है।

पंचक

धनिष्ठा नक्षत्र के उत्तरार्ध से रेवती नक्षत्र के अन्त तक पांच नक्षत्र (धनिष्ठा, शतभिषा, पूर्वाभाद्रपदा, उत्तराभाद्रपदा, रेवती) पंचक कहलाता है। पंचक में कौन कौन काम करना निषेध है? दाह संस्कार, छलुन, दक्षिण की ओर जाना, मिट्टी, तेल, मिट्टी के बरतन, लकड़ी काटनी अथवा घर लानी, छत ल्यण्टर आदि डालना तथा विवाह संस्कार में मस मुचरून निषेध है, शेष सभी कामों के लिये पंचक शुभ माना जाता है।

देव गौण

देवगौण के लिये कोई मुहूर्त, वार, तिथि इत्यादि देखने की कोई जरूरत नहीं हैं, विवाह तथा यज्ञोपवीत का देवगौण सात दिन पहले भी हो सकता है। देवगौण करके विवाह अथवा यज्ञोपवीत संस्कार के दिन तक यदि अशौच पडे तो अशौच का दोष नहीं होता है।

★ आत्महत्या करने वालों का अशौच नही है ना ही किसी प्रकार की क्रिया है।

★ प्रमाद से जो अग्नि व जलादि से मर जाये उस का अशौच भी है और उन की क्रिया की जाती है।

★ अस्थि क्षेप मरने के दस दिनों के भीतर करना चाहिये उस में किसी प्रकार के मुहूर्त, अस्त इत्यादि का दोष नही है। दस दिनों के पश्चात् शुभ मुहूर्त पर ही अस्थि क्षेप करना चाहियें

★ अस्थि क्षेप गंगा, देविका तथा उत्तर मानस (कश्मीर की हरमुकुट गंगा) में करना चाहिये।

★ माता पिता के दसवें दिन पर तथा यज्ञोपवीत पर वपन (बाल, दाडी काटना) जरूर करना चाहिये।

★ पति पत्नी का दाह संस्कार तथा क्रिया कर सकती है।

★ पत्नी पति का दाह संस्कार तथा क्रिया कर सकता है।

★ यदि किसी मासवार में किसी प्रकार का विघ्न आये वह दूसरे मास की उसी तिथि पर करना चाहिये।

★ माता या पिता के मरने पर यदि पुत्र यज्ञोपवीत रहित भी हो तो उस को मार्ग पर यज्ञोपवीत डाल कर क्रिया की जाती है। फिर छः मास के अन्दर उस को यज्ञोपवीत संस्कार करना चाहिये।

दाह संस्कार : जब किसी की मृत्यु होती है तो उस का दाह संस्कार सूर्य अस्त से पूर्व करना चाहिये। मृतक का दाह संस्कार कोई भी कर सकता है जैसे पुत्र, पुत्री, पुत्री का लड़का या लड़की, सगोत्री, पत्नी, पति, भाई, गुरुजी अथवा मृतक का परम मित्र।

दसवां दिन : जब किसी की मृत्यु होती है तो उस का दसवां ग्यारहवा तथा बारहवां दिन हम धार्मिक विधि से करते है परन्तु दसवां दिन हम घर से बाहर किसी नदी के किनारे पर करते है जो कि एक प्रकार की प्रथा हमारे समाज में है परन्तु जहां पर नदी न हो तो वहां पर हम दसवां दिन घर पर भी कर सकते हैं इस में किसी प्रकार की पाबन्दी शास्त्र के अनुसार नही है।

दीपदान (तीलद्युन): किसी के मृत्यु पर हम उस के निमित दीपदान अर्थात् तील दयुन भी करते है हम दीपदान किसी भी मासवार अथवा षडमोस पर कर सकते हैं इस दिन मुहूर्त वार, नक्षत्र इत्यादि देखने की कोई जरूरत नही है। इन दिनों के बिना आप को मुहूर्त पर ही दीपदान करना होगा।

☞ द्वार पूजा, लग्न घर पर ही करें।

☞ यज्ञोपवीत की महिमा को जानिये।

☞ यज्ञोपवीत कील पर न लटकाएं।

अधिक मास आने पर बारह मास का वर्ष तथा तेरह मास का वर्ष किस को

आद्यन्तर्योमले मासे मासान्द्वादश कारयेत्

(धर्मशास्त्र)

अर्थ: यदि कोई मलमास में मरे अथवा यदि किसी का वार्षिक सपिण्डी (वहरवार) मलमास में आये गा तो उस को बारह मास का वर्ष होता है दूसरा वार्षिक 13 मास के बाद आता है।

मलस्य मध्यपाते 13 मासा:।

अर्थ: मलमास से पहले मरे हुये का वर्ष 13 मास का आता है।

एक राशिणे सूर्ये भवेत् वर्षद्वयपुन:

अर्थ: सूर्य के एक राशि में होने पर जब दो अमावसी आ जायें तो भानुमास या अधिमास आता है।

(धर्मशास्त्र)

अस्थि संचय की सामग्री

फूल - एक किलो, फूलमाला - एक अदद, कलश छोटा - एक अदद, सफेद कपडा - एक मीटर, धूप, अगरबती, दूध - एक किलो, दीपक - एक, रूई, माचिस, फल, थोडा सा ड्राई फ्रूट इत्यादि

अस्थि क्षेपण के श्राद्ध की सामग्री

जव आटा - 700 ग्राम, काला तिल - सो ग्राम, लाय - दस ग्राम, घी - दस ग्राम, शहद - दस ग्राम, दूध - 250 ग्राम, दही - 250 ग्राम, फल - एक किलो, फूल - एक किलो, टाकू - 2, चावल - 250 ग्राम, अखरोट - 10, धूप, अगरबती

शारदा पढ़िये

शारदा लिपि काश्मीरी पण्डितों की प्राचीन संस्कृति का चिन्ह है, हमारे पूर्वजों ने अथाह प्रयत्न से इस सुन्दर लिपि को बनाया है, काश्मीर के प्राचीन शैव, तान्त्रिक ऐतिहासिक तथा कर्मकाण्ड सम्बन्धित सभी ग्रंथ इसी शारदा लिपि में लिखे गये परन्तु आजकल यह लिपि मृत प्राय हो चुकी है इस का पुनरुद्धार करना प्रत्येक काश्मीरी पण्डित का कर्तव्य है। हम ने शारदा लिपि का प्राईमर बनाया है आप को हमारे कार्यालय से मुफ्त मिल सकता है।

स्वर	अ	आ	इ	ई	उ	ऊ	ऋ	ॠ
	ए	ऐ	ओ	औ	अं	अः		

व्यञ्जन



	क	ख	ग	घ	ङ
च	छ	ज	झ	ञ
ट	ठ	ड	ढ	ण
त	थ	द	ध	न
प	फ	ब	भ	म

य	र	ल	व	श	ष	स	ह	क्ष	त्र	ज्ञ

मात्रा

आ	इ	ई	उ	ऊ	ऋ	ॠ	ए	ऐ	ओ	औ	अं	अः

विजयेश्वर पञ्चाङ्ग कार्यालय
के प्रकाशन

1. कर्मकाण्ड दीपक (हिन्दी-उर्दू) नया एडिशन जिस में धूप-दीप, विष्णु पूजन, प्रप्युन, शिवपूजा, दिवचक्षीर पूजा, गृह प्रवेश, शंकुप्रतिष्ठा पूजा, दीपमाला पूजा श्राद्ध संकल्प विधि, पन्नपूजा इत्यादि।
2. पंचस्तवी (हिन्दी उर्दू) अर्थ व्याख्या सहित
3. महिम्नस्तोत्र (हिन्दी उर्दू) अर्थ व्याख्या सहित
4. भवानी सहस्रनाम
5. बहुरूप गर्भ (हिन्दी उर्दू)
6. शिवरात्रि पूजा (हिन्दी उर्दू)
7. नव स्वाहाकार (सहस्रनामावली) गणेश, विष्णु, सूर्य, शारिका, राज्ञा, ज्वाला, शारदा, शंकर, भवानी
8. राम गीता। (हिन्दी उर्दू)
9. श्रीमत् भगवद्गीता (हिन्दी उर्दू)
10. विजयेश्वर नित्य नियम विधि
11. नव ग्रह पूजा
12. श्राद्ध विधि
13. सक्षिप्त दसवां, ग्यारहवां, बारहवां दिन
14. जातकर्म (काहनेथर)
15. विष्णु सहस्रनाम
16. लल्ल प्रकाश (हिन्दी में अर्थ व्याख्या सहित)
17. कश्मीरी पण्डितों के 24 संस्कार (हिन्दी में)
18. शारद अक्षर ज्ञान (भाग 1)
19. जगद्धरभट्ट के विलाप (हिन्दी में) अर्थ सहित

विजयेश्वर कैसट्स तथा सी डी
पं. प्रेमनाथ शास्त्री की वाणी से

1. गीता प्रवचन (2 कैसटों में)
2. लल्ल वाख (अर्थ तथा व्याख्या सहित) कश्मीरी

3. महिम्नस्तोत्र (अर्थ तथा व्याख्या सहित) कश्मीरी में 3 कैसटों में
4. जगद्धरभट्ट के विलाप (अर्थ व्याख्या सहित) [illegible] कैसट
5. कर्म भूमिकाय दिजि धर्मुक बल (अर्थ व्याख्या सहित) एक कैसट
6. राम गीता
7. अन्ति संस्कार विधि
8. शिवरात्री पूजा
9. भवानी सहस्त्रनाम
10. नित्य नियम विधि
11. पञ्चस्तवी
12. भगवंत् गीता पाठ रूप में
13. दुर्गा सप्तशती

नोटः असली कैसट खरीदते समय विजयेश्वर पंचाग का भगवान् कृष्ण का फ़ोटो अवश्य देखें। सभी कैसटों की सीडी भी मिल सकती हैं।

यदि आप शुद्ध और सही जन्म पत्री बनवाना चाहते हो तो इन से सम्पर्क करें

1. भूषण लाल ज्योतिषी
   विजयेश्वर ज्योतिष कार्यालय (धार्मिक पुस्तक भण्डार)
   तालाब तिलो (जैन कालोनी के नज़दीक)
   जम्मू फोन : 2555763, 9419119922
2. अवतार कृष्ण ज्योतिषी
   विजयेश्वर ज्योतिष कार्यालय *(J.K. BOOK SHOP)*
   तालाब तिलो, गली नं. 1, जम्मू
   फोन: 2505423, 9419240070
   विजयेश्वर ज्योतिष कार्यालय
   फलेट नं. 10ए, शालीमार गार्डन कॉम्पलेक्स, शालीमार गार्डन, दिल्ली फोन: 9899070805
3. विमर्श ज्योतिषी
   विजयेश्वर ज्योतिष कार्यालय
   चिनोर चौक (रूप नगर), जम्मू फोन: 9419103424

OUR PUBLICATIONS FROM

KASHMIRI PANDIT ASSOCIATION

Kashap Bhawan, Bhawani Nagar, Marol, Morshi Road, Marol, Andheri East, Mumbai-400059, Ph : 28950320, 09819783432

KASHMIRI MASALA STORE

Sector 28/29, Chowk Faridabad, M: 9210323628, 9891463618

DHAR KASHMIRI MASALA

Block B, Shalimar Garden, M 09818823459

S.M. WORLD

Shop No. 13, Shalimar Garden, Ghaziabad, M : 9910815500

DURGA MASALA STORE

131-132, INA Market, New Delhi-23, PH : 024602813

KRISHAN LAL MASALA STORE

271, INA Market, New Delhi, PH : 24653227

RAINA STORE

557/D, Dilshad Garden, Delhi PH : 22129518, 9910815500

ISHI GENERAL STORE

hmir Colony, Najab Garh, PH : 25024409

MAHA LAXMI STORE (MASALE WALEY)

39, INA Market, New Delhi, PH : 9811757688, 24633642

VITASTA GENERAL STORE

S.No. 5, Phase II, New Palam Vihar, Gurgaon, M: 9990904223

CHINAR STORE

Dwarika Morh, New Delhi, PH : 9873456553, 9899667678

RAJ STORE

211, Vipan Garden, New Delhi-52

OM SAI

29, Popular Apartment, Sec. 13, Rohini, Delhi PH : 9891799463

JAIN PROVISION STORE

Swaran Path, Mansarovar, Jaipur Raj, PH : 2390334, 9460182938

SAI STORE

Vipan Garden, Delhi, PH : 9953511051

KOSHUR VAAN

Flat B-402, Umang Priemier, IVY Estate, Naga Road, Wagholi, Pune, M : 08587806697

406

RAM RICCH PAL, SURESH CHAND
S.No. 5/95, Anaj Mandi, Old Faridabad, Opp Mother Diary, M: 09818596017

MAANAV SUVIDHA SHOPEE (JAIN MASALE WALE)
Pacca Gharat Talab Tillo, Jammu, PH : 2555274, 9419833111

KONG POSH MUSICAL GROUP
104, Phase I, Purkhoo Camps Jammu, PH : 0191-2605427, 9419136447

RAM SHYAM GENERAL STORE
Subash Nagar, Jammu PH : 2582917, 2580742

GUPTA STATIONERY STORE
City Chowk, Jammu

KANGAN TRADING COMPANY
Udhewala, Bohri, Jammu PH : 9419130480

KOUL PROVISIONAL STORE
Gole Pulley, Talab Tillo, Jammu, PH : 9419130479, 2501130

G.L. DEPARTMENTAL STORE
Talab Tillo, Jammu, PH : 2505587

ASHA GENERAL STORE
Muthi, Jammu PH : 9796479447

S. KHABRI GENERAL STORE
Block 147, Lane 23, Jagti Camp, Jammu

DURGA TRADERS
Patta Bohri, Jammu PH : 9419121168

SURBI GENERAL STORE
Tomal (Anand Nagar), Bohri, Jammu PH : 2552848, 9419706786

KAR BOOK HUT
Block 114, Lane 20, Jagti township, Jammu, M : 9018702050

KAR STATIONERY MART
Behind Lane 7, Jagti Township, Jammu, M : 9419144839

PAWAN PHOTOSTAT & STATIONER
Purkhoo Camp, Jammu, M : 9906320731

SHAKTI STORE
Bhagwati Nagar, Jammu, M : 9796623489

CHUNI LAL SURESH KUMAR
199 Gali Chabil Wali, Kanak Mandi, Jammu, M : 9419168323